



श्रीः  
**अमरकोपः ।**

—ॐ—  
‘पणेशीकरोपीहिलक्ष्मणात्मजवासुदेवशर्मणः’  
सशोधितः ।

—  
पञ्चम सस्करणम्

—  
सुम्बल्यां  
तुकाराम जावजी

इत्येतै स्वीये ‘निर्णयसागरा’त्यमुद्रणालये कोल्हाटर्मनि  
त्रयोविंशे भवने बाळकृष्ण रामचंद्र धाणेकरद्वारा  
मुद्रयित्वा प्रकाशित ।

—  
शाके १८३४, सन १९१२

—  
मूल्यं पडाणका ।



श्रीः

नामलिङ्गानुशासनं नाम

अमरकोषः ।

प्रथमं काण्डम् ।

१. मङ्गलचरणम् ।

यस्य ज्ञानदयासिन्धोरगाधस्यानिघा शुणा १  
मेव्यर्तामक्षयो धीराः स श्रिये चानृताय च २

२. प्रस्तावना ।

समाहृत्यान्यतन्त्राणि मक्षिस्तं प्रतिसंस्कृतं ३  
संपूर्णमुच्यते वर्गानामलिङ्गानुशासनम् ४

३. परिभाषा ।

प्रायशो रूपभेदेन सादृश्यार्थं कुत्रचित् ५  
स्वपुंनपुमकं श्रेयं तद्विशेषार्थं क्वचित् ६  
भेदाभ्यानाय न द्वन्द्वो नैकशेषो न संबन्धः ७  
कृतोऽत्र भिन्नलिङ्गानामनुष्ठानो क्रमरहितः ८  
विशिष्टा त्रिष्विति पदं मिथुने नु द्वयोरिति ९  
निगिरिति द्वैतार्थं त्वन्तायादि न पृथगात् १०

## ४. स्वर्गवर्गः ।

|  |    |
|--|----|
| स्वरव्ययं स्वर्गनाकत्रिदिवत्रिदशलयाः                   | ११ |
| सुरलोको द्यौदिवौ द्वे स्त्रियां क्लीबे त्रिविष्टपम् २५ | १२ |
| अमरा निर्जरा देवास्त्रिदशा विबुधाः सुराः               | १३ |
| सुपर्वाणः सुमनसस्त्रिदिवेशा दिवौकसः                    | १४ |
| आदितेया दिविपदो लेखा अदितिनन्दनाः                      | १५ |
| आदित्या ऋभवोऽस्वप्ना अमर्त्या अमृतान्धसः               | १६ |
| बर्हिर्मुखाः ऋतुभुजो गीर्वाणा दानवारयः                 | १७ |
| चन्द्रारका देवतानि पुंसि वा देवताः स्त्रियाम्          | १८ |
| आदित्यविश्वं वसवंस्तु पितामास्वरानिला                  | १९ |
| महाराजिकसाध्याश्च रुद्राश्च गणदेवताः                   | २० |
| विद्याधरोऽसरोयक्षरक्षोगन्धर्वकिन्नराः                  | २१ |
| पिशाचो गुह्यकः सिद्धो भूतोऽमी देवयोनयः                 | २२ |
| असुरा दैत्यदैतेयदनुजेन्द्रारिदानवाः                    | २३ |
| शुक्रशिष्या दितिसुताः पूर्वदेवाः सुरद्विपः             | २४ |
| सर्वज्ञः सुगतो बुद्धो धर्मराजस्तथागतः                  | २५ |
| समन्तभद्रो भगवान्मारजिलोकजिज्जिनः                      | २६ |
| पडभिज्ञो दशवलोऽद्वयवादी विनायकः                        | २७ |
| मुनीन्द्रः श्रीघनः शास्ता मुनिः शाक्यमुनिस्तु यः       | २८ |
| स शाक्यसिंहः सर्वार्थसिद्धः शौद्धोदनिश्च सः            | २९ |
| गौतमश्चार्कवन्धुश्च मायादेवीसुतश्च सः                  | ३० |
| ब्रह्मात्मभूः सुरज्येष्ठः परमेष्ठी पितामहः             | ३१ |

|   |    |
|---|----|
| हिरण्यगर्भो लोकेशः स्वयंभूश्चतुराननः            | ३२ |
| धाताज्योनिर्दुहिणो विरिञ्चिः कमलासनः            | ३३ |
| स्रष्टा प्रजापतिर्वेधा विधाता विश्वसृद्धिधिः    | ३४ |
| नाभिजन्माण्डजः पूर्वो निधनः कमलोद्भवः           | ३५ |
| मदानन्दो रजोमूर्तिः मत्स्यको हसवाहनः            | ३६ |
| विष्णुर्नारायणः कृष्णो वैकुण्ठो विष्टरश्रवाः    | ३७ |
| दामोदरो हृषीकेशः केशवो माधवः स्वभूः             | ३८ |
| दैत्यारिः पुण्डरीकाक्षो गोविन्दो गरुडध्वजः      | ३९ |
| पीताम्बरोऽच्युतः शार्ङ्गो विष्णुक्सेनो जनार्दनः | ४० |
| उपेन्द्र इन्द्राविरजश्चक्रपाणिश्चतुर्भुजः       | ४१ |
| पद्मनाभो मधुरिपूर्वासुदेवस्त्रिविक्रमः          | ४२ |
| देवकीनन्दनः शौरिः श्रीपतिः पुरुषोत्तमः          | ४३ |
| वनमाली बलिध्वंसी कंसारातिरघोक्षजः               | ४४ |
| विश्वभरः कटभजिद्विधुः श्रीवत्सलान्छनः           | ४५ |
| पुराणपुरुषो यज्ञपुरुषो नरकान्तकः                | ४६ |
| जलशायी विश्वरूपो मुकुन्दो मुरमर्दनः             | ४७ |
| वसुदेवोऽस्य जनकः स एवानकदुन्दुभिः               | ४८ |
| बलभद्रः प्रलम्बघ्नो नलदेवोऽच्युताग्रजः          | ४९ |
| मेघतीरमणो गमः कामपालो हलायुधः                   | ५० |
| नीलान्तरो राहिणेयस्तालाङ्गो मुसली हली           | ५१ |
| मङ्कर्षणः मीरपाणि कालिन्दीभेदनो बलः             | ५२ |
| नदनो मन्मथो मारः प्रद्युम्नो भीमकेतनः           | ५३ |

|   |     |
|---|-----|
| कंदर्पो दर्पकोऽनङ्गः कामः पञ्चशरः स्मरः             | ५०  |
| शम्बरारिर्मनसिजः कुसुमेपुरनन्यजः                    | ५१  |
| पुष्पधन्वा रतिपतिर्भकरध्वज आत्मभूः                  | ५२  |
| ‘अरविन्दमशोकं च चूतं च नवमल्लिका                    | *** |
| नीलोत्पलं च पञ्चैते पञ्चबाणस्य सायकाः               | *** |
| उन्मादनस्तापनश्च शोषणः स्तम्भनस्तथा                 | *** |
| संमोहनश्च कामस्य पञ्च बाणाः प्रकीर्तिताः’           | *** |
| ब्रह्मसूर्विश्वकेतुः स्यादनिरुद्ध उपापतिः           | ५३  |
| लक्ष्मीः पद्मालया पद्मा कमला श्रीहरिप्रिया          | ५४  |
| ‘इन्दिरा लोकमाता मा क्षीरोदतनया रमा                 | *** |
| भार्गवी लोकजननी क्षीरसागरकन्यका’                    | *** |
| शङ्खो लक्ष्मीपतेः पाञ्चजन्यश्चक्रं सुदर्शनः         | ५५  |
| कौमोदकी गदा खड्गो नन्दकः कौस्तुभो शणिः              | ५६  |
| ‘चापः शार्ङ्गं मुरारेस्तु श्रीवत्सो लाञ्छनं स्मृतम् | *** |
| अश्वाश्च शैव्यसुग्रीवमेघपुष्पवलाहकाः                | *** |
| सारथिर्दारुको मन्त्री ह्युद्धवश्चानुजो गदः’         | *** |
| गरुत्मान्गरुडस्ताक्षर्यो वैनतेयः खगेश्वरः           | ५७  |
| नागान्तको विष्णुरथः सुपर्णः पन्नगाशनः               | ५८  |
| शंभुरीशः पशुपतिः शिवः शूली महेश्वरः                 | ५९  |
| ईश्वरः शर्व ईशानः शंकरश्चन्द्रशेखरः                 | ६०  |
| भूतेशः खण्डपरशुर्गिरीशो गिरिशो मृडः                 | ६१  |
| मृत्युञ्जयः कृत्तिवासाः पिनाकी प्रमथाधिपः           | ६२  |

|   |    |
|---|----|
| उग्र' कपर्दी' श्रीकण्ठः शितिकण्ठः कपालभृत्      | ६३ |
| वामदेवो महादेवो विरूपाक्षस्त्रिलोचनः            | ६४ |
| कृशानुरेताः सर्वज्ञो धूर्जटिर्नीललोहितः         | ६५ |
| हरः स्मरहरो भर्गस्यम्बकस्त्रिपुरान्तकः          | ६६ |
| गङ्गाधरोऽन्धकरिपुः क्रतुध्वंसी वृषध्वजः         | ६७ |
| व्योमकेशो भवो भीमः स्याणू रुद्र उमापतिः         | ६८ |
| 'अहिर्बुध्नयोऽष्टमूर्तिश्च गजारिश्च महानटः      | ६९ |
| कपर्दोऽस्य जटाजूटः पिनाकोऽजगवधनुः               | ७० |
| प्रमथा स्युः पारिपदा ब्राह्मीत्याद्यास्तु मातरः | ७१ |
| 'ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा      | ७२ |
| वाराही च तथेन्द्राणी चामुण्डा सप्त मातरः        | ७३ |
| विभूतिभूतिरैश्वर्यमणिमादिकमष्टधा                | ७४ |
| 'अणिमा महिमा चैव गरिमा लघिमा तथा                | ७५ |
| प्राप्ति प्राकाम्यमीशित्व वशित्व चाष्टसिद्धयः   | ७६ |
| उमा कात्यायनी गौरी काली हैमवतीश्वरा             | ७७ |
| शिवा भवानी रुद्राणी शर्वाणी सर्वमद्गला          | ७८ |
| अपर्णा पार्वती दुर्गा भृङ्गानी चण्डिकाभ्रिका    | ७९ |
| आर्या दाक्षायणी चैव गिरिजा मेनकात्मजा           | ८० |
| विनायको विघ्नराजद्विमातुरगणाधिपा                | ८१ |
| अप्येकदन्तहेरम्बलम्बोदरगजाननाः                  | ८२ |
| कातिभ्यो महानेन शरजन्मा पञ्चाननः                | ८३ |
| पार्वतीनेन्दनः स्कन्दः सेनानारभिर्भृगुर्        | ८४ |



|   |     |
|---|-----|
| वाहुलेयस्तारजिद्विशाखः शिखिवाहनः                | ७९  |
| पाण्मातुरः शक्तिधरः कुमारः क्रौञ्चदारणः १७      | ८०  |
| शृङ्गी भृङ्गी रिटिस्तुण्डी नन्दिको नन्दिकेश्वरः | ८१  |
| कर्ममोटी तु चासुण्डा चर्ममुण्डा तु चर्चिका      | ८२  |
| इन्द्रो मरुत्वान्मघवा विडौजाः पाकशासनः          | ८३  |
| वृद्धश्रवाः सुनासीरः पुरुहूतः पुरंदरः           | ८४  |
| जिष्णुर्लेखर्षभः शक्रः शतमन्युर्दिवस्पतिः       | ८५  |
| सुत्रामा गोत्रभिद्वज्री वासवो वृत्रहा वृषा      | ८६  |
| वास्तोष्पतिः सुरपतिर्वलारातिः शचीपतिः           | ८७  |
| जम्भभेदी हरिहयः स्वाराण्णमुचिसूदनः              | ८८  |
| संक्रन्दनो दुश्श्रवणस्तुरापाण्मघवाहनः           | ८९  |
| आखण्डलः सहस्राक्ष ऋभुक्षास्तस्य तु प्रिया       | ९०  |
| पुलोमजा शचीन्द्राणी नगरी त्वमरावती              | ९१  |
| हय उच्चैःश्रवाः सूतो मातर्लिर्नन्दनं वनम्       | ९२  |
| स्यात्पासादो वैजयन्तो जयन्तः पाकशासनिः          | ९३  |
| ऐरावतोऽभ्रमातङ्गैरावणाभ्रमुवलभाः                | ९४  |
| हादिनी वज्रमस्त्री स्यात्कुलिशं भिदुरं पविः     | ९५  |
| शतकोटिः स्वरुः शम्बो दम्भोलिरशनिर्द्वयोः        | ९६  |
| व्योमयानं विमानोऽस्त्री नारदाद्याः सुरर्षयः     | ९७  |
| स्यात्सुधर्मा देवसभा पीयूषममृतं सुधा            | ९८  |
| मन्दाकिनीविद्यद्गङ्गा स्वर्णदी सुरदीर्घिका      | ९९  |
| मेरुः सुमेरुर्हमाद्री रत्नसानुः सुरालयः         | १०० |

|  |     |
|--|-----|
| पञ्चैते देवतरवो मन्दारः पारिजातकः                  | ९९  |
| सन्तानः कल्पवृक्षश्च पुंसि वा हरिचन्दनम्           | १०० |
| सनत्कुमारो वैधात्रः स्वर्वेद्यावश्विनीमुता         | १०१ |
| नासत्यावश्विनौ दद्यावाश्विनेयौ च तावुभौ            | १०२ |
| स्त्रिया बहुष्वप्सरसः स्वर्वेद्या उर्वशीमुखा.      | १०३ |
| ‘घृताची’ मेनका रम्भा उर्वशी च तिलोत्तमा            | *** |
| सुकेशी मञ्जुघोषाद्याः कव्यन्तेऽप्सरसो बुधः         | *** |
| हाहा हृहश्चवमाद्या गन्धर्वास्त्रिदिवाकसाम्         | १०४ |
| अग्निर्वैश्वानरो वह्निर्वीतिहोत्रो धनंजय.          | १०५ |
| कृपीटयोनिर्ज्वलनो जातवेदास्तनूनपात्                | १०६ |
| वहिर्गुप्ता कृष्णवर्त्मा शोचिष्केश उपबुधः          | १०७ |
| आश्रयाशो बृहद्भानुः कृगानुः पावकोऽनलः              | १०८ |
| रोहिताश्वो वायुसप्तः शिखावानाशुशुक्षणिः            | १०९ |
| हिरण्यरेता हुतभुग्दहनो हव्यवाहनः                   | ११० |
| सप्तार्चिर्दमुनाः शुक्रश्चित्रभानुर्विभावसु.       | १११ |
| शुचिरप्पित्तमौर्वस्तु वाडवो वडवानलः.               | ११२ |
| वहेर्द्वयोर्ज्वालकीलावर्चिर्हेति. शिखां स्त्रियाम् | ११३ |
| त्रिषु स्फुलिङ्गोऽग्निकणः संतापः सज्जरः समौ        | ११४ |
| ‘उल्का स्यान्निर्गतज्वाला भूतिर्भसितभस्मनी         | *** |
| क्षारो रक्षा च दावस्तु दवो वनहुताशनः               | *** |
| धर्मराजः पितृपतिः समवर्ती परेतराद्                 | ११५ |
| कृतान्तो यमुनाभ्राता शमनो यमराज्यम्                | ११६ |

|  |     |
|--|-----|
| कालो दण्डधरः श्राद्धदेवो वैवस्वतोऽन्तकः                  | ११७ |
| राक्षसः कौणयः क्रव्यात्क्रव्यादोऽस्रप आशरः               | ११८ |
| रात्रिचरो रात्रिचरः कर्बुरो निकपात्मजः                   | ११९ |
| यातुधानः पुण्यजनो नैर्ऋतो यातुरक्षसी                     | १२० |
| प्रचेता वरुणः पाशी यादसांपतिरप्पतिः                      | १२१ |
| श्वसनः स्पर्शनो वायुर्मातरिश्वा सदागतिः                  | १२२ |
| पृषदश्वो गन्धवहो गन्धवाहानिलाशुगाः                       | १२३ |
| समीरमारुतमरुज्जगत्प्राणसमीरणाः                           | १२४ |
| नभस्वद्वातपवनपवमानप्रभञ्जनाः                             | १२५ |
| ‘प्रकम्पनो महावातो झंझावातः सवृष्टिकः’                   | *** |
| प्राणोऽपानः समानश्चोदानव्यानौ च वायवः                    | १२६ |
| ‘हृदि प्राणो गुदेऽपानः समानो नाभिमण्डले’                 | *** |
| उदानः कण्ठदेशे स्वाह्वानः सर्वशरीरगः’                    | *** |
| शरीरस्था इमे रंहस्तरसी तु रयः स्यदः                      | १२७ |
| जवोऽथ शीघ्रं त्वरितं लघुं क्षिप्रमरं द्रुतम्             | १२८ |
| सत्वरं चपलं तूर्णमविलम्बितमाशु च                         | १२९ |
| सततानारताश्रान्तसंतताविरतानिशम्                          | १३० |
| नित्यानवरताजस्रमप्यथातिशयोभरः                            | १३१ |
| अतिवेलभृशात्यर्थातिमात्रोद्गाढनिर्भरम्                   | १३२ |
| तीव्रैकान्तनितान्तानि गाढवाढदृढानि च                     | १३३ |
| क्लीवे शीघ्राद्यसत्त्वे स्यात्त्रिष्वेषां सत्त्वगामि यत् | १३४ |
| कुवेररुयम्बकसखो यक्षराडुह्यकेश्वरः                       | १३५ |

|   |     |
|---|-----|
| मनुष्यधर्मा धनदो राजराजो धनाविपः        | १३६ |
| किनरेशो वैश्रवणः पौलस्त्यो नरवाहनः      | १३७ |
| यक्षैकपिङ्गलविलश्रीदपुण्यजनेश्वरा       | १३८ |
| अस्योद्यानं चैत्ररथं पुत्रस्तु नलकृवरः  | १३९ |
| कैलासः स्थानमलका पूर्वमानं तु पुष्पकम्  | १४० |
| स्यात्किनरः किंपुरुषस्तुरंगवदनो मयुः    | १४१ |
| निधिर्ना शेवधिर्भेदा पद्मशङ्खादयो निधेः | १४२ |
| महापद्मश्च पद्मश्च शङ्खो मकरकच्छपौ      | *** |
| मुकुन्दकुन्दनीलाश्च खर्वश्च निधयो नव    | *** |

## ५. व्योमर्ग ।

|   |     |
|---|-----|
| द्यौर्दिवौ द्वे स्त्रियामभ्रं व्योम पुष्करमम्बरम् | १४३ |
| नभोऽन्तरिक्षं गगनमनन्तं क्षुरयर्त्म खम्           | १४४ |
| वियद्विष्णुपदं वा तु पुंस्याकाशविहायसी            | १४५ |
| विहायसोऽपि नाकोऽपि द्युरपि स्यात्तदव्ययम्         | *** |
| तारापयोऽन्तरिक्षं च मेघाध्वा च महाविलम्           | *** |
| विहायाः शकुने पुंसि गगने पुनपुंसकम्               | *** |

## ६. दिग्गर्ग ।

|   |     |
|---|-----|
| दिशस्तु ककुभं काष्ठा आर्गाश्च हरितश्च ताः       | १४६ |
| प्राच्यराचीप्रतीच्यस्ता पूर्वदक्षिणपश्चिमा      | १४७ |
| उत्तरा दिग्गुदीची स्याद्विषयं तु त्रिषु दिग्भवे | १४८ |
| अवाग्भवमराचीनमुदीचीनमुदग्भवम्                   | *** |
| प्रत्यग्भवं प्रतीचीनं प्राचीनं प्राग्भवं त्रिषु | *** |

|  |     |
|--|-----|
| इन्द्रो वह्निः पितृपतिर्नैर्ऋतो वरुणो मरुत्      | १४९ |
| कुवेर ईशः पतयः पूर्वादीनां दिशां क्रमात्         | १५० |
| ‘रविः शुक्रो महीसूनुः स्वर्भानुर्भानुजो विधुः’   | *** |
| बुधो बृहस्पतिश्चेति दिशां चैव तथा ग्रहाः         | *** |
| ऐरावतः पुण्डरीको वामनः कुमुदोऽञ्जनः              | १५१ |
| पुष्पदन्तः सार्वभौमः सुप्रतीकश्च दिग्गजाः        | १५२ |
| करिण्योऽभ्रमुकपिलापिङ्गलानुपमाः क्रमात्          | १५३ |
| ताम्रकर्णी शुभ्रदन्ती चाङ्गना चाङ्गनावती         | १५४ |
| क्लीवाव्ययं त्वपदिशं दिशोर्मध्ये विदिकिस्त्रयाम् | १५५ |
| अभ्यन्तरं त्वन्तरालं चक्रवालं तु मण्डलम्         | १५६ |
| अभ्रं मेघो वारिवाहः स्तनयितुर्वलाहकः             | १५७ |
| धाराधरो जलधरस्तडित्वान्वारिदोऽम्बुभृत्           | १५८ |
| घनजीमूतमुदिरजलमुग्धूमयोनयः                       | १५९ |
| कादम्बिनी मेघमाला त्रिषु मेघभवेऽभ्रियम्          | १६० |
| स्तनितं गर्जितं मेघनिर्घोषे रसितादि च            | १६१ |
| शंपाशतंहदाहादिन्यैरावत्यः क्षणप्रभा              | १६२ |
| तडित्सौदामनीविद्युच्चञ्चला चपला अपि              | १६३ |
| स्फूर्जथुर्वज्रनिर्घोषो मेघज्योतिरिरंमदः         | १६४ |
| इन्द्रायुधं शक्रधनुस्तदेव ऋजुरोहितम्             | १६५ |
| वृष्टिर्वर्षं तद्विघातेऽवग्राह्यग्रहौ समौ        | १६६ |
| धारासंपात आसारः सीकरोऽम्बुकणाः स्मृताः           | १६७ |
| वर्षोपलस्तु करका मेघच्छन्नेऽहि दुर्दिनम्         | १६८ |

|  |     |
|--|-----|
| अन्तर्धा व्यवधा पुंसि त्वन्तर्धिरेपवारणम्      | १६९ |
| अपिधानतिरोधानपिधानाच्छादनानि च                 | १७० |
| हिमाशुश्चन्द्रमाश्चन्द्र इन्दुः कुमुदवान्धवः   | १७१ |
| विधुः सुधांशुः शुभ्राशुरोपधीशो निशापतिः        | १७२ |
| अन्नो जैवातृकः सोमो ग्लौर्मृगाङ्ग कलानिधिः     | १७३ |
| द्विजराजः शशधरो नक्षत्रेक्षः क्षपाकरः          | १७४ |
| कला तु पोडशो भागो विम्बोऽस्त्री मण्डलं त्रिषु  | १७५ |
| मित्तं एकलसण्डे वा पुंस्यर्धोऽर्धं समेऽशके     | १७६ |
| चन्द्रिका कौमुदी जोत्स्ता प्रसादस्तु प्रसन्नता | १७७ |
| कलङ्काङ्गो लाछनं च चिह्नं लक्ष्मं च लक्षणम्    | १७८ |
| सुपमा परमा शोभा शोभा कान्तिर्द्युतिश्छविः      | १७९ |
| अवश्यायस्तु नीहारस्तु पारस्तु हिने हिमम्       | १८० |
| प्रालेय मिहिका चाय हिमानी हिमनंहति             | १८१ |
| शीतं गुणे तद्वदर्थः सुपीमः शिशिरो जडः          | १८२ |
| तुपारः शीतलः शीतो हिमः सप्तान्यलिङ्गकाः        | १८३ |
| ध्रुव आत्तानपादिः स्यादगस्त्यः कुम्भसभरः       | १८४ |
| मंत्राररुणिरस्यैव लोपामुद्रा सधर्मिणी          | १८५ |
| नक्षत्रमृक्षं भं तारा तारकायुडु वा स्त्रियाम्  | १८६ |
| दाक्षायण्याऽश्विनीत्यादितारा अश्वयुगाश्विनी    | १८७ |
| राधा विशाखा पुष्ये तु मिथ्यतिष्या श्रविष्ण्या  | १८८ |
| समा धनिष्ठा स्युः प्रोष्ठपदा भाद्रपदा स्त्रियः | १८९ |
| मृगशीर्षं मृगशिरस्तस्मिन्नेव ग्रहायणी          | १९० |

|   |     |
|---|-----|
| इल्वलास्तच्छिरोदेशे तारका निवसन्ति याः        | १९१ |
| बृहस्पतिः सुराचार्यो गीर्पतिर्धिषणो गुरुः     | १९२ |
| जीव आङ्गिरसो वाचस्पतिश्चित्रशिखण्डिजः         | १९३ |
| शुक्रो दैत्यगुरुः काव्य उशना भार्गवः कविः     | १९४ |
| अङ्गारकः कुजो भौमो लोहिताङ्गो महीसुतः         | १९५ |
| रौहिणेयो बुधः सौम्यः समौ सौरिशनैश्वरौ         | १९६ |
| तमस्तु राहुः स्वर्भानुः सैहिकेयो विधुंतुदः    | १९७ |
| सप्तर्षयो मरीच्यत्रिमुखाश्चित्रशिखण्डिनः      | १९८ |
| राशीनामुदयो लग्नं ते तु मेषवृषादयः            | १९९ |
| सूरसूर्यार्यमादित्यद्वादशात्मदिवाकराः         | २०० |
| भास्कराहस्करब्रह्मप्रभाकरविभाकराः             | २०१ |
| भास्वद्विष्वत्सप्तान्श्वहरिदश्वोष्णरश्मयः     | २०२ |
| विकर्तनार्कमार्तण्डमिहिरारुणपूषणः             | २०३ |
| द्युमणिस्तरणिर्मित्रश्चित्रभानुर्विरोचनः      | २०४ |
| विभावसुग्रहपतिस्त्विषांपतिरहर्षतिः            | २०५ |
| भानुर्हंसः सहस्रांशुस्तपनः सविता रविः         | २०६ |
| ‘पद्माक्षस्तेजसां राशिश्छायां नाथस्तमिस्रहा   | *** |
| कर्मसाक्षी जगच्चक्षुर्लोकवन्धुस्त्रयीतनुः     | *** |
| प्रद्योतनो दिनमणिः खद्योतो लोकवान्धवः         | *** |
| इनो भगो धामनिधिश्चांशुमाल्यब्जिनीपतिः’        | *** |
| माठरः पिङ्गलो दण्डश्चण्डांशोः पारिपार्श्विकाः | २०७ |
| सूरसूतोऽरुणोऽनूरुः काश्यपिर्गरुडाग्रजः        | २०८ |

|   |     |
|---|-----|
| परिवेपस्तु परिधिरुपसूर्यकमण्डले ॥                 | २०९ |
| किरणोद्यमयूखाशुगभस्तिघृणिप्रभ्रमः ॥ रश्मय-        | २१० |
| भानुः करो मरीचिः स्त्रीपुंसयोर्दोषितिः स्त्रियाम् | २११ |
| स्युः प्रभारुरुचिस्त्विड्भाभाश्छविद्युतिदीप्तयः   | २१२ |
| रोचिः शोचिरुभे क्लीवे प्रकाशो द्योत आतपः          | २१३ |
| कोष्णं कवोष्ण मन्दोष्णं कदुष्णं त्रिषु तद्वति     | २१४ |
| तिग्मं तीक्ष्णं खरं तद्वन्मृगतृष्णा मरीचिका       | २१५ |

## ७ कालवर्गः ।

|   |     |
|---|-----|
| कालो दिष्टोऽप्यनेहापि समयोऽप्यथ पक्षतिः           | २१६ |
| प्रतिपदे इमे स्त्रीत्वे तदाद्यास्तिथयो द्वयोः     | २१७ |
| घस्रो दिनाहनी वा तु क्लीवे दिवसवासरा              | २१८ |
| प्रत्यूपोऽहर्मुखं कल्यमुपः प्रत्युपसी अपि         | २१९ |
| ‘व्युष्ट विमातं द्वे क्लीवे पुंसि गोसर्ग इष्यते’  | *** |
| प्रभातं च दिनान्ते तु साय सध्या पितृप्रसूः        | २२० |
| प्राह्णपराह्णमध्याह्नास्त्रिसंध्यमय शर्यरी        | २२१ |
| निशा निशीथिनी रात्रिस्त्रियामा क्षणटा क्षपा       | २२२ |
| विभावरीतुमस्विन्या रजनी यामिनी तमी                | २२३ |
| तमिष्ठा तामसी रात्रिज्यात्स्त्री चन्द्रिकयान्विता | २२४ |
| आगामिवर्तमानाहर्गुक्ताया निशि पक्षिणी             | २२५ |
| गणरात्रं निशा बह्वयः प्रदोषो रजनीमुखम्            | २२६ |
| अर्धरात्रनिशीथौ द्वौ द्वौ यामप्रहरौ तमी           | २२७ |
| स पर्यमधि प्रतिपत्पञ्चदशयोर्यदन्तरम्              | २२८ |



|   |     |
|---|-----|
| पक्षान्तौ पञ्चदश्यौ द्वे पौर्णमासी तु पूर्णिमा        | २२९ |
| कलाहीने सानुमतिः पूर्णे राका निशाकरे                  | २३० |
| अमावास्या त्वमावस्या दर्शः सूर्येन्दुसंगमः            | २३१ |
| सा दृष्टेन्दुः सिनीवाली सा नष्टेन्दुकला कुहूः         | २३२ |
| उपरागो ग्रहो राहुग्रस्ते त्विन्दौ च पूष्णि च          | २३३ |
| सोपप्लवोपरक्तौ द्वावद्भ्युत्पात उपाहितः               | २३४ |
| एकयोक्त्या पुष्पवन्तौ दिवाकरनिशाकरौ                   | २३५ |
| अष्टादश निमेषास्तु काष्ठा त्रिंशत्तु ताः कला          | २३६ |
| तास्तु त्रिंशत्क्षणस्ते तु मुहूर्तो द्वादशास्त्रियाम् | २३७ |
| ते तु त्रिंशदहोरात्रः पक्षस्ते दश पञ्च च              | २३८ |
| पक्षौ पूर्वापरौ शुक्लकृष्णौ मासस्तु तावुभौ            | २३९ |
| द्वौ द्वौ मार्गादिमासौ स्यादृतुस्तैरयनं त्रिभिः       | २४० |
| अयने द्वे गतिरुदग्दक्षिणार्कस्य वत्सरः                | २४१ |
| समरात्रिंदिवे काले विषुवद्विषुवं च तत्                | २४२ |
| ‘पुण्ययुक्ता पौर्णमासी पौषी मासे तु यत्र सा           | *** |
| नाम्ना स पौषो माघाद्याश्चैवमेकादशापरे’                | *** |
| मार्गशीर्षे सहा मार्ग आग्रहायणिकश्च सः                | २४३ |
| पौषे तैषसहस्यौ द्वौ तपा माघेऽथ फाल्गुने               | २४४ |
| स्यात्तपस्यः फाल्गुनिकः स्याच्चैत्रे चैत्रिको मधुः    | २४५ |
| वैशाखे माधवो राधो ज्येष्ठे शुक्रः शुचिस्त्वयम्        | २४६ |
| आषाढे श्रावणे तु स्यान्नभाः श्रावणिकश्च सः            | २४७ |
| स्युर्नभस्यप्रौष्ठपदभाद्रभाद्रपदाः समाः               | २४८ |

|  |     |
|--|-----|
| स्यादाश्विन इपोऽप्याश्वयुजोऽपि स्यात्तु कार्तिके ।           | २४९ |
| बाहुलोज्ञा कार्तिकिको हेमन्तः शिशिरोऽस्त्रियाम्              | २५० |
| वसन्ते पुष्पसमर्थः सुरभिर्ग्रीष्म उष्मकः                     | २५१ |
| निदाघ उष्णोपगर्म उष्ण ऊष्मागमस्तपः                           | २५२ |
| स्त्रियां प्रावृद्धं स्त्रिया भूम्नि वर्षा अथ शरत्स्त्रियाम् | २५३ |
| पटमी ऋतवः पुंसि मार्गादीनां युगैः क्रमात्                    | २५४ |
| सवत्सरो वत्सरोऽब्दो हायनोऽस्त्री शरत्समाः                    | २५५ |
| मासेन स्यादहोरात्रः पत्रो वर्षेण दैवतः                       | २५६ |
| दैवे युगसहस्रे द्वे ब्राह्मः कल्पौ तु तौ नृणाम्              | २५७ |
| मन्वन्तरं तु दिव्यानां युगानामेकसप्ततिः                      | २५८ |
| संवर्तः प्रलयः कल्पः क्षयः कल्पान्त इत्यपि                   | २५९ |
| अस्त्री पङ्क पुमान्पाप्मा पापं किल्बिषकल्मषम्                | २६० |
| कलुषं वृजिनैनोऽघमंहोदुरितदुष्कृतम्                           | २६१ |
| स्याद्धर्ममस्त्रियां पुण्यश्रेयसी सुकृतं वृषः                | २६२ |
| सुत्पीतिः प्रमदो हर्षः प्रमोदामोदसमदाः                       | २६३ |
| स्यादानन्दधुरानन्दः गर्मसातसुखानि च                          | २६४ |
| श्वश्रेयसं शिवं भद्रं कल्याणं मङ्गलं शुभम्                   | २६५ |
| भावुकं भविकं भव्यं कुशलं क्षेममस्त्रियाम्                    | २६६ |
| शस्तं चाथ त्रिषु द्रव्ये पापं पुण्यं सुखादि च                | २६७ |
| मतल्लिका मचर्चिका प्रकाण्डमुद्धतल्लजाः                       | २६८ |
| प्रशस्तं वाचकान्यमून्ययः शुभावहो विधिः                       | २६९ |
| दैवं दिष्टं भागधेयं भाग्यं स्त्री नियतिर्विधिः               | २७० |

## ९. शब्दादिवर्गः ।

|  |     |
|--|-----|
| ब्राह्मी तु भारती भार्या गीर्वाणवाणी सरस्वती       | ३१२ |
| व्याहार उर्किलपितं भाषितं वचनं वैचः                | ३१३ |
| अपभ्रंशोऽपशब्दः स्याच्छास्त्रे शब्दस्तु वाचकः      | ३१४ |
| तिङ्मुवन्तचयो वाक्यं क्रिया वा कारकान्विता         | ३१५ |
| श्रुतिः स्त्री वेद आम्नायस्त्रयी धर्मस्तु तद्विधिः | ३१६ |
| स्त्रियामृक्सामयजुषी इति वेदास्त्रयस्त्रयी         | ३१७ |
| शिक्षेत्यादि श्रुतेरङ्गमो कारप्रणवौ समौ            | ३१८ |
| इतिहासः पुरावृत्तमुदात्ताद्यास्त्रयः स्वराः        | ३१९ |
| आन्वीक्षिकी दण्डनीतिस्तर्कविद्यार्थशास्त्रयोः      | ३२० |
| आख्यायिकोपलब्धार्था पुराणं पञ्चलक्षणम्             | ३२१ |
| प्रबन्धकल्पना कथा प्रवह्निका प्रहेलिका             | ३२२ |
| स्मृतिस्तु धर्मसंहिता समाहृतिस्तु संग्रहः          | ३२३ |
| समस्या तु समासार्थो किंवदन्ती जनश्रुतिः            | ३२४ |
| वार्ता प्रवृत्तिर्वृत्तान्त उदन्तः स्यादथाह्वयः    | ३२५ |
| आख्याह्वे अभिधानं च नामधेयं च नाम च                | ३२६ |
| हृतिराकारणाह्वानं संहृतिर्वहुभिः कृता              | ३२७ |
| विवादो व्यवहारः स्यादुपन्यासस्तु वाङ्मुखम्         | ३२८ |
| उपोद्घात उदाहारः शपनं शपथः पुमान्                  | ३२९ |
| प्रश्नोऽनुयोगः पृच्छा च प्रतिवाक्योत्तरे समे       | ३३० |
| मिथ्याभियोगोऽभ्याख्यानमथ मिथ्याभिज्ञानम्           | ३३१ |
| अभिशापः प्रणादस्तु शब्दः स्यादनुरागजः              | ३३२ |

यशः कीर्तिः समज्या च स्तवः स्तोत्रं नृतिः स्तुतिः  
 आग्नेडितं द्विस्त्रिरुक्तमुच्चैर्घुष्टं तु धोपणा  
 कार्कः स्त्रिया विकारो यः शोकभीत्यादिभिर्ध्वनेः  
 अवर्णाक्षेपनिर्वादपरीवादापवादवत्  
 उपक्रोगो जुगुप्सा च कुत्सा निन्दो च गेहणे  
 पारुष्यमतिवादः स्योद्भर्त्सनं त्वपकारगीः  
 यः सनिन्द उपालम्भस्तत्र स्यात्परिभाषणम्  
 तत्र त्वाक्षारणा यः स्यादाक्रोगो मैथुनं प्रति  
 स्यादाभाषणमालापः प्रलापोऽनर्थकं वचः  
 अनुलापो मुहुर्भाषो विलापः परिदेवेनम्  
 विप्रलापो विरोधोक्तिः सलापो भाषणं मिथः  
 सुप्रलापः सुवचनमपलापस्तु निहवः  
 मोक्षमाक्षेपाभियोगौ शार्पाक्रोगौ दुरेपणा नो  
 अस्त्री चाटु चटु श्लाघा प्रेम्णा मिथ्या विकल्पनेम्  
 संदेशवाग्वाचिकं स्याद्वाग्भेदास्तु त्रिपूतरे  
 रुशती यागकल्याणी स्यात्कल्या तु शुभात्मिका  
 अत्यर्थमधुरं सान्त्वं संगतं हृदयंगमम्  
 निष्ठुरं परुषं ग्राम्यमश्लीलं सूनुतं प्रिये  
 सत्येऽयं मङ्कुलकुष्ठे परस्परपराहते  
 लुप्तवर्णपदं ग्रस्तं निरस्तं त्वेरितोदितम्  
 अम्बूकृतं सनिष्ठीवमवडं स्यादनर्थकम्  
 अनक्षरमपार्थक्यं स्यादाहतं तु मृपार्थकम्

३३३  
 ३३४  
 ३३५  
 ३३६  
 ३३७  
 ३३८  
 ३३९  
 ३४०  
 ३४१  
 ३४२  
 ३४३  
 ३४४  
 ३४५  
 ३४६  
 ३४७  
 ३४८  
 ३४९  
 ३५०  
 ३५१  
 ३५२

|   |     |
|---|-----|
| ‘सोलुण्ठनं’ तु सोत्पासं मेणितं रतिकूजितम्     | *** |
| श्राव्यं हृद्यं मनोहारि विस्पष्टं प्रकटोदितम् | *** |
| अथ स्मिष्टमविस्पष्टं वितथं त्वनृतं वचः        | ३५३ |
| सत्यं तथ्यमृतं सम्यगमूनि त्रिषु तद्वति        | ३५४ |
| शब्दे निनादनिनर्दध्वनिध्वानरर्धस्वर्नाः       | ३५५ |
| स्वार्सनिघोषनिर्हादनादेनिस्वाननिस्वर्नाः      | ३५६ |
| आरंवारविसंसारविरावा अथ मर्मरः                 | ३५७ |
| स्वनिते वस्त्रपर्णानां भूषणानां तु शिञ्जितम्  | ३५८ |
| निकाणो निकर्णः क्वाणः कर्णः कर्णनमित्यपि      | ३५९ |
| वीणार्याः कणिते प्रादेः प्रक्वाणप्रकर्णादयः   | ३६० |
| कोलाहलः कलकलस्तिरश्चां वाशितं रुतम्           | ३६१ |
| स्त्री प्रतिश्रुत्यतिध्वाने गीतं गानमिमे समे  | ३६२ |

## १०. नाट्यवर्गः ।

|  |     |
|--|-----|
| निपादर्पभगान्धारपङ्कजमध्यमधैवताः                   | ३६३ |
| पञ्चमश्चेत्यमी सप्त तन्त्रीकण्ठोत्थिताः स्वराः     | ३६४ |
| काकली तु कले सूक्ष्मे ध्वनौ तु मधुरास्फुटे         | ३६५ |
| कलो मन्द्रस्तु गम्भीरे तारोऽत्युच्चैस्त्रयस्त्रिषु | ३६६ |
| ‘नृणामुरसि मध्यस्थो द्वाविंशतिविधो ध्वनिः          | *** |
| स मन्द्रः कण्ठमध्यस्थस्तारः शिरसि गीयते’           | *** |
| समन्वितलयस्त्वेकतालो वीणा तु वल्लकी                | ३६७ |
| विपञ्ची सा तु तन्त्रीभिः सप्तभिः परिवादिनी         | ३६८ |
| ततं वीणादिकं वाद्यमानञ्च मुरजादिकम्                | ३६९ |

|  |     |
|--|-----|
| वंशादिकं तु सुपिरं कास्यतालादिकं धनम्              | ३७० |
| चतुर्विधमिदं वाद्यं वादित्रातीर्धनामकम्            | ३७१ |
| मृदङ्गा मुरजा भेदास्त्वङ्गालिङ्गयोर्ध्वकोस्त्रयः   | ३७२ |
| स्याद्यश्च पटहो ढक्का भेरी स्त्री दुन्दुभिः पुमान् | ३७३ |
| आनकः पटहोऽस्त्री स्यात्कोणो वीणादिवादनम्           | ३७४ |
| वीणादण्डं प्रवालः स्यात्ककुर्भस्तु प्रसेवकः        | ३७५ |
| कोलम्बिकस्तु कायोऽस्या उपनाहो निबन्धनम्            | ३७६ |
| वाद्यप्रभेदा डमरुमड्डुडिण्डिमझझरा                  | ३७७ |
| मर्दलः पणवोऽन्ये च नर्तकीलासिके समे                | ३७८ |
| विलम्बितं द्रुतं मध्यं तत्त्वमोघो धनं क्रमात्      | ३७९ |
| तालं कालक्रियामार्गं लयं साम्यमेवास्त्रियाम्       | ३८० |
| ताण्डवं नटनं नाट्यं लास्यं नृत्यं च नर्तने         | ३८१ |
| तौर्यत्रिकं नृत्यंगीतवाद्यं नाट्यमिदं त्रयम्       | ३८२ |
| भ्रुकुंसश्च भ्रुकुंसश्च भ्रुकुंसश्चेति नर्तकः      | ३८३ |
| स्त्रीवेषवारी पुरुषो नाट्योक्तौ गणिकाज्जुका        | ३८४ |
| भगिनीपतिराबुक्तौ भावो विद्वान्भावुकः               | ३८५ |
| जनको युवराजस्तु कुमारो भर्तृदारकः                  | ३८६ |
| राजा भट्टारको देवस्तत्सुता भर्तृदारिका             | ३८७ |
| देवी कृताभिषेकायामितरासु तु भट्टिनी                | ३८८ |
| अत्रहण्यमवध्योक्तौ राजदेयास्तु राष्ट्रियः          | ३८९ |
| अम्बा भार्ताय वाला स्याद्वासुरोर्यस्तु मारिषे      | ३९० |
| अत्तिको भगिनी ज्येष्ठो निष्ठो निर्वहणे समे         | ३९१ |

|  |     |
|--|-----|
| हण्डे हञ्जे हलहानं नीचां चेटीं सखीं प्रति                  | ३९२ |
| अङ्गहारोऽङ्गविक्षेपो व्यञ्जकाभिनयो संमौ                    | ३९३ |
| निर्वृत्ते त्वङ्गसत्त्वाभ्यां द्वे त्रिष्वाङ्गिकसात्त्विके | ३९४ |
| शृङ्गारवीरकरुणाद्भुतहास्यभयानकाः                           | ३९५ |
| वीभत्सरौद्रौ च रसाः शृङ्गारः शुचिरुज्ज्वलः                 | ३९६ |
| उत्साहवर्धनो वीरः कारुण्यं करुणा घृणा                      | ३९७ |
| कृपा दयानुकम्पा स्यादनुकोशोऽप्यथो हसः                      | ३९८ |
| हासो हास्यं च वीभत्सं विकृतं त्रिष्विदं द्वयम्             | ३९९ |
| विस्मयोऽद्भुतमाश्चर्यं चित्रमप्यथ भैरवम्                   | ४०० |
| दारुणं भीषणं भीष्मं घोरं भीमं भयानकम्                      | ४०१ |
| भयंकरं प्रतिभयं रौद्रं तूग्रममी त्रिषु                     | ४०२ |
| चतुर्दश दरस्त्रासो भीतिर्भीः साध्वसं भयम्                  | ४०३ |
| विकारो मानसो भावोऽनुभावो भावबोधकः                          | ४०४ |
| गर्वोऽभिमानोऽहंकारो मानश्चित्तसमुन्नतिः                    | ४०५ |
| ‘दर्पोऽवलेपोऽवेष्टम्भश्चित्तोद्रेकः स्मयो मदः’             | ४०६ |
| अनादरः परिभवः परीभार्वास्तिरस्क्रिया                       | ४०७ |
| रीढावमाननावज्ञविहेलनमसूक्ष्णम्                             | ४०८ |
| मन्दाक्षं हीस्त्रपा व्रीडा लज्जा सापत्रपान्यतः             | ४०९ |
| क्षान्तिस्तितिक्षाभिध्या तु परस्य विषये स्पृहा             | ४१० |
| अक्षान्तिरीष्यासूया तु दोषारोपो गुणेष्वपि                  | ४११ |
| वैरं विरोधो विद्वेषो मन्युशोकौ तु शुक्लियाम्               | ४१२ |
| पश्चात्तापोऽनुतार्पश्च विप्रतीसार इत्यपि                   |     |

|   |      |
|---|------|
| कोपक्रोधार्मपरोपप्रतिघा रुद्रकुधौ स्त्रियां       | ४१३. |
| शुचौ तु चरिते शीलमुन्मादश्चित्तविभ्रमः            | ४१४  |
| प्रेमा ना प्रियता हार्दं प्रेम स्नेहोऽथ दोहदम्    | ४१५  |
| इच्छा काङ्क्षा स्पृहेहा तृड्वाञ्छा लिप्सा मनोरथः  | ४१६  |
| कामोऽभिलार्पस्तर्पश्च सोऽत्यर्थं लालमा द्वयोः     | ४१७  |
| उपाधिर्ना धर्मचिन्ता पुंस्याधिर्मानसी व्यथा       | ४१८  |
| स्याच्चिन्ता स्मृतिराध्यानमुत्कण्ठोत्कलिके समे    | ४१९  |
| उत्साहोऽध्यवसाय स्यात्स वीर्यमतिशक्तिभाक्         | ४२०  |
| कपटोऽस्त्री व्याजदम्भोपध्वयश्छद्मकैतवे            | ४२१  |
| कुसृतिर्निंकृति शब्दं प्रमादोऽनवधानता             | ४२२  |
| कौतूहलं कौतुकं च कुतुकं च कुतूहलम्                | ४२३  |
| स्त्रीणा विलासविज्वोर्कैविभ्रमा ललितं तथा         | ४२४  |
| हेला लीलेत्यमी हार्याः क्रियाः शृङ्गारभावजाः      | ४२५  |
| द्रवकलिपरीहासाः क्रीडा लीला च नर्म च              | ४२६  |
| व्याजोऽपदेशो लक्ष्यं च क्रीडा खेला च वृन्दनम्     | ४२७  |
| घमो निदाघः स्वदः स्यात्प्रलयो नष्टचेष्टता         | ४२८  |
| अवहित्वाकारगुप्तिः समा मनेर्गसंभ्रमा              | ४२९  |
| स्यादाच्छुरितकं हासं नोत्सार्गं से मनाक्स्मर्तम्  | ४३०  |
| मध्यमं स्याद्विहंसितं रोमाशो रोमहर्षणम्           | ४३१  |
| क्रन्दिनं रुदितं क्रुष्टं जम्भस्तु त्रिषु जम्भणम् | ४३२  |
| विप्रलम्भो विसृष्टादो रिद्धिर्गण स्पष्टनं समं     | ४३३  |
| स्यान्निद्रा नयनं स्वार्पं स्वप्नः सवेग इत्यपि    | ४३४  |



तन्द्री प्रमीला भ्रुकुटिर्भ्रुकुटिर्भ्रुकुटिः स्त्रियाम्  
 अदृष्टिः स्यादसौम्येऽक्षिणं संसिद्धिप्रकृती त्विमे  
 स्वरूपं च स्वभावश्च निसर्गश्चाथ वेपथुः  
 कम्पोऽथ क्षण उद्धर्षो मह उद्धव उत्सवः

११. पातालभोगिवर्गः ।

अधोभुवनपातालं वलिसद्व रसातलम्  
 नागलोकोऽथ कुहरं गुपिरं विवरं विलम्  
 छिद्रं निर्व्यथनं रोकं रन्ध्रं श्वभ्रं वपा गुपिः  
 गर्ताविटौ भुवि श्वभ्रे सरन्ध्रे गुपिरं त्रिषु  
 अन्धकारोऽस्त्रियां ध्वान्तं तमिस्रं तिमिरं तमः  
 ध्वान्ते गाढेऽन्धतमसं क्षीणेऽवतमसं तमः  
 विष्वक्संतमसं नागाः काद्रवेयास्तदीश्वरः  
 शेषोऽनन्तो वासुकिस्तु सर्पराजोऽथ गोमते  
 तिलित्सः स्यादजगरे शयुर्वाहस इत्युभौ  
 अलगदौ जलव्यालः समौ राजिलडुण्डुभौ  
 मालुधानो मातुलीहिर्निमुक्तो मुक्तकञ्चुकः  
 सर्पः पृदाकुर्भुजगो भुजंगोऽर्हिर्भुजंगमः  
 आशीविर्षो विषधरश्चक्री व्यालः सरीसृपः  
 कुण्डली गूढपाञ्चक्षुःश्रवाः काकोदरः फणी  
 दर्वीकरो दीर्घपृष्ठो दन्दशूको विलेशयः  
 उरगः पन्नगो भोगी जिह्वागः पवनाशनः  
 लेलिहानो द्विरसनो गोकर्णः कञ्चुकी तथा

४३५

४३६

४३७

४३८

४३९

४४०

४४१

४४२

४४३

४४४

४४५

४४६

४४७

४४८

४४९

४५०

४५१

४५२

४५३

४५४

४५५

४५६

४५७

४५८

|   |     |
|---|-----|
| कुम्भीनसः फणधरो हरिभोगधरस्तथा                 | *** |
| अहेः शरीरं भोगः स्यादाशीरप्यहिदष्टिका         | *** |
| त्रिप्याहेय विपास्थ्यादि स्फटाया तु फणा द्वयो | ४५५ |
| समौ कञ्चुर्कलिमौकौ क्ष्वेडस्तु गरल विपम्      | ४५६ |
| पुंसि क्लीवे च कालोर्लकालकूटहलाहलाः           | ४५७ |
| सौराष्ट्रिकः शौक्लिकेयो ब्रह्मपुत्र प्रदीपन   | ४५८ |
| दारदो वत्सनाभश्च विपभेदा अमी नव               | ४५९ |
| विपवैद्यो जाडुलिको व्यालग्राह्यहितुण्डिक      | ४६० |

१२ नरकनर्ग ।

|   |     |
|---|-----|
| स्यान्नारकस्तु नरको निरयो दुर्गतिः स्त्रियाम्       | ४६१ |
| तज्जेदास्तपनीवीचिमहारौरवरौरवाः                      | ४६२ |
| सघात कालसूत्र चेत्याद्या सत्त्वास्तु नारका          | ४६३ |
| प्रेता वैतरणी सिन्धुः स्यादलक्ष्मीस्तु निर्ऋतिः     | ४६४ |
| विष्टिराजू कारणा तु यातना तीव्रवेदना                | ४६५ |
| पीडा बाधा व्यथा दुःखमामनस्य प्रसूतिर्जम्            | ४६६ |
| स्यात्कष्टं कृच्छ्रमाभीलं त्रिष्वेपां भेद्यगामि यत् | ४६७ |

१३ वारिवर्ग ।

|  |     |
|--|-----|
| समुद्रोऽन्धिरकूपार पारावारः सरित्पति     | ४६८ |
| उदन्वानुदधि सिन्धुः सरस्वान्सागरोऽर्णवः  | ४६९ |
| रत्नाकरो जलनिधिर्योदःपतिरपांपति          | ४७० |
| तस्य प्रभेदा क्षीरोदो लवणोदस्तथापरे      | ४७१ |
| आर्षः स्त्री भूमिर्वावीरि सलिल कमलं जलम् | ४७२ |

पयः कीलालममृतं जीवनं भुवनं वनम्  
 कवन्धमुदकं पाथः पुष्करं सर्वतोमुखम्  
 अम्भोऽर्णस्तोयपानीयनीरक्षीराम्बुनाम्बरम्  
 मेघपुष्पं घनरसस्त्रिषु द्वे आर्घ्यमम्मयम्  
 भङ्गस्तरङ्गं ऊर्मिर्वा स्त्रियां त्रीचिरथोर्मिषु  
 महत्सूलोलकलोलौ स्यादावर्तोऽम्भसां भ्रमः  
 पृषन्ति विन्दुपृषताः पुमांसो विप्रुषः स्त्रियाम्  
 चक्राणि पुटभेदाः स्युर्भ्रमाश्च जलनिर्गमाः  
 कूलं रोधश्च तीरं च प्रतीरं च तटं त्रिषु  
 पारावारं परावाचीं तीरं पात्रं तदन्तरम्  
 द्वीपोऽस्त्रियामन्तरीपं यदन्तर्वारिणस्तटम्  
 तोयोत्थितं तत्पुलिनं सैकतं सिकतामयम्  
 निषद्वरस्तु जम्बालः पङ्कोऽस्त्री शार्दकदमौ  
 जलोच्छ्वासाः परीवार्हाः कूपकास्तु विदारकाः  
 नाव्यं त्रिलिङ्गं नौतार्ये स्त्रियां नौस्तरणिस्तरिः  
 उडुपं तु प्लवः कोलः स्रोतोऽम्बुसरणं स्त्रुतः  
 आतरस्तरपण्यं स्याद्द्रोणी काष्ठाम्बुवाहिनी  
 सांयात्रिकः पोतवणिकर्णधारस्तु नाविकः  
 नियामकाः पोतवाहाः कूपको गुणवृक्षकः  
 नौकादण्डः क्षेपणी स्यादरित्रं केनिपातकः  
 अग्निः स्त्री काष्ठकुहालः सेकपात्रं तु सेचनम्  
 ह्रीवेऽर्धनावं नावोऽर्धेऽतीतनौकेऽतिनु त्रिषु

४७३

४७४

४७५

४७६

४७७

४७८

४७९

४८०

४८१

४८२

४८३

४८४

४८५

४८६

४८७

४८८

४८९

४९०

४९१

४९२

४९३

४९४

|  |     |
|--|-----|
| त्रिष्वागाधात्प्रसन्नोऽच्छ, कलुषोऽनच्छ आविलं             | ४९५ |
| निम्नं गभीरं गम्भीरेमुत्तानं तद्विपर्यये                 | ४९६ |
| अगाधमतलस्पर्शं कैवर्तं दाशेधीवरौ                         | ४९७ |
| अनार्यं पुंसि जालं स्याच्छणसूत्रं पवित्रकम्              | ४९८ |
| मत्स्याधानीं कुवेणीं स्याद्वडिर्णं मत्स्यवेधनम्          | ४९९ |
| पृथुरोर्मा शर्पो मत्स्यो मीनो विसारिणोऽण्डजः             | ५०० |
| विसारः शकुली चाथ गडकः शकुलार्भकः                         | ५०१ |
| सहस्रदंष्ट्रं पाठीर्न जलूपीं शिशुकः समौ                  | ५०२ |
| नलमीनश्चिलिचिर्मः प्रोष्ठी तु शफरी द्वयोः                | ५०३ |
| धुद्राण्डमत्स्यसंघातं पोताधानमथो शर्पाः                  | ५०४ |
| रोहितो मधुरः शालो राजीवः शकुलस्तिमिः                     | ५०५ |
| तिमिगिलादयश्चाथ याटासि जलजन्तव                           | ५०६ |
| तद्भेदाः शिशुमारोदशङ्खो मकरादयः                          | ५०७ |
| स्यात्कुलीरः कर्कटकं कूर्मं कमठकच्छपां                   | ५०८ |
| ग्राहोऽग्रहारो नक्रस्तु कुम्भीरोऽथ महीलता                | ५०९ |
| गण्डूपदं किंचुलको निहाका गोधिका समे                      | ५१० |
| रक्तपातु जलकाया स्त्रिया भूमि जलकसः ।                    | ५११ |
| मुक्तास्फोटं स्त्रिया शुक्तिं गङ्गा स्यात्कम्बुरस्त्रिया | ५१२ |
| धुद्रशङ्खा गङ्गनखा गम्बूका जलशुक्तयः                     | ५१३ |
| भेके मण्डूकवर्पाभृशालरुर्गर्ददुरा                        | ५१४ |
| शिलीगण्डूपदी भेकी वर्षाभ्यां कमठी डुलिः ।                | ५१५ |
| मधुरग्यं प्रिया शङ्गी दुर्नामा दीर्घकोनिका               | ५१६ |

|  |     |
|--|-----|
| जलाशयो जलाधारस्तत्रागाधजलो हृदिः                       | ५१७ |
| आहार्वस्तु निपानं स्यादुपकूर्पजलाशये                   | ५१८ |
| पुंस्येवान्धुः प्रहिः कूर्प उदपानं तु पुंसि वा         | ५१९ |
| नेमिस्त्रिकास्य वीनाहो मुखवन्धनमस्य यत्                | ५२० |
| पुष्करिण्यां तु खातं स्यादखातं देवखातकम्               | ५२१ |
| पद्माकरस्तडागोऽस्त्री कासारः सरसी सरः                  | ५२२ |
| वेशन्तः पल्वलं चाल्पसरो वापी तु दीर्घिका               | ५२३ |
| खेयं तु परिखाधारस्त्वम्भसां यत्र धारणम्                | ५२४ |
| स्यादालवालमावालमावापोऽथ नदी सरित्                      | ५२५ |
| तरङ्गिणी शैवलिनी तटिनी हादिनी धुनी                     | ५२६ |
| स्रोतस्वती द्वीपवती स्रवन्ती निम्नर्गापगा              | ५२७ |
| कूलंकपा निर्झरिणी रोधोवका सरस्वती                      | ५२८ |
| गङ्गा विष्णुपदी जह्नुतनया सुरनिम्नगा                   | ५२९ |
| भागीरथी त्रिपथगा त्रिस्रोता भीष्मसूरपि                 | ५३० |
| कालिन्दी सूर्यतनया यमुना शमनस्वती                      | ५३१ |
| रेवा तु नर्मदा सोमोद्भवा मेकलकन्यका                    | ५३२ |
| कर्तोया सदानीरा वाहुदा सैतवाहिनी                       | ५३३ |
| शतद्रुस्तु शुतुद्रिः स्याद्विपाशा तु विपाद् स्त्रियाम् | ५३४ |
| शोणो हिरण्यवाहः स्यात्कुल्याल्पा कृत्रिमा सरित्        | ५३५ |
| शरावती वेत्रवती चन्द्रभागा सरस्वती                     | ५३६ |
| कावेरी सरितोऽन्याश्च संभेदः सिन्धुसंगमः                | ५३७ |
| द्वयोः प्रणाली पयसः पदव्यां त्रिषु तूत्तरौ             | ५३८ |

|  |     |
|--|-----|
| देविकायां सरय्यां च भवे दाविकसारवौ         | ५३८ |
| सौगन्धिकं तु कहारं हलकं रक्तसंध्यकम्       | ५३९ |
| स्यादुत्पलं कुवलयमथ नीलम्बुजन्म च          | ५४० |
| इन्दीवरं च नीलेऽस्मिन्सिते कुमुदकैरवे      | ५४१ |
| शालूकमेषां कन्दः स्याद्धारिणीं तु कुम्भिका | ५४२ |
| जलनीली तु शेवाल शैवलोऽथ कुमुद्वती          | ५४३ |
| कुमुदिन्या नलिन्या तु विसिनीपद्मिनीमुखाः   | ५४४ |
| वा पुंसि पद्मं नलिनेमरविन्दं महोत्पलम्     | ५४५ |
| सहस्रपत्रं कमलं शतपत्रं कुशेशयेम्          | ५४६ |
| पङ्केरुहं तामरसं सारसं सरसीरुहम्           | ५४७ |
| विसप्रसूनराजीवपुष्कराम्भोरुहाणि च          | ५४८ |
| पुण्डरीकं सिताम्भोजमथ रक्तसरोरुहे          | ५४९ |
| रक्तोत्पलं कोकनदं नालं नालमवास्त्रियाम्    | ५५० |
| मृणालं विसमजादिकदम्बे पण्डमस्त्रियाम्      | ५५१ |
| करहाटः शिफाकन्दः किंजल्कः केसरोऽस्त्रियाम् | ५५२ |
| सवर्तिका नवदलं बीजकोशो वराटकः              | ५५३ |

१४ काण्डसमाप्ति ।

|  |     |
|--|-----|
| उक्तं स्वय्योमदिकालधीशब्दादि सनाथकम्   | ५५४ |
| पातालभोगि नरकं वारि चैषां च सगतम्      | ५५५ |
| इत्यमरसिंहकृता नामलिङ्गानुशासने        | ५५६ |
| स्वरादिकाण्डः प्रथमः साङ्ग एव समर्थितः | ५५७ |

## द्वितीयं काण्डम् ।

१. वर्गभेदाः ।

|  |     |
|--|-----|
| वर्गाः पृथ्वीपुरक्ष्माभृद्वेनौपर्विमृगादिभिः     | ५५८ |
| नृब्रह्मक्षत्रविद्रशूद्रैः साङ्गोपाङ्गैरिहोदिताः | ५५९ |

२. भूमिवर्गः ।

|   |     |
|---|-----|
| भूर्भूमिरचलानन्ता रसा विश्वंभरा स्थिरा              | ५६० |
| धरा धरित्री धरणिः क्षोणिज्या काश्यपी क्षितिः        | ५६१ |
| सर्वसहा वसुमती वसुधोर्वी वसुंधरा                    | ५६२ |
| गोत्रा कुः पृथिवी पृथ्वी क्ष्मावनिर्मदिनी मही       | ५६३ |
| विपुला गह्वरी धात्री गौरिला कुम्भिनी क्ष्मा         | *** |
| भूतधात्री रत्नगर्भा जगती सागराम्बरा                 | *** |
| मृन्मृत्तिका प्रशस्ता तु मृत्सा मृत्स्ना च मृत्तिका | ५६४ |
| उर्वरा सर्वसस्याढ्या स्यादूर्ध्वः क्षारमृत्तिका     | ५६५ |
| ऊषवानूपरो द्वावप्यन्यलिङ्गौ स्थलं स्थली             | ५६६ |
| समानौ मरुधन्वानौ द्वे खिलप्रहते समे                 | ५६७ |
| त्रिष्वथो जगती लोको विष्टपं भुवनं जगत्              | ५६८ |
| लोकोऽयं भारतं वर्षं शरावत्यास्तु योऽवधेः            | ५६९ |
| देशः प्राग्दक्षिणः प्राच्य उदीच्यः पश्चिमोत्तरः     | ५७० |
| प्रत्यन्तो म्लेच्छदेशः स्यान्मध्यदेशस्तु मध्यमः     | ५७१ |
| आर्यावर्तः पुण्यभूमिर्मध्यं विन्ध्यहिमालयोः         | ५७२ |
| नीवृज्जनपदो देशविषयौ तूपवर्तनम्                     | ५७३ |

|   |     |
|---|-----|
| त्रिप्यागोष्ठाञ्जडप्राये नङ्गाञ्जडल इत्यपि        | ५७४ |
| कुमुद्वान्कुमुदप्राये वेतस्वान्वहुवेतसे           | ५७५ |
| शाद्वलः शादहरिते सजम्बाले तु पङ्किलः              | ५७६ |
| जलप्रायमनूपं स्यात्पुंसि कच्छस्तथाविधः            | ५७७ |
| स्त्री शर्करा शर्करिल शर्कर, शर्करावति            | ५७८ |
| देश एवादिमायेवमुन्नेयाः सिकतावति                  | ५७९ |
| देशो नद्यम्बुवृक्षम्बुसपन्नग्रीहिपालितः           | ५८० |
| स्यान्नदीमातृको देवमातृकश्च यथाक्रमम्             | ५८१ |
| सुराक्षि देशे राजन्वान्स्यात्ततोऽन्यत्र राजवान्   | ५८२ |
| गोष्ठ गोस्थानकं तत्तु गौष्ठीनं भूतपूर्वकम्        | ५८३ |
| पर्यन्तभू परिसरः सेतुरालौ स्त्रिया पुमान्         | ५८४ |
| चामलूरश्च नार्कुश्च बल्मीकं पुनपुंसकम्            | ५८५ |
| अयनं वर्त्म मार्गाध्वपन्थान पदवी सृतिः            | ५८६ |
| सरणिः पङ्कतिः पद्या वर्तन्यकपदीति च               | ५८७ |
| अतिपन्थाः सुपेन्थाश्च सत्पथश्चाचितेऽध्वनि         | ५८८ |
| व्यध्वो दुरध्वो त्रिपथः कदध्वार् कार्पथ समाः      | ५८९ |
| अपन्थास्त्वपथं तुल्ये शृङ्गाटकचतुष्पथे            | ५९० |
| प्रान्तरं दूरशून्योऽध्वा कान्तारं वर्त्म दुर्गमम् | ५९१ |
| गव्यूति स्त्री क्रोशयुगं नल्व किष्कुचतुःशतम्      | ५९२ |
| घण्डापथः संसरणं तत्पुरस्योपनिष्करम्               | ५९३ |
| द्यावापृथिव्या रोदस्यौ द्यावामूर्मी च रोदसी       | ५९४ |
| दिवस्पृथिव्यौ गङ्गा तु रुमा स्याल्लगणाकरः         | ५९५ |



## ३. पुरवर्गः ।

|  |     |
|--|-----|
| पूः स्त्री पुरीनर्गयौ वा पत्तनं पुटभेदनम्            | ५९४ |
| स्थानीयं निगमोऽन्यत्तु यन्मूलनगरात्पुरम्             | ५९५ |
| तच्छाखानगरं वेशो वेद्याजनसमाश्रयः                    | ५९६ |
| आपणस्तु निपद्यायां विपणिः पण्यवीथिका                 | ५९७ |
| रथ्या प्रतोली विशिखा स्याच्चयो वप्रमस्त्रियाम्       | ५९८ |
| प्राकारो वरणः सालः प्राचीनं प्रान्ततो वृत्तिः        | ५९९ |
| भित्तिः स्त्री कुड्यमैडूकं यदन्तर्न्यस्तकीकसम्       | ६०० |
| गृहं गेहोदवसितं वेष्टम सङ्घं निकेतनम्                | ६०१ |
| निशान्तवस्त्यसदनं भवनागारमन्दिरम्                    | ६०२ |
| गृहाः पुंसि च भूम्न्येव निकायधनिलयालयाः              | ६०३ |
| वासः कुटी द्वयोः शाला सभा संजवनं त्विदम्             | ६०४ |
| चतुःशालं मुनीनां तु पर्णशालोटजोऽस्त्रियाम्           | ६०५ |
| चैत्यमायतनं तुल्ये वाजिशाला तु मन्दुरा               | ६०६ |
| आवेशनं शिल्पिशाला प्रपा पानीयशालिका                  | ६०७ |
| मठश्छात्रादिनिलयो गङ्गा तु मदिरागृहम्                | ६०८ |
| गर्भागारं वासगृहमरिष्टं सूतिकागृहम्                  | ६०९ |
| ‘कुट्टिमोऽस्त्री निवर्द्धा भूश्चन्द्रशाला शिरोगृहम्’ | *** |
| वातायनं गवाक्षोऽथ मण्डपोऽस्त्री जनाश्रयः             | ६१० |
| हर्म्यादि धनिनां वासः प्रासादो देवभूभुञ्जाम्         | ६११ |
| सौधोऽस्त्री राजसदनमुपकार्योपकारिका                   | ६१२ |
| स्वस्तिकः सर्वतोभद्रो नन्द्यावर्तादयोऽपि च           | ६१३ |

|  |     |
|--|-----|
| विच्छन्दकः प्रभेदा हि भवन्तीश्वरसद्धानाम्            | ६१४ |
| रुयगारं भूभुजमिन्तःपुरं स्यादवरोधनम्                 | ६१५ |
| शुद्धान्तश्चावरोधश्च स्यादद्दक्षौर्ममस्त्रियाम्      | ६१६ |
| प्रघाणप्रघणालिन्दा बहिर्द्वारप्रकोष्ठके              | ६१७ |
| गृहविग्रहणी देहल्यङ्गणं चत्वारिजरे                   | ६१८ |
| अधस्तादारुणि शिला नासा दारूपरि स्थितम्               | ६१९ |
| प्रच्छन्नमन्तद्वारं स्यात्पक्षद्वारं तु पक्षकम्      | ६२० |
| वलीकनीध्रे पटलप्रान्तेऽथ पटलं छदिः                   | ६२१ |
| गोपानसी तु वलभी छादने वक्रदारुणि                     | ६२२ |
| कपोतपालिकायां तु विटङ्कं पुनपुसकम्                   | ६२३ |
| स्त्री द्वाद्वारं प्रतीहारं स्याद्विर्तदिस्तु वेदिका | ६२४ |
| तोरणोऽस्त्री बहिर्द्वारं पुरद्वारं तु गोपुरम्        | ६२५ |
| कूटं पृथ्वारि यङ्गस्तिनखस्तस्मिन्नय त्रिषु           | ६२६ |
| कपाटमररं तुल्यं तद्विष्कम्भोऽर्गलं न ना              | ६२७ |
| आरोहणं स्यात्सोपानं निश्रेणिस्त्वधिरोहिणी            | ६२८ |
| संमार्जनी शोधनी स्यात्मकरोऽवकारस्तया                 | ६२९ |
| क्षिप्ते मुखं नि सरणं मनिवेशो निकर्षणम्              | ६३० |
| समां संवस्यग्रामो वेदमभूर्वास्तुरस्त्रियाम्          | ६३१ |
| ग्रामान्तमुपगल्य स्यात्सीर्मसीमे स्त्रियामुभे        | ६३२ |
| घोषं आभीरपल्ली स्यात्पक्ष्णं श्वरालयः                | ६३३ |

४. शैल्यर्ग ।

महीध्रे शिखरिक्षमाभृदहार्यधरपर्वताः ६३४

|  |     |
|--|-----|
| अद्रिगोत्रगिरिग्रावाचलशैलशिलोच्चयाः                    | ६३५ |
| लोकालोर्कश्चक्रवालस्त्रिकूटस्त्रिककुत्समा              | ६३६ |
| अस्तस्तु चरमः क्षमाभृदुदयः पूर्वपर्वतः                 | ६३७ |
| हिमवान्निपधो विन्ध्यो माल्यवान्पारियात्रकः             | ६३८ |
| गन्धमादनमन्ये च हेमकूटादयो नगाः                        | ६३९ |
| पापाणप्रस्तरग्रावोपलाश्मानः शिला दृपत्                 | ६४० |
| कूटोऽस्त्री शिखरं शृङ्गं प्रपातस्त्वतटो भृगुः          | ६४१ |
| कटकोऽस्त्री नितम्बोऽद्रेः स्तः प्रस्थः सानुरस्त्रियाम् | ६४२ |
| उत्सः प्रस्रवणं वारिप्रवाहो निर्झरो झरः                | ६४३ |
| दरी तु कंदरो वा स्त्री देवखार्तविले गुहा               | ६४४ |
| गह्वरं गण्डशैलास्तु च्युताः स्थूलोपला गिरैः            | ६४५ |
| ‘दन्तकास्तु वहिस्तिर्यक्प्रदेशान्निर्गतागिरैः’         | *** |
| खर्नि स्त्रियामाकरः स्यात्पादाः प्रत्यन्तपर्वताः       | ६४६ |
| उपत्यकाद्रैरासन्ना भूमिरूर्ध्वमधित्यका                 | ६४७ |
| धातुर्मनःशिलाद्यद्रेगैरिकं तु विशेषतः                  | ६४८ |
| निकुञ्जकुञ्जौ वा क्लीवे लतादिपिहितोदरे                 | ६४९ |

## ५. वनौपधिवर्गः ।

|   |     |
|---|-----|
| अटव्यरण्यं विपिनं गहनं काननं वनम्       | ६५० |
| महारण्यमरण्यानी गृहारामास्तु निष्कुटाः  | ६५१ |
| आरामः स्यादुपवनं कृत्रिमं वनमेव यत्     | ६५२ |
| अमाल्यगणिकागेहोपवने वृक्षवाटिका         | ६५३ |
| पुमानाक्रीड उद्यानं राज्ञः साधारणं वनम् | ६५४ |

|  |     |
|--|-----|
| स्यादेतदेव प्रमदवनमन्तःपुरोचितम्                     | ६५५ |
| वीथ्यालिरावलिः पङ्क्तिः श्रेणी लैखास्तु राजयः        | ६५६ |
| वन्या वनसमूहे स्यादङ्कुरोऽभिनवोद्भिदि                | ६५७ |
| वृक्षो महीरुहः शाखी विटपी पादपस्तरुः                 | ६५८ |
| अनोकहः कुटः गाल पलाशी द्रुद्रुमागमाः                 | ६५९ |
| वानस्पत्यः फलैः पुष्पात्तैरपुष्पाद्वनस्पतिः          | ६६० |
| ओषधयः फलपाकान्ताः स्युरवन्ध्यः फलेग्रहि              | ६६१ |
| वन्ध्योऽफलोऽवकेशी च फलवान्फलिनः फली                  | ६६२ |
| प्रफुल्लोत्फुल्लसंफुल्ल्याकोशविकचस्फुटाः             | ६६३ |
| फुल्लश्चते विकसिते स्युरवन्ध्यदियस्त्रिषु            | ६६४ |
| स्थाणुर्वा ना ध्रुवः शङ्कुर्द्विष्वशाखाशिफः क्षुर्यः | ६६५ |
| अप्रकाण्डे स्तम्बगुल्मौ वल्ली तु व्रततिलिता          | ६६६ |
| लता प्रतानिनी वीरुद्रुल्मिन्युलप इत्यपि              | ६६७ |
| नगाद्यारोह उच्छ्रय उत्सेधश्चोच्छ्रयश्च सः            | ६६८ |
| अस्त्री प्रकाण्डः स्कन्धः स्यान्मूलाच्छाखावधिस्तरोः  | ६६९ |
| समे शाखालिते स्कन्धशाखाशाले शिफाजटे                  | ६७० |
| शाखाशिफावरोहः स्यान्मूलाच्चाग्रं गता लता             | ६७१ |
| शिरोग्रं शिखरं वा ना मूलबुधोऽद्विनामकः               | ६७२ |
| सारो मज्जा नरि त्वक्छी वल्क वल्कलमस्त्रियाम्         | ६७३ |
| काष्ठं दाविन्धनं त्वेध इध्ममेधः समित्स्त्रियाम्      | ६७४ |
| निष्कुह कोटरं वा ना वल्लरिर्मञ्जरिः स्त्रियौ         | ६७५ |
| पद्म पलाश छदनं दलं पर्णं छदः पुमान्                  | ६७६ |

पलवोऽस्त्री किसलयं विस्तारो विटपोऽस्त्रियाम्  
 वृक्षादीनां फलं सस्यं वृन्तं प्रसववन्धनम्  
 आम्रे फले शलाङ्गः स्याच्छुष्के वानमुभे त्रिषु  
 क्षारको जालकं क्लीवे कलिका कोरकः पुमान्  
 स्याद्गुच्छकस्तु स्तवकः कुङ्कुमलो मुकुलोऽस्त्रियाम्  
 स्त्रियः सुमनसः पुष्पं प्रसूनं कुसुमं सुमम्  
 मकरन्दः पुष्परसः परागः सुमनोरजः  
 द्विहीनं प्रसवे सर्वं हरीतक्यादयः स्त्रियाम्  
 आश्वत्थवैणवप्लाक्षनैयग्रोधैर्जुदं फले  
 बार्हतं च फले जम्बवा जम्बूः स्त्री जम्बु जाम्बवम्  
 पुष्पे जातीप्रभृतयः स्वलिङ्गा ब्रीहयः फले  
 विदार्याद्यास्तु मूलेऽपि पुष्पे क्लीवेऽपि पाटला  
 वोधिद्रुमश्चलदलः पिप्पलः कुञ्जराशनः  
 अश्वत्थेऽथ कपित्थे स्युर्दधित्थगार्हिमन्मथाः  
 तस्मिन्दधिफलः पुष्पफलदन्तशठविपि  
 उदुम्बरो जन्तुफलो यज्ञाङ्गो हेमदुग्धकः  
 कोविदारो चमरिकः कुदालो युगपत्रकः  
 सप्तपर्णो विशालत्वर्कशारदो विषमच्छदः  
 आरग्वधे राजवृक्षशंपार्कचतुरङ्गुलाः  
 आरेवतव्याधिघातकृतमालसुवर्णकाः  
 स्युर्जम्बीरे दन्तशठजम्भजम्भीरजम्भलाः  
 वरुणो वरणः सेतुस्तिक्तशार्कः कुमारकः

६७७

६७८

६७९

६८०

६८१

६८२

६८३

६८४

६८५

६८६

६८७

६८८

६८९

६९०

६९१

६९२

६९३

६९४

६९५

६९६

६९७

६९८

|   |     |
|---|-----|
| पुंनागे पुरुपस्तुङ्गः केसरो देववल्लभः         | ६९९ |
| पारिभद्रे निम्बतरुर्मन्दारः पारिजातकः         | ७०० |
| तिनिशे स्यन्दनो नेमी रथद्वुरतिमुक्तकः         | ७०१ |
| वज्रुलश्चित्रकृच्चाथ द्वौ पीतनकपीतनौ          | ७०२ |
| आम्नातके मधूके तु गुडपुष्पमधुद्रुमौ           | ७०३ |
| वानप्रस्थमधुष्ठीलौ जलजेऽत्र मधूलकः            | ७०४ |
| पीलौ गुडफलः ससी तस्मिस्तु गिरिसंभवे           | ७०५ |
| अक्षोटकन्दरालौ द्वावङ्कोटे तु निकोचक          | ७०६ |
| पलाशे किशुकं पर्णी वातपोषोऽथ वेतसे            | ७०७ |
| रथाभपुष्पविदुर्लगीतवानीरवज्जुलौ               | ७०८ |
| द्वौ परिव्याधविदुलौ नादेयी चाम्बुवेतसे        | ७०९ |
| शोभाञ्जने शिशुतीक्ष्णगन्धकाक्षीर्वमोचकाः      | ७१० |
| रक्तोऽसौ मधुशिशुः स्यादरिष्टः केनिलः समौ      | ७११ |
| विले शाण्डिल्यशैलपौ मालूरश्रीफलविपि           | ७१२ |
| प्लक्षो जटी पर्कटी स्याद्वयग्रोधो बहुपाद्विदः | ७१३ |
| गालव शावरो लोध्रस्तिरीटस्तिर्ल्वमार्जनौ       | ७१४ |
| आर्घश्चतो रसालोऽसौ सहकारोऽतिसौरभः             | ७१५ |
| कुम्भोल्लिखलकं व्रीवे कौशिको गुग्गुलु पुरः    | ७१६ |
| शेखु श्लेष्मातकः शीत उद्दालो बहुवारकः         | ७१७ |
| राजादन प्रियाल स्यात्सन्नकद्रुधनु पटः         | ७१८ |
| गम्भारी सर्वतोभद्रा काश्मरी मधुपर्णिका        | ७१९ |
| श्रीपर्णी भद्रपर्णी च काश्मर्यश्चाप्यथ द्वयोः | ७२० |

|  |     |
|--|-----|
| कर्कन्धूवदरी कोलिः कोलं कुवलफेनिले             | ७२१ |
| सौवीरं वदरं घोण्टाप्यथ स्यात्स्वादुकण्टकः      | ७२२ |
| विकङ्कतः सुवावृक्षो ग्रन्थिलो व्याघ्रपादपि     | ७२३ |
| ऐरावतो नागरङ्गो नादेयी भूमिजम्बुका             | ७२४ |
| तिन्दुकः स्फूर्जकः कालस्कन्धश्च शितिसारके      | ७२५ |
| काकेन्दुः कुलकः काकतिन्दुकः काकपीलुके          | ७२६ |
| गोलीढो झाटलो घण्टापटलिमोक्षमुष्ककौ             | ७२७ |
| तिलकः धुरकः श्रीमान्समौ पिचुलझावुकौ            | ७२८ |
| श्रीपाणिका कुमुदिका कुम्भी कैडयकट्फला          | ७२९ |
| क्रमुकः पट्टिकाख्यः स्यात्पट्टी लाक्षाप्रसादनः | ७३० |
| तूदस्तु यूपः क्रमुको ब्रह्मण्यो ब्रह्मदारु च   | ७३१ |
| तूलं च नीपप्रियककदम्बास्तु हलिप्रिये           | ७३२ |
| वीरवृक्षोऽरुण्करोऽग्निमुखी भल्लातकी त्रिषु     | ७३३ |
| गर्दभाण्डे कन्दरालकपीतनसुपार्श्वकाः            | ७३४ |
| प्लक्षश्च तिन्तिडी चिञ्चाम्बिलकाथो पीतसारके    | ७३५ |
| सर्जकासनवन्धूकपुष्पप्रियकजीवकाः                | ७३६ |
| साले तु सर्जकाश्याश्वकर्णकाः सस्यसम्भरः        | ७३७ |
| नदीसर्जो वीरतरुस्त्रिद्रुः ककुभोऽर्जुनः        | ७३८ |
| राजादनः फलाध्यक्षः क्षीरिकायासथ द्वयोः         | ७३९ |
| इङ्गदी तापसतरुर्भुजं चर्मिमृदुत्वचौ            | ७४० |
| पिच्छिला पूरणी मोचा स्थिरायुः शाल्मलिद्वयोः    | ७४१ |
| पिच्छा तु शाल्मलीवेष्टे रोचनः कूटशाल्मलिः      | ७४२ |

|   |     |
|---|-----|
| चिरविल्वो नक्तमालः करजश्च करञ्जके           | ७४३ |
| प्रकीर्यः पृतिकरजः पूतिकः कलिमारकः          | ७४४ |
| करञ्जभेदाः पट्टग्रन्थो मर्कट्यङ्गारवल्लरी   | ७४५ |
| रोही रोहितकः शीहशत्रुर्दाडिमपुष्पकः         | ७४६ |
| गायत्री वालतनयः खदिरो दन्तधावनः             | ७४७ |
| अरिमेदो विद्रवदिरे कदरः सदिरे सिते          | ७४८ |
| सोमवल्कोऽप्यथ व्याघ्रपुच्छगन्धर्वहस्तकौ     | ७४९ |
| एरण्ड उरुवृकश्च रुचकश्चित्रकश्च सः          | ७५० |
| चञ्चुः पञ्चाङ्गुलो मण्डवर्धमानव्यडम्बकाः    | ७५१ |
| अल्पा शमी शमीरः स्याच्छमी सक्तुफला गिवा     | ७५२ |
| पिण्डीतको मरुवकः श्वसनः करहाटकः             | ७५३ |
| शल्यश्च मदने शक्रपादपः पारिभद्रकः           | ७५४ |
| भद्रदारु द्रुकिलिमं पीतदारु च दारु च        | ७५५ |
| पुतिकाष्ठं च सप्त स्युर्देवदारुण्यथ द्वयोः  | ७५६ |
| पाटलिः पाटला मोघा काचस्थाली फलेरुहा         | ७५७ |
| कृष्णवृन्ता कुबेराक्षी श्यामा तु महिलाह्वया | ७५८ |
| लता गोवन्दिनी गुन्द्रा प्रियङ्गुः फलिनी फली | ७५९ |
| विष्वक्सेना गन्धफली काश्मभा प्रियकश्च सा    | ७६० |
| मण्डूकपर्णपत्रोर्णनटकद्रुद्रुण्डुका         | ७६१ |
| स्योनाकशुकनासर्षदीर्घवृन्तकुटन्नटा-         | ७६२ |
| शोणकक्षारलौ तिष्यफला त्वामलकी त्रिषु        | ७६३ |
| अमृता च वयस्या च त्रिलिङ्गस्तु विभीतक-      | ७६४ |



|  |     |
|--|-----|
| नाक्षस्तुपः कर्षफलो भूतावासः कलिद्रुमः         | ७६५ |
| अभया त्वव्यथा पथ्या कायस्था पूतनामृता          | ७६६ |
| हरीतकी हैमवती चेतकी श्रेयसी शिवा               | ७६७ |
| पीतद्रुः सरलः पूतिकाष्ठं चाथ द्रुमोत्पलः       | ७६८ |
| कर्णिकारः परिव्याधो लकुचो लिकुचो डहुः          | ७६९ |
| पनसः कण्टकिफलो निचुलो हिज्जलोऽम्बुजः           | ७७० |
| काकोदुम्बरिका फल्गुर्मलयूर्जघनेफला             | ७७१ |
| अरिष्टः सर्वतोभद्रहिङ्गुनिर्यासमालकाः          | ७७२ |
| पिचुमन्दश्च निम्बेऽथ पिच्छिलागुरुशिशपा         | ७७३ |
| कपिला भस्मगर्भा सा शिरीषस्तु कपीतनः            | ७७४ |
| भण्डिलोऽप्यथ चाम्पेयश्चम्पको हेमपुष्पकः        | ७७५ |
| एतस्य कलिका गन्धफली स्यादथ केसरे               | ७७६ |
| वकुलो वज्जुलोऽशोके समौ करकदाडिमौ               | ७७७ |
| चाम्पेयः केसरो नागकेसरः काञ्चनाह्वयः           | ७७८ |
| जया जयन्ती तर्कारी नादेयी वैजयन्तिका           | ७७९ |
| श्रीपर्णमग्निमन्थः स्यात्कणिका गणिकारिका       | ७८० |
| जयोऽथ कुटजः शक्रो वत्सको गिरिमल्लिका           | ७८१ |
| एतस्यैव कलिङ्गेन्द्रयवभद्रयवं फले              | ७८२ |
| कृष्णपाकफलाविश्रुपेणाः करमर्दके                | ७८३ |
| कालस्कन्धस्तमालः स्यात्तापिच्छोऽप्यथ सिन्दुके  | ७८४ |
| सिन्दुवारेन्द्रसुरसौ निर्गुण्डीन्द्राणिकेत्यपि | ७८५ |
| वेणी खरा गरी देवताडो जीमूत इत्यपि              | ७८६ |

|  |     |
|--|-----|
| श्रीहस्तिनी तु भूरुण्डी तृणगून्यं तु मल्लिका | ७८७ |
| भूपदी शीतभीरुश्च सैवास्फोटा वनोद्भवा         | ७८८ |
| शेफालिका तु सुवहा निर्गुण्डी नीलिका च सा     | ७८९ |
| सितासौ श्वेतसुरसा भूतवेद्यथ मागधी            | ७९० |
| गणिका यूथिकाम्वष्ठा सा पीता हेमपुष्पिका      | ७९१ |
| अतिमुक्तः पुण्ड्रकः स्याद्वासन्ती माधवी लता  | ७९२ |
| सुमना मालती जातिः ससला नवमालिका              | ७९३ |
| माष्यं कुन्दं रक्तकस्तु बन्धूको बन्धुजीवकः   | ७९४ |
| सहा कुमारी तरणिरम्लानस्तु महासहा             | ७९५ |
| तत्र शोणे कुरवकस्तत्र पीते कुरण्टकः          | ७९६ |
| नीली झिण्डी द्वयोर्वाणा दासी चार्तगलश्च सा   | ७९७ |
| सैरेयकस्तु झिण्डी स्यात्तस्मिन्कुरवकोऽरुणे   | ७९८ |
| पीता कुरण्टको झिण्डी तस्मिन्सहचरी द्वयोः     | ७९९ |
| ओण्डपुष्प जपापुष्पं वज्रपुष्पं तिलस्य यत्    | ८०० |
| प्रतिहासशतप्रासचण्डातहयमारकाः                | ८०१ |
| करवीरे करीरे तु ककरग्रन्थिलावुभा             | ८०२ |
| उन्मत्तः कितवो धूर्तो धत्तूरः कनकाहुय        | ८०३ |
| मातुलो मदनश्चास्य फले मातुलपुत्रक            | ८०४ |
| फलपूरो बीजपूरो रुचको मातुलुङ्गके             | ८०५ |
| समीरणो मरुतकः प्रस्थपुष्प फणिजक              | ८०६ |
| जम्बीरोऽप्यथ पर्णासे कठिञ्जरुटेर्गौ          | ८०७ |
| सितंऽर्जकोऽत्र पाठी तु चित्रको यहिसनकः       | ८०८ |

|  |     |
|--|-----|
| वचोग्रगन्धा पङ्कजगन्धा गोलोमी शतपर्विका              | ८५३ |
| शुक्ला हैमवती वैद्यमातृसिंह्यौ तु वाशिका             | ८५४ |
| वृषोऽटरूपः सिंहास्यो वासको वाजिदन्तकः                | ८५५ |
| आस्फोटा गिरिकर्णी स्याद्विष्णुकान्तापराजिता          | ८५६ |
| इक्षुगन्धा तु काण्डेक्षुकोकिलाक्षेक्षुरक्षुराः       | ८५७ |
| शालेयः स्याच्छीतशिवश्छत्रा मधुरिका मिसिः             | ८५८ |
| मिश्रेयाप्यथ सीहुण्डो वज्रः स्तुक्स्त्री स्तुही गुडा | ८५९ |
| समन्तदुग्धाथो वेल्लममोघा चित्रतण्डुला                | ८६० |
| तण्डुलश्च कृमिघ्नश्च विडङ्गं पुनपुंसकम्              | ८६१ |
| वला वाट्यालका घण्टारवा तु शणपुष्पिका                 | ८६२ |
| मृद्धीका गोस्तनी द्राक्षा स्वाद्री मधुरसेति च        | ८६३ |
| सर्वानुभूतिः सरला त्रिपुटा त्रिवृता त्रिवृत          | ८६४ |
| त्रिभण्डी रोचनी श्यामापालिन्द्यौ तु सुषेणिका         | ८६५ |
| काला मसूरविदलार्धचन्द्रा कालमेपिका                   | ८६६ |
| मधुकं क्लीतकं यष्टिमधुकं मधुयष्टिका                  | ८६७ |
| विदारी क्षीरशुक्लेक्षुगन्धा क्रोष्ट्री तु या सिता    | ८६८ |
| अन्या क्षीरविदारी स्यान्महाश्वेतर्क्षगन्धिका         | ८६९ |
| लाङ्गली शारदी तोयपिप्पली शकुलादनी                    | ८७० |
| खराश्वा कारवी दीप्यो मयूरो लोचमस्तकः                 | ८७१ |
| गोपी श्यामा शारिवा स्यादनन्तोत्पलशारिवा              | ८७२ |
| योग्यमृद्धिः सिद्धिलक्ष्म्यौ वृद्धेरप्याह्वया इमे    | ८७३ |
| कदली वारणबुसा रम्भा मोचांशुमत्फला                    | ८७४ |

|  |     |
|--|-----|
| काष्ठीला मुहपणी तु काकमुद्रा सहेत्यपि        | ८७५ |
| वार्ताकी हिङ्गुली सिही भण्टाकी दुष्प्रधारिणी | ८७६ |
| नाकुली सुरसा रास्ना सुगन्धा गन्धनाकुली       | ८७७ |
| नकुलेष्टा भुजंगाक्षी छत्राकी सुवहा च सा      | ८७८ |
| विदारिगन्धांशुमती सालपणी स्थिरा ध्रुवा       | ८७९ |
| तुण्डिकेरी समुद्रान्ता कार्पासी वदरेति च     | ८८० |
| भारद्वाजी तु सा वन्या शृङ्गी तु ऋपभो वृषः    | ८८१ |
| गाङ्गेरुकी नागवला क्षपा हस्वगवेधुका          | ८८२ |
| धामार्गवी घोषकः स्यान्महाजाली स पीतकः        | ८८३ |
| ज्यौत्स्नी पटोलिका जाली नादेयी भूमिजम्बुका   | ८८४ |
| स्याल्लङ्गलिक्यग्निशिखा काकाङ्गी काकनासिका   | ८८५ |
| गोधापदी तु सुवहा मुसली तालमूलिका             | ८८६ |
| अजशृङ्गी विपाणी स्याद्गोजिह्वादार्विके समे   | ८८७ |
| ताम्बूलवल्ली ताम्बूली नागवल्लभप्यथ द्विजा    | ८८८ |
| हरेणू रेणुका कौन्ती कपिला भस्मगन्धिनी        | ८८९ |
| एलावालुकमैलेयं सुगन्धि हरिवालुकम्            | ८९० |
| वालुकं चाथ पालङ्क्यां मुकुन्दः कुन्दकुन्दुरु | ८९१ |
| बाल हीवेरवर्हिष्ठोदीच्यं केशाम्बुनाम च       | ८९२ |
| कालानुसार्यवृद्धाश्मपुष्पशीतशिवानि तु        | ८९३ |
| शैलेय तालपर्णी तु दैत्या गन्धकुटी मुरा       | ८९४ |
| गन्धिनी गजभक्ष्या तु सुवहा सुरभी रसा         |     |
| सलकी हादिनीति च                              |     |

|   |     |
|---|-----|
| अग्निज्वालासुभिक्षे तु धातकी धातुपुष्पिका         | ८९७ |
| पृथ्वीका चन्द्रवालैला निष्कुटिर्वहुलाथ सा         | ८९८ |
| सूक्ष्मोपकुञ्चिका तुत्था कोरङ्गी त्रिपुटा त्रुटिः | ८९९ |
| व्याधिः कुट्टं पारिभाव्यं वाप्यं पाकलमुत्पलम्     | ९०० |
| शङ्खिनी चोरपुष्पी स्यात्केशिन्यथ वितुन्नकः        | ९०१ |
| झटामलाञ्जटा ताली शिवा तामलकीति च                  | ९०२ |
| प्रपौण्डरीकं पौण्डर्यमथ तुन्नः कुवेरकः            | ९०३ |
| कुणिः कच्छः कान्तलको नन्दिवृक्षोऽथ राक्षसी        | ९०४ |
| चण्डा धनहरी क्षेमदुष्पत्रगणहासकाः                 | ९०५ |
| व्याडायुधं व्याघ्रनखं करजं चक्रकारकम्             | ९०६ |
| सुपिरा विद्रुमलता कपोताङ्घ्रिर्नदी नली            | ९०७ |
| धमन्यञ्जनकेशी च हनुर्हृद्विलासिनी                 | ९०८ |
| शुक्तिः शङ्खः खुरः कोलदलं नखमथाढकी                | ९०९ |
| काक्षी मृत्स्ना तुवरिका मृत्तालकसुराष्ट्रजे       | ९१० |
| कुटन्नटं दाशपुरं वानेयं परिपेलवम्                 | ९११ |
| स्रवगोपुरगोनर्दकैवर्तीमुस्तकानि च                 | ९१२ |
| ग्रन्थिपर्णं शुक्रं बर्हं पुष्पं स्थौणेयकुङ्कुरे  | ९१३ |
| मरुन्माला तु पिशुना स्पृक्का देवी लता लघुः        | ९१४ |
| समुद्रान्ता वधूः कोटिवर्षा लङ्कोपिकेत्यपि         | ९१५ |
| तपस्विनी जटामांसी जटिला लोमशा मिसी                | ९१६ |
| त्वक्पत्रमुत्कटं भृङ्गं त्वचं चोचं वराङ्गकम्      | ९१७ |
| कर्चूरको द्राविडकः काल्पको वेधमुख्यकः             | ९१८ |

|   |     |
|---|-----|
| ओषधो जातिमात्रे स्युरजातौ सर्वमौषधम्            | ९१९ |
| शाकाख्यं पत्रपुष्पादि तण्डुलीयोऽल्पमारिषः       | ९२० |
| विशल्याग्निशिखानन्ता फलिनी शुक्रपुष्पिका        | ९२१ |
| स्यादक्षगन्धा छगलान्न्यावेगी वृद्धदारकः         | ९२२ |
| जुङ्गो ब्राह्मी तु मत्स्याक्षी वयस्था सोमवल्लरी | ९२३ |
| पटुपर्णी हैमवती स्वर्णक्षीरी हिमावती            | ९२४ |
| हयपुच्छी तु काम्बोजी मापपर्णी महासहा            | ९२५ |
| तुण्डिकेरी रक्तफला विम्बिका पीलुपर्ण्यपि        | ९२६ |
| वर्चरा कवरी तुङ्गी सरपुष्पाजगन्धिका             | ९२७ |
| एलापर्णी तु सुवहा रास्ता युक्तरसा च सा          | ९२८ |
| चाङ्गेरी चुक्रिका दन्तशठाम्बष्ठाम्ललोणिका       | ९२९ |
| सहस्रवेधी चुक्रोऽम्लवेतसः शतवेध्यपि             | ९३० |
| नमस्कारी गण्डकारी समङ्गा खदिरेत्यपि             | ९३१ |
| जीवन्ती जीवनी जीवा जीवनीया मधुस्रवा             | ९३२ |
| कूर्चशीर्षो मधुरकः शृङ्गह्रस्वाङ्गजीवका         | ९३३ |
| किराततिक्तो भूनिम्बोऽनार्यतिक्तोऽथ सप्तला       | ९३४ |
| विमला सातला भूरिफेना चर्मकपेत्यपि               | ९३५ |
| वायसोली स्वादुरसा वयस्थाथ मकूलकः                | ९३६ |
| निकुम्भो दन्तिका प्रत्यक्श्रेण्युदुम्बरपर्ण्यपि | ९३७ |
| अजमोदा तूग्रगन्धा ब्रह्मदर्भा यवानिका           | ९३८ |
| मूले पुष्करकाश्मीरपद्मपत्राणि पौष्करे           | ९३९ |
| अव्यथातिचरा पद्मा चारटी पद्मचारिणी              | ९४० |

|   |     |
|---|-----|
| काम्पित्यः कर्कशश्चन्द्रो रक्ताङ्गो रोचनीत्यपि  | ९४१ |
| प्रपुन्नाडस्त्वेडगजो दद्रुघ्नश्चक्रमर्दकः       | ९४२ |
| पद्माट उरणाख्यश्च पलाण्डुस्तु सुकन्दकः          | ९४३ |
| लतार्कदुर्द्धमौ तत्र हरितेऽथ महौषधम्            | ९४४ |
| लशुनं गृञ्जनारिष्टमहाकन्दरसोनकाः                | ९४५ |
| पुनर्नवा तु शोथघ्नी वितुन्नं सुनिपण्णकम्        | ९४६ |
| स्याद्वातकः शीतलोऽपराजिता शणपण्यपि              | ९४७ |
| पारावताङ्घ्रिः कटभी पण्या ज्योतिष्मती लता       | ९४८ |
| वार्षिकं त्रायमाणा स्यात्त्रायन्ती बलभद्रिका    | ९४९ |
| विष्वक्सेनप्रिया गृष्टिर्वाराही वदरेत्यपि       | ९५० |
| मार्कवो भृङ्गराजः स्यात्काकमाची तु वायसी        | ९५१ |
| शतपुष्पा सितच्छत्रातिच्छत्रा मधुरा मिसिः        | ९५२ |
| अवाक्पुष्पी कारवी च सरणा तु प्रसारिणी           | ९५३ |
| तस्यां कटंभरा राजबला भद्रवलेत्यपि               | ९५४ |
| जनी जतूका रजनी जतुकृच्चक्रवर्तिनी               | ९५५ |
| संस्पर्शार्थ शटी गन्धमूली पङ्कगन्धिकेत्यपि      | ९५६ |
| कर्चूरोऽपि पलाशोऽथ कारवेष्टः कठिलकः             | ९५७ |
| सुषवी चाथ कुलकं पटोलस्तिक्तकः पटुः              | ९५८ |
| कूष्माण्डकस्तु कर्कारुरुर्वारुः कर्कटी स्त्रियौ | ९५९ |
| इक्ष्वाकुः कटुतुम्बी स्यात्तुम्ब्यलावूरुभे समे  | ९६० |
| चित्रा गवाक्षी गोडुम्बा विशाला त्विन्द्रवारुणी  | ९६१ |
| अर्शोघ्नः सूरणः कन्दो गण्डीरस्तु समष्टिला       | ९६२ |

|   |     |
|---|-----|
| कलम्ब्युपोदिका स्त्री तु मूलकं हिलमोर्चिका    | ९६३ |
| वास्तुकं शाकभेदाः स्युर्दूर्वा तु शतपर्विका   | ९६४ |
| रहस्रवीर्याभार्गव्यौ रुहानन्ताय सा सिता       | ९६५ |
| गेलोमी शतवीर्या च गण्डाली शकुलाक्षक-          | ९६६ |
| कुरुविन्दो मेघनामा मुस्तामुस्तकमस्त्रियाम्    | ९६७ |
| स्याद्भद्रमुस्तको गुन्द्रा चूडाला चक्रलोच्चटा | ९६८ |
| वशे त्वक्सारकर्मारत्वचिसारतृणध्वजाः           | ९६९ |
| शतपर्वा यवफलो वेणुमस्करतेजनाः                 | ९७० |
| वेणवः कीचकास्ते स्युर्ये स्वनन्त्यनिलोद्धता-  | ९७१ |
| ग्रन्थिर्ना पर्वपरुपी गुन्द्रस्तेजनक शरः      | ९७२ |
| नडस्तु धमन. पोटगलोऽथो कागमस्त्रियाम्          | ९७३ |
| इक्षुगन्धा पोटगलः पुंसि भूम्नि तु वल्वजाः     | ९७४ |
| रसाल इक्षुस्तम्भेदाः पुण्ड्रकान्तारकादय-      | ९७५ |
| स्याद्वीरण वीरतरं मूलेऽस्योशीरमस्त्रियाम्     | ९७६ |
| अभयं नलदं सेव्यममृणाल जलाशयम्                 | ९७७ |
| लामज्जकं लघुलयमवढाहेष्टकापथे                  | ९७८ |
| नडादयस्तृणं गर्मुच्छयामाकप्रमुखा अपि          | ९७९ |
| अस्त्री कुश कुथो दर्भ- पवित्रमथ कत्तृणम्      | ९८० |
| पौरसौगन्धिकध्यामदेवजगधकरौहिणम्                | ९८१ |
| छत्रातिच्छत्रपालघ्नौ भालातृणकभूस्तृणे         | ९८२ |
| शष्पं बालतृण घासो यवसं तृणमर्जुनम्            | ९८३ |
| तृणानां महतिस्तृण्या नड्या तु नटसंहतिः        | ९८४ |



|  |      |
|--|------|
| तृणराजाह्वयस्तालो नालिकेरस्तु लाङ्गली          | ९८५  |
| घोण्टा तु पूगः क्रमुकों गुवाकः खपुरोऽस्य तु    | ९८६  |
| फलमुद्गेगमेते च हिन्तालसहितास्त्रयः            | ९८७  |
| खर्जूरः केतकी ताली खर्जूरी च तृणद्रुमाः        | ९८८  |
| ६. सिंहादिवर्गः ।                              |      |
| सिंहो मृगेन्द्रः पञ्चास्यो हर्यक्षः केसरी हरिः | ९८९  |
| ‘कण्ठीरवो मृगारिपुर्मृगद्विष्टिर्मृगाशनः       | ९९०  |
| पुण्डरीकः पञ्चनखाचित्रकायमृगद्विषः’            | ९९१  |
| शार्दूलद्वीपिनौ व्याघ्रे तरक्षुस्तु मृगादनेः   | ९९२  |
| वरार्हः सूकरो घृष्टिः कोलः पोत्री किरः किटिः   | ९९३  |
| दंष्ट्री घोणी स्तब्धरोमा क्रोडो भूदार इत्यपि   | ९९४  |
| कर्पिलवर्गप्लवर्गशाखामृगवलीमुखाः               | ९९५  |
| मर्कटो वानरः कीशो वनौका अथ भल्लुक              | ९९६  |
| ऋक्षौ च्छभल्लभल्लुका गण्डके खड्गखड्गिनौ        | ९९७  |
| लुलायो महिषो बाहद्विपत्कासरसैरिभाः             | ९९८  |
| स्त्रियां शिवा भूरिमार्यगोमायुर्मृगधूर्तकाः    | ९९९  |
| शृगालवञ्चकक्रोष्टुफेरुफेरवेजम्बुकाः            | १००० |
| ओतुर्विडालो मार्जारो वृषदंशक आखुभुक्           | १००१ |
| त्रयो गौधेरगौधारगौधेया गोधिकात्मजे             | १००२ |
| श्वावित्तु शल्यस्तलोन्नि शलली शललं शल्लु       | १००३ |
| वातप्रमोर्वातमृगः कोकस्त्वहीहामृगो वृकः        |      |
| मृगे कुरङ्गवाताशुहरिर्नाजिनयोर्नयः             |      |

|   |      |
|---|------|
| ऐणेयमण्याश्चर्माद्यमेणस्यैर्णमुभे त्रिषु      | १००४ |
| कदली कन्दली चीर्नश्चमूरुप्रियकावपि-           | १००५ |
| समूरुश्चिति हरिणा अमी अजिनयोनयः               | १००६ |
| कृष्णसाररुरुन्यङ्कुरङ्कुशेम्बररौहिपा-         | १००७ |
| गोकर्णपृषतैणश्यैरौहिताश्चेमरो मृगाः           | १००८ |
| गधर्वः गरभो रामः सुमरो गवयः शशः               | १००९ |
| इत्यादयो मृगेन्द्राद्या गवाद्याः पशुजातयः     | १०१० |
| 'अन्धोगन्ता तु खनको वृकः पुंध्यज उन्दुरः'     | १०११ |
| उन्दुरर्मूपकोऽप्याखुगिरिका बालमूपिका          | १०१२ |
| सरटः कृकलासः स्यान्मुसली गृहगोधिका            | १०१३ |
| लूता स्त्री तन्तुवायोर्णनार्भमर्कटका समाः     | १०१४ |
| नीलङ्गुस्तु कृमिः कर्णजलौका शतपद्भुमे         | १०१५ |
| वृश्चिकः शूककीटः स्यादलिद्रुणौ तु वृश्चिके    | १०१६ |
| पारावतः कलरवः कैपोतोऽथ शशादनः                 | १०१७ |
| पत्री श्येन उलूकस्तु वायसारातिपेचका           | १०१८ |
| 'दिवान्धः कौशिको धूको दिवाभीतो निशादनः'       | १०१९ |
| व्याघाटः स्याद्भरद्वाजः खञ्जरीटस्तु सञ्जन     | १०२० |
| लोहपृष्ठस्तु कृङ्कः स्यादथ चार्पः किक्कीदिविः | १०२१ |
| कलिङ्गभृङ्गधूम्याटो अथ स्याच्छतपत्रकः         | १०२२ |
| दार्वाघाटोऽथ सारङ्गस्तोर्ककश्चातकः समा        | १०२३ |
| कृकवाकुस्ताम्रचूडः उकुटश्चरणायुधः             |      |
| चटका कलिङ्ग स्यात्तस्य स्त्री चटका तयो.       |      |

|   |      |
|---|------|
| पुमपत्ये चाटकैरुपत्ये चटकैव सा                | १०२४ |
| कर्करेडुः करेडुः स्यात्कृकर्षकरो समौ          | १०२५ |
| वनप्रियः परभृतः कोकिलः पिक इत्यपि             | १०२६ |
| काके तु करटारिष्टवलिपुष्टसकृत्प्रजाः          | १०२७ |
| ध्वाङ्गात्मघोषपरभृद्बलिभुग्वायसा अपि          | १०२८ |
| स एव च चिरंजीवी चैकदृष्टिश्च मौकुलिः          | ***  |
| द्रोणकार्कस्तु काकोलो दात्युहः कालकण्टकः      | १०२९ |
| आतापिचिलौ दाक्षार्यगृध्रौ कीरशुकौ समौ         | १०३० |
| कुड्कौञ्चोऽथ वकः कहः पुष्कराहस्तु सारसः       | १०३१ |
| कोकश्चक्रश्चक्रवाकौ रथाङ्गाह्वयनामकः          | १०३२ |
| कादम्बैः कलहंसेः स्यादुत्क्रोशकुररौ समौ       | १०३३ |
| हंसास्तु श्वेतगरुतश्चक्राङ्गा मानसौकसः        | १०३४ |
| राजहंसास्तु ते चंचुचरणैर्लोहितैः सिताः        | १०३५ |
| मलिनैर्मलिकाक्षास्ते धार्तराष्ट्राः सितेतरैः  | १०३६ |
| शरारिराटिराडिश्च वलाका विसकण्ठिका             | १०३७ |
| हंसस्य योषिद्वरदा सारसस्य तु लक्ष्मणा         | १०३८ |
| जितुकोजिनपत्रा स्यात्परोष्णी तैलपायिका च      | १०३९ |
| वर्वणा मक्षिका नीला सरघा मधुमक्षिका           | १०४० |
| पतङ्गिका पुत्तिका स्यादंशस्तु वनमक्षिका       | १०४१ |
| दंशी तज्जातिरल्पा स्याद्गन्धोर्ला वरदा द्वयोः | १०४२ |
| भृङ्गारी झीरुका चीरी चिलिका च समौ इर्माः      | १०४३ |
| समौ पतङ्गश्लभौ खद्योतो ज्योतिरिङ्गणः          | १०४४ |

|   |      |
|---|------|
| मधुनतो मधुकरो मधुलिमधुपालिनः                        | १०४५ |
| द्विरेफपुष्पलिङ्गभृङ्गपदपदमरालयः                    | १०४६ |
| मयूरो वह्निपो वही नीलकण्ठो भुजंगभुक्                | १०४७ |
| शिसावलः शिखी केकी मधनादानुलास्यपि                   | १०४८ |
| केका चाणी मयूरस्य समौ चन्द्रकमेचकौ                  | १०४९ |
| शिखा धूडा शिखण्डस्तु पिच्छवर्हं नपुंसके             | १०५० |
| सगे विहगविहगविहगमविहायसः                            | १०५१ |
| शकुन्तिपक्षिशकुनिशकुन्तशकुनद्विजाः                  | १०५२ |
| पतत्रिपत्रिपतगपतत्पत्ररथाण्डजाः                     | १०५३ |
| नगौकोयाजिविकिरविविष्किरपतत्रयः                      | १०५४ |
| नीडोद्भवा गरुत्मन्तः पित्सन्तो नभसंगमाः २८          | १०५५ |
| तेषां विशेषा हारीतो मद्गुः कारण्डवः प्लवः           | १०५६ |
| तित्तिरिः कुकुभो लावो जीवजीवश्चकोरकः                | १०५७ |
| कोयष्टिकाष्टिभको वर्तको वर्तिकादयः                  | १०५८ |
| गरुत्पक्षच्छदा पत्र पतत्र च तनूरुहम्                | १०५९ |
| स्त्री पक्षति पक्षमूलं चञ्चुस्त्रोटिरुमे स्त्रियो   | १०६० |
| प्रडीनोद्गीनसडीनान्येताः सगगतिक्रिया                | १०६१ |
| पेडीनी द्विहीनेऽण्डं कुलायो नीडमस्त्रियाम्          | १०६२ |
| पोतः कोऽर्भको डिम्भः पृथुकः शावकः शिशुः             | १०६३ |
| स्त्रीपुंसां मिथुनं द्वन्द्वं युग्मं तु युगलं युगम् | १०६४ |
| ममूहनिग्रहं न्यहंसदोहविसरं व्रजा                    | १०६५ |
| स्तोमार्घनिकरं प्रातवारं सघातं मधयाः                | १०६६ |

|  |      |
|--|------|
| समुदायः समुदयः समवार्यश्चर्यो गणः                | १०६७ |
| स्त्रियां तु संहतिर्वृन्दं निकुरम्बं कदम्बकम् २२ | १०६८ |
| वृन्दभेदाः समैवर्गः संघसार्था तु जन्तुभिः        | १०६९ |
| सजातीयैः कुलं यूथं तिरश्चां पुनपुंसकम्           | १०७० |
| पशूनां समजोऽन्येषां समाजोऽथ सधर्मिणाम्           | १०७१ |
| स्यान्निकायः पुञ्जराशीं तूत्करः कूटमस्त्रियाम्   | १०७२ |
| कापोत्तशौकमायूरतैत्तिरादीनि तद्गणे               | १०७३ |
| गृहासक्ताः पक्षिमृगाश्छेकास्ते गृह्यकाश्च ते     | १०७४ |
| ७. मनुष्यवर्गः ।                                 |      |

|  |      |
|--|------|
| मनुष्या मानुषा मर्त्या मनुजा मानवा नराः          | १०७५ |
| स्युः पुमांसः पञ्चजनाः पुरुषाः पूरुषा नरः        | १०७६ |
| स्त्री योषिदेवला योषा नारी सीमन्तिनी वधूः        | १०७७ |
| प्रतीपदार्शिनी वामा वनिता महिला तथा              | १०७८ |
| विशेषास्त्वङ्गना भीरुः कामिनी वामलोचना           | १०७९ |
| ग्रमदा मानिनी कान्ता ललना च नितम्बिनी            | १०८० |
| सुन्दरी रमणी रामा कोपना सैव भामिनी               | १०८१ |
| वरारोहा मत्तकाशिन्युत्तमा वरवर्णिनी              | १०८२ |
| कृताभिषेका महिषी भोगिन्योऽन्या नृपस्त्रियः       | १०८३ |
| पत्नी पाणिगृहीती च द्वितीया सहधर्मिणी            | १०८४ |
| भार्या जायाथ पुंभूम्नि दाराः स्यात्तु कुटुम्बिनी | १०८५ |
| पुरंध्री सुचरित्रा तु सती साध्वी पतिव्रता        | १०८६ |
| कृतसापत्निका ध्यूढाधिविज्ञाथ स्वयंवरा            | १०८७ |

|  |      |
|--|------|
| पतिवरा च वर्यां कुलस्त्री कुलपालिका                | १०८८ |
| कन्या कुमारी गौरी तु नम्रिकानागतार्तवा             | १०८९ |
| स्यान्मध्यमा दृष्टरजास्तरुणी युवति समे             | १०९० |
| समाः क्षुर्पाजनीवर्धश्चिरिणी तु स्ववासिनी          | १०९१ |
| इच्छावती कामुका स्याद्वृषस्यन्ती तु कामुकी         | १०९२ |
| कान्तार्थिनी तु या याति संकेतं साभिसारिका          | १०९३ |
| पुंश्चली धर्षिणी बन्धर्व्यसती कुलदेवरी             | १०९४ |
| स्वरिणी पांशुली च स्यादश्विनी गिशुना विना          | १०९५ |
| अवीरा निष्पतिमुता विश्वस्तविधवे समे                | १०९६ |
| आलिः सखी वयस्याथ पतिवली सभर्तृका                   | १०९७ |
| वृद्धा पलिकी प्राज्ञी तु प्रज्ञा प्राज्ञा तु धीमती | १०९८ |
| शुद्धी शुद्धस्य भार्या स्याच्छुद्धी तज्जातिरेव च   | १०९९ |
| आभीरी तु महाशुद्धी जातिपुयोगयोः समा                | ११०० |
| अर्याणी स्वयमर्या स्यात्क्षत्रिया क्षत्रियार्णपि   | ११०१ |
| उपाध्यायप्युपाध्यायी स्यादाचार्यापि च स्वतः        | ११०२ |
| आचार्यानी तु पुयोगे स्यादयो क्षत्रियी तथा          | ११०३ |
| उपाध्यायान्युपाध्यायी पोटा स्त्रीपुमलक्षणा         | ११०४ |
| वीरपत्नी वीरभार्या वीरमाता तु वीरसू                | ११०५ |
| जातापत्या प्रजाता च प्रसूता च प्रसूतिका            | ११०६ |
| स्त्री नम्रिका कोटयोः स्याद्वृत्तीमचारिके समे      | ११०७ |
| कात्यायनवर्धवृद्धा या कापार्यरत्ननाथयो             | ११०८ |
| सरन्ध्री पश्येदमस्था मयशा शिल्पकारिका              | ११०९ |

|   |      |
|---|------|
| स्यात्स्याविरं तु वृद्धत्वं वृद्धसंघेऽपि वार्धकम् | ११५४ |
| पलितं जरसा शौक्ल्यं केशादौ विस्रसा जरा            | ११५५ |
| स्यादुत्तानशयो डिम्भा स्तनपा च स्तनंधयी           | ११५६ |
| बालस्तु स्यान्माणवको वयस्यस्तरुणो युवा            | ११५७ |
| प्रवयाः स्थविरो वृद्धो जीनो जीणो जरन्नपि          | ११५८ |
| वर्षीयान्दशमी ज्यायान्पूर्वजस्त्वग्रियोऽग्रजः     | ११५९ |
| जघन्यजे स्युः कनिष्ठयवीयोऽवरजानुजाः               | ११६० |
| अमांसो दुर्वलश्छातो बलवान्मांसलोऽसलः              | ११६१ |
| तुन्दिलस्तुन्दिर्भस्तुन्दी बृहत्कुक्षिः पिचण्डिलः | ११६२ |
| अवटीटोऽवनाटश्चावभटो नतनासिके                      | ११६३ |
| केशवः केशिकः केशी वलिनो वलिर्भः समौ               | ११६४ |
| विकलाङ्गस्त्वपोगण्डः खर्वो ह्रस्वश्च वामनः        | ११६५ |
| खरणाः स्यात्खरणसो विग्रस्तु गतनासिकः              | ११६६ |
| खुरणाः स्यात्खुरणसः प्रजुः प्रगतजानुकः            | ११६७ |
| ऊर्ध्वजुर्लूध्वजानुः स्यात्संजुः संहतजानुकः       | ११६८ |
| स्यादेडे वधिरः कुजे गडुलः कुकरे कुणिः             | ११६९ |
| पृश्निरल्पतनो श्रोणः पङ्गौ मुण्डस्तु मुण्डिते     | ११७० |
| वलिरः केकरे खोडे खङ्गस्त्रिषु जरावराः             | ११७१ |
| जडुलः कालकः पिपुस्तिलकस्तिलकालकः                  | ११७२ |
| अनामयं स्यादारोग्यं चिकित्सा रुक्प्रतिक्रिया      | ११७३ |
| भेषजौ पथ्यभेषज्यान्वगदौ जायुरित्यपि               | ११७४ |
| स्त्री रुग्जौ चोपतापरोगव्याधिगदमयाः               | ११७५ |

|  |      |
|--|------|
| क्षयः शोषश्च यक्ष्मा च प्रतिश्यायस्तु पीनसः            | ११७६ |
| स्त्री क्षुत्क्षुतं क्षवः पुंसि कासस्तु क्षवथुः पुमान् | ११७७ |
| शोफस्तु श्वयथुः शोथः पादस्फोटो विपाटिका                | ११७८ |
| किलाससिध्मे कच्छा तु पाम पामा विचर्चिका                | ११७९ |
| कण्डूः खर्जूश्च कण्डूया विस्फोटः पिटके स्त्रियाम्      | ११८० |
| व्रणोऽस्त्रियामीर्ममरुः क्लीवे नाडीव्रण पुमान्         | ११८१ |
| कोठो मण्डलकं कुष्ठेश्वित्रे दुर्नामकार्शसी             | ११८२ |
| आनाहस्तु निवन्धः स्याद्ब्रह्णी रुक्प्रवाहिका           | ११८३ |
| प्रच्छर्दिका वमिश्च स्त्री पुमास्तु वमथुः समाः         | ११८४ |
| व्याधिभेदा विद्रधिः स्त्री ज्वरमेहभगदराः               | ११८५ |
| 'श्लीपदं पदवल्मीकं केशघ्नस्त्विन्द्रलुप्तक'            | ***  |
| अश्मरी मूत्रकृच्छ्रं स्यात्पूर्वं शुक्रावधेस्त्रिषु    | ११८६ |
| रोगहार्यगदंकारो भिषग्वैद्यो चिकित्सकं                  | ११८७ |
| घातो निरामयः कल्य उल्लाघो निर्गतो गदात्                | ११८८ |
| ग्लानग्लान् आमयावी विकृतो व्याधितोऽपटुः                | ११८९ |
| आतुरोऽभ्यमितोऽभ्यान्तं समौ पोमनकच्छुरौ                 | ११९० |
| दद्गुणो दद्गुरोगी स्यादग्नोरोगयुतोर्गसः                | ११९१ |
| वातकी वातरोगी स्यात्सातिसारोऽतिसारकी                   | ११९२ |
| स्युः क्लिप्तो चुल्लचिल्लपिलाः क्लिन्नेऽक्षिण चाप्यमी  | ११९३ |
| उन्मत्त उन्मादवति श्लेष्मल श्लेष्मण कफी                | ११९४ |
| न्युजो भुग्ने रुजा वृद्धनाभौ तुन्दिलतुन्दिभौ           | ११९५ |
| किञ्चलो सिध्मलोऽन्धोऽह इमर्जले मूर्तमूर्छितौ           | ११९६ |



|  |      |
|--|------|
| शुक्रं तेजोरेतसी च बीजवीर्येन्द्रियाणि च           | ११९७ |
| मायुः पित्तं कफः श्लेष्मा स्त्रियां तु त्वर्गसुधरा | ११९८ |
| पिशितं तरसं मांसं पललं कर्ण्यमामिषम्               | ११९९ |
| उत्तमं शुष्कमांसं स्यात्तद्वल्लूरं त्रिलिङ्गकम्    | १२०० |
| रुधिरंऽसृग्लोहिताक्षरक्तक्षतजशोणितम्               | १२०१ |
| बुक्कग्रिमांसं हृदयं हन्मेदस्तु वर्षा वर्षा        | १२०२ |
| पश्चाद्भीवा शिरा मन्या नाडी तु धमनिः शिरा          | १२०३ |
| तिलकं क्लोम मस्तिष्कं गोदं किट्टं मलोऽस्त्रियाम्   | १२०४ |
| अन्त्रं पुरीतद्बुल्मस्तु प्लीहा पुंस्यथ वस्तुता    | १२०५ |
| स्नायुः स्त्रियां कालखण्डयकृती तु समे इमे          | १२०६ |
| सृणिका स्युन्दिनी लाला दूषिका नेत्रयोर्मलम्        | १२०७ |
| नासामलं तु सिंघाणं पिङ्गपः कर्णयोर्मलम्            | ***  |
| मूत्रं प्रस्राव उच्चारवस्करौ शमलं शकृत्            | १२०८ |
| पुरीषं गूथवर्चस्कमस्त्री विष्ठाविशौ स्त्रियां      | १२०९ |
| स्यात्कर्परः कपालोऽस्त्री कीकसं कुल्यमस्थि च       | १२१० |
| स्याच्छरीरास्थि कंकालः पृष्ठास्थि तु कशेरुका       | १२११ |
| शिरोऽस्थनि करोटिः स्त्री पार्श्वास्थनि तु पेशुका   | १२१२ |
| अङ्गं प्रतीकोऽवयवोऽपघनोऽथ कलेवरम्                  | १२१३ |
| गात्रं वपुः संहननं शरीरं वर्ष्म विग्रहः            | १२१४ |
| कायो देहः क्लोवपुंसोः स्त्रियां मूर्तिस्तनुस्तनूः  | १२१५ |
| पादाग्रं प्रपदं पादः पदद्विश्चरणोस्त्रियाम्        | १२१६ |
| तद्गन्धी घुटिके गुल्फौ पुमान्पाष्णिस्तयोरधः        | १२१७ |

|   |      |
|---|------|
| जह्वा तु प्रसृता जानूरुपर्वीषीवदस्त्रियाम्        | १२१८ |
| सक्थि वृषीवे पुमानूरुस्तत्संधिः पुंसि वृषण        | १२१९ |
| गुदं त्वपानं पायुर्ना वस्तिर्नाभेरघो द्वयोः       | १२२० |
| कटो ना श्रोणिफलक कटिः श्रोणिः ककुद्गती            | १२२१ |
| श्चान्नितम्ब स्त्रीकट्याः क्लीवे तु जघनं पुरः     | १२२२ |
| कूपकौ तु नितम्बस्थौ द्वयहीने कुकुन्दरे            | १२२३ |
| स्त्रियां स्फिचौ कटिप्रोथोवुपस्थौ वक्ष्यमाणयो     | १२२४ |
| भगं योनिर्द्वयोः शिश्रो मेढो मेहनशिफसी            | १२२५ |
| मुष्कोऽण्डकोशो वृषणः पृष्ठवशाधरे त्रिकम्          | १२२६ |
| पिचण्डकुक्षी जठरोदरं तुन्दं स्तनौ कुचौ            | १२२७ |
| चूचुकं तु कुचाग्रं स्यान्न ना क्रोडं भूजान्तरम्   | १२२८ |
| उरो वत्सं च वक्षश्च पृष्ठं तु चरमं तनौ            | १२२९ |
| स्कन्धो भुजगिरौ सौऽस्त्री संधी तस्यैव जघुणी       | १२३० |
| बाहुमूले उभे कक्षौ पार्श्वमस्त्री तयोरधः          | १२३१ |
| मध्यमं चावलग्नं च मध्योऽस्त्री द्वौ परौ द्वयोः    | १२३२ |
| भुजबाहू प्रवेष्टौ द्वौ स्यात्क्रफोणिस्तु कूर्पर   | १२३३ |
| अस्योपरि प्रगण्डः स्यात्प्रफोष्ठस्तस्य चाप्यधः    | १२३४ |
| मणिवन्धादाकनिष्ठं करस्य करभो वहिः                 | १२३५ |
| पञ्चशाखः शयः पाणिस्तर्जनी स्यात्प्रदेगिनी         | १२३६ |
| अङ्गुल्यः करगर्भाः स्युः पुंस्यङ्गुष्ठं प्रदेशिनी | १२३७ |
| मध्यमाङ्गनामिका चापि कनिष्ठा चेति ता क्रमात्      | १२३८ |
| पुनर्भवः कररुहो नखोऽस्त्री नखरोऽस्त्रियाम्        | १२३९ |

|   |      |
|---|------|
| प्रादेशताल्लगोकर्णसिर्जज्यः दियुते तते          | १२४० |
| अङ्गुष्ठे सकनिष्ठे स्याद्वितस्तिर्द्वादशाङ्गुलः | १२४१ |
| पाणौ चपेटप्रतलप्रहस्ता विस्तृताङ्गुलौ           | १२४२ |
| द्वौ संहतौ संहतलप्रतलौ वामदक्षिणौ               | १२४३ |
| पाणिर्निकुञ्जः प्रसृतिस्तौ युतावज्जलिः पुमान्   | १२४४ |
| प्रकोष्ठे विस्तृकरे हस्तौ मुष्ट्या तु वद्धया    | १२४५ |
| स रत्निः स्यादरत्निस्तु निष्कनिष्ठेन मुष्टिना   | १२४६ |
| व्यामो बाह्वोः सकरयोस्ततयोस्तिर्यगन्तरम्        | १२४७ |
| ऊर्ध्वविस्तृतदोः पाणिनृमाने पौरुषं त्रिषु       | १२४८ |
| कण्ठो गलोऽथ ग्रीवायां शिरोधिः कंधरेत्यपि        | १२४९ |
| कम्बुग्रीवा त्रिरेखा साऽवटुर्घाटा कृकाटिका      | १२५० |
| वक्रास्ये वदनं तुण्डमाननं लपनं मुखम्            | १२५१ |
| ह्रिबे घ्राणं गन्धवहा घोणा नासा च नासिका        | १२५२ |
| ओष्ठाधरा तु रदनच्छदौ दशनवाससी                   | १२५३ |
| अधस्ताच्चिवुकं गण्डौ कपोलौ तत्परा हनुः          | १२५४ |
| रदना दशना दन्ता रदास्तालु तु काकुदम्            | १२५५ |
| रसज्ञा रसना जिह्वा प्रान्तावोष्ठस्य सूक्ष्मिणी  | १२५६ |
| ललाटमलिकं गोधिरूर्ध्वे हगभ्यां भ्रुवौ स्त्रियो  | १२५७ |
| कूर्चमस्त्री भ्रुवोर्मध्यं तारकाक्षः कनीनिका    | १२५८ |
| लोचनं नयनं नेत्रमीक्षणं चक्षुरक्षिणी            | १२५९ |
| दृष्टिं चासृ नेत्रांभु रोदनं चास्रमश्रु च       | १२६० |
| अपाङ्गौ नेत्रयोरन्तौ कटाक्षोऽपाङ्गदर्शने        | १२६१ |

|  |      |
|--|------|
| कर्णशब्दग्रहौ श्रोत्रं श्रुतिः स्त्री श्रवणं श्रवः | १२६२ |
| उत्तमाङ्गं शिरः शीर्षं मूर्धा ना मस्तकोऽस्त्रियाम् | १२६३ |
| चिकुरः कुन्तलो वालः कर्चः केशः शिरोरुह             | १२६४ |
| तट्टन्दे कैशिकं कैश्यमेलकाश्चूर्णकुन्तलाः          | १२६५ |
| ते ललाटे भ्रमरकाः काकपक्षः शिखण्डक                 | १२६६ |
| कवरी केशवेशोऽथ धम्मिल संयताः कचा                   | १२६७ |
| शिखा चूडा केशपाशी व्रतिनस्तु सटा जटा               | १२६८ |
| वेणिः प्रवेणी शीर्षण्यशिरस्यौ विशदे कचे            | १२६९ |
| पार्श्वः पक्षश्च हस्तश्च कलापार्था कचात्परे        | १२७० |
| तनूरुहं रोमं लोमं तट्टुद्धौ श्मश्रु पुमुखे         | १२७१ |
| आकल्पवेपौ नैपथ्यं प्रतिकर्म प्रसाधनम्              | १२७२ |
| दशैते त्रिष्वलंकर्तालंकरिण्यश्च मण्डितः            | १२७३ |
| प्रसाधितोऽलंकृतश्च भूषितश्च परिष्कृतः              | १२७४ |
| विभ्राड् भ्राजिष्णुरोजिष्णू भूषणं स्यादलंकिया      | १२७५ |
| अलंकारस्त्वाभरणं परिष्कारो विभूषणम्                | १२७६ |
| मण्डनं चायं मुकुटं किरीटं पुनपुस्तकम्              | १२७७ |
| चूडामणि शिरोरुहं तरलो हारमध्यगः                    | १२७८ |
| वालपाद्या पारितुष्या पत्रपाशा ललाटिका              | १२७९ |
| कर्णिका तालपत्रं स्यात्कुण्डल कर्णवेष्टनम्         | १२८० |
| त्रैवेयकं कण्ठभूषा लम्बनं स्याललन्तिका             | १२८१ |
| स्वर्णे मालम्बिकायोरःसूत्रिका मौक्तिकं कृता        | १२८२ |
| हारो मुक्तावली देवच्छन्दोऽसौ गतयष्टिका             | १२८३ |

|  |      |
|--|------|
| हारभेदा यष्टिभेदाद्रुच्छगुच्छार्धगोस्तनाः            | १२८४ |
| अर्धहारो माणवर्क एकावर्त्येकयष्टिका                  | १२८५ |
| सैव नक्षत्रमाला स्यात्सप्तविंशतिमौक्तिकैः            | १२८६ |
| आचापकः पारिहार्यः कटको वलयोऽस्त्रियाम्               | १२८७ |
| केयूरमङ्गदं तुल्ये अङ्गुलीयकमूर्मिका                 | १२८८ |
| साक्षराङ्गुलिमुद्रा स्यात्कङ्कणं करभूषणम्            | १२९९ |
| स्त्रीकट्यां मेखला काञ्ची सप्तकी रशना तथा            | १२९० |
| क्लीवे सारसनं चाथ पुंस्कट्यां शृङ्खलं त्रिषु         | १२९१ |
| पादाङ्गदं तुलाकोटिर्मञ्जरीरो नूपुरोऽस्त्रियाम्       | १२९२ |
| हंसकः पादकटकः किङ्किणी क्षुद्रघण्टिका                | १२९३ |
| त्वक्फलकृमिरोमाणि वस्त्रयोनिर्दश त्रिषु              | १२९४ |
| वालकं क्षौमादि फालं तु कार्पासं वादरं च तत्          | १२९५ |
| कौशेयं कृमिकोशोत्थं राङ्गवं मृगरोमजम्                | १२९६ |
| अनाहतं निष्प्रवाणि तन्त्रकं च नवाम्बरम्              | १२९७ |
| तत्त्यादुद्गमनीयं यद्भौतयोर्वस्त्रयोर्युगम्          | १२९८ |
| पत्रोर्णं धौतकौशेयं बहुमूल्यं महाधनम्                | १२९९ |
| क्षौमं दुकूलं स्याद्वे तु निवीतं प्रावृतं त्रिषु     | १३०० |
| स्त्रियां बहुत्वे वस्त्रस्य दशाः स्युर्वस्तयो द्वयोः | १३०१ |
| दैर्घ्यमायाम् आरोहः परिणाहो विशालता                  | १३०२ |
| पटच्चरं जीर्णवस्त्रं समौ नक्तर्ककर्पटौ               | १३०३ |
| वस्त्रमाच्छादनं वासश्चैलं वसनमंशुर्कम्               | १३०४ |
| सुचेलकः पटोऽस्त्री स्याद्वरशिः स्थूलशाटकः            | १३०५ |

|  |      |
|--|------|
| निचोलः प्रच्छदपटः समौ रल्लककम्बलौ                  | १३०६ |
| अन्तरीयोपसंव्यानपरिधानन्यधोऽशुके                   | १३०७ |
| द्रौ प्रावारोत्तरासङ्गौ समौ बृहतीका तथा            | १३०८ |
| संव्यानमुत्तरीयं च चोलः कूर्पासकोऽस्त्रियाम्       | १३०९ |
| नीसारः स्यात्प्रावरणे हिमानिलनिवारणे               | १३१० |
| अर्धोरुकं वरस्त्रीणा स्याच्चण्डातर्कमस्त्रियाम्    | १३११ |
| यात्रिष्वाप्रपदीनं तत्प्राप्तोत्याप्रपदं हि यत्    | १३१२ |
| अस्त्री वितानमुल्लोचो दुर्प्याद्यं वस्त्रवेर्म्मनि | १३१३ |
| तिसीरा जवनीका स्यात्तिरस्करिणी च सा                | १३१४ |
| रिकर्माङ्गसंस्कारः स्यान्मार्ष्टिर्मार्जना मृजा    | १३१५ |
| द्वर्तनोत्सादने द्वे समे आप्लाव आप्लवः             | १३१६ |
| ज्ञानं चर्चा तु चार्चिक्यं स्यासकोऽथ प्रबोधनम्     | १३१७ |
| अनुबोधः पत्रलेखा पत्राङ्गुलिरिमे समे               | १३१८ |
| मालपत्रतिलकचित्रकाणि विशेषकम्                      | १३१९ |
| द्वेतीयं च तुरीयं च न स्त्रियामथ कुङ्कुमम्         | १३२० |
| ताम्रीरजन्मग्निगिरं वरं बाह्यीकपीतने               | १३२१ |
| क्तसकोचपिशुनं धीरं लोहितचन्दनम्                    | १३२२ |
| गक्षा राक्षा जतु क्लीवे यात्रोऽलको द्रुमामयः       | १३२३ |
| अपङ्गं देवकुसुमं श्रीसर्जमथ जायकम्                 | १३२४ |
| जलीयकं च कालानुसार्य चाथ समार्थकम्                 | १३२५ |
| गिरिकागुरुं राजार्हलोहं कृमिर्जजोद्भकम्            | १३२६ |
| गालागुर्वगुरुं स्यात्तन्मद्गल्या मल्लिगन्धि यत्    | १३२७ |

|   |      |
|---|------|
| यक्षधूपः सर्जरसो रालसर्वरसावपि                  | १३२८ |
| बहुरूपोऽप्यथ वृकधूपकृत्रिमधूपकौ                 | १३२९ |
| तुरुष्कः पिण्डकः सिहो यावनोऽप्यथ पायसः          | १३३० |
| श्रीवासो वृकधूपोऽपि श्रीवेष्टसरलद्रवौ           | १३३१ |
| मृगनाभिर्मृगमदः कस्तूरी चाथ कोलकम्              | १३३२ |
| कक्कोलकं कोशफलमथ कर्पूरमस्त्रियाम्              | १३३३ |
| घनसारश्चन्द्रसंज्ञः सिताभ्रो हिमवालुका          | १३३४ |
| गन्धसारो मलयजो भद्रश्रीश्चन्दनोऽस्त्रियाम्      | १३३५ |
| तैलपर्णिकगोशीर्षे हरिचन्दनमस्त्रियाम्           | १३३६ |
| तिलपर्णी तु पत्राङ्गं रञ्जनं रक्तचन्दनम्        | १३३७ |
| कुचन्दनं चाथ जातीकोपजातीफले समे                 | १३३८ |
| कर्पूरागुरुकस्तूरीकक्कोलैर्यक्षकर्मः            | १३३९ |
| गात्रानुलेपनी वर्तिर्वर्णकं स्याद्विलेपनम्      | १३४० |
| चूर्णानि वासयोगाः स्युर्भावितं वासितं त्रिषु    | १३४१ |
| संस्कारो गन्धमाल्याद्यैर्यः स्यात्तदधिवासनम्    | १३४२ |
| माल्यं मालस्त्रिजौ मूर्ध्नि केशमध्ये तु गर्भकः  | १३४३ |
| ग्रन्थष्टकं शिखालम्बि पुरोन्यस्तं ललामकम्       | १३४४ |
| ग्रालम्बमृजुलम्बि स्यात्कण्ठाद्वैकक्षिकं तु तत् | १३४५ |
| यत्तिर्यक्क्षिप्तमुरसि शिखास्वापीडशिखरौ         | १३४६ |
| रचना स्यात्परिस्यन्द आभोगः परिपूर्णता           | १३४७ |
| उपधानं तूपवर्हः शय्यायां शयनीर्यवत्             | १३४८ |
| शयनं मञ्चपर्यङ्कपल्यङ्काः खट्वर्या समाः         | १३४९ |

|   |      |
|---|------|
| गेन्दुकः कन्दुको दीपः प्रदीपः पीठमासनम् | १३५० |
| समुद्रकः संपुटकः प्रतिग्राहः पतद्ग्रहः  | १३५१ |
| प्रसाधनी कङ्कतिका पिष्टातः पटवासकः      | १३५२ |
| दर्पणे मुकुरादिगौ व्यजनं तालवृन्तकम्    | १३५३ |

८ ब्रह्मवर्ग ।

|   |      |
|---|------|
| सततिर्गोत्रजननकुलान्यभिजनान्वयौ                 | १३५४ |
| वशोऽन्ववाय सतानो वर्णा स्युर्ब्राह्मणादयः       | १३५५ |
| विप्रक्षत्रियविद्गूढाश्चातुर्वर्ण्यमिति स्मृतम् | १३५६ |
| राजधीजो राजवंश्यो वीज्यस्तु कुलसंभवः            | १३५७ |
| महाकुलकुलीनार्यसभ्यसज्जनसाधवः                   | १३५८ |
| ब्रह्मचारी गृही वानप्रस्थो भिक्षुश्चतुष्टये     | १३५९ |
| आश्रमोऽस्त्री द्विजात्यप्रजन्मभूदेववाहवा        | १३६० |
| विप्रश्च ब्राह्मणोऽसौ पट्कमायागादिभिर्वृत       | १३६१ |
| विद्वान्निपश्चिद्दोपज्ञ सन्सुधीः कोविदो बुधः    | १३६२ |
| धीरो मनीषी ज्ञः प्राज्ञः सख्यावान्पण्डितः कवि   | १३६३ |
| धीमान्सूरिः कृती कृष्टिर्लब्धवर्णो विचक्षणः     | १३६४ |
| दूरदर्शी दीर्घदर्शी श्रोत्रियगच्छान्दमो समो     | १३६५ |
| मीमांसको जैमिनोये वेदान्ती ब्रह्मवादिनि         | १३६६ |
| वैशेषिके स्यादौलूक्यः सौगतः गून्यवादिनि         | १३६७ |
| नैयायिकस्त्वक्षपादः स्यात्स्याद्वादिक आर्हतः    | १३६८ |
| चार्वाकलौकायतिकौ सत्कार्ये साङ्ख्यिकापिला       | १३६९ |
| उपाध्यायोऽध्यापकोऽय स्यान्निषेकादिकृद्गुरुः     | १३७० |



|   |      |
|---|------|
| मन्त्रव्याख्याकृदाचार्य आदेष्टा त्वध्वरे व्रती  | १३६७ |
| यष्टा च यजमानश्च स सोमवति दिक्षितः              | १३६८ |
| इज्याशीलो यायजूको यज्वा तु विधिनेष्टवान्        | १३६९ |
| स गीर्षतीष्ट्या स्थपतिः सोमपीथी तु सोमपाः       | १३७० |
| सर्ववेदाः स येनेष्टो यागः सर्वस्वदक्षिणः        | १३७१ |
| अनूचानः प्रवचने साङ्गेऽधीती गुरोस्तु यः         | १३७२ |
| लब्धानुज्ञः समावृत्तः सुत्वा त्वभिपवे कृते      | १३७३ |
| छात्रान्तेवासिनौ शिष्ये शैक्षाः प्राथमकल्पिकाः  | १३७४ |
| एकब्रह्मव्रताचारा मिथः सब्रह्मचारिणः            | १३७५ |
| सतीथ्यस्त्वेकगुरवश्चितवानग्निमग्निचित्          | १३७६ |
| पारम्पर्योपदेशे स्यादैतिह्यमिति होव्ययम्        | १३७७ |
| उपज्ञा ज्ञानमाद्यं स्याज्ज्ञात्वारम्भ उपक्रमः   | १३७८ |
| यज्ञः सवोऽध्वरो यागः सप्ततन्तुर्मुखः क्रतुः     | १३७९ |
| पाठो होमश्चातिथीनां सपर्या तर्पणं वलिः          | १३८० |
| एते पंचमहायज्ञा ब्रह्मयज्ञादिनामकाः             | १३८१ |
| समज्या परिपट्नीष्टी सभासमिति संसदः              | १३८२ |
| आस्थानी क्लीवमास्थानं स्त्रीनपुंसकयोः सदः       | १३८३ |
| प्राग्वंशः प्राग्धविर्गो होत्सदस्या विधिदर्शिनः | १३८४ |
| सभासदः सभास्ताराः सभ्याः सामाजिकाश्च ते         | १३८५ |
| अध्वर्यूद्गातृहोतारो यजुःसामग्विदः क्रमात्      | १३८६ |
| आग्नीध्राद्या धनैर्वार्या ऋत्विजो याजकाश्च ते   | १३८७ |
| वेदिः परिष्कृता भूमिः समे स्थण्डिलचत्वरे        | १३८८ |

|  |      |
|--|------|
| चपालो यूपकटकः कुम्भो मुगहना वृत्तिः              | १३८९ |
| यूपाग्रं तमं निर्मन्थ्यदारुणि त्वरणिर्द्वयो.     | १३९० |
| दक्षिणाग्निर्गार्हपत्याहवनीयौ त्रयोऽग्नय         | १३९१ |
| अग्नित्रयमिदं त्रेता प्रणीतं संस्कृतोऽनलः        | १३९२ |
| समूह्यः परिचार्योपचार्यौवग्नौ प्रयोगिणः          | १३९३ |
| यो गार्हपत्यादानीय दक्षिणाग्निः प्रणीयते         | १३९४ |
| तस्मिन्नानार्योऽथाग्रायी स्वाहा च हुतभुक्तिप्रया | १३९५ |
| ऋक्सामिधेनी धार्या च या स्यादग्निसमिन्धने        | १३९६ |
| गायत्रीप्रमुखं छन्दो हव्यपाके चरुः पुमान्        | १३९७ |
| आमिक्षा सा शृतोष्णे या क्षीरे स्यादधियोगत        | १३९८ |
| धुवित्रं व्यजन तद्यद्रचितं मृगचर्मणा             | १३९९ |
| पृषदाज्यं सदध्याज्ये परमान्नं तु पायसम्          | १४०० |
| हव्यकव्ये देवपित्र्ये अन्ने पात्रं सुवादिकम्     | १४०१ |
| ध्रुवोपभृजुर्हर्ना तु सुवो भेदाः सुचः स्त्रिय    | १४०२ |
| उपाकृतः पशुरसो योऽभिमन्त्र्य कर्ता हतः           | १४०३ |
| परम्पराकं शमनं प्रोक्षणं च वधार्थकम्             | १४०४ |
| वाच्यलिङ्गा प्रमीतोपसपन्नप्रोक्षिता हस्ते        | १४०५ |
| सानार्ये हविरग्नौ तु हुतं त्रिषु वषट्कृतम्       | १४०६ |
| दीक्षान्तोऽग्नभृथो यज्ञे तत्कर्माहं तु यज्ञियम्  | १४०७ |
| त्रिष्वय क्रतुकर्मेष्टं पूतं सातादि कर्म यत्     | १४०८ |
| अमृतं विधसो यज्ञशेषभोजनशेषयोः                    | १४०९ |
| त्यागो विहापितं दानमुत्सर्जनविमर्जने             | १४१० |

|  |      |
|--|------|
| विश्राणनं वितरणं स्पर्शनं प्रतिपादनम्              | १४११ |
| प्रादेशनं निर्वपणमपवर्जनमंहतिः                     | १४१२ |
| मृतार्थं तदहे दानं त्रिषु स्यादौर्ध्वदेहिकम्       | १४१३ |
| पितृदानं निवार्षः स्याच्छ्राद्धं तत्कर्म शास्त्रतः | १४१४ |
| अन्वाहार्यं मासिकेऽशोऽष्टमोऽहः कुतपोऽस्त्रियाम्    | १४१५ |
| पर्येषणां परीष्टिश्चान्वेषणां च गवेषणां            | १४१६ |
| सनिस्त्वध्येषणां याज्याभिशस्तिर्याचनार्थनां        | १४१७ |
| पद् तु त्रिष्वर्ध्यमर्घार्थं पाद्यं पादाय वारिणि   | १४१८ |
| क्रमादातिथ्यातिथेये अतिथ्यर्थेऽत्र साधुनि          | १४१९ |
| स्थुरावेशिकं आगन्तुरतिथिर्ना गृहागते               | १४२० |
| ‘प्राघूर्णिकः प्राघुणिकश्चाभ्युत्थानं तु गौरवम्’   | **   |
| पूजां नमस्यापिचितिः सपर्यार्चाहिणाः समाः           | १४२१ |
| वरिवस्यां तु शुश्रूषां परिचर्याप्युपासनां          | १४२२ |
| ब्रज्याटाढ्यां पर्यटनं चर्या त्वीर्यापथे स्थितिः   | १४२३ |
| उपस्पर्शस्त्वाचमनमथ मौनमभाषणम्                     | १४२४ |
| ‘प्राचेतसश्चादिकविः स्यान्मैत्रावरुणिश्च सः        | **   |
| वाल्मीकश्चाथ गाधेयो विश्वामित्रश्च कौशिकः          | **   |
| व्यासो द्वैपायनः पाराशर्यः सत्यवतीसुतः             | **   |
| आनुपूर्वीं स्त्रियां वावृत्परिपाटी अनुक्रमः        | १४२५ |
| पर्यार्यश्चातिपार्तस्तु स्यात्पर्ययं उपात्ययः      | १४२६ |
| नियमो व्रतमस्त्री तच्चोपवासौदि पुण्यकम्            | १४२७ |
| औपवस्तं तूपवासो विवेकः पृथगात्मती                  | १४२८ |

|   |      |
|---|------|
| स्याद्रह्यवर्चसं वृत्ताध्ययनर्द्धिरथाञ्जलिः     | १४२९ |
| पाठे ब्रह्माञ्जलि पाठे विप्रुषौ ब्रह्मविन्दवः   | १४३० |
| ध्यानयोगासने ब्रह्मासन कल्पे विधिक्रमौ          | १४३१ |
| मुख्यः स्यात्प्रथमः कल्पोऽनुकल्पस्तु ततोऽधमः    | १४३२ |
| संस्कारपूर्वं ग्रहणं स्यादुपाकरणं श्रुतः        | १४३३ |
| समे तु पादग्रहणमभिवादनमित्युभे                  | १४३४ |
| भिक्षुः परिव्राट् कर्मन्दी पाराशर्यपि भस्करी    | १४३५ |
| तपस्वी तापसः पारिकाङ्क्षी वाचयमो मुनिः          | १४३६ |
| तपःक्लेशसहो दान्तो वणिनो ब्रह्मचारिणः           | १४३७ |
| ऋपयः सत्यवचसः स्नातकस्त्वाप्नुतो व्रती          | १४३८ |
| ये निर्जितेन्द्रियग्रामा यतिनो यतयश्च ते        | १४३९ |
| यः स्थण्डिले व्रतवशाच्छेते स्थण्डिलशाय्यसौ      | १४४० |
| स्थाण्डिलश्चाथ विरजस्तमसः स्युर्द्वयातिगाः      | १४४१ |
| पवित्रः प्रयत पूतः पाखण्डाः मर्वलिङ्गिनः        | १४४२ |
| पालाशो दण्ड आपाढो व्रते राम्भस्तु वैणवः         | १४४३ |
| अस्त्री कमण्डलुः कुण्डी व्रतिनामासन वृषी        | १४४४ |
| अजिनं चर्म कृत्तिः स्त्री भैक्षं भिक्षाकदम्बकम् | १४४५ |
| स्वाध्यायः स्वाज्ञापः सुत्याऽभिपवः सवन च सा     | १४४६ |
| सर्वेनसामपध्वसि जप्य त्रिप्प्रधमर्पणम्          | १४४७ |
| दर्शश्च पौर्णमासश्च यागौ पक्षान्तयोः पृथक्      | १४४८ |
| शरीरसाधनापेक्ष नित्यं यत्कर्म तद्यमः            | १४४९ |
| नियमस्तु स यत्कर्म नित्यमागन्तुसाधनम्           | १४५० |

|   |      |
|---|------|
| ‘क्षौरं तु’ भद्राकरणं मुण्डनं वपनं त्रिषु                     | ***  |
| उपवीतं ब्रह्मसूत्रं प्रोद्धते दक्षिणे करे                     | १४५१ |
| प्राचीनावीतमन्यस्मिन्निवीतं कण्ठलम्बितम्                      | १४५२ |
| अङ्गुल्यग्रे तीर्थं दैवं स्वल्पाङ्गुल्योर्मूले कायम्          | १४५३ |
| मध्येऽङ्गुष्ठाङ्गुल्योः पित्र्यं मूले त्वङ्गुष्ठस्य ब्राह्मम् | १४५४ |
| स्याद्ब्रह्मभूयं ब्रह्मत्वं ब्रह्मसायुज्यमित्यपि              | १४५५ |
| देवभूयादिकं तद्वत्कृच्छ्रं सांतपनादिकम्                       | १४५६ |
| संन्यासवत्यनशने पुमान्प्रायोऽथ वीरहा                          | १४५७ |
| नष्टाग्निः कुहना लोभान्मिथ्येर्यापथकल्पना                     | १४५८ |
| ब्राह्मः संस्कारहीनः स्यादस्वाध्यायो निराकृतिः                | १४५९ |
| धर्मध्वजी लिङ्गवृत्तिरवकीर्णी क्षतव्रतः                       | १४६० |
| सुप्ते यस्मिन्नस्तमेति सुप्ते यस्मिन्नुदेति च                 | १४६१ |
| अंशुमानभिनिर्मुक्ताभ्युदितौ च यथाक्रमम्                       | १४६२ |
| परिवेत्तानुजोऽनूढे ज्येष्ठे दारपरिग्रहात्                     | १४६३ |
| परिवित्तिस्तु ताज्ज्ययान्विवाहोपयमौ समौ                       | १४६४ |
| तथा परिणयोद्वाहोपयामाः पाणिपीडनम्                             | १४६५ |
| व्यवायो ग्राभ्यधर्मो मैथुनं निधुवनं रतम्                      | १४६६ |
| त्रिवर्गो धर्मकामार्थैश्चतुर्वर्गः समोक्षकैः                  | १४६७ |
| सवलैस्तैश्चतुर्भद्रं जन्याः स्तिग्धा वरस्य ये                 | १४६८ |

९. अत्रियवर्गः ।

|  |      |
|--|------|
| मूर्धाभिपिक्तो राजन्यो बाहुजः क्षत्रियो विराट् | १४६९ |
| राजा राट् पार्थिवक्षमाभृष्टृपभूपमहीक्षितः      | १४७० |

|   |      |
|---|------|
| राजा तु प्रणताशेषसामन्तः स्यादधीश्वरः       | १४७१ |
| चक्रवर्ती सार्वभौमो नृपोऽन्यो मण्डलेश्वरः   | १४७२ |
| येनेष्टं राजसूयेन मण्डलस्येश्वरश्च यः       | १४७३ |
| आस्ति यश्चाज्ञया राज्ञः स सघाडंथ राजकम्     | १४७४ |
| राजन्यकं च नृपतिक्षत्रियाणां गणे क्रमात्    | १४७५ |
| मन्त्री धीसचिवोऽमात्योऽन्ये कर्मसचिवास्ततः  | १४७६ |
| महामात्राः प्रधानानि पुरोधास्तु पुरोहितः    | १४७७ |
| द्रष्टरिव्यवहारणा प्राङ्मुखाकाक्षदर्शकौ     | १४७८ |
| प्रतीहारो द्वारपालश्चास्यद्वास्थितदर्शकाः   | १४७९ |
| रक्षिवर्गस्त्वनीकस्थोऽधाध्यक्षाधिकृतौ समौ   | १४८० |
| स्थायुकोऽविकृतो ग्रामे गोपो ग्रामेषु भूरिषु | १४८१ |
| भौरिक कनकाध्यक्षो रूप्याध्यक्षस्तु नैर्ऋतः  | १४८२ |
| अन्तःपुरे त्वधिकृतः स्यादन्तर्घशिको जनः     | १४८३ |
| सौविदला कञ्चुकिनः स्थापत्या सौविदाश्च ते    | १४८४ |
| शण्डो वर्षवरस्तुल्यौ सेवका र्यनुजीविनः      | १४८५ |
| विषयानन्तरो राजा गर्जुमित्रमतः परम्         | १४८६ |
| उदासीनं परतरं पाप्मिन्ग्राहस्तु पृष्ठतः     | १४८७ |
| रिपौ वैरिसपत्नारिद्विपद्वेषणदुर्हदः         | १४८८ |
| द्विद्विपक्षाहितामित्रदस्युगात्रवशत्रवः     | १४८९ |
| अभिघातिपरारातिप्रत्ययिपरिपन्थिनः            | १४९० |
| वयस्य स्निग्धः सवया अथ मित्र सखा सुहृत्     | १४९१ |
| सख्यं मासपदीनं स्यादनुरोधोऽनुवर्तनम्        | १४९२ |

|   |      |
|---|------|
| यथाहवर्णः प्रणिधिरपसर्पश्चरः स्पशः              | १४९३ |
| चारश्च गूढपुरुषश्चाप्तप्रत्ययितौ समौ            | १४९४ |
| सांवत्सरो ज्यौतिषिको दैवज्ञगणकावपि              | १४९५ |
| स्युर्मौहूर्तिकमौहूर्तज्ञानिकार्तान्तिका अपि    | १४९६ |
| तान्त्रिको ज्ञातसिद्धान्तः सत्री गृहपतिः समौ    | १४९७ |
| लिपिकारोऽक्षरचणोऽक्षरचञ्चुश्च लेखके             | १४९८ |
| लिखिताक्षरविन्यासे लिपिलिंविरोधे स्त्रियौ       | १४९९ |
| स्यात्संदेशहरो दूतो दूत्यं तद्भावकर्मणी         | १५०० |
| अध्वनीनोऽध्वगोऽध्वन्यः पान्थः पथिक इत्यपि       | १५०१ |
| स्वाम्यमात्यसुहृत्कोशराष्ट्रदुर्गवलानि च        | १५०२ |
| राज्याङ्गानि प्रकृतयः पौराणां श्रेणयोऽपि च      | १५०३ |
| संधिर्ना विग्रहो यानमासनं द्वैधमाश्रयः          | १५०४ |
| पङ्गुणाः शक्तयस्तिष्ठः प्रभावोत्साहमन्त्रजाः    | १५०५ |
| क्षयः स्थानं च वृद्धिश्च त्रिवर्गो नीतिवेदिनाम् | १५०६ |
| स प्रतापः प्रभावश्च यत्तेजः कोपदण्डजम्          | १५०७ |
| भेदो दण्डः साम दानमित्युपायचतुष्टयम्            | १५०८ |
| साहसं तु दमो दण्डः साम सान्त्वमयो समौ           | १५०९ |
| भेदोपजापावुपधा धर्माद्यैर्यत्परीक्षणम्          | १५१० |
| पञ्च त्रिष्वपडक्षीणो यस्तृतीयाद्यगोचरः          | १५११ |
| विविक्तविजनच्छन्ननिःशलाकास्तथा रहः              | १५१२ |
| रहश्चोपांशु चालिङ्गे रहस्यं तद्भवे त्रिषु       | १५१३ |
| समौ विसम्भविश्वासौ भ्रपो भ्रंशो यथोचितात्       | १५१४ |

१ लको

|   |      |
|---|------|
| अश्वेपन्यायकल्पास्तु देशरूपं समञ्जसम्           | १५१५ |
| युक्तमौपयिकं लभ्यं भजमानाभिनीतवत्               | १५१६ |
| न्याय्यं च त्रिषु पट्ट संप्रधारणा तु समर्थनम्   | १५१७ |
| अववादस्तु निर्देशो निदेशः शासनं च सः            | १५१८ |
| शिष्टिश्चाज्ञा च सस्था तु मर्यादा धारणा स्थितिः | १५१९ |
| आगोऽपराधो मन्तुश्च समे तूद्दानबन्धने            | १५२० |
| द्विपाद्यो द्विगुणो दण्डो भागधेयः करो वलिः      | १५२१ |
| घट्टादिदेयं शुक्लोऽस्त्री ग्राभृत तु प्रदेशनम्  | १५२२ |
| उपायनमुपग्राह्यमुपहारस्तथोपदा                   | १५२३ |
| यौतकादि तु यद्देयं सुदायो हरणं च तत्            | १५२४ |
| तत्कालस्तु तदात्वं स्यादुत्तरः काल आयति.        | १५२५ |
| सांष्ट्रिकं फलं सद्य उदकः फलमुत्तरम्            | १५२६ |
| अदृष्टं वह्नितोयादि दृष्टं स्वपरचक्रजम्         | १५२७ |
| महीभुजामहिभयं स्वपक्षप्रभवं भयम्                | १५२८ |
| प्रक्रिया त्यधिकार. स्याच्चांमर तु प्रकीर्णकम्  | १५२९ |
| नृपासन यत्तद्भद्रासन सिंहासनं तु तत्            | १५३० |
| हंस छत्र त्वातपत्रं राज्ञस्तु नृपलक्षम् तत्     | १५३१ |
| भद्रकुम्भः पूर्णकुम्भो भृङ्गार. कनकालुका        | १५३२ |
| निवेशः शिविरं पण्डे सज्जनं तूपरक्षणम्           | १५३३ |
| हस्त्यश्वरथपादात् सेनाङ्गं स्याच्चतुष्टयम्      | १५३४ |
| दन्ती दन्तावलो हस्ती द्विरदोऽनेकपो द्विप.       | १५३५ |
| मतङ्गजो गजो नाग. कुञ्जरो वारण. करी              | १५३६ |



|  |      |
|--|------|
| इभः स्तम्भेरमः पद्मो यूथनाथस्तु यूथपः                    | १५३७ |
| मदोत्कटो मदकलः कलभः करिशावकः                             | १५३८ |
| प्रभिन्नो गर्जितो मत्तः समाबुद्धान्तनिर्मदो              | १५३९ |
| हास्तिकं गजता वृन्दे करिणी धेनुका वशा                    | १५४० |
| गण्डः कटो मदो दानं वमथुः करशीकरः                         | १५४१ |
| कुम्भौ तु पिण्डौ शिरसस्तयोर्मध्ये विदुः पुमान्           | १५४२ |
| अवग्रहो ललाटं स्यादीपिका त्वक्षिकूटकम्                   | १५४३ |
| अपाङ्गदेशो निर्याणं कर्णमूलं तु चूलिका                   | १५४४ |
| अधः कुम्भस्य बाह्विथं प्रतिमानमधोऽस्य यत्                | १५४५ |
| आसनं स्कन्धदेशः स्यात्पद्मकं विन्दुजालकम्                | १५४६ |
| पार्श्वभागः पक्षभागो दन्तभागस्तु योऽग्रतः                | १५४७ |
| द्वौ पूर्वपश्चाज्जङ्घादिदेशौ गात्रावरे क्रमात्           | १५४८ |
| तोत्रं वेणुकमालानं वन्धस्तम्भेऽथ शृङ्खले                 | १५४९ |
| अन्दुको निगडोऽस्त्री स्यादङ्कुशोऽस्त्री सृणिः स्त्रियाम् | १५५० |
| दूष्या कक्ष्या वरत्रा स्यात्कल्पना सज्जना समे            | १५५१ |
| प्रवेण्यास्तरणं वर्णः परिस्तोमः कुथो द्वयोः              | १५५२ |
| वीतं त्वसारं हस्त्यश्वं वारी तु गजबन्धनी                 | १५५३ |
| घोटके वीतितुरगतुरंगाश्वतुरंगमाः                          | १५५४ |
| वाजिवाहार्वागन्धर्वहयसैन्धवसप्तयः                        | १५५५ |
| आजानेयाः कुलीनाः स्युर्विनीताः साधुवाहिनः                | १५५६ |
| वलायुजाः पारसीकाः काम्बोजा बाह्लिका हयाः                 | १५५७ |
| ययुरश्वोऽश्वमेधीयो जवनंस्तु जवाधिकः                      | १५५८ |

|   |      |
|---|------|
| पृष्ठय स्थौरी सितः कर्को रथ्यो वोढा रथस्य य             | १५५९ |
| वाल किशोरो वाम्यश्वा वडवा वालवं गणे                     | १५६० |
| त्रिप्लास्थीनं यदश्वेन दिनेनैकेन गम्यते                 | १५६१ |
| कश्यं तु मध्यमश्वाना हेषा हेषा च निम्बनः                | १५६२ |
| निगालस्तु गलोद्देशो वृन्दे त्वस्थीयमाश्रवत्             | १५६३ |
| आस्कन्दितं धौरितकं रेचितं वलिगतं हुतम्                  | १५६४ |
| गतयोऽमूः पञ्च धारा घोणा तु प्रोधमस्त्रियाम्             | १५६५ |
| कविका तु खलीनोऽस्त्री शफ ह्रीवे खुरः पुमान्             | १५६६ |
| पुच्छोऽस्त्री लूमलाङ्गुले वालहस्तश्च वालधिः             | १५६७ |
| त्रिपूपावृत्तलुठितौ परावृत्ते मुहुर्भुवि                | १५६८ |
| याने चक्रिणि युद्धार्थे शताङ्गः स्यन्दनो रथः            | १५६९ |
| असौ पुण्यरथश्चक्रयानं न समराय यत्                       | १५७० |
| कर्णारथः प्रवहण डयन च सम त्रयम्                         | १५७१ |
| ह्रीवेऽनः शकटोऽस्त्री स्याद्गन्त्री कम्बलियाद्यकम्      | १५७२ |
| शिबिका याप्ययानं स्याद्दोला प्रेक्षादिका स्त्रियाम्     | १५७३ |
| उभौ तु द्वैपवैयाघ्रौ द्वीपिचर्मावृते रथे                | १५७४ |
| पाण्डुकम्बलसंवीतः स्यन्दन पाण्डुकम्बली                  | १५७५ |
| रथे काम्बलवस्त्राद्याः कम्बलादिभिरावृते                 | १५७६ |
| त्रिषु द्वैपादयो रथ्या रथकट्या रथव्रजे                  | १५७७ |
| धृः स्त्री ह्रीवे यानमुखं स्याद्द्रवाङ्गमपस्करः         | १५७८ |
| चक्र रथाङ्गं तस्यान्ते नेमिः स्त्री स्यात्प्रधिः पुमान् | १५७९ |
| पिण्डिका नाभिन्क्षाग्रकीलके तु द्वयोरणिः                | १५८० |

|  |      |
|--|------|
| रथगुप्तिर्वरूथो ना कूवरस्तु युगंधरः          | १५८१ |
| अनुकर्षो दार्वधःस्थं प्रासङ्गो ना युगाद्युगः | १५८२ |
| सर्वं स्याद्वाहनं यानं युग्यं पत्रं च धोरणम् | १५८३ |
| परम्परावाहनं यत्तद्वैनीतकमस्त्रियाम्         | १५८४ |
| आधोरणा हस्तिपका हस्त्यारोहा निषादिनः         | १५८५ |
| नियन्ता प्राजिता यन्ता सूतः क्षत्ता च सारथिः | १५८६ |
| सव्येष्टदक्षिणस्थौ च संज्ञा रथकुटुम्बिनः     | १५८७ |
| रथिनः स्यन्दनारोहा अश्वारोहास्तु सादिनः      | १५८८ |
| भटा योधाश्च योद्धारः सेनारक्षास्तु सैनिकाः   | १५८९ |
| सेनायां समवेता ये सैन्यास्ते सैनिकाश्च ते    | १५९० |
| वलिनो ये सहस्रेण साहस्रांस्ते सहस्रिणः       | १५९१ |
| परिधिस्थः परिचरः सेनानीर्वाहिनीपतिः          | १५९२ |
| कञ्चुको वारवाणोऽस्त्री यत्तु मध्ये सकञ्चुकाः | १५९३ |
| वध्नन्ति तत्सारसनमधिकाङ्गोऽथ शीर्षकम्        | १५९४ |
| शीर्षण्यं च शिरस्त्रेऽथ तनुत्रं वर्म दंशनम्  | १५९५ |
| उरश्छदः कङ्कटको जगरः कवचोऽस्त्रियाम्         | १५९६ |
| आमुक्तः प्रतिमुक्तश्च पिनद्धश्चापिनद्धवत्    | १५९७ |
| संनद्धो वर्मितः सज्जो दंशितो व्यूढकङ्कटः     | १५९८ |
| त्रिष्वामुक्तादयो वर्मभृतां कावचिकं गणे      | १५९९ |
| पदातिपत्तिपदगपादातिकपदाजयः                   | १६०० |
| पद्मश्च पदिकश्चाथ पादातं पत्तिसंहतिः         | १६०१ |
| शस्त्राजीवे काण्डपृष्ठायुधीयायुधिकाः समाः    | १६०२ |

|   |      |
|---|------|
| कृतहस्तः सुप्रयोगविशिखः कृतपुङ्खवत्               | १६०३ |
| अपराद्धपृषत्कोऽसौ लक्ष्याद्यश्रुतसायकः            | १६०४ |
| धन्वी धनुष्मान्धानुष्को निपङ्गयस्त्री धनुर्धरः    | १६०५ |
| स्यात्काण्डवांस्तु काण्डीरः शाक्तीकः शक्तिहेतिकः  | १६०६ |
| याष्टीकपारश्वधिकौ यष्टिपार्श्वधहेतिकौ             | १६०७ |
| नैस्त्रिंशिकोऽसिहेति स्वात्समौ ग्रासिककौन्तिकौ    | १६०८ |
| चर्मी फलकपाणिः स्यात्पताकी वैजयन्तिकः             | १६०९ |
| अनुप्लवः सहायश्चानुचरोऽभिसरः समा                  | १६१० |
| पुरोगाग्रेसरप्रष्ठाग्रतः सरपुरः सराः              | १६११ |
| पुरोगमः पुरोगामी मन्दगामी तु मन्थर                | १६१२ |
| जह्वालोऽतिजवस्तुल्यौ जह्वाकरिकजाह्निकौ            | १६१३ |
| तरस्वी त्वरितो वेगी प्रजवी जवनो जव                | १६१४ |
| जय्यो यः शक्यते जेतुं जेयो जेतव्यमात्रके          | १६१५ |
| जैत्रस्तु जेता यो गच्छत्यलं विद्विषतः प्रति       | १६१६ |
| सोऽभ्यमित्र्योऽभ्यमित्र्योऽप्यभ्यमित्र्येण इत्यपि | १६१७ |
| ऊर्जस्वलः स्यादूर्जस्वी य ऊर्जातिशयान्वितः        | १६१८ |
| स्यादुरस्वानुरसिलो रधिको रधिरो रधी                | १६१९ |
| कामंगाभ्यनुकामीनो ह्यत्यन्तीनस्तथा भृशम्          | १६२० |
| शूरो वीरश्च विक्रान्तो जेता जिष्णुश्च जित्वर      | १६२१ |
| मायुगीनो रणे माधुः शस्त्राजीवादयस्त्रिषु          | १६२२ |
| ध्वजिनी बाहिनी मेना पृतनाऽनीकिनी चमूः             | १६२३ |
| वरुधिनी वरुं मेन्य चक्रं चानीकमस्त्रियाम्         | १६२४ |

|  |      |
|--|------|
| व्यूहस्तु बलविन्यासो भेदा दण्डादयो युधि            | १६२५ |
| प्रत्यासारो व्यूहपार्ष्णिः सैन्यपृष्ठे प्रतिग्रहः  | १६२६ |
| एकेभैकरथा त्र्यश्वा पत्तिः पञ्चपदातिका             | १६२७ |
| पत्त्यङ्गैस्त्रिगुणैः सर्वैः क्रमादाख्या यथोत्तरम् | १६२८ |
| सेनामुखं गुल्मगणौ वाहिनी पृतना चमूः                | १६२९ |
| अनीकिनी दशानीकिन्यक्षौहिण्यथ संपदि                 | १६३० |
| संपत्तिः श्रीश्च लक्ष्मीश्च विपत्त्यां विपदापदौ    | १६३१ |
| आयुधं तु प्रहरणं शस्त्रमस्त्रमथास्त्रियौ           | १६३२ |
| धनुश्चापौ धन्वशरासनकोदण्डकार्मुकम्                 | १६३३ |
| इष्वासोऽप्यथ कर्णस्य कालपृष्ठं शरासनम्             | १६३४ |
| कपिध्वजस्य गाण्डीवगाण्डिवौ पुंनपुंसकौ              | १६३५ |
| कोटिरस्याटनी गोधे तले ज्याघातवारणे                 | १६३६ |
| लस्तकस्तु धनुर्मध्यं मौर्वी ज्या शिञ्जिनी गुणः     | १६३७ |
| स्यात्प्रत्यालीढमालीढमित्यादि स्थानपञ्चकम्         | १६३८ |
| लक्षं लक्ष्यं शरव्यं च शराभ्यास उपासनम्            | १६३९ |
| पृषत्कवाणविशिखा अजिह्मगखगाशुगाः                    | १६४० |
| कलम्बमार्गणशराः पत्री रोप इषुर्द्वयोः              | १६४१ |
| प्रक्ष्वेडनास्तु नाराचाः पक्षो वाजस्त्रिषूत्तरे    | १६४२ |
| निरस्तः प्रहिते वाणे विपाक्ते दिग्धलिप्तकौ         | १६४३ |
| तूणोपासङ्गतूणीरनिषङ्गा इषुधिर्द्वयोः               | १६४४ |
| तूण्यां खड्गे तु निस्त्रिंशचन्द्रहासासिरिष्टयः     | १६४५ |
| कौक्षेयको मण्डलाग्रः करवालः कृपाणवत्               | १६४६ |

|   |      |
|---|------|
| त्सरुः खड्गादिमुष्टौ स्थान्मेखला तन्निबन्धनम्     | १६४७ |
| फलकोऽस्त्री फल चर्म संग्राहो मुष्टिरस्य यः        | १६४८ |
| दुग्धणो मुद्गरधनौ स्यादीली करवालीका               | १६४९ |
| भिन्दिपालः सृगस्तुल्यौ परिघः परिघातिनः            | १६५० |
| द्वयोः कुठारः स्वधितिः परशुश्च परश्वधः            | १६५१ |
| स्याच्छस्त्री चासिपुत्री च छुरिका चासिधेनुका      | १६५२ |
| चा पुंसि शल्यं शङ्कुर्ना सर्वला तोमरोऽस्त्रियाम्  | १६५३ |
| प्रासस्तु कुन्तः कोणस्तु स्त्रियः पाल्यश्रिकोट्यः | १६५४ |
| सर्वाभिसारः सर्वौघः सर्वमनहनार्थकः                | १६५५ |
| लोहाभिसारोऽस्त्रभृता राज्ञा नीराजनाविधिः          | १६५६ |
| यत्सेनयाभिगमनमरो तदभिषेणनम्                       | १६५७ |
| यात्रा ब्रज्याऽभिनिर्माणं प्रस्थानं गमन गमः       | १६५८ |
| स्यादासारः प्रसरणं प्रचक्रं चलितार्थकम्           | १६५९ |
| अहितान्प्रत्यभीतस्य रणे यानमभिक्रमः               | १६६० |
| वैतालिका बोधकराश्चाक्रिका घाण्टिकार्थका           | १६६१ |
| स्युर्मागधास्तु भगवा चन्दिनः स्तुतिपाठका          | १६६२ |
| संशप्तकास्तु समयात्सद्गामादनिवर्तिनः              | १६६३ |
| रेणुर्द्वयोः स्त्रिया धूलिः पाशुर्ना न द्वयो रजः  | १६६४ |
| चूर्णं क्षौद्रः समुत्पिञ्जपिञ्जली भृशमाकुले       | १६६५ |
| पताका वज्रयन्ती स्यात्केतनं ध्वजमस्त्रियाम्       | १६६६ |
| सा वीराशसनं युद्धभूमिर्याऽतिभयप्रदा               | १६६७ |
| अहंपूर्वमहंपूर्वमित्यहंपूर्विका स्त्रियाम्        | १६६८ |

|   |      |
|---|------|
| आहोपुरुषिका दर्पाद्या स्यात्संभावनात्मनि      | १६६९ |
| अहमहमिका तु सा स्यात्परस्परं यो भवत्यहंकारः   | १६७० |
| द्रविणं तरः सहोवलशौर्याणि स्थाम शुष्मं च      | १६७१ |
| शक्तिः पराक्रमः प्राणो विक्रमस्त्वतिशक्तिता   | १६७२ |
| वीरपाणं तु यत्पानं वृत्ते भाविनि वा रणे       | १६७३ |
| युद्धमायोधनं जन्यं प्रधनं प्रविदारणम्         | १६७४ |
| मृधमास्कन्दनं संख्यं समीकं सांपरायिकम्        | १६७५ |
| अस्त्रियां समरानीकरणाः कलहविग्रहौ             | १६७६ |
| संप्रहाराभिसंपातकलिसंस्फोटसंयुगाः             | १६७७ |
| अभ्यामर्दसमाघातसद्भामाभ्यागमाहवाः             | १६७८ |
| समुदायः स्त्रियः संयत्समित्याजिसमिद्युधः      | १६७९ |
| नियुद्धं बाहुयुद्धेऽथ तुमुलं रणसंकुले         | १६८० |
| क्ष्वेडा तु सिंहनादः स्यात्करिणां घटना घटा    | १६८१ |
| क्रन्दनं योधसंरावो बृंहितं करिगर्जितम्        | १६८२ |
| विस्फारो धनुषः स्वानः पटहाडम्बरौ समौ          | १६८३ |
| प्रसभं तु वलात्कारो हठोऽथ स्खलितं छलम्        | १६८४ |
| अजन्यं क्लीबमुत्पात उपसर्गः समं त्रयम्        | १६८५ |
| मूर्च्छा तु कश्मलं मोहोऽप्यवमर्दस्तु प्रीडनम् | १६८६ |
| अभ्यवस्कन्दनं त्वभ्यासादनं विजयो जयः          | १६८७ |
| वैरशुद्धिः प्रतीकारो वैरनिर्यातनं च सा        | १६८८ |
| प्रद्रावोद्रावसंद्रावसंदावा विद्रवो द्रवः     | १६८९ |
| अपक्रमोऽपयानं च रणेः भङ्गः पराजयः             | १६९० |

|   |      |
|---|------|
| पराजितपराभूतौ त्रिषु नष्टतिरोहितौ                 | १६९१ |
| प्रमापणं निर्वहणं निकारण विशारणम्                 | १६९२ |
| प्रवासनं परासनं निपूदनं निहिसनम्                  | १६९३ |
| निर्वासनं सज्ञपनं निर्ग्रन्थनमपासनम्              | १६९४ |
| निस्तरहणं निहननं क्षणनं परिवर्जनम्                | १६९५ |
| निर्घापणं विशसनं भारणं प्रतिघातनम्                | १६९६ |
| उद्धासनप्रमथनक्रथनोज्जासनानि च                    | १६९७ |
| आलम्भपिञ्जविशरघातोन्माद्यवधा अपि                  | १६९८ |
| स्यात्पञ्चता कालधर्मो दिष्टान्तः प्रलयोऽत्ययः     | १६९९ |
| अन्तो नाशो द्वयोर्मृत्युर्मरण निधनोऽस्त्रियाम्    | १७०० |
| परासुप्राप्तपञ्चत्वपरेतप्रेतसंस्थिताः             | १७०१ |
| मृतप्रमीतौ त्रिष्वेते चिता चित्या चिति स्त्रियाम् | १७०२ |
| कवन्धोऽस्त्री क्रियायुक्तमपमूर्धकलेवरम्           | १७०३ |
| श्मशानं स्यात्पितृवनं कुणप श्वमस्त्रियाम्         | १७०४ |
| प्रग्रहोपग्रहौ वन्द्या कारा स्याद्वन्धनालये       | १७०५ |
| पुंसि भूम्न्यसद्यः प्राणाश्चैव जीवोऽसुधारणम्      | १७०६ |
| आयुर्जीवितकालो ना जीप्रातुर्जीवनौषधम्             | १७०७ |

१० वैश्यवर्गः ।

|  |      |
|--|------|
| ऊरव्या ऊरुजा अर्या वैश्या भूमिस्पृशो विशः      | १७०८ |
| आजीवो जीमिका वार्ता वृत्तिवर्तनजीवने           | १७०९ |
| स्त्रिया कृपिः पाशुपाल्य वाणिज्यं चेति वृत्तयः | १७१० |
| सेवा श्ववृत्तिरनृतं कृपिरुच्छशिल तृप्तम्       | १७११ |



|  |      |
|--|------|
| द्वे याचितायाचितयोर्यथासंख्यं मृतामृते                 | १७१२ |
| सत्यानृतं वणिग्भावः स्यादृणं पर्युदञ्चनम्              | १७१३ |
| उद्धारोऽर्थप्रयोगस्तु कुसीदं वृद्धिजीविका              | १७१४ |
| याज्यासं याचितकं निमयादापमित्यकम्                      | १७१५ |
| उत्तमर्णाधमर्णां द्वौ प्रयोक्तृग्राहकौ क्रमात्         | १७१६ |
| कुसीदिको वार्धुपिको वृद्ध्याजीवश्च वार्धुपिः           | १७१७ |
| क्षेत्राजीवः कर्पकश्च कृषिकश्च कृषीवलः                 | १७१८ |
| क्षेत्रं त्रैहेयशालेयं त्रीहिशाल्युद्भवोचितम्          | १७१९ |
| यव्यं यवक्यं पष्टिक्यं यवादिभवनं हि यत्                | १७२० |
| तिल्यं तैलीनवन्मापोमाणुभङ्गा द्विरूपता                 | १७२१ |
| मौद्गीनकौद्रवीणादि शेषधान्योद्भवक्षमम्                 | १७२२ |
| ‘शाकक्षेत्रादिके शाकशाकटं शाकशाकिनम्’                  | ***  |
| बीजाकृतं तूस्तकृष्टे सीत्यं कृष्टं च हल्यवत्           | १७२३ |
| त्रिगुणाकृतं तृतीयाकृतं त्रिहल्यं त्रिसीत्यमपि तस्मिन् | १७२४ |
| द्विगुणाकृते तु सर्वं पूर्वं शम्बाकृतमपीह              | ११७५ |
| द्रोणाढकादिवापादौ द्रौणिकाढकिकादयः                     | १७२६ |
| खारीवापस्तु खारीक उत्तमर्णादयस्त्रिषु                  | १७२७ |
| पुंसपुंसकयोर्वप्रः केदारः क्षेत्रमस्य तु               | १७२८ |
| कैदारकं स्यात्कैदार्यं क्षेत्रं कैदारिकं गणे           | १७२९ |
| लोष्टानि लेष्टवः पुंसि कोटिशो लोष्टभेदनः               | १७३० |
| प्राजनं तोदनं तोत्रं खनित्रमवदारणे                     | १७३१ |
| दात्रं लवित्रमावन्धो योत्रं योक्रमथो फलम्              | १७३२ |

|   |      |
|---|------|
| निरीशं कुटकं फालः कृपको लाङ्गलं हलम्                    | १७३३ |
| गोदारणं च सीरोऽथ शम्या स्त्री युगकीलकः                  | १७३४ |
| ईषा लाङ्गलदण्डः स्यात्सीता लाङ्गलपद्धतिः                | १७३५ |
| पुंसि मेधिः खले दारु न्यस्तं यत्पशुबन्धने               | १७३६ |
| आशुग्रीहिः पाटलः स्याच्छितशूकयवौ समौ                    | १७३७ |
| तोकमस्तु तत्र हरिते कलायस्तु सतीनकः                     | १७३८ |
| हरेणुसण्डिकौ चास्मिन्कोरदूपस्तु कोट्रवः                 | १७३९ |
| मङ्गल्यको मसूरोऽथ मकुष्टकमयुष्टकौ                       | १७४० |
| वनमुद्गे सर्पपे तु द्वौ तन्तुभकदम्बकौ                   | १७४१ |
| सिद्धार्थस्त्वेष धवलो गोधूमः सुमनः समौ                  | १७४२ |
| स्याद्यावकस्तु कुल्माषश्चणको हरिमन्यकः                  | १७४३ |
| द्वौ तिले तिलपेजश्च तिलपिञ्जश्च निष्फले                 | १७४४ |
| क्षवः क्षुताभिजननो राजिका कृष्णिकासुरी                  | १७४५ |
| स्त्रियौ कङ्कुप्रियङ्गू द्वे अतसी स्यादुमा क्षुमा       | १७४६ |
| मातुलानी तु भङ्गाया ग्रीहिभेदस्त्वणुः पुमान्            | १७४७ |
| किंशारः सस्यशूक स्यात्कणिशं सस्यमञ्जरी                  | १७४८ |
| धान्यं ग्रीहिः स्रग्भकरिः स्रग्भो गुच्छस्तृणादिनः       | १७४९ |
| नाडी नालं च काण्डोऽथ पलालोऽस्त्री स निष्फलः             | १७५० |
| कडङ्गरो वुसं ह्रीवे धान्यत्वचि तुप पुमान्               | १७५१ |
| शूकोऽस्त्री श्लक्ष्णतीक्ष्णाग्रे शमी शिम्वा त्रिपूत्तरे | १७५२ |
| ऋद्धमावसितं धान्यं पूतं तु बहुलीकृतम्                   | १७५३ |
| माषादयः शमीधान्ये शूकधान्ये यवादयः                      | १७५४ |

|   |      |
|---|------|
| शालयः कलमाद्याश्च पट्टिकाद्याश्च पुंस्यमी                 | १७५५ |
| तृणधान्याने नीवाराः स्त्री गवेधुर्गवेधुका                 | १७५६ |
| अयोग्रं मुसलोऽस्त्री स्यादुदूखलमुलूखलम्                   | १७५७ |
| ग्रस्फोटनं शूर्पमस्त्री चालनी तितरः पुमान्                | १७५८ |
| स्यूतप्रसेवौ कण्डोलपिटौ कटकिलिङ्गिकौ                      | १७५९ |
| समानौ रसवत्यां तु पाकस्थानमहानसे                          | १७६० |
| पौरोगवस्तदध्यक्षः सूपकारास्तु बलवाः                       | १७६१ |
| आरालिका आन्धसिकाः सूदा औदनिका गुणाः                       | १७६२ |
| आपूपिकः कान्दविको भक्ष्यकार इमे त्रिषु                    | १७६३ |
| अश्मन्तमुद्गानमधिश्रयणी चुलिरन्तिका                       | १७६४ |
| अङ्गारधानिकाङ्गारशकट्यपि हसन्त्यपि                        | १७६५ |
| हसन्त्यप्यथ न स्त्री स्यादङ्गारोऽलातमुल्मुकम्             | १७६६ |
| क्लीवेऽम्बरीषं भ्राष्ट्रो ना कन्दुर्वा स्वेदनी स्त्रियाम् | १७६७ |
| अलिङ्गरः स्यान्मणिकः कर्कर्यालुर्गलन्तिका                 | १७६८ |
| पिठरः स्याल्युखा कुण्डं कलशस्तु त्रिषु द्वयोः             | १७६९ |
| घटः कुटनिपावस्त्री शरावो वर्धमानकः                        | १७७० |
| ऋजीषं पिष्टपचनं कंसोऽस्त्री पानभाजनम्                     | १७७१ |
| कुतूः कृत्तेः स्नेहपात्रं सैवाल्पा कुतुपः पुमान्          | १७७२ |
| सर्वमावपनं भाण्डं पात्रामत्रं च भाजनम्                    | १७७३ |
| दर्विः कम्बिः खजाका च स्यात्तर्दूर्दारुहस्तकः             | १७७४ |
| अस्त्री शाकं हरितकं शिग्रुरस्य तु नाडिका                  | १७७५ |
| कलम्बश्च कडम्बश्च वेसवार उपस्करः                          | १७७६ |

|  |      |
|--|------|
| तिन्तिडीकं च चुक्र च वृक्षाम्बलमथ वेछजम्       | १७७७ |
| मरीचं कोलकं कृष्णमूषण धर्मपत्तनम्              | १७७८ |
| जीरको जरणोऽजाजी कणा कृष्णे तु जीरके            | १७७९ |
| सुपधी कारवी पृथ्वी पृथुः कालोपकुञ्चिका         | १७८० |
| आर्द्रकं शृङ्गवेर स्यादथ छत्रा वितुन्नकम्      | १७८१ |
| कुस्तुम्बरु च धान्याकमथ शुण्ठी महौषधम्         | १७८२ |
| स्त्रीनपुसकयोर्विश्वं नागरं विश्वभेषजम्        | १७८३ |
| आरनालकसौवीरकुल्माषाभिपुतानि च                  | १७८४ |
| अवन्तिसोमधान्याम्बलकुञ्जलानि च काञ्जिके        | १७८५ |
| सहस्रवेधि जतुक वाहीकं हिङ्गु रामठम्            | १७८६ |
| तत्पत्री कारवी पृथ्वी वाप्पिका कवरी पृथुः      | १७८७ |
| निशाख्या काञ्चनी पीता हरिद्रा वरवर्णिनी        | १८८८ |
| सामुद्रं यत्तु लवणमक्षीवं यशिर च तत्           | १७८९ |
| सैन्धवोऽस्त्री शीतशिव मणिमन्थं च सिन्धुजे      | १७९० |
| रौमकं वसुकं पाक्यं विडं च कृतके द्वयम्         | १७९१ |
| सौवर्चलेऽक्षरुचके तिलकं तत्र मेचके             | १७९२ |
| मत्स्यण्डी फाणित सण्डविकार शर्करा सिता         | १७९३ |
| कूर्चिका क्षीरविकृतिः स्याद्रसाला तु मार्जिता  | १७९४ |
| स्यात्तेमनं तु निष्ठानं त्रिलिङ्गा वासिताग्धेः | १७९५ |
| शलाकृतं भट्टित्र स्याच्छूल्यमुख्यं तु पठरम्    | १७९६ |
| प्रणीतमुपमं पन्नं प्रयस्तं स्यात्सुसस्कृतम्    | १७९७ |
| स्यात्पिच्छिलं तु विजिल संमृष्टं शोधितं समे    | १७९८ |

|   |      |
|---|------|
| चिकणं मसृणं स्निग्धं तुल्ये भावितवासिते           | १७९९ |
| आपक्वं पौलिरभ्यूपो लाजाः पुंभूम्नि चाक्षताः       | १८०० |
| घृथुकः स्याच्चिपिटको धाना भ्रष्टयवे स्त्रियः      | १८०१ |
| यूपोऽयूपः पिष्टकः स्यात्करम्भो दधिसक्तयः          | १८०२ |
| भिःसा स्त्री भक्तमन्धोऽन्नमोदनोऽस्त्री स दीदिविः  | १८०३ |
| भिःसटा दग्धिका सर्वरसाग्रे मण्डमस्त्रियाम्        | १८०४ |
| मासराचामनिस्त्रावा मण्डे भक्तसमुद्भवे             | १८०५ |
| यवागूरुष्णिका श्राणा विलेपी तरला च सा             | १८०६ |
| ‘अक्षणाभ्यञ्जने तैलं कृसरस्तु तिलौदनः’            | ***  |
| गव्यं त्रिषु गवां सर्वं गोविट् गोमयमस्त्रियाम्    | १८०७ |
| तत्र शुष्कं करीषोऽस्त्री दुग्धं क्षीरं पयः समम्   | १८०८ |
| पयस्यमाज्यदध्यादि द्रव्यं दधि घनेतरत्             | १८०९ |
| घृतमाज्यं हविः सर्पिर्नवनीतं नवोद्धृतम्           | १८१० |
| तत्र हैयंगवीनं यत् ह्योगोदोहोद्भवं घृतम्          | १८११ |
| दण्डाहतं कालशेयमरिष्टमपि गोरसः                    | १८१२ |
| तक्रं ह्युदश्विन्मथितं पादाम्ब्वर्धाम्बु निर्जलम् | १८१३ |
| मण्डं दधिभवं मस्तु पीयूषोऽभिनवं पयः               | १८१४ |
| अशनाया बुभुक्षा क्षुद्रासस्तु कवलः पुमान्         | १८१५ |
| सपीतिः स्त्री तुल्यपानं सग्धिः स्त्री सहभोजनम्    | १८१६ |
| उदन्या तु पिपासा तृट् तर्पो जग्धिस्तु भोजनम्      | १८१७ |
| जेमनं लेह आहारो निघसो न्याद इत्यपि                | १८१८ |
| सौहित्यं तर्पणं तृप्तिः फेला भुक्तसमुज्झितम्      | १८१९ |

|  |      |
|--|------|
| कामं प्रकामं पर्याप्त निष्कामेष्टं यवेप्सितम्    | १८२० |
| गोपे गोपालगोसंख्यगोधुगाभीरबल्लवाः                | १८२१ |
| गोमहिष्यादिकं पादबन्धन द्वौ गवीश्वरे             | १८२२ |
| गोमान्गोमी गोकुलं तु गोधन स्याद्गवां व्रजे       | १८२३ |
| त्रिष्याशितंगवीनं तद्गावो यत्राशिता पुरा         | १८२४ |
| उक्षा भद्रो बलीवर्द ऋषभो वृषभो वृषः              | १८२५ |
| अनङ्गान्सौरभेयो गौरुक्षणा सहतिरौक्षकम्           | १८२६ |
| गव्या गोत्रा गवां वत्सधेन्वोर्यात्सकधेनुके       | १८२७ |
| वृषो महान्महोक्षः स्याद्वृद्धोक्षस्तु जरङ्गवः    | १८२८ |
| उत्पन्न उक्षा जातोक्षः सद्यो जातस्तु तर्णकः      | १८२९ |
| शकृत्करिस्तु वत्सः स्याद्दम्यवत्सतरो समौ         | १८३० |
| आर्षभ्यः पण्डितायोग्यः पण्डो गोपतिरिदृचरः        | १८३१ |
| स्कन्धदेशे त्वस्य बहः सास्त्रा तु गलकम्पल        | १८३२ |
| स्यान्नस्तितस्तु नस्योतः प्रष्टवाङ्मयुगपार्श्वगः | १८३३ |
| युगादीना तु योढारो युग्यप्रासङ्ग्यशाकटाः         | १८३४ |
| खनति तेन तद्वोढास्येद हालिकसैरिका                | १८३५ |
| धूर्वहे धुर्यधौरेयधुरीणाः सधुरंधराः              | १८३६ |
| उभावेकधुरीणैकधुरावेकधुरावहे                      | १८३७ |
| स तु सर्वधुरीणः स्याद्यो च सर्वधुरावह            | १८३८ |
| माहेयी सौरभेयी गौरुस्त्रा माता च शृङ्गिणी        | १८३९ |
| अर्जुन्यघ्न्या रोहिणी स्यादुत्तमा गोषु नैचिकी    | १८४० |
| यणादिभेदात्संज्ञाः स्युः शबलीधमलादय              | १८४१ |

|  |      |
|--|------|
| द्विहायनी द्विवर्षा गौरेकाब्दा त्वेकहायनी      | १८४२ |
| चतुरब्दा चतुर्हायण्येवं च्चब्दा त्रिहायणी      | १८४३ |
| वशा वन्ध्यावतोका तु स्रवद्गर्भाथ संधिनी        | १८४४ |
| आक्रान्ता वृषभेणाथ वेहद्गर्भोपघातिनी           | १८४५ |
| काल्योपसर्गा प्रजने प्रष्टौही वालगर्भिणी       | १८४६ |
| स्यादक्ष्ण्डी तु सुकरा बहुसूतिः परेष्टुका      | १८४७ |
| चिरप्रसूता वष्कयणी धेनुः स्यान्नवसूतिका        | १८४८ |
| सुव्रता सुखसंदोह्या पीनोन्नी पीवरस्तनी         | १८४९ |
| द्रोणक्षीरा द्रोणदुग्धा धेनुण्या बन्धके स्थिता | १८५० |
| समांसमीना सा यैव प्रतिवर्षे प्रसूयते           | १८५१ |
| ऊधस्तु क्लीवमापीनं समौ शिवककीलकौ               | १८५२ |
| न पुंसि दाम संदानं पशुरज्जुस्तु दामनी          | १८५३ |
| वैशाखमन्थमन्थानमन्थानो मन्थदण्डके              | १८५४ |
| कुठरो दण्डविष्कम्भो मन्थनी गर्गरी समे          | १८५५ |
| उष्ट्रे क्रमेलकमयमहाङ्गाः करभः शिशुः           | १८५६ |
| करभाः स्युः शृङ्खलका दारवैः पादबन्धनैः         | १८५७ |
| अजा च्छागी शुभच्छागवस्तच्छगलका अजे             | १८५८ |
| मेढोरभ्रोरणोर्णायुमेषवृष्णय एडके               | १८५९ |
| उष्ट्रोरभ्राजवृन्दे स्यादौष्ट्रकौरभ्रकाजकम्    | १८६० |
| चक्रीवन्तस्तु वालेया रासभा गर्दभाः खराः        | १८६१ |
| वैदेहकः सार्थवाहो नैगमो वाणिजो वणिक्           | १८६२ |
| पण्याजीवो ह्यापणिकः क्रयविक्रयिकश्च सः         | १८६३ |

|   |      |
|---|------|
| विक्रेता स्याद्विक्रयिकः क्रायिकक्रयिकौ समौ       | १८६४ |
| चाणिज्यं तु चाणिज्या स्यान्मूल्यं वस्तोऽप्यवक्रयः | १८६५ |
| नीवी परिपणो मूलधन लाभोऽधिक फलम्                   | १८६६ |
| परिदानं परीवर्तो नैमेयनिमयावपि                    | १८६७ |
| पुमानुपनिधिर्न्यासः प्रतिदान तदर्पणम्             | १८६८ |
| क्रये प्रसारितं क्रय्यं क्रेयं केतव्यमात्रके      | १८६९ |
| विक्रेयं पणितव्यं च पण्यं क्रय्यादयस्त्रिषु       | १८७० |
| क्रीवे सत्यापनं सत्यंकारः सत्याकृतिः स्त्रियाम्   | १८७१ |
| विपणो विक्रयः संख्याः संख्येये ह्यादश त्रिषु      | १८७२ |
| विशत्याद्याः सदैकत्वे सर्वाः संख्येयसंख्ययोः      | १८७३ |
| संख्यायै द्विवहुत्वे स्तस्तासु चानयतेः स्त्रिय    | १८७४ |
| पङ्केः शतसहस्रादि क्रमाद्दशगुणोत्तरम्             | १८७५ |
| यौतवं द्रुवय पाय्यमिति मानार्थकं त्रयम्           | १८७६ |
| मानं तुलाङ्गुलिप्रस्थैर्गुञ्जाः पञ्चाद्यमापकः     | १८७७ |
| ते षोडशाक्षः कर्पोऽस्त्री पलं कर्पचतुष्टयम्       | १८७८ |
| सुवर्णविस्तौ हेम्नोऽक्षे कुरुविस्तस्तु तत्पले     | १८७९ |
| तुला स्त्रियां पलशतं भारः स्याद्विशतिस्तुलाः      | १८८० |
| आचितो दश भाराः स्युः शाकटो भार आचितः              | १८८१ |
| कार्पापण कार्पिकः स्यात्कार्पिके ताधिके पणः       | १८८२ |
| अस्त्रियामाढकद्रोणौ खारी वाहो निकुञ्चकः           | १८८३ |
| कुडवः प्रस्थ इत्याद्याः परिमाणार्थकाः पृथक्       | १८८४ |
| पादस्तुरीयो भागः स्यादंशभागौ तु चण्टके            | १८८५ |



|   |      |
|---|------|
| व्यं वित्तं स्वापतेयं रिक्थमृक्थं धनं वसु       | १८८६ |
| रुण्यं द्रविणं द्युम्नमर्थैरविभवा अपि           | १८८७ |
| पात्कोशश्च हिरण्यं च हेमरूप्ये कृताकृते         | १८८८ |
| भ्यां यदन्यत्तत्कुप्यं रूप्यं तद्वयमाहतम्       | १८८९ |
| ारुतमतं मरकतमश्मगर्भा हरिन्मणिः                 | १८९० |
| ोणरत्नं लोहितकः पद्मरागोऽथ मौक्तिकम्            | १८९१ |
| मुक्ताथ विद्रुमः पुंसि प्रवालं पुंनपुंसकम्      | १८९२ |
| त्नं मणिर्द्वयोरश्मजातौ मुक्तादिकेऽपि च         | १८९३ |
| वर्णं सुवर्णं कनकं हिरण्यं हेम हाटकम्           | १८९४ |
| तपनीयं शातकुम्भं गाङ्गेयं भर्म कर्बुरम्         | १८९५ |
| चामीकरं जातरूपं महारजतकाञ्चने                   | १८९६ |
| रुक्मं कार्तस्वरं जाम्बूनदमष्टापदोऽस्त्रियाम्   | १८९७ |
| अलंकारसुवर्णं यच्छृङ्गीकनकमित्यदः               | १८९८ |
| दुर्वर्णं रजतं रूप्यं खर्जूरं श्वेतमित्यपि      | १८९९ |
| रीतिः स्त्रियामारकूटो न स्त्रियामथ ताम्रकम्     | १९०० |
| शुल्वं म्लेच्छमुखं द्व्यष्टवरिष्टोदुम्बराणि च   | १९०१ |
| लोहोऽस्त्री शस्त्रकं तीक्ष्णं पिण्डं कालायसायसी | १९०२ |
| अश्मसारोऽथ मण्डूरं सिंहाणमपि तन्मले             | १९०३ |
| सर्वं च तैजसं लोहं विकारस्त्वयसः कुशी           | १९०४ |
| क्षारः काचोऽथ चपलो रसः सूतश्च पारदे             | १९०५ |
| गवलं माहिषं शृङ्गमभ्रकं गिरिजामले               | १९०६ |
| स्रोतोञ्जनं तु सौवीरं कापोताञ्जनयामुने          | १९०७ |

|   |      |
|---|------|
| तुत्थाञ्जनं शिखिग्रीवं वितुन्नकमयूरके           | १९०८ |
| कर्परीदार्विकाकाथोद्भवं तुत्थं रमाञ्जनम्        | १९०९ |
| रसगर्भं ताक्ष्यशैलं गन्धाश्मनि तु गन्धिकः       | १९१० |
| सौगन्धिकश्च चक्षुष्याकुलाल्यौ तु कुलत्तिका      | १९११ |
| रीतिपुष्पं पुष्पकेतु पुष्पकं कुसुमाञ्जनम्       | १९१२ |
| पिञ्जर पीतनं तालमालं च हरितालके                 | १९१३ |
| गैरेयमर्धं गिरिजमश्मजं च गिलाजतु                | १९१४ |
| बोलगन्धरसप्राण पिण्डगोपरसाः समाः                | १९१५ |
| डिण्डीरोऽन्धिकफः फेनः सिन्दूरं नागसंभवम्        | १९१६ |
| नागसीसकयोगेष्टवप्राणि त्रपु पिच्छटम्            | १९१७ |
| रङ्गवङ्गे अथ पिचुस्तूलोऽथ कमलोत्तरम्            | १९१८ |
| स्यात्कुसुम्भं वह्निशिखं महारजनमित्यपि          | १९१९ |
| मेपकम्बल ऊर्णागुः शशोर्णं शशलोमनि               | १९२० |
| मधु क्षौद्रं माक्षिकादि मधूच्छिष्टं तु सिक्थकम् | १९२१ |
| मनःशिला मनोगुप्ता मनोह्रा नागजिह्विका           | १९२२ |
| नैपाली कुनटी गोला यवक्षारो यवाग्रजः             | १९२३ |
| पाक्योऽथ सर्जिकाक्षार कापोतः सुखवर्चक           | १९२४ |
| सौवर्चलं स्याद्द्रुचकं त्वक्क्षीरी वंशरोचना     | १९२५ |
| शिग्रुजं श्वेतमरिचं मोरट मूलमैक्षवम्            | १९२६ |
| ग्रन्थिकं पिप्पलीमूलं चटकाशिर इत्यपि            | १९२७ |
| गोलोमी भूतकेशो ना पत्राङ्गं रक्तचन्दनम्         | १९२८ |
| त्रिकटु त्र्यूपण व्योषं त्रिफला तु फलत्रिकम्    | १९२९ |

## ११. शूद्रवर्गः ।

|   |      |
|---|------|
| शूद्राश्चावरवर्णाश्च वृषलाश्च जघन्यजाः            | १९३० |
| आ चण्डलास्तु संकीर्णा अम्ब्रष्ठकरणादयः            | १९३१ |
| शूद्राविशोस्तु करणोऽम्बष्ठो वैश्याद्विजन्मनोः     | १९३२ |
| शूद्राक्षत्रिययोरुग्रो मागधः क्षत्रियाविशोः       | १९३३ |
| माहिष्योऽर्याक्षत्रिययोः क्षत्तार्याशूद्रयोः सुतः | १९३४ |
| ब्राह्मण्यां क्षत्रियात्सूतस्तस्यां वैदेहको विशः  | १९३५ |
| रथकारस्तु माहिष्यात्करण्यां यस्य संभवः            | १९३६ |
| स्याच्चण्डालस्तु जनितो ब्राह्मण्यां वृषलेन यः     | १९३७ |
| कारुः शिल्पी संहतैस्तैर्द्वयोः श्रेणिः सजातिभिः   | १९३८ |
| कुलकः स्यात्कुलश्रेष्ठी मालाकारस्तु मालिकः        | १९३९ |
| कुम्भकारः कुलालः स्यात्पलगण्डस्तु लेपकः           | १९४० |
| तन्तुवायः कुविन्दः स्यात्तुन्नवायस्तु सौचिकः      | १९४१ |
| रङ्गाजीवश्चित्रकरः शस्त्रमार्जोऽसिधावकः           | १९४२ |
| पादूकृच्चर्मकारः स्याद्वयोकारो लोहकारकः           | १९४३ |
| नाडिधमः स्वर्णकारः कलादो रुक्मकारकः               | १९४४ |
| स्याच्छाङ्गिकः काम्बविकः शौल्विकस्ताम्रकुट्टकः    | १९४५ |
| तक्षा तु वर्धकिस्त्वष्टा रथकारस्तु काष्ठतद्       | १९४६ |
| ग्रामाधीनो ग्रामतक्षः कौटतक्षोऽनधीनकः             | १९४७ |
| क्षुरी मुण्डी दिवाकीर्तिनापितान्तावसायिनः         | १९४८ |
| निर्णेजकः स्याद्रजकः शौण्डिको मण्डहारकः           | १९४९ |
| जावालः स्यादजाजीवो देवाजीवस्तु देवलः              | १९५० |

|   |      |
|---|------|
| स्यान्माया' शाम्बरी' मायाकारस्तु प्रतिहारकः | १९५१ |
| शैलालिनस्तु शैलूपा' जायाजीवाः कृशाश्विनः    | १९५२ |
| भरता' इत्यपि नटाश्चारणास्तु कुशीलवा'        | १९५३ |
| मार्दङ्गिका' मौरजिका' पाणिवादास्तु पाणिघाः  | १९५४ |
| वेणुधमाः' स्युवैणविका' वीणावादास्तु वैणिकाः | १९५५ |
| जीवान्तकः' शाकुनिको' द्वौ वागुरिक' जालिकौ   | १९५६ |
| वैतंसिकः' कौटिकश्च मासिकश्च समं त्रयम्      | १९५७ |
| भृतको' भृतिभुक्कर्मकरो' वैतनिकोऽपि सः       | १९५८ |
| वार्तावहो' वैवधिको' भारवाहस्तु' भारिकः      | १९५९ |
| विवर्णः' पामरो' नीचः प्राकृतश्च पृथग्जनः    | १९६० |
| निहीनोऽपसदो' जाल्मः' क्षुल्लकश्चेतरश्च सः   | १९६१ |
| भृत्ये' दासेरदासेयदासगोप्यकचेटका'           | १९६२ |
| नियोज्यकिंकरप्रैष्य' भुजिष्यपरिचारका'       | १९६३ |
| पराचितं परिस्कन्दपरजातं परैरधिताः           | १९६४ |
| मन्दस्तुन्दपरिमृज आलस्य. शीतकोऽलसोऽनुष्णः   | १९६५ |
| दक्षे' तु चतुरपेशलपटव. सूत्थानं उष्णश्च     | १९६६ |
| चण्डालप्लवमातङ्गदिवाकीर्तिजनंगमाः           | १९६७ |
| निपादश्वपचावन्तेवासिचाण्डालपुक्कसाः         | १९६८ |
| भेदाः' किरातशस्त्ररपुलिन्दा' म्लेच्छजातय.   | १९६९ |
| व्याधो' मृगवधाजीवो' मृगयुर्लब्धकोपि सः      | १९७० |
| कौलेयक भारमेयः' कुक्कुरो' मृगदशकः           | १९७१ |
| शुनको' भपकः' श्वा' स्यादलर्कस्तु स योगितः   | १९७२ |

|   |      |
|---|------|
| श्वा विश्वकट्टमृगयाकुशलः सरमा शुनी                  | १९७३ |
| विट्चरः सूकरो ग्राम्यो वर्करस्तरुणः पशुः            | १९७४ |
| आच्छोदनं मृगव्यं स्यादाखेटो मृगया स्त्रियाम्        | १९७५ |
| दक्षिणारुल्लब्धयोगादक्षिणेर्मा कुरङ्गकः             | १९७६ |
| चौरैकागारिकस्तेनदस्युतस्करमोपकाः                    | १९७७ |
| प्रतिरोधिपरास्कन्दिपाटच्चरमलिम्बुचाः                | १९७८ |
| चौरिका सैन्यचौर्ये च स्तेयं लोप्त्रं तु तद्धने      | १९७९ |
| वीतंसस्तूपकरणं बन्धने मृगपक्षिणाम्                  | १९८० |
| उन्माथः कूटयन्त्रं स्याद्वागुरा मृगबन्धनी           | १९८१ |
| शुल्वं वराटकं स्त्री तु रज्जुस्त्रिषु वटी गुणः      | १९८२ |
| उद्धाटनं घटीयन्त्रं सलिलोद्वाहनं प्रहेः             | १९८३ |
| पुंसि वेमा वायदण्डः सूत्राणि नरि तन्तवः             | १९८४ |
| वाणिर्व्यूतिः स्त्रियौ तुल्ये पुस्तं लेप्यादिकर्मणि | १९८५ |
| पाश्चालिका पुत्रिका स्याद्वस्त्रदन्तादिभिः कृता     | १९८६ |
| जतुत्रपुविकारे तु जातुपं त्रापुपं त्रिषु            | १९८७ |
| पिटकः पेटकः पेटा मञ्जूषाथ विहङ्गिका                 | १९८८ |
| भारयष्टिस्तदालम्बि शिष्यं काचोऽथ पादुका             | १९८९ |
| पादूरूपानत्स्त्री सैवानुपदीना पदायता                | १९९० |
| नध्री वध्री वरत्रा स्यादश्वादेस्ताडनी कशा           | १९९१ |
| चाण्डालिका तु कण्डोलवीणा चण्डालवल्लकी               | १९९२ |
| नाराची स्यादेषणिका शाणस्तु निकषः कपः                | १९९३ |
| ब्रश्चनः पत्रपरशुरीषिका तूलिकां समे                 | १९९४ |

|   |      |
|---|------|
| तैजसावर्तनी मूपा भस्त्रा चर्मप्रसेविका              | १९९५ |
| आस्फोटनी वेधनिका कृपाणी कर्तरी समे                  | १९९६ |
| वृक्षादनी वृक्षभेदी टङ्कः पापाणदारणः                | १९९७ |
| क्रूरचोऽस्त्री करपत्रमारा चर्मप्रभेदिका             | १९९८ |
| सूर्मीं स्थूणायःप्रतिमा शिल्पं कर्म कलादिकम्        | १९९९ |
| प्रतिमान प्रतिविम्बं प्रतिमा प्रतियातना प्रतिच्छाया | २००० |
| प्रतिकृतिरर्चा पुंसि प्रतिनिधिरूपमोपमानं स्यात्     | २००१ |
| वाच्यलिङ्गाः समस्तुल्यः सदृक्षः सदृशः सदृक्         | २००२ |
| साधारणः समानश्च स्युरुत्तरपदे त्वमी                 | २००३ |
| निभसंकाशनीकागप्रतीकाशोपमादयः                        | २००४ |
| कर्मण्या तु विधाभृत्याभृतयो भर्म वेतनम्             | २००५ |
| भरण्यं भरणं मूल्य निर्वेशः पण इत्यपि                | २००६ |
| सुरा हलिप्रिया हाला परिस्रुद्धरुणात्मजा             | २००७ |
| गन्धोत्तमाप्रसन्नेराकाटम्बर्यः परिस्रुता            | २००८ |
| मदिरा कश्यमद्ये चाप्यवदंशस्तु भक्षणम्               | २००९ |
| शुण्डापानं मदस्थानं मधुवारा मधुकमाः                 | २०१० |
| मध्वासवो माधवको मधु माध्वीकमद्वयोः                  | २०११ |
| मैरेयमासवः सीधुर्मदको जगलः समौ                      | २०१२ |
| संधानं स्यादभिषयः किण्व पुंसि तु नग्रहः             | २०१३ |
| कारोत्तरः सुरामण्ड आपान पानगोष्ठिका                 | २०१४ |
| चपकोऽस्त्री पानपात्रं सरकोऽप्यनुतर्पणम्             | २०१५ |
| धूर्तोऽक्षदेवी कितवोऽक्षधूर्तो घृतकृत्समाः          | २०१६ |

|  |      |
|--|------|
| स्युर्लुगकाः प्रतिभुवः सभिका द्यूतकारकाः           | २०१७ |
| द्यूतोऽस्त्रियामक्षवती कैतवं पण इत्यपि             | २०१८ |
| पणोऽक्षेषु ग्लहोऽक्षास्तु देवनाः पाशकाश्च ते       | २०१९ |
| परिणायस्तु शारीणां समन्तान्नयनेऽस्त्रियाम्         | २०२० |
| अष्टापदं शारिफलं प्राणिद्यूतं समाह्वयः             | २०२१ |
| उक्ता भूरिप्रयोगत्वादेकस्मिन्येऽत्र यौगिकाः        | २०२२ |
| ताद्धर्म्यादन्यतो वृत्तावृद्ध्या लिङ्गान्तरेऽपि ते | २०२३ |

१२. काण्डसमाप्तिः ।

|   |      |
|---|------|
| इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने           | २०२४ |
| द्वितीयकाण्डो भूम्यादिः साङ्ग एव समर्थितः | २०२५ |

### तृतीयं काण्डम् ।

१. वर्गभेदाः ।

|   |      |
|---|------|
| विशेष्यनिघ्नैः संकीर्णैर्नानार्थैरव्ययैरपि    | २०२६ |
| लिङ्गादिसंग्रहैर्वर्गाः सामान्ये वर्गसंश्रयाः | २०२७ |

२. परिभाषा ।

|  |      |
|--|------|
| स्त्रीदाराद्यैर्यद्विशेष्यं यादृशैः प्रस्तुतं पदैः | २०२८ |
| गुणद्रव्यक्रियाशब्दास्तथा स्युस्तस्य भेदकाः        | २०२९ |

३. विशेष्यनिघ्नवर्गः ।

|  |      |
|--|------|
| सुकृती पुण्यवान्धन्यो महेच्छस्तु महाशयः  | २०३० |
| हृदयालुः सुहृदयो महोत्साहो महोद्यमः      | २०३१ |
| प्रवीणे निपुणाभिज्ञविज्ञनिष्णातशिक्षिताः | २०३२ |

|  |      |
|--|------|
| वैज्ञानिकः कृतमुखः कृती कुशल इत्यपि                | २०३३ |
| पूज्यः प्रतीक्ष्यः साशयिकः संशयापन्नमानसः          | २०३४ |
| दक्षिणीयो दक्षिणार्हस्तत्र दक्षिण्य इत्यपि         | २०३५ |
| स्युर्वदान्यस्थूललक्ष्यदानशौण्डा बहुप्रदे          | २०३६ |
| जैवातृकः स्यादायुष्मानन्तर्वाणिस्तु शास्त्रवित्    | २०३७ |
| परीक्षकः कारणिको वरदस्तु समर्थकः                   | २०३८ |
| हर्षमाणो विदुर्गणः प्रमना हृष्टमानसः               | २०३९ |
| दुर्मना विमना अन्तर्मना स्यादुत्क उन्मनाः          | २०४० |
| दक्षिणे सरलोदारौ मुकलो दातृभोक्तारि                | २०४१ |
| तत्परे प्रसितासक्ताविष्टार्थोद्युक्त उत्सुकः       | २०४२ |
| प्रतीतं प्रथितख्यातचित्तविज्ञातविश्रुता.           | २०४३ |
| गुणं प्रतीने तु कृतलक्षणाहृतलक्षणा                 | २०४४ |
| इभ्य आढ्यो धनी स्वामी त्रीश्वरः पतिरीजिता          | २०४५ |
| अधिभूर्नायको नेता प्रभुः परिवृढोऽधिपः              | २०४६ |
| अधिकर्द्धिः समृद्धः स्यात्कुटुम्बव्यापृतस्तु यः    | २०४७ |
| स्यादभ्यागारिकस्तस्मिन्नुपाधिश्च पुमानयम्          | २०४८ |
| यराद्गुरूपोपेतो यः मिहसहननो हि सः                  | २०४९ |
| निर्गार्यः कार्यकर्ता यः सपन्नः सत्त्वमंपदा        | २०५० |
| जत्राणि मूकोऽथ मनोजवमः पितृमनिभः                   | २०५१ |
| सत्कृत्यालङ्कृता वन्या यो ददाति न कूटुम्बः         | २०५२ |
| लक्ष्मीर्वाक्षमणः श्रीन् श्रीमान्निखम्बस्तु घत्मलः | २०५३ |
| स्यादयालुः कारुणिकः कृपानुः सूरतः समाः             | २०५४ |



|  |      |
|--|------|
| स्वतन्त्रोऽपावृतः स्वैरी स्वच्छन्दो निरवग्रहः      | २०५५ |
| परतन्त्रः पराधीनः परवान्नाथवानपि                   | २०५६ |
| अधीनो निघ्न आयत्तोऽस्वच्छन्दो गृह्यकोऽप्यसौ        | २०५७ |
| खलपूः स्याद्बहुकरो दीर्घसूत्रश्चिरक्रियः           | २०५८ |
| जाल्मोऽसमीक्ष्यकारी स्यात्कुण्ठो मन्दः क्रियासु यः | २०५९ |
| कर्मक्षमोऽलंकर्मीणः क्रियावान्कर्मसूद्यतः          | २०६० |
| स कर्मः कर्मशीलो यः कर्मशूरस्तु कर्मठः             | २०६१ |
| भरण्यभुक्कर्मकरः कर्मकारस्तु तत्क्रियः             | २०६२ |
| अपस्नातो मृतस्नात आमिपाशी तु शौष्कुलः              | २०६३ |
| बुभुक्षितः स्यात्क्षुधितो जिघत्सुरशनायितः          | २०६४ |
| परान्नः परपिण्डादो भक्षको घस्सरोऽन्नरः             | २०६५ |
| आद्यन्ः स्यादौदरिको विजिगीषाविवर्जिते              | २०६६ |
| उभौ त्वात्मभरिः कुक्षिभरिः स्योदरपूरके             | २०६७ |
| सर्वाङ्गीनस्तु सर्वाङ्गभोजी गृध्रस्तु गर्धनः       | २०६८ |
| लुब्धोऽभिलाषुकस्तृष्णक्समौ लोलुपलोलुभौ             | २०६९ |
| सोन्मादस्तून्मदिष्णुः स्यादविनीतः समुद्धतः         | २०७० |
| मत्ते शौण्डोत्कटक्षीवाः कामुके कमितानुकः           | २०७१ |
| कम्रः कामयिताऽभीकः कमनः कामनोऽभिकः                 | २०७२ |
| विधेयो विनयग्राही वचनेस्थित आश्रवः                 | २०७३ |
| वदयः प्रणेयो निभृतविनीतप्रश्रिताः समाः             | २०७४ |
| धृष्टे धृष्णग्वियातश्च प्रगल्भः प्रतिभान्विते      | २०७५ |
| स्यादधृष्टे तु शालीनो विलक्षो विस्मयान्विते        | २०७६ |

|  |      |
|--|------|
| अधीरे कातरस्त्रस्ते भीरुभीरुकभीलुकाः                   | २०७७ |
| आशंसुराशंसितरि गृहयालुर्ग्रहीतरि                       | २०७८ |
| श्रद्धालुः श्रद्धया युक्ते पतयालुस्तु पातुके           | २०७९ |
| लज्जाशीलेऽपत्रपिष्णुर्वन्दारुरभिवादके                  | २०८० |
| शरारुर्धातुको हिंस्रः स्याद्वर्धिष्णुस्तु वर्धनः       | २०८१ |
| उत्पतिष्णुस्तूत्पतितालंकरिष्णुस्तु मण्डनः              | २०८२ |
| भूष्णुर्भविष्णुर्भविता वर्तिष्णुर्वर्तनः समौ           | २०८३ |
| निराकरिष्णुः क्षिप्तुः स्यात्सान्द्रस्निग्धस्तु मेदुरः | २०८४ |
| ज्ञाता तु विदुरो विन्दुर्विकासी तु विकम्बरः            | २०८५ |
| विसृत्तरो विसृमर प्रसारी च विसारिणि                    | २०८६ |
| सहिष्णुः सहनः क्षन्ता तितिक्षुः क्षमिता क्षमी          | २०८७ |
| क्रोधनोऽमर्षणः कोपी चण्डस्त्वत्यन्तकोपनः               | २०८८ |
| जागरुको जागरिता घूर्णितः प्रचलायितः                    | २०८९ |
| स्वप्नकशयालुर्निद्रालुर्निद्राणशयितौ समौ               | २०९० |
| पराङ्मुख पराचीनः स्यादवाडप्यधोमुखः                     | २०९१ |
| देवानश्चति देवद्वद् विप्रद्वद् विप्रगश्चति             | २०९२ |
| यः सहाश्चति सध्यड स स तिर्यङ् यस्तिरोऽश्चति            | २०९३ |
| वदो वदावदो वक्ता वागीशो वाक्पति समौ                    | २०९४ |
| वाचोयुक्तिपटुर्वाग्मी वावटूकोऽतिवक्त्रि                | २०९५ |
| स्याज्जत्पाकस्तु वाचालो वाचादो बहुगर्हवाक्             | २०९६ |
| दुर्मुखे मुखरावज्जमुखौ शङ्क प्रियंवदे                  | २०९७ |
| लोहलः स्यादस्फुटवाग्गर्हवादी तु कद्ददः                 | २०९८ |

|  |      |
|--|------|
| समौ कुवादकुचरौ स्यादसौम्यस्वरोऽस्वरः               | २०९९ |
| रवणः शब्दनो नान्दीवादी नान्दीकरः समौ               | २१०० |
| जडोऽज्ञ एडमूकस्तु वक्तुं श्रोतुमशिक्षिते           | २१०१ |
| तूष्णींशीलस्तु तूष्णीको नग्नोऽवासा दिगम्बरे        | २१०२ |
| निष्कासितोऽवकृष्टः स्यादपध्वस्तस्तु धिक्कृतः       | २१०३ |
| आत्तगर्वोऽभिभूतः स्याद्दापितः साधितः समौ           | २१०४ |
| प्रत्यादिष्टो निरस्तः स्यात्प्रत्याख्यातो निराकृतः | २१०५ |
| निकृतः स्याद्विप्रकृतो विप्रलब्धस्तु वञ्चितः       | २१०६ |
| मनोहतः प्रतिहतः प्रतिवद्धो हतश्च सः                | २१०७ |
| अधिक्षिप्तः प्रतिक्षिप्तो वद्धे कीलितसंयतौ         | २१०८ |
| आपन्न आपत्प्राप्तः स्यात्कांदिशीको भयद्रुतः        | २१०९ |
| आक्षारितः क्षारितोऽभिगस्ते संकसुकोऽस्थिरे          | २११० |
| व्यसनार्तोपरक्तौ द्वौ विहस्तव्याकुलौ समौ           | २१११ |
| विक्लवो विह्वलः स्यात्तु विवशोऽरिष्टदुष्टधीः       | २११२ |
| कश्यः कशार्हे संनद्धे त्वाततायी वधोद्यते           | २११३ |
| द्वेष्ये त्वक्षिगतो वध्यः शीर्षच्छेद्य इमौ समौ     | २११४ |
| विष्यो विपेण यो वध्यो मुसत्यो मुसलेन यः            | २११५ |
| शिथ्विदानोऽकृष्णकर्मा चपलश्चिकुरः समौ              | २११६ |
| दोषैकद्वकपुरोभागी निकृतस्त्वनृजुः शठः              | २११७ |
| कर्णेजपः सूचकः स्यात्पिशुनो दुर्जनः खलः            | २११८ |
| नृशंसो घातुकः क्रूरः पापो धूर्तस्तु वञ्चकः         | २११९ |
| अज्ञे मूढयथाजातमूर्खवैधेयवालिशाः                   | २१२० |

|   |      |
|---|------|
| कदर्ये कृपणधुद्रकिपचानमितंपचाः                    | २१२१ |
| निःस्वस्तु दुर्विधो दीनो दरिद्रो दुर्गतोऽपि सः    | २१२२ |
| वनीयको याचनको मार्गणो याचकार्थिनो                 | २१२३ |
| अहंकारवानहयुः शुभंयुस्तु शुभान्वितः               | २१२४ |
| दिव्योपपादुका देवा नृगवाद्या जरायुजाः             | २१२५ |
| स्वेदजाः कृमिदंशाद्याः पक्षिसर्पादयोऽण्डजाः       | २१२६ |
| उद्भिदस्तरुगुल्माद्या उद्भिदुद्भिज्जमुद्भिदम्     | २१२७ |
| सुन्दर रुचिरं चारु सुपमं साधु शोभनम्              | २१२८ |
| कान्तं मनोरमं रुच्यं मनोज्ञं मञ्जु मञ्जुलम्       | २१२९ |
| तदासेचनकं तृप्तेर्नास्त्यन्तो यस्य दर्शनात्       | २१३० |
| अभीष्टेऽभीप्सितं हृद्यं दयितं वल्लभं प्रियम्      | २१३१ |
| निकृष्टप्रतिकृष्टार्चरेफयाप्यावमाधमाः             | २१३२ |
| कुपूयकुत्सितावद्यसेटगर्ह्याणकाः समाः              | २१३३ |
| मलीमस तु मलिनं कच्चरं मलदूषितम्                   | २१३४ |
| पूतं पवित्रं मेध्यं च वीथं तु विमलार्थकम्         | २१३५ |
| निर्णिकं शोधितं मृष्टं निःशोध्यमनवस्करम्          | २१३६ |
| असारं फलु शून्यं तु वशिकं तुच्छरिक्तके            | २१३७ |
| ह्रीवे प्रधानं प्रमुखप्रवेकानुत्तमोत्तमा          | २१३८ |
| मुख्यवर्यवरेण्याश्च प्रवर्तेनरार्थ्यत             | २१३९ |
| परार्थाग्रिप्राग्रहरप्राग्र्याग्र्याग्रीयमग्रियम् | २१४० |
| श्रेयाश्श्रेष्ठः पुष्कलः स्यात्सत्तमश्चातिशोभने   | २१४१ |
| स्युरुत्तरपदे व्याघ्रपुंगवर्षभरुञ्जरा             | २१४२ |

|   |      |
|---|------|
| सिंहशार्दूलनागाद्याः पुंसि श्रेष्ठार्थगोचराः        | २१४३ |
| अप्राग्र्यं द्वयहीने द्वे अप्रधानोपसर्जने           | २१४४ |
| विशङ्कतं पृथु बृहद्विशालं पृथुलं महत्               | २१४५ |
| वडोरुविपुलं पीनपीनी तु स्थूलपीवरे                   | २१४६ |
| स्तोकाल्पक्षुलकाः सूक्ष्मं श्लक्ष्णं दध्नं कृशं तनु | २१४७ |
| स्त्रियां मात्रा त्रुटिः पुंसि लवलेशकणाणवः          | २१४८ |
| अत्यल्पेऽल्पिष्ठमल्पीयः कनीयोऽणीय इत्यपि            | २१४९ |
| प्रभूतं प्रचुरं प्राज्यमदध्नं बहुलं बहु             | २१५० |
| पुरुहूः पुरु भूयिष्ठं स्फारं भूयश्च भूरि च          | २१५१ |
| परःशताद्यास्ते येषां परा संख्या शतादिकात्           | २१५२ |
| गणनीये तु गणेयं संख्याते गणितमथ समं सर्वम्          | २१५३ |
| विश्वमशेषं कृत्स्नं समस्तनिखिलाखिलानि निःशेषम्      | २१५४ |
| समग्रं सकलं पूर्णमखण्डं स्यादनूनके                  | २१५५ |
| घने निरन्तरं सान्द्रं पेलवं विरलं तनु               | २१५६ |
| समीपे निकटासन्नसंनिकृष्टसनीडवत्                     | २१५७ |
| सदेशाभ्याशसविधसमर्यादसवेशवत्                        | २१५८ |
| उपकण्ठान्तिकाभ्यर्णाभ्यग्रा अप्यभितोऽव्ययम्         | २१५९ |
| संसक्ते त्वव्यवहितमपदान्तरमित्यपि                   | २१६० |
| नेदिष्ठमन्तिकतमं स्याद्दूरं विप्रकृष्टकम्           | २१६१ |
| दवीयश्च दविष्ठं च सुदूरं दीर्घमायतम्                | २१६२ |
| वर्तुलं निस्तलं वृत्तं बन्धुरं तून्नतानतम्          | २१६३ |
| उच्चप्रांशून्नतोदग्रोच्छ्रितास्तुङ्गेऽथ वामने       | २१६४ |

|  |      |
|--|------|
| न्यङ्नीचखर्वह्रस्वाः स्युरवाग्रेऽवनतानतम्        | २१६५ |
| अरालं वृजिनं जिह्वमूर्मिमत्कुञ्चितं नतम्         | २१६६ |
| आविद्धं कुटिलं भुग्नं वेष्टितं वक्रमित्यपि       | २१६७ |
| ऋजावजिह्वप्रगुणौ व्यस्ते त्वप्रगुणाकुलौ          | २१६८ |
| शाश्वतस्तु ध्रुवो नित्यसदातनसनातनाः              | २१६९ |
| स्थास्तुः स्थिरतरः स्थेयानेकरूपतया तु यः         | २१७० |
| कालव्यापी स कूटस्थः स्थावरो जङ्गमेतरः            | २१७१ |
| चरिण्यु जङ्गमचर त्रसमिद्धं चराचरम्               | २१७२ |
| चलनं कम्पनं कम्पं चलं लोलं चलाचलम्               | २१७३ |
| चञ्चलं तरलं चैव पारिप्लवपरिप्लवे                 | २१७४ |
| अतिरिक्तः समधिको दृढसंधिस्तु सहत                 | २१७५ |
| कर्कशं कठिनं क्रूरं कठोरं निष्ठुरं दृढम्         | २१७६ |
| जठरं मूर्तिमन्मूर्तं प्रवृद्धं प्रौढमेधितम्      | २१७७ |
| पुराणो प्रतनप्रलपुरातनचिरतनाः                    | २१७८ |
| प्रत्यग्रोऽभिनवो नव्यो नवीनो नूतनो नवः           | २१७९ |
| नूतलश्च सुकुमारं तु कोमलं मृदुलं मृदु            | २१८० |
| अन्वगन्वक्षमनुगोऽनुपदं क्लीबमव्ययम्              | २१८१ |
| प्रत्यक्षं स्यादन्द्रियकमप्रत्यक्षमतीन्द्रियम्   | २१८२ |
| एकतानोऽनन्यवृत्तिरेकाग्रेकायनावपि                | २१८३ |
| अप्येकसर्ग एकाग्रयोऽप्येकायनगतोऽपि सः            | २१८४ |
| पुंस्यादिः पूर्वपौरस्त्यप्रथमाद्या अथास्त्रियाम् | २१८५ |
| अन्तो जघन्यं चरममन्त्यपाश्चात्यपश्चिमाः          | २१८६ |

मोघं निरर्थकं स्पष्टं स्फुटं प्रव्यक्तमुल्वणम्  
 साधारणं तु सामान्यमेकाकी त्वेक एककः  
 भिन्नार्थका अन्यतर एकस्त्वोऽन्येतरावपि  
 उच्चावचं नैकभेदमुच्चण्डमविलम्बितम्  
 अरुंतुदं तु मर्मस्पृगवाधं तु निरर्गलम्  
 प्रसव्यं प्रतिकूलं स्यादपसव्यमपष्ठु च  
 वामं शरीरं सव्यं स्यादपसव्यं तु दक्षिणम्  
 संकटं ना तु संवाधः कलिलं गहनं समे  
 संकीर्णं संकुलाकीर्णं मुण्डितं परिवापितम्  
 प्रन्थितं संदितं दृढं विसृतं विस्तृतं ततम्  
 अन्तर्गतं विस्मृतं स्यात्प्राप्तप्रणिहिते समे  
 वेल्लितप्रेङ्खिताधूतचलिताकम्पिता धुते  
 नुत्तनुन्नास्तनिष्ठ्यूताविद्धक्षिप्तेरिताः समाः  
 परिक्षिप्तं तु निवृतं मूपितं मुषितार्थकम्  
 प्रवृद्धप्रसृते न्यस्तनिसृष्टे गुणिताहते  
 निदिग्धोपचिते गूढगुप्ते गुण्ठितरूपिते  
 द्रुतावदीर्णे उद्गूर्णोद्यते काचितशिवियते  
 घ्राणघ्राते दिग्धलिप्ते समुदक्तोद्धृते समे  
 वेष्टितं स्याद्वलयितं संवीतं रुद्धमावृतम्  
 रुग्णं भुग्नेऽथ निशितक्ष्णुतशातानि तेजिते  
 स्याद्विनाशोन्मुखं पक्वं ह्रीणहीतौ तु लज्जिते  
 वृत्तं तु वृत्तव्यावृत्तौ संयोजित उपाहितः

२१८७  
 २१८८  
 २१८९  
 २१९०  
 २१९१  
 २१९२  
 २१९३  
 २१९४  
 २१९५  
 २१९६  
 २१९७  
 २१९८  
 २१९९  
 २२००  
 २२०१  
 २२०२  
 २२०३  
 २२०४  
 २२०५  
 २२०६  
 २२०७  
 २२०८

|  |      |
|--|------|
| कर्म क्रिया तत्सातत्ये गम्ये स्युरपरस्परा.                 | २२५२ |
| साकल्यासङ्गवचने पारायणतुरायणे                              | २२५३ |
| यदृच्छा स्वैरिता हेतुशून्या त्वास्या विलक्षणम्             | २२५४ |
| शमथस्तु शमः शान्तिर्दान्तिस्तु दमथो दमः                    | २२५५ |
| अवदान कर्म धृत्तं काम्यदानं प्रवारणम्                      | २२५६ |
| वशक्रिया संवननं मूलकर्म तु कार्मणम्                        | २२५७ |
| विधूननं विधुवन तर्पणं प्रीणनावनम्                          | २२५८ |
| पर्याप्तिः स्यात्परित्राणं हस्तवारणमित्यपि                 | २२५९ |
| सेवन सीवन स्यूतिर्विदरः स्फुटन भिदा                        | २२६० |
| आक्रोगमनभीषङ्गं संवेदो वेदना न ना                          | २२६१ |
| संमूर्च्छनमभिव्यासिर्याच्या भिक्षाऽर्चनाऽर्दना             | २२६२ |
| वर्धनं छेदनेऽथ द्वे आनन्दनसभाजने                           | २२६३ |
| आप्रच्छन्नमथान्नायः सप्रदायः क्षये क्षिया                  | २२६४ |
| ग्रहे ग्राहो वशः कान्तौ रक्षणस्त्राणे रणः कृणे             | २२६५ |
| व्यधो वेधे पचा पाके हवो हृतौ वरो वृत्तौ                    | २२६६ |
| ओष. प्लोपे नयो नाये ज्यानिर्जीणो भ्रमो भ्रमौ               | २२६७ |
| स्फातिर्वृद्धौ प्रथा ख्यातौ स्पृष्टि. पृक्तौ स्त्रवः स्रवे | २२६८ |
| एधा समृद्धौ स्फुरणे स्फुरणा प्रमितौ प्रमा                  | २२६९ |
| प्रसूतिः प्रसवे श्योते प्राधारः क्लमथ क्लमे                | २२७० |
| उत्कर्षोऽतिशये मंघिः श्लेपे विषय आश्रये                    | २२७१ |
| क्षिपाया क्षेपण गीर्णिगिरौ गुरणमुद्यमे                     | २२७२ |
| उन्नाय उन्नये श्रायः श्रयणे जयने जयः                       | २२७३ |



|  |      |
|--|------|
| निगादो निगदे मादो मद उद्देग उद्गमे               | २२७४ |
| विमर्दनं परिमलोऽभ्युपपत्तिरनुग्रहः               | २२७५ |
| निग्रहस्तद्विरुद्धः स्यादभियोगस्त्वभिग्रहः       | २२७६ |
| मुष्टिवन्धस्तु संग्राहो डिम्बे डमरविप्लवौ        | २२७७ |
| बन्धनं प्रसितिश्चारः स्पर्शः स्पष्टोपतप्तरि      | २२७८ |
| निकारो विप्रकारः स्यादाकारस्त्वङ्ग इङ्गितम्      | २२७९ |
| परिणामो विकारो द्वे समे विकृतिविक्रये            | २२८० |
| अपहारस्त्वपचयः समाहारः समुच्चयः                  | २२८१ |
| प्रत्याहार उपादानं विहारस्तु परिक्रमः            | २२८२ |
| अभिहारोऽभिग्रहणं निर्हारोऽभ्यवकर्षणम्            | २२८३ |
| अनुहारोऽनुकारः स्यादर्थस्यापगमे व्ययः            | २२८४ |
| प्रवाहस्तु प्रवृत्तिः स्यात्प्रवहो गमनं वहिः     | २२८५ |
| वियामो वियमो यामो यमः संयामसंयमौ                 | २२८६ |
| हिंसाकर्माभिचारः स्याज्जागर्या जागरा द्वयोः      | २२८७ |
| विघ्नोऽन्तरायः प्रत्यूहः स्यादुपघ्नोऽन्तिकाश्रये | २२८८ |
| निर्वेश उपभोगः स्यात्परिसर्पः परिक्रिया          | २२८९ |
| विधुरं तु प्रविश्लेषेऽभिप्रायश्छन्द आशयः         | २२९० |
| संक्षेपणं समसनं पर्यवस्था विरोधनम्               | २२९१ |
| परिसर्या परीसारः स्यादास्या त्वासना स्थितिः      | २२९२ |
| विस्तारो विग्रहो व्यासः स च शब्दस्य विस्तरः      | २२९३ |
| संवाहनं मर्दनं स्याद्विनाशः स्याददर्शनम्         | २२९४ |
| संस्तवः स्यात्परिचयः प्रसरस्तु विसर्पणम्         | २२९५ |

|  |      |
|--|------|
| प्राप्यं गम्यं समासाद्यं स्यन्नं रीणं स्तुतं स्तुतम् | २२०९ |
| संगूढः स्यात्संकलितोऽवगीतः ख्यातगर्हणः               | २२१० |
| विविधः स्याद्बहुविधो नानारूपः पृथग्विधः              | २२११ |
| अवरीणो धिक्कृतश्चाप्यवधस्तोऽवचूर्णितः                | २२१२ |
| अनायासकृतं फाण्टं स्वनितं ध्वनितं समे                | २२१३ |
| वद्धे संदानितं मूतमुद्धितं संदितं सितम्              | २२१४ |
| निष्पक्के कथितं पाके क्षीराज्यहविषा शृतम्            | २२१५ |
| निर्वाणो मुनिवह्वाद्यदौ निर्वातस्तु गतेऽनिले         | २२१६ |
| पक्वं परिणते गूने हन्ने मीढं तु मूत्रिते             | २२१७ |
| पुष्टे तु पुषितं सोढे क्षान्तमुद्धान्तमुद्गते        | २२१८ |
| दान्तस्तु दमिते शान्तः शमिते प्रार्थितेऽर्दितः       | २२१९ |
| ज्ञप्तस्तु ज्ञपिते छन्नश्छादिते पूजितेऽश्रितः        | २२२० |
| पूर्णस्तु पूरिते क्लिष्टः क्लिशितेऽप्रसिते सितः      | २२२१ |
| मुष्टपुष्टोपिता दग्धे तष्टत्वष्टौ तनूकृते            | २२२२ |
| वेधितच्छिद्रितौ विद्धे विन्नविन्नौ विचारिते          | २२२३ |
| निष्प्रभे विगतारोको विलीने विद्रुतद्रुतौ             | २२२४ |
| सिद्धे निर्धृत्तनिष्प्रज्ञौ दारिते भिन्नभेदितौ       | २२२५ |
| ऊतं स्यूतमुतं चेति त्रितयं तन्तुसंतते                | २२२६ |
| स्यादहिते नमस्यितनमसितमपचायितार्चितापचितम्           | २२२७ |
| वरिवसिते वरिवस्थितमुपासितं चोपचरितं च                | २२२८ |
| संतापितमंतसौ धूपितधूपायितौ च दूनश्च                  | २२२९ |
| हृष्टे मत्तस्त्रयः प्रहृन्नः प्रमुदितः प्रीतः        | २२३० |

|  |      |
|--|------|
| छिन्नं छातं लूनं कृत्तं दातं दितं छितं वृक्णम्           | २२३१ |
| स्रस्तं ध्वस्तं भ्रष्टं स्कन्नं पन्नं च्युतं गलितम्      | २२३२ |
| लब्धं प्राप्तं विन्नं भावितमासादितं च भूतं च             | २२३३ |
| अन्वेषितं गवेषितमन्विष्टं मार्गितं मृगितम्               | २२३४ |
| आर्द्रं सार्द्रं क्लिन्नं तिमितं स्तिमितं समुन्नमुत्तं च | २२३५ |
| त्रातं त्राणं रक्षितमवितं गोपायितं च गुप्तं च            | २२३६ |
| अवगणितमवमतावज्ञाते अवमानितं च परिभूते                    | २२३७ |
| त्यक्तं हीनं विधुतं समुज्झितं धूतमुत्सृष्टे              | २२३८ |
| उक्तं भापितमुदितं जल्पितमाख्यातमभिहितं लपितम्            | २२३९ |
| बुद्धं बुधितं मनितं विदितं प्रतिपन्नमवसितावगते           | २२४० |
| ऊरीकृतमुररीकृतमङ्गीकृतमाश्रुतं प्रतिज्ञातम्              | २२४१ |
| संगीर्णविदितसंश्रुतसमाहितोपश्रुतोपगतम्                   | २२४२ |
| ईलितशस्तपणायितपनायितप्रणुतपणितपनितानि                    | २२४३ |
| अपि गीर्णवर्णिताभिष्टुतेडितानि स्तुतार्थानि              | २२४४ |
| भक्षितचर्वितलीढप्रत्यवसितगिलितखादितप्सातम्               | २२४५ |
| अभ्यवहृतान्नजग्धग्रस्तग्लस्ताशितं भुक्ते                 | २२४६ |
| क्षेपिष्ठक्षोदिष्ठप्रेष्ठवरिष्ठस्थविष्ठवंहिष्ठाः         | २२४७ |
| क्षिप्रक्षुद्राभीप्सितपृथुपीवरवहुप्रकर्षार्थाः           | २२४८ |
| साधिष्ठद्राधिष्ठस्फेष्ठगरिष्ठहसिष्ठवृन्दिष्ठाः           | २२४९ |
| वाढव्यायतवहुगुरुवामनवृन्दारकातिशये                       | २२५० |

४. संकीर्णवर्गः ।

प्रकृतिप्रत्ययार्थाद्यैः संकीर्णै लिङ्गमुन्नयेत्

२२५१

|   |      |
|---|------|
| नीवाकस्तु प्रयामः स्यात्संनिधिः संनिकर्षणम्     | २२९६ |
| लघोऽभिलाषो लवने निष्पावः पवने पवः               | २२९७ |
| प्रस्तावः स्यादवसरस्त्रसरः सूत्रवेष्टनम्        | २२९८ |
| प्रजनः स्यादुपसरः प्रश्रयप्रणयौ समौ             | २२९९ |
| धीशक्तिर्निष्क्रमोऽस्त्री तु संक्रमो दुर्गसंचरः | २३०० |
| प्रत्युत्क्रम प्रयोगार्थः प्रक्रमः स्यादुपक्रम  | २३०१ |
| स्यादभ्यादानमुद्धात आरम्भः संभ्रमस्त्वरा        | २३०२ |
| प्रतिबन्धः प्रतिष्टम्भोऽवनायस्तु निपातनम्       | २३०३ |
| उपलम्भस्त्वनुभवः समालम्भो विलेपनम्              | २३०४ |
| विप्रलम्भो विप्रयोगो विलम्बस्त्वतिसर्जनम्       | २३०५ |
| विश्रावस्तु प्रतिख्यातिरवेक्षा प्रतिजागरः       | २३०६ |
| निपाठनिपठौ पाठे तेमस्तेमौ समुन्ठने              | २३०७ |
| आदीनवास्त्रयौ क्लेशे मेलके सङ्गसगमौ             | २३०८ |
| संवीक्षणं विचयन मार्गण मृगणा मृग                | २३०९ |
| परिरम्भः परिप्त्रङ्गः मश्लेष उपगूहनम्           | २३१० |
| निर्वर्णनं तु निध्यानं दर्शनालोकनेक्षणम्        | २३११ |
| प्रत्याख्यानं निरमन प्रत्यादेशो निराकृतिः       | २३१२ |
| उपशायो विशायश्च पर्यायशयनार्थका                 | २३१३ |
| अर्तन च ऋतीया च हृणीया च घृणार्थका              | २३१४ |
| स्याद्व्यत्यासो विपर्यायो व्यत्ययश्च विपर्यये   | २३१५ |
| पर्ययोऽतिक्रमस्तस्मिन्नतिपात उपात्ययः           | २३१६ |
| प्रेषणं यत्प्रमाद्वय तत्र स्यात्प्रतिशामनम्     | २३१७ |

|   |      |
|---|------|
| स संस्तावः क्रंतुषु या स्तुतिभूमिर्द्विजन्मनाम्   | २३१८ |
| निधाय तक्ष्यते यत्र काष्ठे काष्ठं स उद्धनः        | २३१९ |
| स्तम्बस्तु स्तम्बघनः स्तम्बो येन निहन्यते         | २३२० |
| आविधो विध्यते येन तत्र विष्वक्समे निघः            | २३२१ |
| उत्कारश्च निकारश्च द्वौ धान्योत्क्षेपणार्थकौ      | २३२२ |
| निगारोद्गारविक्षावोद्ग्राहास्तु गरणादिषु          | २३२३ |
| आरत्यवरतिविरतय उपरामेऽथास्त्रियां तु निष्ठेवः     | २३२४ |
| निष्ठ्यूतिर्निष्ठेवनं निष्ठीवनमित्यभिन्नानि       | २३२५ |
| जवने जूतिः सातिस्त्ववसाने स्यादथ ज्वरे जूतिः      | २३२६ |
| उदजस्तु पशुप्रेरणमकरणिरित्यादयः शापे              | २३२७ |
| गोत्रान्तेभ्यस्तस्य वृन्दमित्यौपगवकादिकम्         | २३२८ |
| आपूपिकं शाष्कुलिकमेवमाद्यमचेतसाम्                 | २३२९ |
| माणवानां तु माणव्यं सहायानां सहायता               | २३३० |
| हल्या हलानां ब्राह्मण्यवाडव्ये तु द्विजन्मनाम्    | २३३१ |
| द्वे पशुकानां पृष्ठानां पार्श्वं पृष्ठयमनुक्रमात् | २३३२ |
| खलानां खलिनी खल्याप्यथ मानुष्यकं नृणाम्           | २३३३ |
| ग्रामता जनता धूम्या पाश्या गल्या पृथक्पृथक्       | २३३४ |
| अपि साहस्रकारीपचर्मणाथर्वणादिकम्                  | २३३५ |

## ५. नानार्थवर्गः ।

|  |      |
|--|------|
| नानार्थाः केऽपि कान्तादिवर्गेष्वेवात्र कीर्तिताः | २३३६ |
| भूरिप्रयोगा ये येषु पर्यायेष्वपि तेषु ते         | २३३७ |
| आकाशे त्रिदिवे नाको लोकस्तु भुवने जने            | २३३८ |

|   |      |
|---|------|
| पद्मे यशसि च श्लोकः शरे खड्गे च सायकः             | २३३९ |
| जम्बुकौ क्रौष्ट्वरुणौ पृथुकौ चिपिटार्भकौ          | २३४० |
| आलोकौ दर्शनद्योतौ भेरीपटहमानकौ                    | २३४१ |
| उत्सङ्गचिह्नयोगङ्कः कलङ्कोऽङ्गापवादयो             | २३४२ |
| तक्षको नागवर्धक्योरकः स्फटिकसूर्ययोः              | २३४३ |
| मारुते वेधसि ब्रध्ने पुंसि कः कं शिरोऽम्बुनो      | २३४४ |
| स्यात्पुलाकस्तुच्छधान्ये सक्षेपे भक्तसिक्थके      | २३४५ |
| ऊलूके करिणः पुच्छमूलोपान्ते च पेचकः               | २३४६ |
| कमण्डलौ च करकः सुगते च विनायकः                    | २३४७ |
| किष्कुर्हस्ते वितस्तौ च शूककीटे च वृश्चिकः        | २३४८ |
| प्रतिकूले प्रतीकस्त्रिप्तेकदेशे तु पुस्ययम्       | २३४९ |
| स्याद्भूतिकं तु भूनिम्बे कन्तृणे भूस्तृणेऽपि च    | २३५० |
| ज्योत्स्निकायां च घोषे च कोशातक्यथ कद्रुफले       | २३५१ |
| सिते च खदिरे सोमवल्कः स्यादथ सिंहके               | २३५२ |
| तिलकल्के च पिण्याको चाह्नीकं रामटेऽपि च           | २३५३ |
| महेन्द्रगुग्गुलूलूकव्यालग्राहिषु कौशिकः           | २३५४ |
| रुक्तापशङ्कास्वातङ्कः स्वल्पेऽपि क्षुल्लकस्त्रिषु | २३५५ |
| जैवातृकः शशाङ्केऽपि खुरेऽप्यश्वस्य वर्तकः         | २३५६ |
| व्याघ्रेऽपि पुण्डरीको ना यवान्यामपि दीपकः         | २३५७ |
| शालावृकाः कपिक्रोष्टुश्चानः स्वर्णेऽपि गैरिकम्    | २३५८ |
| पीडार्येऽपि व्यलीक स्यादलीकं त्वप्रियेऽनृते       | २३५९ |
| शीलान्ययात्रनूके द्वे शल्के शकलवल्कले             | २३६० |

|   |      |
|---|------|
| साष्टे शते सुवर्णानां हेमयुरोभूषणे पले              | २३६१ |
| दीनारेऽपि च निष्कोऽस्त्री कल्कोऽस्त्री शमलैनसोः     | २३६२ |
| दम्भेऽप्यथ पिनाकोऽस्त्री शूलशंकरधन्वनोः             | २३६३ |
| धेनुका तु करेष्वां च मेघजाले च कालिका               | २३६४ |
| कारिका यातनावृत्त्योः कर्णिका कर्णभूषणे             | २३६५ |
| करिहस्तेऽङ्गुलौ पद्मबीजकोश्यां त्रिपूत्तरे          | २३६६ |
| वृन्दारकौ रूपिमुख्यावेकेमुख्यान्यकेवलाः             | २३६७ |
| स्यादाम्भिकः कौक्कुटिको यश्चादूरेरितेक्षणः          | २३६८ |
| लालाटिकः प्रभोर्भालदर्शी कार्याक्षमश्च यः           | २३६९ |
| ‘भूभृन्नितम्बवलयचक्रेषु कटकोऽस्त्रियाम्             | **   |
| सूच्यग्रे क्षुद्रशत्रौ च रोमहर्षे च कण्टकः          | **   |
| पाकौ पक्तिशिशू मध्यरत्ने नेतरि नायकः                | **   |
| पर्यङ्कः स्यात्परिकरे स्याद्भ्याग्रेऽपि च लुब्धकः   | **   |
| पेटकस्त्रिषु वृन्देऽपि गुरौ देश्ये च देशिकः         | **   |
| खेटकौ ग्रामफलकौ धीवरेऽपि च जालिकः                   | **   |
| पुष्परेणौ च किञ्जल्कः शुल्कोऽस्त्री स्त्रीधनेऽपि च  | **   |
| स्यात्कल्लोलेऽप्युत्कलिका वार्द्धकं भाववृन्दयोः     | **   |
| करिण्यां चापि गाणिका दारकौ बालभेदकौ                 | **   |
| अन्धेऽप्यनेडमूकः स्यात् टङ्कौ दर्पाश्मदारणौ         | **   |
| मयूखस्तिवट्करज्वालास्वलिवणौ शिलीमुखौ                | २३७० |
| शङ्खो निधौ ललटास्त्रि कम्बौ न स्त्रीन्द्रियेऽपि खम् | २३७१ |
| घृणिज्वाले अपि शिखे शैलवृक्षौ नगावगौ                | २३७२ |

|   |      |
|---|------|
| आशुगौ वायुविशिखौ शरार्कविहगाः खगाः                    | २३७३ |
| पतङ्गौ पक्षिसूर्यौ च पूगः क्रमुकवृन्दयोः              | २३७४ |
| पशवोऽपि मृगा वेगः प्रवाहजवयोरपि                       | २३७५ |
| परागः कौसुमे रेणौ स्नानीयादां रजस्यपि                 | २३७६ |
| गजेऽपि नागमातङ्गावपाङ्गस्तिलकेऽपि च                   | २३७७ |
| सर्गः स्वभावनिर्मोक्षनिश्चयाध्यायसृष्टिषु             | २३७८ |
| योगः संनहनोपायध्यानमंगतियुक्तिषु                      | २३७९ |
| भोगः सुखे रुयादिभृतावहेश्च फणकाययोः                   | २३८० |
| चातके हरिणे पुंसि सारङ्गः शवले त्रिषु                 | २३८१ |
| कपौ च प्लवगः शापे त्वभिपङ्गः पराभवे                   | २३८२ |
| यानाद्यङ्गे युगं पुंसि युगं युग्मे कृतादिषु           | २३८३ |
| स्वर्गेषुपशुवाग्वज्रदिङ्नेत्रघृणिभूजले                | २३८४ |
| लक्ष्यदृष्ट्या स्त्रियां पुंसि गौर्लिङ्गं चिह्नशेफसोः | २३८५ |
| शृङ्ग प्राधान्यसान्वोश्च वराङ्ग मूर्धगुह्ययोः         | २३८६ |
| भगं श्रीकाममाहात्म्यवीर्ययत्नार्ककीर्तिषु             | २३८७ |
| परिधः परिघातेऽस्त्रेऽप्योघो वृन्देऽम्भसा रये          | २३८८ |
| मूल्ये पूजाविधावघोऽहोदुःखव्यसनेष्वघम्                 | २३८९ |
| त्रिष्विष्टेऽल्पे लघुः काचाः त्रिक्रयमृद्देददशुजः     | २३९० |
| विपर्यामे विस्तरे च प्रपञ्चः पावके शुचिः              | २३९१ |
| मास्यमात्ये चात्युपघे पुंसि मेध्ये सिते त्रिषु        | २३९२ |
| अभिप्यङ्गे स्पृहाया च गभस्ती च रुचिः स्त्रियाम्       | २३९३ |
| प्रसन्ने भद्रकेऽप्यच्छो गुच्छः सवकहारयोः              | ***  |



|  |      |
|--|------|
| परिधानाञ्चले कच्छो जलप्रान्ते त्रिलिङ्गकः                | २३९४ |
| केकिताक्ष्यावहिभुजौ दन्तविप्राण्डजा द्विजाः              | २३९५ |
| अजा विष्णुहरच्छागा गोष्ठाध्वनिवहा ब्रजाः                 | २३९६ |
| धर्मराजौ जिनयमौ कुञ्जो दन्तेऽपि न स्त्रियाम्             | २३९७ |
| बलजे क्षेत्रपूर्वारे बलजा बल्युदर्शना                    | २३९८ |
| समे क्षमांशे रणेऽप्याजिः प्रजा स्यात्संततौ जने           | २३९९ |
| अञ्जौ शङ्खशशाङ्कौ च स्वके नित्ये निजं त्रिषु             | २४०० |
| पुंस्यात्मनि प्रवीणे च क्षेत्रज्ञो वाच्यलिङ्गकः          | २४०१ |
| संज्ञा स्याच्चेतना नाम हस्ताद्यैश्चार्थसूचना             | २४०२ |
| काकेभगण्डौ करटौ गजगण्डकटी कटौ                            | २४०३ |
| शिपिविष्टस्तु खलतौ दुश्चर्मणि महेश्वरे                   | २४०४ |
| देवशिलिपिन्यपि त्वष्टा दिष्टं दैवेऽपि न द्वयोः           | २४०५ |
| रसे कटुः कट्वकार्ये त्रिषु मत्सरतीक्ष्णयोः               | २४०६ |
| रिष्टं क्षेमाशुभाभावेऽप्यरिष्टे तु शुभाशुभे              | २४०७ |
| मायानिश्चलयन्त्रेषु कैतवानृतराशिषु                       | २४०८ |
| अयोधने शैलशृङ्गे सीराङ्गे कूटमस्त्रियाम्                 | २४०९ |
| सूक्ष्मैलायां त्रुटिः स्त्री स्यात्कालेऽल्पे संशयेऽपि सा | २४१० |
| अत्युत्कर्षाश्रयः कोट्यो मूले लग्नकचे जटा                | २४११ |
| व्युष्टिः फले समृद्धौ च दृष्टिर्ज्ञानेऽक्षिण दर्शने      | २४१२ |
| इष्टिर्यागेच्छयोः सृष्टं निश्चिते बहुनि त्रिषु           | २४१३ |
| कष्टे तु कृच्छ्रगहने दक्षामन्दागदेषु च                   | २४१४ |
| पटुर्ज्ञौ वाच्यलिङ्गा च नीलकण्ठः शिवेऽपि च               | २४१५ |

|   |      |
|---|------|
| पुंसि कोष्ठोऽन्तर्जठरं कुसूलोऽन्तर्गृहं तथा         | २४१५ |
| निष्ठा निष्पत्तिनाशान्ताः काष्ठोत्कर्षे स्थितौ दिशि | २४१६ |
| त्रिषु ज्येष्ठोऽतिशस्तेऽपि कनिष्ठोऽतियुवाल्पयोः     | २४१७ |
| दण्डोऽस्त्री लगुडेऽपि स्याद्गुडो गोलेक्षुपाकयोः     | २४१८ |
| सर्पमांसात्पशू व्याडौ गोभूवाचस्त्रिडा इलाः          | २४१९ |
| क्ष्वेडा वंशशलाकापि नाडी नालेऽपि पट्टक्षणे          | २४२० |
| काण्डोऽस्त्री दण्डव्राणार्धवर्गवसरवारिषु            | २४२१ |
| स्याद्भाण्डमश्वभरणेऽमत्रे मूलवणिग्धने               | २४२२ |
| भृशप्रतिज्ञयोर्वाढ प्रगाढ भृशकृच्छ्रयोः             | २४२३ |
| शक्तस्थूलौ त्रिषु दृढौ व्यूढौ विन्यस्तसंहतौ         | २४२४ |
| भ्रूणोऽर्भके स्त्रैणगर्भे वाणो बलिसुते शरे          | २४२५ |
| कणोऽतिसूक्ष्मे धान्याशे सघाते प्रमथे गणः            | २४२६ |
| पणो द्यूतादिपूत्सृष्टे भृतौ मूल्ये धनेऽपि च         | २४२७ |
| मौर्व्या द्रव्याश्रिते सत्वशौर्यसंध्यादिके गुण      | २४२८ |
| निर्व्यापारस्थितौ कालविशेषोत्सवयोः क्षण             | २४२९ |
| वर्णो द्विजादौ शुक्लादौ स्तुतौ वर्णं तु वाक्षरे     | २४३० |
| अरुणो भास्करेऽपि स्याद्वर्णभेदेऽपि च त्रिषु         | २४३१ |
| स्थाणुः गर्वेऽप्यथ द्रोणः काकेऽप्याजौ रवे रणः       | २४३२ |
| ग्रामणीर्नापिते पुंसि श्रेष्ठे ग्रामाधिपे त्रिषु    | २४३३ |
| ऊर्णा मेपादिलोम्नि स्यादावर्ते चान्तरा भ्रुवोः      | २४३४ |
| हरिणी स्यान्मृगी हेमप्रतिमा हरिता च या              | २४३५ |
| त्रिषु पाण्डौ च हरिण स्थूणा स्तम्भेऽपि वेदमनः       | २४३६ |

|   |      |
|---|------|
| तृष्णे स्पृहा पिपासे द्वे जुगुप्साकरुणे घृणे  | २४३७ |
| वणिकपथे च विषणिः सुरा प्रत्यक् चारुणी         | २४३८ |
| करेणुरिभ्यां स्त्रीनेभे द्रविणं तु बलं धनम्   | २४३९ |
| शरणं गृहरक्षित्रोः श्रीपर्णं कमलेऽपि च        | २४४० |
| विषाभिमरलोहेषु तीक्ष्णं क्लीबे खरे त्रिषु     | २४४१ |
| प्रमाणं हेतुमर्यादाशास्त्रेयत्ताप्रमातृषु     | २४४२ |
| करणं साधकतमं क्षेत्रगात्रेन्द्रियेष्वपि       | २४४३ |
| प्राण्युत्पादे संसरणमसंवाधचमूगतौ              | २४४४ |
| घण्टापथेऽथ वान्तास्त्रे समुद्गिरणमुन्नये      | २४४५ |
| अतस्त्रिषु विषाणं स्यात्पशुशृङ्गेभदन्तयोः     | २४४६ |
| प्रवणं क्रमनिम्नोर्व्यां प्रहे ना तु चतुष्पथे | २४४७ |
| संकीर्णौ निचिताशुद्धाविरिणं शून्यमूपरम्       | २४४८ |
| ‘सेतौ च वरणौ वेणी नदीभेदे कचोच्चये’           | ***  |
| देवचूर्यौ विवस्वन्तौ सरस्वन्तौ नदार्णवौ       | २४४९ |
| पक्षिताक्षर्यौ गरुत्मन्तौ शकुन्तौ भासपक्षिणौ  | २४५० |
| अग्न्युत्पातौ धूमकेतू जीमूतौ मेघपर्वतौ        | २४५१ |
| हस्तौ तु पाणिनक्षत्रे मरुतौ पवनामरौ           | २४५२ |
| यन्ता हस्तिपके सूते भर्ता धातरि पोष्टरि       | २४५३ |
| यानपात्रे शिशौ पोतः प्रेतः प्राण्यन्तरे मृते  | २४५४ |
| ग्रहभेदे ध्वजे केतुः पार्थिवे तनये सुतः       | २४५५ |
| स्थपतिः कारुभेदेऽपि भूभृद्भूमिधरे नृपे        | २४५६ |
| मूर्धाभिषिक्तौ भूपेऽपि ऋतुः स्त्रीकुसुमेऽपि च | २४५७ |

|   |      |
|---|------|
| विष्णावप्यजिताव्यक्तौ सूतस्त्वष्टरि सारथौ           | २४५८ |
| व्यक्तः प्राज्ञेऽपि दृष्टान्ताबुभौ शास्त्रनिदर्शने  | २४५९ |
| क्षत्ता स्यात्सारथौ द्वाःस्थे क्षत्रियाया च शूद्रजे | २४६० |
| वृत्तान्तः स्यात्प्रकरणे प्रकारे कात्स्न्यवार्तयोः  | २४६१ |
| आनर्तः समरे नृत्यस्थाननीवृद्धिशेषयोः                | २४६२ |
| कृतान्तो यमसिद्धान्तदेवाकुशलकर्मसु                  | २४६३ |
| श्लेष्मादि रसरक्तादि महाभूतानि तद्गुणाः             | २४६४ |
| इन्द्रियाण्यश्मविकृतिः शब्दयोनिश्च धातवः            | २४६५ |
| कक्षान्तरेऽपि शुद्धान्तो नृपस्यासर्वगोचरे           | २४६६ |
| कासूसामर्थ्ययोः शक्तिर्मूर्तिः काठिन्यकाययो         | २४६७ |
| विस्तारबलयोर्व्रततिर्वसती रात्रिवेश्मनोः            | २४६८ |
| क्षयार्चयोरपचितिः सातिर्दानावसानयोः                 | २४६९ |
| अर्तिः पीडाधनुष्कोव्योर्जातिः सामान्यजन्मनोः        | २४७० |
| प्रचारस्यन्दयो रीतिरीतिर्दिग्प्रवासयो               | २४७१ |
| उदयेऽधिगमे प्राप्तिस्त्रेता त्वग्नित्रये युगे       | २४७२ |
| वीणाभेदेऽपि महती भूतिर्भस्मनि संपदि                 | २४७३ |
| नदीनगर्योर्नागानां भोगवत्यय संगरे                   | २४७४ |
| सङ्गे सभाया समितिः क्षयवासावपि क्षिती               | २४७५ |
| खेरचिंश्च शस्त्रं च वह्निज्वाला च हेतयः             | २४७६ |
| जगती जगतिदृष्टन्दोविशेषेऽपि क्षितायपि               | २४७७ |
| पङ्क्तिदृष्टन्दोऽपि दण्डम स्यात्प्रभावेऽपि चायतिः   | २४७८ |
| पक्षिर्गर्ता च मूले तु पक्षति पक्षभेदयोः            | २४७९ |

|   |      |
|---|------|
| प्रकृतिर्योनिलिङ्गे च कैशिक्याद्याश्च वृत्तयः   | २४८० |
| सिकताः स्युर्वालुकापि वेदे श्रवसि च श्रुतिः     | २४८१ |
| वनिता जनितात्यर्थानुरागायां च योपिति            | २४८२ |
| शुप्तिः क्षितिव्युदासेऽपि धृतिर्धारणधैर्ययोः    | २४८३ |
| बृहती क्षुद्रवार्ताकी छन्दोभेदे महत्यपि         | २४८४ |
| वासिता स्त्रीकरिण्योश्च वार्ता वृत्तौ जनश्रुतौ  | २४८५ |
| वार्तं फल्गुन्यरोगे च त्रिष्वप्सु च घृतामृते    | २४८६ |
| कलधौतं रूप्यहेन्द्रोर्निमित्तं हेतुलक्ष्मणोः    | २४८७ |
| श्रुतं शास्त्रावधृतयोर्युगपर्याप्तयोः कृतम्     | २४८८ |
| अत्याहितं महाभीतिः कर्म जीवानपेक्षि च           | २४८९ |
| युक्ते क्षमादावृते भूतं प्राण्यतीते समे त्रिषु  | २४९० |
| वृत्तं पद्ये चरित्रे त्रिष्वतीते दृढनिस्तले     | २४९१ |
| महद्राज्यं चावगीतं जन्ये स्याद्गर्हिते त्रिषु   | २४९२ |
| श्वेतं रूप्येऽपि रजतं हेम्नि रूप्ये सिते त्रिषु | २४९३ |
| त्रिष्वतो जगदिङ्गेऽपि रक्तं नील्यादिरागि च      | २४९४ |
| अवदातः सिते पीते शुद्धे बद्धार्जुनौ सितौ        | २४९५ |
| युक्तेऽतिसंस्कृते मर्षिण्यभिनीतोऽथ संस्कृतम्    | २४९६ |
| कुत्रिमे लक्षणोपेतेऽप्यनन्तोऽनवधावपि            | २४९७ |
| ख्याते हृष्टे प्रतीतोऽभिजातस्तु कुलजे बुधे      | २४९८ |
| विविक्तौ पूतविजनौ मूर्च्छितौ मूढसोच्छ्रयौ       | २४९९ |
| द्वौ चाम्लपरुषौ शुक्तौ शिती धवलमेचकौ            | २५०० |
| सत्ये साधौ विद्यमाने प्रशस्तेऽभ्यर्हिते च सत्   | २५०१ |

|   |      |
|---|------|
| पुरस्कृतः पूजितेऽरात्यभिर्युक्तेऽग्रत कृते        | २५०२ |
| निवातावाश्रयावातौ शस्त्राभेद्य च वर्म यत्         | २५०३ |
| जातोन्नद्धप्रवृद्धाः स्युरुच्छिता उत्थितास्त्वमी  | २५०४ |
| वृद्धिमत्प्रोद्यतोत्पन्ना आहतौ सादरार्चितौ        | २५०५ |
| अर्थोऽभिधेयरैवस्तुप्रयोजननिवृत्तिषु               | २५०६ |
| निपानागमयोस्तीर्थमृपिजुष्टे जले गुरौ              | २५०७ |
| समर्थस्त्रिषु शक्तिस्थे संवद्धार्ये हितेऽपि च     | २५०८ |
| दशमीस्थौ क्षीणरागवृद्धौ वीथी पदव्यपि              | २५०९ |
| आस्थानीयत्वयोरास्था प्रस्थोऽस्त्री सानुमानयोः     | २५१० |
| ‘शास्त्रद्विणयोर्ग्रन्थः संस्थाधारे स्थितौ मृतौ’  | ***  |
| अभिप्रायवशां छन्दावब्दौ जीमूतवत्सरौ               | २५११ |
| अपवादौ तु निन्दाज्ञे दायादौ भुतवान्धवौ            | २५१२ |
| पादा रश्म्यद्वितुर्याशाश्चन्द्राद्व्यर्कास्तमोनुद | २५१३ |
| निर्वादो जनवादेऽपि शादो जम्बालशष्पयोः             | २५१४ |
| आरावे रुदिते त्रातर्याक्रन्दो दारुणे रणे          | २५१५ |
| स्यात्प्रसादोऽनुरागेऽपि सूदः स्याद्व्यञ्जनेऽपि च  | २५१६ |
| गोष्ठाध्यक्षेऽपि गोविन्दो हर्षेऽप्यामोदवन्मद      | २५१७ |
| प्राधान्ये राजलिङ्गे च वृषाङ्गे ककुदोऽस्त्रियाम्  | २५१८ |
| स्त्री संविज्ञानसंभाषाक्रियाकाराजिनामसु           | २५१९ |
| धर्मे रहस्युपनिषत्स्याहता वत्सरे शरत्             | २५२० |
| पदं व्यसतत्राणस्थानलक्षमाद्विस्तुषु               | २५२१ |
| गोष्पदं सेविते माने प्रतिष्ठाकृत्यमास्पदम्        | २५२२ |

|  |      |
|--|------|
| त्रिष्विष्टमधुरौ स्वादू मृदू चातीक्ष्णकोमलौ      | २५२३ |
| सूढाल्पापटुनिर्भाग्या मन्दाः स्युद्धौ तु शारदौ   | २५२४ |
| प्रत्यग्राप्रतिभौ विद्वत्सुप्रगल्भौ विशारदौ      | २५२५ |
| व्यामो वटश्च न्यग्रोधावुत्सेधः काय उन्नतिः       | २५२६ |
| पर्याहारश्च मार्गश्च विवधौ वीवधौ च तौ            | २५२७ |
| परिधिर्यज्ञियतरोः शाखायामुपसूर्यके               | २५२८ |
| वन्धकं व्यसनं चेतःपीडाधिष्ठानमाधयः               | २५२९ |
| स्युः समर्थननीचाकनियमाश्च समाधयः                 | २५३० |
| दोषोत्पादेऽनुबन्धः स्यात्प्रकृत्यादिविनश्वरे     | २५३१ |
| मुख्यानुयायिनि शिर्षौ प्रकृतस्यानुवर्तने         | २५३२ |
| विधुर्विष्णौ चन्द्रमसि परिच्छेदे विलेऽवधिः       | २५३३ |
| विधिर्विधाने दैवेऽपि प्रणिधिः प्रार्थने चरे      | २५३४ |
| बुधवृद्धौ पण्डितेऽपि स्कन्धः समुदयेऽपि च         | २५३५ |
| देशे नदविशेषेऽब्धौ सिन्धुर्ना सरिति स्त्रियाम्   | २५३६ |
| विधा विधौ प्रकारे च साधू रम्येऽपि च त्रिषु       | २५३७ |
| वधूर्जाया स्तुषा स्त्री च सुधा लेपोऽमृतं स्तुही  | २५३८ |
| संधा प्रतिज्ञा मर्यादा श्रद्धा संप्रत्ययः स्पृहा | २५३९ |
| मधु मद्ये पुष्परसे क्षौद्रेऽप्यन्धं तमस्यपि      | २५४० |
| अतस्त्रिषु समुन्नद्धौ पण्डितं मन्यगर्वितौ        | २५४१ |
| ब्रह्मबन्धुरधिक्षेपे निर्देशेऽथावलम्बितः         | २५४२ |
| अविदूरोऽप्यवष्टब्धः प्रसिद्धौ ख्यातभूषितौ        | २५४३ |
| सूर्यवह्नी चित्रभानू भानू रश्मिदिवाकरौ           | २५४४ |

|   |      |
|---|------|
| भूतात्मानां धातृदेहौ मूर्खनीचौ पृथग्जनौ           | २५४५ |
| ग्रावाणौ शैलपापाणौ पत्रिणौ शरपक्षिणौ              | २५४६ |
| तरुशैलौ शिखरिणौ शिखिनौ वह्निवर्हिणौ               | २५४७ |
| प्रतियत्नावुभौ लिप्सोपग्रहावथ सादिनौ              | २५४८ |
| द्वौ सारथिहयारोहौ वाजिनोऽश्वेषुपक्षिणः            | २५४९ |
| कुलेऽप्यभिजनो जन्मभूम्यामप्यथ हायनाः              | २५५० |
| वर्षार्चिर्वर्हिभेदाश्च चन्द्राग्न्यर्का विरोचनाः | २५५१ |
| क्लेशेऽपि वृजिनो विश्वकर्माकसुरशिल्पिनोः          | २५५२ |
| आत्मा यत्नो धृतिर्बुद्धिः स्वभावो ब्रह्म वर्ष्म च | २५५३ |
| भक्रो घातुकमत्तेभो वर्षुकाब्दो घनाघनः             | २५५४ |
| घनो मेघे मूर्तिगुणे त्रिषु मूर्ते निरन्तरे        | २५५५ |
| अभिमानोऽर्थादिदर्पे ज्ञाने प्रणयर्हिसयोः          | २५५६ |
| इनः सूर्ये प्रभौ राजा मृगाङ्गे क्षत्रियं नृपे     | २५५७ |
| वाणिन्यां नर्तकीदूत्यां स्रवन्त्यामपि वाहिनी      | २५५८ |
| हादिन्यां वज्रतडितौ वन्दायामपि कामिनी             | २५५९ |
| त्वग्देहयोरपि तनुः सूनाधोजिह्विकापि च             | २५६० |
| क्रतुविस्तारयोरस्त्रीवितानं त्रिषु तुच्छके        | २५६१ |
| मन्देऽथ केतनं कृत्ये केतावुपनिमग्नणे              | २५६२ |
| वेदस्तत्त्वं तपो ब्रह्म ब्रह्मा विप्रः प्रजापतिः  | २५६३ |
| उत्साहने च हिंसाया सूचने चापि गन्धनम्             | २५६४ |
| मातश्चन प्रतीवापजवनाप्यायनार्थकम्                 | २५६५ |
| व्यञ्जनं लान्छनं श्मश्रुनिष्ठानावयवेऽपि           | २५६६ |



|  |      |
|--|------|
| स्यात्कौलीनं लोकवादे युद्धे पश्वहिपक्षिणाम्        | २५६७ |
| स्यादुद्यानं निःसरणे वनभेदे प्रयोजने               | २५६८ |
| अवकाशे स्थितौ स्थानं क्रीडादात्रपि देवनम्          | २५६९ |
| उत्थानं पौरुषे तन्त्रे संनिविष्टोद्गमेऽपि च        | २५७० |
| व्युत्थानं प्रतिरोधे च विरोधाचरणेऽपि च             | २५७१ |
| मारणे मृतसंस्कारे गतौ द्रव्योऽर्थदापने             | २५७२ |
| निर्वर्तनोपकरणानुव्रज्यासु च साधनम्                | २५७३ |
| नियार्तनं वैरशुद्धौ दाने न्यासार्पणेऽपि च          | २५७४ |
| व्यसनं विपदि भ्रंशे दोषे कामजकोपजे                 | २५७५ |
| पक्षमाक्षिलोस्त्रि किंजल्के तन्त्राद्यंशेऽप्यणीयसि | २५७६ |
| तिथिभेदे क्षणे पर्व वर्त्म नेत्रच्छदेऽध्वनि        | २५७७ |
| अकार्यगुह्ये कौपीनं मैथुनं संगतौ रते               | २५७८ |
| प्रधानं परमात्मा धीः प्रज्ञानं बुद्धिचिह्नयोः      | २५७९ |
| प्रसूनं पुष्पफलयोर्निधनं कुलनाशयोः                 | २५८० |
| क्रन्दने रोदनाह्वाने वर्ष्म देहप्रमाणयोः           | २५८१ |
| गृहदेहत्विद्रुप्रभावा धामान्यथ चतुष्पथे            | २५८२ |
| संनिवेशे च संस्थानं लक्ष्म चिह्नप्रधानयोः          | २५८३ |
| आच्छादने संपिधानमपवारणमित्युभे                     | २५८४ |
| आराधनं साधने स्यादवाप्तौ तोषणेऽपि च                | २५८५ |
| अधिष्ठानं चक्रपुरप्रभावाध्यासनेष्वपि               | २५८६ |
| रत्नं स्वजातिश्रेष्ठेऽपि वने सलिलकानने             | २५८७ |
| तलिनं विरले स्तोके वाच्यलिङ्गं तथोत्तरे            | २५८८ |

|   |      |
|---|------|
| समानाः सत्समैके स्युः पिशुनौ खलसूचकौ                      | २५८९ |
| हीनन्यूनाधूनगह्यौ वेगिशूरो तरस्विनौ                       | २५९० |
| अभिपन्नोऽपराद्धोऽभिग्रस्तव्यापद्रतावपि                    | २५९१ |
| कलापो भूषणे वर्हे तूणीरे संहतावपि                         | २५९२ |
| परिच्छदे परीवापः पर्युप्तौ सलिलस्थितौ                     | २५९३ |
| गोधुग्गोष्ठपती गोपौ हरविष्णू वृषाकपी                      | २५९४ |
| वाष्पमूष्माश्रु कशिपु त्वन्नमाच्छादनं द्वयम्              | २५९५ |
| तल्पं शय्यादृदारेषु स्तम्भेऽपि विटपोऽस्त्रियाम्           | २५९६ |
| प्राप्तरूपस्वरूपाभिरूपा बुधमनोज्ञयोः                      | २५९७ |
| भेद्यलिङ्गा अमी कूर्मी वीणाभेदश्च कच्छपी                  | २५९८ |
| ‘कुतपो मृगरोमोत्थपटे चाहोऽष्टमंऽशके’                      | ***  |
| रवर्णे पुंसि रेफः स्यात्कुत्सिते वाच्यलिङ्गकः             | २५९९ |
| अन्तराभवसत्त्वेऽश्वे गन्धर्वो दिव्यगायने                  | २६०० |
| कम्बुर्ना वलये शङ्खे द्विजिह्वौ सर्पसूचकौ                 | २६०१ |
| पूर्वोऽन्यलिङ्गः प्रागाह पुं बहुत्वेऽपि पूर्वजान्         | २६०२ |
| कुम्भौ घटेभमूर्धाशौ डिम्भौ तु शिशुवालिशौ                  | २६०३ |
| स्तम्भौ स्थूणाजडीभावौ शंभू ब्रह्मत्रिलोचना                | २६०४ |
| कुक्षिभ्रूणार्भका गर्भा विस्रम्भ. प्रणयेऽपि च             | २६०५ |
| स्याद्देया दुन्दुभि. पुंसि स्यादक्षे दुन्दुभि. स्त्रियाम् | २६०६ |
| स्यान्महारजने क्लीव कुसुम्भं करके पुमान्                  | २६०७ |
| क्षत्रियेऽपि च नाभिर्ना सुरभिर्गत्रि च स्त्रियाम्         | २६०८ |
| सभा संमदि सम्भे च त्रिष्वध्यक्षेऽपि बल्लभ.                | २६०९ |

|  |      |
|--|------|
| किरणप्रग्रहौ रश्मी कपिभेकौ पुवंगमौ                     | २६१० |
| इच्छामनोभवौ कामौ शौर्योद्योगौ पराक्रमौ                 | २६११ |
| धर्माः पुण्ययमन्यायस्वभावाचारसोमपाः                    | २६१२ |
| उपायपूर्व आरम्भ उपधा चाप्युपक्रमः                      | २६१३ |
| वणिकपथःपुरं वेदो निगमो नागरो वणिक्र                    | २६१४ |
| नैगमौ द्वौ बले रामो नीलचारुसिते त्रिषु                 | २६१५ |
| शब्दादिपूर्वो वृन्देऽपि ग्रामः क्रान्तौ च विक्रमः      | २६१६ |
| स्तोमः स्तोत्रेऽध्वरे वृन्दे जिह्वस्तु कुटिलेऽलसे      | २६१७ |
| उष्णेऽपि घर्मश्चेष्टालंकारे भ्रान्तौ च विभ्रमः         | २६१८ |
| गुल्मा रुक्स्तम्बसेनाश्च जामिः स्वसृकुलस्त्रियोः       | २६१९ |
| क्षितिक्षान्त्योः क्षमा युक्ते क्षमं शक्ते हिते त्रिषु | २६२० |
| त्रिषु श्यामौ हरित्कृष्णौ श्यामा स्याच्छारिवा निशा     | २६२१ |
| ललामं पुच्छपुण्ड्राश्वभूपाप्राधान्यकेतुषु              | २६२२ |
| सूक्ष्ममध्यात्ममप्याद्ये प्रधाने प्रथमस्त्रिषु         | २६२३ |
| वामौ बलुगुप्रतीपौ द्वावधमौ न्यूनकुत्सितौ               | २६२४ |
| जीर्णं च परिभुक्तं च यातयाममिदं द्वयम्                 | २६२५ |
| तुरंगगरुडौ ताक्ष्यौ निलयापचयौ क्षयौ                    | २६२६ |
| श्वश्रुयौ देवरश्यालौ भ्रातृव्यौ भ्रातृजद्विपौ          | २६२७ |
| पर्जन्यौ रसदब्देन्द्रौ स्यादर्यः स्वामिवैश्ययोः        | २६२८ |
| तिष्यः पुण्ये कलियुगे पर्यायोऽवसरे क्रमे               | २६२९ |
| प्रत्ययोऽधीनशपथज्ञानविश्वासहेतुषु                      | २६३० |
| रन्ध्रे शब्देऽथानुशयो दीर्घद्वेपानुतापयोः              | २६३१ |

|  |      |
|--|------|
| स्थूलोच्चयस्त्वसाकल्ये नागानां मध्यमे गते        | २६३२ |
| समयाः शपथाचारकालसिद्धान्तसंविदः                  | २६३३ |
| व्यसनान्यशुभं दैवं विपदित्यनयास्त्रयः            | २६३४ |
| अत्ययोऽतिक्रमे कृच्छ्रे दोषे दण्डेऽन्यथापदि      | २६३५ |
| युद्धायत्योः संपरायः पूज्यस्तु श्वशुरेऽपि च      | २६३६ |
| पश्चादवस्थायि बलं समवायश्च सनयां                 | २६३७ |
| संघाते संनिवेशे च संस्त्यायः प्रणयास्त्वमी       | २६३८ |
| विस्त्रम्भयाज्जाप्रेमाणो विरोधेऽपि समुच्छ्रयः    | २६३९ |
| विपयो यस्य यो ज्ञातस्तत्र शब्दादिकेऽपि           | २६४० |
| निर्यासेऽपि कपायोऽस्त्री सभाया च प्रतिश्रयः      | २६४१ |
| प्रायो भूयन्तगमने मन्युर्दैन्ये क्रतौ कुवि       | २६४२ |
| रहस्योपस्थयोर्गुह्यं सत्यं शपथतथ्ययोः            | २६४३ |
| वीर्यं बले प्रभावे च द्रव्यं भव्ये गुणाश्रये     | २६४४ |
| धिष्ण्य स्थाने गृहे भेऽग्नौ भाग्य कर्म शुभाशुभम् | २६४५ |
| कशेरुहेन्द्रोर्गाङ्गेयं विगल्या दन्तिकापि च      | २६४६ |
| वृषाकपायी श्रीगौर्योरभिख्या नामशोभयोः            | २६४७ |
| आरम्भो निष्कृति शिक्षा पूजनं सप्रधारणम्          | २६४८ |
| उपाय कर्म चेष्टा च चिकित्सा च नव क्रियाः         | २६४९ |
| छाया सूर्यप्रिया कान्ति प्रतिविम्बमनातपः         | २६५० |
| कक्ष्या प्रकोष्ठे हर्म्यादेः काश्या मध्येभनन्धने | २६५१ |
| कृत्या क्रियादेवतयोस्त्रिषु भेदे धनादिभिः        | २६५२ |
| जन्यं स्याज्जनगादेऽपि जघन्योऽन्त्येऽधमेऽपि च     | २६५३ |

|   |      |
|---|------|
| गर्ह्याधीनौ च वक्तव्यौ कल्यौ सज्जनिरामयौ        | २६५४ |
| आत्मवाननपेतोऽर्थादर्थ्यौ पुण्यं तु चार्वापि     | २६५५ |
| रूप्यं प्रशस्तरूपेऽपि वदान्यो वल्गुवागपि        | २६५६ |
| न्याय्येऽपि मध्यं सौम्यं तु सुन्दरे सोमदैवते    | २६५७ |
| निवहावसरौ वारौ संस्तरौ प्रस्तराध्वरौ            | २६५८ |
| गुरु गीर्षतिपित्राद्यौ द्वापरौ युगसंशयौ         | २६५९ |
| प्रकारौ भेदसादृश्ये आकाराविङ्गिताकृती           | २६६० |
| किंशारु सस्यशूकेषु मरु धन्वधराधरौ               | २६६१ |
| अद्रयो द्रुमशैलार्काः स्त्रीस्तनाव्दौ पयोधरौ    | २६६२ |
| ध्वान्तारिदानवा वृत्रा बलिहस्तांशवः कराः        | २६६३ |
| प्रदरा भङ्गनारीरुग्वाणा अस्त्राः कचा अपि        | २६६४ |
| अजातशुङ्गो गौः कालेऽप्यश्मश्रुर्ना च तूवरौ      | २६६५ |
| स्वर्णेऽपि राः परिकरः पर्यङ्कपरिवारयोः          | २६६६ |
| मुक्ताशुद्धौ च तारः स्याच्छारो वायौ स तु त्रिषु | २६६७ |
| कर्बुरेऽथ पतिज्ञाजिसंविदापत्सु संगरः            | २६६८ |
| वेदभेदे गुप्तवादे मन्त्रो मित्रो रवावपि         | २६६९ |
| मखेपुयूपखण्डेऽपि स्वरुर्गुह्येऽप्यवस्करः        | २६७० |
| आडम्बरस्तूर्यरवे गजेन्द्राणां च गार्जिते        | २६७१ |
| अभिहारोऽभियोगे च चौर्ये संनहनेऽपि च             | २६७२ |
| स्याज्जङ्गमे परीवारः खड्गकोषे परिच्छदे          | २६७३ |
| विष्टरो विटपी दर्भमुष्टिः पीठाद्यमासनम्         | २६७४ |
| द्वारि द्वाःस्थे प्रतीहारः प्रतीहार्यप्यनन्तरे  | २६७५ |

|   |      |
|---|------|
| विपुले नकुले विष्णौ वभ्रुर्ना पिङ्गले त्रिषु      | २६७६ |
| सारो वले स्थिराशे च न्याय्ये क्लीवं वरे त्रिषु    | २६७७ |
| दुरोदरो द्यूतकारे पणे द्यूते दुरोदरम्             | २६७८ |
| महारण्ये दुर्गपथे कान्तारं पुंनपुंसकम्            | २६७९ |
| मत्सरोऽन्यशुभद्वेषे तद्वत्कृपणयोस्त्रिषु          | २६८० |
| देवाद्भुते वरः श्रेष्ठे त्रिषु क्लीवं मनाक्प्रिये | २६८१ |
| वशाङ्कुरे करीरोऽस्त्री तरुभेदे घटे च ना           | २६८२ |
| ना चमूजघने हस्तसूत्रे प्रतिसरोऽस्त्रियाम्         | २६८३ |
| यमानिलेन्द्रचन्द्रार्कविष्णुसिंहांशुवाजिषु        | २७८४ |
| शुकाहिकपिभेकेषु हरिर्ना कपिले त्रिषु              | २६८५ |
| शर्करा कर्पराशेऽपि यात्रा स्याद्यापने गतौ         | २६८६ |
| इरा भूवाक्सुराप्सु स्यात्तन्द्री निद्राप्रमीलयोः  | २६८७ |
| धात्री स्यादुपमातापि क्षितिरप्यामलक्यपि           | २६८८ |
| क्षुद्रा व्यङ्गा नटी वेद्या सरघा कण्टकारिका       | २६८९ |
| त्रिषु क्रूरेऽधमेऽल्पेऽपि क्षुद्र मात्रा परिच्छदे | २६९० |
| अल्पे च परिमाणे सा मात्रं कात्स्न्येऽवधारणे       | २६९१ |
| आलेख्याश्चर्ययोश्चित्रं कलत्रं श्रोणिभार्ययोः     | २६९२ |
| योग्यभाजनयोः पात्रं पत्रं वाहनपक्षयोः             | २६९३ |
| निदेशग्रन्थयोः शास्त्रं शस्त्रमायुधलोहयोः         | २६९४ |
| स्याज्जटाशुकयोर्नेत्रं क्षेत्रं पत्नीशरीरयोः      | २६९५ |
| मुखाग्रे क्रोडहलयोः पोत्रं गोत्रं तु नाम्नि च     | २६९६ |
| सत्रमाच्छादने यज्ञे सदादाने वनेऽपि च              | २६९७ |

|  |      |
|--|------|
| अजिरं विषये कायेऽप्यम्बरं व्योम्नि वाससि           | २६९८ |
| चक्रं राष्ट्रेऽप्यक्षरं तु मोक्षेऽपि क्षीरमप्सु च  | २६९९ |
| स्वर्णेऽपि भूरिचन्द्रौ द्वौ द्वारमात्रेऽपि गोपुरम् | २७०० |
| गुहादम्भौ गह्वरे द्वे रहोऽन्तिकमुपह्वरे            | २७०१ |
| पुरोऽधिकमुपर्यग्राण्यगारे नगरे पुरम्               | २७०२ |
| मन्दिरं चाथ राष्ट्रोऽस्त्री विषये स्यादुपद्रवे     | ३७०३ |
| दरोऽस्त्रियां भये श्वभ्रे वज्रोऽस्त्री हीरके पर्वौ | २७०४ |
| तन्त्रं प्रधाने सिद्धान्ते सूत्रवाये परिच्छदे      | २७०५ |
| औशीरश्चामरे दण्डेऽप्यौशीरं शयनासने                 | २७०६ |
| पुष्करं करिहस्ताग्रे वाद्यभाण्डमुखे जले            | २७०७ |
| व्योम्नि खड्गफले पद्मे तीर्थौपधिविशेषयोः           | २७०८ |
| अन्तरमवकाशावधिपरिधानान्तर्धिभेदतादर्थ्ये           | २७०९ |
| छिद्रात्मीयविनावहिरवसरमध्येऽन्तरात्मनि च           | २७१० |
| मुस्तेऽपि पिठरं राजकशेरुण्यपि नागरम्               | २७११ |
| शर्विरं त्वन्वतमसे घातुके भेद्यलिङ्गकम्            | २७१२ |
| गौरोऽरुणे सिंते पीते व्रणकार्यप्यरुष्करः           | २७१३ |
| जठरः कठिनेऽपि स्यादधस्तादपि चाधरः                  | २७१४ |
| अनाकुलेऽपि चैकाग्रो व्यग्रो व्यासक्त आकुले         | २७१५ |
| उपर्युदीच्यश्रेष्ठेऽप्युत्तरः स्यादनुत्तरः         | २७१६ |
| एषा विपर्यये श्रेष्ठे दूरानात्मोत्तमाः पराः        | २७१७ |
| स्वादुप्रियो तु मधुरौ क्रूरौ कठिननिर्दयौ           | २७१८ |
| उदारो दातृमहतोरितरस्त्वन्यनीचयोः                   | २७१९ |

|  |      |
|--|------|
| मन्दस्वच्छन्दयोः स्वैरः शुभ्रमुद्दीप्तशुक्लयोः   | २७२० |
| चूडा किरीटं केशाश्च सयता मौलयस्त्रयः             | २७२१ |
| द्रुमप्रभेदमातङ्गकाण्डपुष्पाणि पीलवः             | २७२२ |
| कृतान्तानेहसोः कालश्चतुर्थेऽपि युगे कलि.         | २७२३ |
| स्यात्कुरङ्गेऽपि कमलः प्रावारेऽपि च कम्बलः       | २७२४ |
| करोपहारयोः पुंसि वलिः प्राण्यङ्गजे स्त्रियाम्    | २७२५ |
| स्थौल्यसामर्थ्यसैन्येषु वलं ना काकसीरिणो.        | २७२६ |
| घातूलः पुंसि घात्यायामपि वातासहे त्रिषु          | २७२७ |
| भेद्यलिङ्गं शठे व्याल. पुंसि श्वापदसर्पयो        | २७२८ |
| मलोऽस्त्री पापविद्वकिट्टान्यस्त्रीशूलं रुगायुधम् | २७२९ |
| शङ्कावपि द्वयोः कीलः पालि. स्वथ्यङ्गपङ्क्तिषु    | २७३० |
| कला शिल्पे कालभेदेऽप्याली सख्याउली अपि           | २७३१ |
| अब्ध्यम्बुविकृतौ वेला कालमर्यादयोरपि             | २७३२ |
| बहुला कृत्तिका गावो बहुलोऽग्नौ शिता त्रिषु       | २७३३ |
| लीला विलासक्रिययोरुपला शर्करापि च                | २७३४ |
| शोणितेऽम्भसि कीलालं मूलमाद्ये शिफाभयो.           | २७३५ |
| जाल समूह आनायगवाक्षक्षारेकेष्वपि                 | २७३६ |
| शीलं स्वभावे सदृत्ते सस्ये हेतुकृते फलम्         | २७३७ |
| छर्दिनेत्ररुजो. क्लीवं समूहे पटल नना             | २७३८ |
| अध. स्वरूपयोरस्त्री तलं स्याच्चाभिपे पलम्        | २७३९ |
| आर्वाणलेऽपि पाताल चल वस्त्रेऽधमे त्रिषु          | २७४० |
| कुक्कूलं शङ्कुभि कीर्णे श्वभ्रे ना तु तुपानले    | २७४१ |



|   |      |
|---|------|
| निर्णीते केवलमिति त्रिलिङ्गं त्वंककृत्स्नयोः              | २७४२ |
| पर्याप्तिक्षेमपुण्येषु कुशलं शिक्षिते त्रिषु              | २७४३ |
| प्रवालमङ्कुरेऽप्यस्त्री त्रिषु स्थूलं जडेऽपि च            | २७४४ |
| करालो दन्तुरे तुङ्गे चारौ दक्षे च पेशलः                   | २७४५ |
| मूर्खेऽर्भकेऽपि बालः स्याल्लोलश्चलसतृष्णयोः               | २७४६ |
| दवदायो वनारण्यवह्नी जन्महरौ भवौ                           | २७४७ |
| मन्त्री सहायः सचिवौ पतिशाखिनरा धवाः                       | २७४८ |
| अवयः शैलमेपाका आज्ञाह्वानाध्वरा हवाः                      | २७४९ |
| भावः सत्तास्वभावाभिप्रायचेष्टात्मजन्मसु                   | २७५० |
| स्यादुत्पादे फले पुष्पे प्रसवो गर्भमोचने                  | २७५१ |
| अविश्वासेऽपह्वयेऽपि निकृतावपि निह्वयः                     | २७५२ |
| उत्सेकामर्पयोरिच्छाप्रसरे मह उत्सवः                       | २७५३ |
| अनुभावः प्रभावे च सतां च मतिनिश्चये                       | २७५४ |
| स्याज्जन्महेतुः प्रभवः स्थानं चाद्योपलब्धये               | २७५५ |
| शूद्रायां विप्रतनये शस्त्रे पारशवो मतः                    | २७५६ |
| ध्रुवो भभेदे क्लीवं तु निश्चिते शाश्वते त्रिषु            | २७५७ |
| स्वो ज्ञातावात्मनि स्वं त्रिष्वात्मीये स्वोऽस्त्रियां धने | २७५८ |
| स्त्रीकटीवस्त्रबन्धेऽपि नीवी परिपणेऽपि च                  | २७५९ |
| शिवा गौरीफेरवयोर्द्वन्द्वं कलहयुग्मयोः                    | २७६० |
| द्रव्यासुव्यवसायेषु सत्त्वमस्त्री तु जन्तुषु              | २७६१ |
| क्लीवं नपुंसकं पण्डे वाच्यलिङ्गमविक्रमे                   | २७६२ |
| द्वौ विशौ वैद्यमनुजौ द्वौ चराभिमरौ स्पशौ                  | २७६३ |

|  |      |
|--|------|
| द्वौ रागी पुञ्जमेपाद्यौ द्वौ वंशौ कुलमस्करौ          | २७६४ |
| रहःप्रकाशौ वीकाशौ निर्वेशो भृतिभोगयोः                | २७६५ |
| कृतान्ते पुंसि कीनाशः क्षुद्रकर्पकयोस्त्रिषु         | २७६६ |
| पदे लक्ष्ये निमित्तेऽपदेशः स्यात्कुशमप्सु च          | २७६७ |
| दशावस्थानेकविधाप्याशा तृष्णापि चायता                 | २७६८ |
| वशा स्त्री करिणी च स्याद्दृग्ज्ञाने ज्ञातरि त्रिषु   | २७६९ |
| स्यात्कर्कशः साहसिकः कठोरामसृणावपि                   | २७७० |
| प्रकाशोऽतिप्रसिद्धेऽपि शिगावज्ञे च वालिञ्ज           | २७७१ |
| कोशोऽस्त्री कुक्षले खड्गपिधानेऽयौघदिव्ययो            | २७७२ |
| सुरमत्स्यावनिमिषौ पुरुषावात्ममानवौ                   | २७७३ |
| काकमत्स्यात्खगौ ध्वाङ्गौ कक्षौ तु तृणवीरुधौ          | २७७४ |
| अभीषुः प्रग्रहे रश्मौ प्रैषः प्रेषणमर्दने            | २७७५ |
| पक्षः सहायेऽप्युष्णीषः शिरोवेष्टकिरीटयोः             | २७७६ |
| शुक्ले मूषिके श्रेष्ठे सुकृते वृषभे वृष              | २७७७ |
| घृतेऽक्षे शारिफलकेऽप्याकर्षोऽधाक्षमिन्द्रिये         | २७७८ |
| ना घृताङ्गे कर्पचक्रे व्यवहारे कलिद्रुमे             | २७७९ |
| कर्पूवार्ता करीपाग्निः कर्पू कुल्याभिधायिनी          | २७८० |
| पुभावे तत्क्रियाया च पौरुषं विषमप्सु च               | २७८१ |
| उपादानेऽप्यामिषं स्यादपराधेऽपि किल्विषम्             | २७८२ |
| स्याद्दृष्टौ लोकधात्यगे वत्सरे वर्षमस्त्रियाम्       | २७८३ |
| प्रेक्षा नृत्येक्षणं प्रज्ञा भिक्षा सेवार्थना धृतिः  | २७८४ |
| त्विह्-शोभापि त्रिषु परे न्यक्षं कात्स्न्यनिकृष्टयोः | २७८५ |

|   |      |
|---|------|
| वृथा निरर्थकाविध्योर्नानाऽनेकोभयार्थयोः       | २८३० |
| नु पृच्छायां विकल्पे च पश्चात्सादृश्ययोरनु    | २८३१ |
| प्रश्नावधारणानुज्ञानुनयामन्त्रणे ननु          | २८३२ |
| गर्हासमुच्चयप्रश्नशङ्कासंभावनास्वपि           | २८३३ |
| उपमायां विकल्पे वा सामि त्वर्धे जुगुप्सिते    | २८३४ |
| अमा सह समीपे च कं वारिणि च मूर्धनि            | २८३५ |
| इवेत्यमर्थयोरेवं नूनं तर्केऽर्थनिश्चये        | २८३६ |
| तूष्णीमर्थं सुखे जोषं किं पृच्छायां जुगुप्सने | २८३७ |
| नाम प्रकाश्यसंभाव्यक्रोधोपगमकुत्सने           | २८३८ |
| अलं भूषणपर्याप्तिशक्तिवारणवाचकम्              | २८३९ |
| हुं वितर्के परिप्रश्ने समयान्तिकमध्ययोः       | २८४० |
| पुनरप्रथमे भेदे निर्निश्चयनिषेधयोः            | २८४१ |
| स्यात्प्रबन्धे चिरातीते निकटागामिके पुरा      | २८४२ |
| ऊर्यूरी चोररी च विस्तारेऽङ्गीकृतौ त्रयम्      | २८४३ |
| स्वर्गे परे च लोके स्वर्वातीसंभाव्ययोः किल    | २८४४ |
| निषेधवाक्यालंकारजिज्ञासानुनये खलु             | २८४५ |
| समीपोभयतः शीघ्रसाकल्याभिमुखेऽभितः             | २८४६ |
| नामप्रकाशयोः प्रादुर्भित्योऽन्योन्यं रहस्यपि  | २८४७ |
| तिरोऽन्तर्धौ तिर्यगर्थे हा विपादशुगर्तिषु     | २८४८ |
| अहहेत्यद्भुते खेदे हि हेतावधारणे              | २८४९ |

६. अव्ययवर्गः ।

|  |      |
|--|------|
| चिराय चिररात्राय चिरस्याद्याश्चिरार्थकाः | २८५० |
|--|------|

|  |      |
|--|------|
| मुहुः पुनः पुनः शश्वदभीक्ष्णमसकृत्समाः           | २८५१ |
| स्नाग्नादित्यज्ञसाहाय द्राङ् मङ्क्षु सपदि द्रुते | २८५२ |
| बलवत्सुष्टु किमुत स्वत्यतीव च निर्भरे            | २८५३ |
| पृथग्विनान्तरेणर्ते हिरुङ् नाना च वर्जने         | २८५४ |
| यत्तद्यतस्ततो हेतावसाकल्ये तु चिच्चन             | २८५५ |
| किदाचिज्जातु सार्धं तु साकं सत्रा सम सह          | २८५६ |
| आनुकूल्यार्थकं प्राध्वं व्यर्थके तु वृथा मुधा    | २८५७ |
| आहो उताहो किमुत विकल्पे कि किमूत च               | २८५८ |
| तु हि च स्म ह वै पादपूरणे पूजने स्मृति           | २८५९ |
| दिवाहीत्यथ दोषा च नक्तं च रजनाविति               | २८६० |
| तिर्यगर्थे साचि तिरोऽप्यथ सवोधनार्थका.           | २८६१ |
| स्युः प्याद् पाडङ्ग हे है भो समया निकषा हिरुक्   | २८६२ |
| अतर्किते तु सहसा स्यात्पुरः पुरतोऽग्रतः          | २८६३ |
| स्वाहा देवहविर्दाने श्रौपद् वाँपद् वपद् स्वधा    | २८६४ |
| किचिदीपन्मनागत्पे प्रेत्यामुत्र भवान्तरे         | २८६५ |
| व वा यथा तयेवैवं साम्येऽहो ही च विस्मये          | २८६६ |
| माने तु तूष्णीं तूष्णीका सदाः सपदि तत्क्षणे      | २८६७ |
| दिष्ट्या समुपजोषं चेत्यानन्देऽथान्तरेऽन्तरा      | २८६८ |
| अन्तरेण च मध्ये स्युः प्रसह्य तु हठार्थकम्       | २८६९ |
| युक्ते द्वे साप्रत स्थानेऽभीक्ष्णं शश्वदनारते    | २८७० |
| अभावे नह्य नो नापि मास्म माल च वारणे             | २८७१ |
| पक्षान्तरे चेद्यदि च तत्त्वे त्वङ्गाज्ञसा द्वयम् | २८७२ |

|  |      |
|--|------|
| प्राकाश्ये प्रादुराविः स्यादोमेवं परमं मते       | २८७३ |
| समन्ततस्तु परितः सर्वतो विष्वगित्यपि             | २८७४ |
| अकामानुमतौ काममसूयोपगमेऽस्तु च                   | २८७५ |
| ननु च स्याद्विरोधोक्तौ कञ्चित्कामप्रवेदने        | २८७६ |
| निःपमं दुःपमं गर्ह्ये यथास्वं तु यथायथम्         | २८७७ |
| मृपा मिथ्या च वितथे यथार्थं तु यथातथम्           | २८७८ |
| स्युरेवं तु पुनर्वै वेत्यवधारणवाचकाः             | २८७९ |
| प्रागतीतार्थकं नूनमवश्यं निश्चये द्वयम्          | २८८० |
| संवद्वर्पेऽवरे त्वर्वागमेवं स्वयमात्मना          | २८८१ |
| अल्पे नीचैर्महत्युच्चैः प्रायो भूभ्यद्रुते शनैः  | २८८२ |
| सना नित्ये वह्निर्वाह्ये स्मातीतेऽस्तमदर्शने     | २८८३ |
| अस्ति सत्त्वे रूपोक्तावु ङं प्रश्नेऽनुनये त्वयि  | २८८४ |
| हुं तर्के स्यादुपा रात्रेरवसाने नमो नतौ          | २८८५ |
| पुनरर्थेऽङ्ग निन्दायां दुष्टु सुष्टु प्रशंसने    | २८८६ |
| सायं साये प्रागे प्रातः प्रभाते निकषान्तिके      | २८८७ |
| परुत्परार्यैपमोऽब्दे पूर्वं पूर्वतरे यति         | २८८८ |
| अद्यान्नाह्यथ पूर्वेऽह्नीत्यादौ पूर्वोत्तरापरात् | २८८९ |
| तथा धरान्यान्यतरेतरात्पूर्वेद्युरादयः            | २८९० |
| उभयद्युश्चोभयेद्युः परे त्वहि परेद्यवि           | २८९१ |
| ह्यो गते नागतेऽहि श्वः परश्वस्तु परेऽहनि         | २८९२ |
| तदा तदानीं युगपदेकदा सर्वदा सदा                  | २८९३ |
| एतहि संप्रतीदानीमधुना सांप्रतं तथा               | २८९४ |

|  |      |
|--|------|
| दिग्देशकाले पूर्वादौ प्रागुदक्प्रत्यगादयः          | २८९५ |
| ७ लिङ्गादिनग्रहर्ग ।                               |      |
| सलिङ्गशास्त्रैः सन्नादिकृत्तद्धितसमासजैः           | २८९६ |
| अनुक्तैः संग्रहे लिङ्गं संकीर्णवदिहोत्रयेत्        | २८९७ |
| लिङ्गशेषविधिव्यापी विशेषैर्यद्यबाधितः              | २८९८ |
| स्त्रियामीदूद्विरामैकाक्षसयोनिप्राणिनाम च          | २८९९ |
| नाम विद्युन्निशावलीवीणादिग्भूनदीहियाम्             | २९०० |
| अदन्तैर्द्विगुरेकार्थो न स पात्रयुगादिभि           | २९०१ |
| तल्वृन्दे ये निकट्यत्रा वैरमैथुनिकादिवुन्          | २९०२ |
| स्त्रीभावादावनिक्तिष्णवुल्णञ्णवुक्क्यव्युजिञ्जिशाः | २९०३ |
| उणादिषु निरूरीश्च डयावूडन्तं चल स्थिरम्            | २९०४ |
| तत्कीडायां प्रहरणं चेन्मौष्टा पालवाण दिक्          | २९०५ |
| घञो ज. सा क्रियास्या चेद्वाण्डपाता हि फाल्गुनी     | २९०६ |
| इयैतपाता च मृगया तैलंपाता स्वधेति दिक्             | २९०७ |
| स्त्री स्यात्काचिन्मृणाल्यादिर्विवक्षापचये यदि     | २९०८ |
| लङ्का शेफालिका टीका धातकी पञ्जिकाढकी               | २९०९ |
| सिध्रका सारिका हिक्का प्राचिकोल्का पिपीलिका        | २९१० |
| तिन्दुकी कणिका भङ्गिः सुरङ्गासूचिमाढ्य             | २९११ |
| पिच्छावितण्डाकाकिण्यश्चूर्णिः शाणी द्रुणी दरत्     | २९१२ |
| सातिः कन्था तथाऽमन्दी नाभी राजसभापि च              | २९१३ |
| झलरी चर्चरी पारी होरा नद्वा च सिधमला               | २९१४ |
| लाक्षा लिक्षा च गण्डूपा गृध्रसी चमसी ममी           | २९१५ |

|  |      |
|--|------|
| पुंस्त्वे सभेदानुचराः सपर्यायाः सुरामुराः          | २९१६ |
| स्वर्गयागाद्रिमेधाब्धिद्रुकालासिशरारयः             | २९१७ |
| करगण्डोष्ठदोर्दन्तकण्ठकेशनखस्तनाः                  | २९१८ |
| अह्नाहान्ताः क्ष्वेडभेदा रात्रान्ताः प्रागसंख्यकाः | २९१९ |
| श्रीवेष्टाद्याश्च निर्यास्ता असन्नन्ता अवाधिताः    | २९२० |
| कशेरुजतुवस्तूनि हित्वा तुरुविरामकाः                | २९२१ |
| कषणभमरोपान्ता यद्यदन्ता अमी अथ                     | २९२२ |
| पथनयसटोपान्ता गोत्राख्याश्चरणाह्वयाः               | २९२३ |
| नाम्यकर्तरि भावे च घञजन्तङ्णघाथुचः                 | २९२४ |
| ल्युः कर्तरीमनिजभावे को घोः किः प्रादितोऽन्यतः     | २९२५ |
| द्वन्द्वेऽश्ववडवावश्ववडवा न समाहृते                | २९२६ |
| कान्तः सूर्येन्दुपर्यायपूर्वोऽयः पूर्वकोऽपि च      | २९२७ |
| वटकश्चानुवाकश्च रलकश्च कुडङ्गकः                    | २९२८ |
| पुहो न्यूहः समुद्रश्च चिटपट्टधटाः खटाः             | २९२९ |
| कोट्टारघट्टहट्टाश्च पिण्डगोण्डपिचण्डवत्            | २९३० |
| गडुः करण्डो लगुडो वरण्डश्च किणो घुणः               | २९३१ |
| द्वितीसीमन्तहरितोरोमन्थोद्गीथबुद्बुदाः             | २९३२ |
| कासमर्दोऽर्बुदः कुन्दः फेनस्तूपौ सयूपकौ            | २९३३ |
| आतपः क्षत्रिये नाभिः कुणपक्षुरकेदराः               | २९३४ |
| पूरक्षुरप्रचुक्राश्च गोलहिङ्गुलपुद्गलाः            | २९३५ |
| वेतालभलमल्लाश्च पुरोडाशोऽपि पट्टिशः                | २९३६ |
| कुल्माषो रभसश्चैव सकटाहः पतद्गहः                   | २९३७ |

|   |      |
|---|------|
| द्विहीनेऽन्यच्च खारण्यपर्णश्वभ्रहिमोदकम्          | २९३८ |
| शीतोष्णमांसरुधिरमुखाक्षिद्रविणं बलम्              | २९३९ |
| फलहेमशुक्ललोहसुखदुःखशुभाशुभम्                     | २९४० |
| जलपुष्पाणि लवणं व्यञ्जनान्यनुलेपनम्               | २९४१ |
| कोट्याः शतादिसंख्यान्या वा लक्षा नियुतं च तत्     | २९४२ |
| लघ्वृक्कमसिसुसन्नन्तं यदनान्तमकर्तरि              | २९४३ |
| त्रान्तं सलोपधं शिष्टं रात्रं प्राक्सख्ययान्वितम् | २९४४ |
| पात्राद्यदन्तैरेकार्यो द्विगुर्लक्ष्यानुसारतः     | २९४५ |
| द्वन्द्वैकत्वाव्ययीभावौ पथः संख्याव्ययात्परः      | २९४६ |
| पष्ठयाइछाया बहूना चेद्विच्छायं संहतौ सभा          | २९४७ |
| शालार्यापि परा राजामनुप्यार्थादिराजकात्           | २९४८ |
| दासीसभं नृपसभं रक्षःसभमिमा दिशः                   | २९४९ |
| उपज्ञोपक्रमान्तश्च तदादित्वप्रकाशने               | २९५० |
| कोपज्ञकोपक्रमादि कन्थोशीनरनामसु                   | २९५१ |
| भावे नणकचिद्भ्योऽन्ये समूहे भावकर्मणोः            | २९५२ |
| अदन्तप्रत्ययाः पुण्यसुदिनाभ्या त्वहं परं          | २९५३ |
| क्रियाव्ययाना भेदकान्येकत्वेऽप्युक्ततोदके         | २९५४ |
| चोचं पिच्छं गृहस्थूण तिरीट मर्म योजनम्            | २९५५ |
| राजसूयं वाजपेयं गद्यगद्ये कृतौ कवे.               | २९५६ |
| माणिक्यभाष्यमिन्दुरचीरचीवरपिञ्जरम्                | २९५७ |
| लोकायत हरिताल विदलस्थालवाहिकम्                    | २९५८ |
| पुनर्पुंसकयोः त्रेयोऽर्धचर्चपिण्याककण्टकाः        | २९५९ |



|   |      |
|---|------|
| मोदकस्तण्डकष्टङ्कः शाटकः कर्पटोर्वुदः               | २९६० |
| पातकोद्योगचरकतमालामलका नडः                          | २९६१ |
| कुण्डं मुण्डं शीधु वुस्तं क्ष्वेडितं क्षेमकुट्टिमम् | २९६२ |
| संगमं शतमानार्मशम्बलान्ययताण्डवम्                   | २९६३ |
| कवियं कन्दकार्पासं पारावारं युगंधरम्                | २९६४ |
| यूपं प्रग्रीवपात्रीवे यूपं चमसचिक्कसौ               | २९६५ |
| अर्धर्चादौ धृतादीनां पुंस्त्वाद्यं वैदिकं ध्रुवम्   | २९६६ |
| तन्नोक्तमिह लोकेऽपि तच्चेदस्त्यस्तु शेषवत्          | २९६७ |
| स्त्रीपुंसयोरपत्यान्ता द्विचतुःपट्पदोरगाः           | २९६८ |
| जातिभेदाः पुमाख्याश्च स्त्रीयोगैः सह मलकः           | २९६९ |
| ऊर्मिर्वराटकः स्वातिर्वर्णको झाटलिर्मनुः            | २९७० |
| मूषा सृपाटी कर्कन्धूर्यष्टिः शाटी कटीकुटी           | २९७१ |
| स्त्रीनपुंसकयोर्भावक्रिययोः व्यञ्कचिच्च वुञ्        | २९७२ |
| औचित्यमौचिती मैत्री मैत्र्यं वुष्प्रागुदाहृतः       | २९७३ |
| पष्ठयन्तप्राक्पदाः सेनाछायाशालासुरानिशाः            | २९७४ |
| स्याद्वा नृसेनं श्वनिशं गोशालमितरे च दिक्           | २९७५ |
| आवन्नन्तोत्तरपदो द्विगुश्चापुंसि नश्च लुप्          | २९७६ |
| त्रिखट्वं च त्रिखट्वा च त्रितक्षं च त्रितक्ष्यपि    | २९७७ |
| त्रिषु पात्री पुटी वाटी पेटी कुवलदाडिमौ             | २९७८ |
| परं लिङ्गं स्वप्रधाने द्वन्द्वे तत्पुरुषेऽपि तत्    | २९७९ |
| अर्थान्ताः प्राद्यलंप्राप्तापन्नपूर्वाः परोपगाः     | २९८० |
| तद्धितार्थो द्विगुः संख्यासर्वनामतदन्तकाः           | २९८१ |

|   |      |
|---|------|
| बहुव्रीहिरदि इनाम्नामुन्नेयं तदुदाहृतम्     | २९८० |
| गुणद्रव्यक्रियायोगोपाधिभिः परगामिनः         | २९८३ |
| कृतः कर्तर्यसंज्ञाया कृत्या कर्तरि कर्मणि   | २९८४ |
| अणाद्यन्तास्तेन रक्ताद्यर्थे नानार्थभेदकाः  | २९८५ |
| पदसंज्ञिकास्त्रिषु समा युष्मदस्मत्तिङव्ययम् | २९८६ |
| परं विरोधे शेषं तु ज्ञेयं शिष्टप्रयोगतः     | २९८७ |

८ काण्डममाप्ति ।

|  |      |
|--|------|
| इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने        | २९८८ |
| सामान्यकाण्डस्तृतीयः साङ्ग एव समर्थितः | २९८९ |

समाप्तोऽय ग्रन्थ ॥





# ॥ श्रीः ॥

## अथ मूलस्थशब्दानामकारादिक्रमेण शब्दानुक्रमणिका ।



| शब्दः       | पङ्क्तिः | शब्दः     | पङ्क्तिः | शब्दः      | पङ्क्तिः | शब्दः     | पङ्क्तिः |
|-------------|----------|-----------|----------|------------|----------|-----------|----------|
| अ           |          | अक्षरबुध् | १३९८     | अक्षायी    | १३९५     | अक्षेपरः  | १६११     |
| अक्ष        | २८७१     | अक्षरचण   | १३९८     | अक्षि      | १०५      | अक्षय     | २१४०     |
| अक्ष        | १८८५     | अक्षवती   | २०१८     | अक्षिपण    | ११४      | अक्ष      | २६१      |
| अक्षु       | २१०      | अक्षान्ति | ४१०      | अक्षिविर   | १३४६     | "         | २३८९     |
| अक्षुष      | ११०४     | अक्षि     | १३५९     | अक्षिगवा   | ८९७      | अक्षमपण   | १३४७     |
| अक्षुमती    | ८७९      | "         | २९३२     | अक्षिगू    | ७८       | अक्ष्या   | १८३०     |
| अक्षुमल्ल   | ८७४      | अक्षिगुट  | १५४३     | अक्षिम य   | ७८०      | अक्षु     | १७८      |
| अक्ष        | १२३०     | अक्षिगत   | २११३     | अक्षिगुती  | ७३३      | "         | २३४३     |
| अक्षल       | ११६१     | अक्षीय    | ७१०      | अक्षिगिगा  | ८८५      | अक्षुर    | ६५७      |
| अक्षति      | १३१३     | "         | १७७९     | "          | २२१      | अक्षुय    | १५५०     |
| अक्षद       | २६१      | अक्षोट    | ७०६      | "          | १३२१     | अक्षो     | ७०६      |
| अक्षरणि     | २३२७     | अक्षोहिणी | १६३०     | अक्षुगुपान | २३३      | अक्षय     | १०२      |
| अक्षुगार    | ४६८      | अक्षुगुट  | २१५५     | अक्ष       | २१४०     | अक्ष      | १३११     |
| अक्षुष्णमन् | २११६     | अक्षग     | ५२१      | "          | २७०२     | "         | २८६२     |
| अक्ष        | ७६५      | अक्षि     | २१५४     | अक्षग      | ११५९     | "         | २८८६     |
| "           | १७९३     | अक्ष      | २३७७     | अक्षगमन्   | १३६०     | अक्ष      | १२८८     |
| "           | १८७८     | अक्षद     | ११७४     | अक्षग पर   | १६११     | अक्षग     | ६१८      |
| "           | २०१५     | अक्षद्वार | ११८७     | अक्षगण     | २८२७     | अक्ष्या   | १५६      |
| "           | २७७८     | अक्षय     | ६५९      | "          | २८६३     | "         | १०७९     |
| अक्षग       | १८७०     | अक्षरय    | १८३      | अक्षगान    | १३०२     | अक्षविधन  | २९३      |
| अक्षदयद     | १३७८     | अक्षर     | ४९७      | अक्षि      | ११५९     | अक्षगुपार | १३१५     |
| अक्षदरिग    | २०१६     | अक्षर     | ६०३      | "          | २१४०     | अक्षहार   | ११३      |
| अक्षदू      | २०१६     | अक्षर     | १३२७     | अक्षीय     | २१४०     | अक्षार    | १०६६     |
| अक्षर       | २६९२     | अक्षरिग   | ७७३      | अक्षीय     | ११३०     | अक्षार    | १२७      |

| शब्दः         | पंक्तिः | शब्दः       | पंक्तिः | शब्दः         | पंक्तिः | शब्दः         | पंक्तिः |
|---------------|---------|-------------|---------|---------------|---------|---------------|---------|
| अक्षरधानिका   | १०६५    | अजाजी ...   | १०७७    | अणीयस् ...    | २१४९    | अतिशय ...     | १३१     |
| अक्षरवहुरी    | ७४५     | अजाजीव ...  | २९५०    | अणु ...       | १०४७    | " ...         | २२७१    |
| अक्षरवह्वी    | ८२८     | अजित ...    | २४५८    | " ...         | २१४८    | अतिशोभन       | २१४१    |
| अक्षरशकटो     | १०६५    | अजिन ...    | १४४५    | अण्ट ...      | १०६२    | अतिसर्जन...   | २३०५    |
| अक्षीकार ...  | २८७     | अजिनपथा     | १०३९    | अण्डकोश...    | १२२६    | अतिमारकिन्    | ११०२    |
| अक्षीकृत ...  | २२४१    | अजिनयोनि    | १००६    | अण्डज ...     | ५००     | अतिसौरभ       | ७१५     |
| अक्षुलिमुद्रा | १२८९    | अजिर ...    | ६१८     | " ...         | १०५३    | अतीन्द्रिय... | २१८२    |
| अक्षुली ...   | १२३७    | " ...       | २६९८    | " ...         | २१२६    | अतीव ...      | २८५३    |
| अक्षुलीयक     | १२८८    | अजिह्व ...  | २१६८    | अतट ...       | ६४१     | अत्तिका ...   | ३९१     |
| अक्षुष्ट ...  | १०३७    | अजिह्वग ... | १६४०    | अतलरुपर्श...  | ४९७     | अत्यन्तकोपन   | २०८८    |
| अक्षि ...     | १२१६    | अज्जुया ... | ३८४     | अतसी ...      | १०४६    | अत्यन्तीन...  | १६२०    |
| अक्षिनामक     | ६७०     | अज्जटा ...  | ९०२     | अति ...       | २८१८    | अत्यय ...     | १६९९    |
| अक्षिवहिका    | ८३३     | अज ...      | २१०१    | " ...         | २८५३    | " ...         | २६३५    |
| अचण्डी ...    | १८४७    | " ...       | २१२०    | अतिक्रम ...   | २३१६    | अत्यर्थ ...   | १३२     |
| अचल ...       | ६३५     | अज्ञान ...  | २९०     | अतिचरा . .    | ९४०     | अत्याहित ...  | २४८९    |
| अचला ...      | ५६      | अधित ...    | २२२०    | अतिच्छत्र ... | ९८२     | अग्नि ...     | १९८     |
| अच्युत ...    | ३८      | अक्षन ...   | १५१     | अतिच्छत्रा... | ९५२     | अथ ...        | २८२९    |
| अच्युताग्रज   | ४५      | अक्षनकेरी   | ९०८     | अतिजव ...     | १६१३    | अथो ...       | २८२९    |
| अच्छ ...      | ४९५     | अक्षनावती   | १५४     | अतिथि ...     | १४२०    | अदभ्र ...     | २१५०    |
| अच्छभद्र ...  | ९९५     | अक्षलि ...  | १२४४    | अतिनु ...     | ४९४     | अदर्शन . .    | २२९४    |
| अज ...        | १८५८    | " ...       | १४३०    | अतिपथिन्      | ५८८     | अदितिनन्दन    | १५      |
| " ...         | २३९५    | अक्षसा ...  | २८५२    | अतिपात ...    | १४२६    | अद्वर ...     | ११९६    |
| अजगन्धिका     | ९२७     | " ...       | २८७२    | " ...         | २३१६    | अदृष्ट ...    | १५२७    |
| अजगर ...      | ४४७     | अटनी ...    | १६३६    | अतिमात्र ...  | १३२     | अदृष्टि ...   | ४३६     |
| अजगव ...      | ६९      | अटरूप ...   | ८५५     | अतिमुक्त ...  | ७९२     | अद्धा ...     | २८७२    |
| अजन्य ...     | १६८५    | अटवी ...    | ६५०     | अतिमुक्तक     | ७०१     | अद्भुत ...    | ३९५     |
| अजमोदा...     | ९३८     | अटा ...     | १४२३    | अतिरिक्त ...  | २१७५    | " ...         | ४००     |
| अजगन्धी ...   | ८८७     | अट्ट ...    | ६१६     | अतिवक्तृ ...  | २०९५    | अद्भर ...     | २०६५    |
| अजय ...       | १३१     | अट्या ...   | १४२३    | अतिवाद ...    | ३३८     | अद्य ...      | २८८९    |
| अजरा ...      | ८२१     | अणक . .     | २१३३    | अतिविषा . .   | ८४७     | अद्रि ...     | ६३५     |
| अजा ...       | १८५८    | अणि ...     | १५८०    | अनिघ्न ...    | १३२     | " ...         | २६६२    |
| अजा ...       | २३९५    | अणिमन् ...  | ७२      | अतिशक्तिता    | १६७२    | " ...         | २९१७    |

| शब्दः      | पङ्क्तिः | शब्दः    | पङ्क्तिः | शब्दः     | पङ्क्तिः | शब्दः    | पङ्क्तिः |
|------------|----------|----------|----------|-----------|----------|----------|----------|
| अन्यवादिन् | २७       | अध्यापन  | १३६६     | अनातप     | २६५०     | अनुनीक   | १४८५     |
| अधम        | २१३२     | अध्याहार | २८२      | अनादर     | ४०६      | अनुनयण   | २०१५     |
|            | २६२४     | अध्यात्म | १०८७     | अनामय     | ११७३     | अनुनाय   | ४१२      |
| अधमर्ण     | १७१६     | अध्यापणा | १७१७     | अनामिका   | १२१८     | अनुत्तम  | २१३८     |
| अधर        | १७५३     | अध्याग   | १७०१     | अनायासमृत | ३२१३     | अनुत्तर  | २७१६     |
|            | २७१४     | अध्यामी  | १२०१     | अनारत     | १३०      | अनुपद    | २१८१     |
| अधिकार्य   | २०४७     | अध्यय    | ५६६      | अनाले     | २४६२     | अनुपदीमा | १९०      |
| अधिकार     | १५९४     | अध्यय    | १५०१     | अनायति    | २३४      | अनुपमा   | १५३      |
| अधिकार     | १५२९     | अध्यय    | १३७९     | अनाहत     | १२९७     | अनुपम    | १६१०     |
| अधिकृत     | १४८०     | अध्यय    | १३८६     | अनिमित्त  | २४७३     | अनुपम    | २५३१     |
| अभिहित     | २१०८     | अध्यय    | ३५२      | अनिन्द    | ५३       | अनुपम    | १३१८     |
| अभिव्यक्त  | ६४७      | अध्यय    | ७०       | अनिन्द    | १०       | अनुपम    | २३०४     |
| अभिप       | २०४६     | अध्यय    | ४९५      | अनिन्द    | १२३      | अनुपम    | ४०४      |
| अभिपू      | २०४६     | अध्यय    | १८२६     | अनिन्द    | १३०      | अनुपम    | २३०      |
| अभिरोहिणी  | ६२८      | अध्यय    | १४४      | अनीक      | १६२४     | अनुपम    | ३३०      |
| अभिनातन    | १३४३     | अध्यय    | ४४६      | अनीक      | १४८०     | अनुपम    | १४९२     |
| अभिरिज     | १०८७     | अध्यय    | २४०७     | अनीक      | १६२३     | अनुपम    | ३४२      |
| अभिभयनी    | १७६४     | अध्यय    | ५६       | अनीक      | १६३०     | अनुपम    | २९४१     |
| अभिष्टान   | २०८६     | अध्यय    | ८३२      | अनीक      | २८३१     | अनुपम    | १४९३     |
| अभीन       | २०५०     | अध्यय    | ८७२      | अनीक      | २०७१     | अनुपम    | २०२८     |
| अभीर       | २०७७     | अध्यय    | २२१      | अनीक      | ३०८      | अनुपम    | २६३१     |
| अभीधर      | १४७१     | अध्यय    | २६५      | अनीक      | १५८७     | अनुपम    | १९६५     |
| अभुना      | २८९४     | अध्यय    | ५१       | अनीक      | १४३७     | अनुपम    | २३८४     |
| अभू        | २०७६     | अध्यय    | २१८३     | अनीक      | १६२०     | अनुपम    | २३६०     |
| अभ्यास     | ११०      | अध्यय    | २६१४     | अनीक      | २३८४     | अनुपम    | १३७२     |
| अभ्यास     | ४३       | अध्यय    | १०८      | अनीक      | १४३५     | अनुपम    | २१५५     |
| अभ्यास     | ४३०      | अध्यय    | २१३०     | अनीक      | २९८      | अनुपम    | ५७७      |
| अभ्यास     | २०९१     | अध्यय    | २१३०     | अनीक      | २१८१     | अनुपम    | २०८      |
| अभ्यास     | १४८०     | अध्यय    | २१३०     | अनीक      | २०७५     | अनुपम    | २११७     |
| अभ्यास     | २३८१     | अध्यय    | १५७७     | अनीक      | १६१०     | अनुपम    | १०११     |
| अभ्यास     | ४३०      | अध्यय    | १०८९     | अनीक      | ११६०     | अनुपम    | १५१५     |

| शब्दः              | पंक्तिः | शब्दः          | पंक्तिः | शब्दः             | पंक्तिः | शब्दः          | पंक्तिः |
|--------------------|---------|----------------|---------|-------------------|---------|----------------|---------|
| अनेहस् ...         | २१६     | अन्त्र ...     | १२०५    | अपन्नपिण्डु ...   | २०८०    | अपाङ्ग ...     | १२६१    |
| अनोकह ...          | ६५९     | अन्तुक ...     | १५५०    | अपथ ...           | ५९०     | ” ...          | २३७७    |
| अन्त ...           | १७००    | अन्व ...       | ११९६    | अपथिन् ...        | ५९०     | अपान ...       | १२६     |
| ” ...              | २१८६    | ” ...          | २५४०    | अपदान्तर ...      | २१६०    | ” ...          | १२२०    |
| अन्त पुर ...       | ६१५     | अन्वकरिषु ...  | ६७      | अपदिश ...         | १५५     | अपामार्ग ...   | ८२५     |
| अन्तक ...          | ११७     | अन्वकार ...    | ४४३     | अपदेश ...         | ४२७     | अपावृत्त ...   | २०५५    |
| अन्तर ...          | २७०९    | अन्वतमस् ...   | ४४४     | ” ...             | २७६७    | अपासन ...      | १६९४    |
| अन्तरा ...         | २८६८    | अन्वस् ...     | १८०३    | अपध्वस्त ...      | २१०३    | अपि ...        | २८३३    |
| अन्तरामवसत्त्व ... | २६००    | अन्वु ...      | ५१९     | अपभ्रंश ...       | ३१४     | अपिधान ...     | १७०     |
| अन्तराय ...        | २२८८    | अन्न ...       | १८०३    | अपयान ...         | १६९०    | अपिनद्ध ...    | १५९७    |
| अन्तराल ...        | १५६     | ” ...          | २२४६    | अपरम्पर ...       | २२५२    | अपूप ...       | १८०२    |
| अन्तरीक्ष ...      | १४४     | अन्य ...       | २१८९    | अपरानिता ...      | ८५६     | अपौगण्ड ...    | ११६५    |
| अन्तरीप ...        | ४८३     | अन्यतर ...     | २१८९    | ” ...             | ९४७     | अप्यति ...     | १२१     |
| अन्नरीय ...        | १३०७    | अन्वक्ष ...    | २१८१    | अपराद्धपृपक्त ... | १६०४    | अप्यिक्त ...   | ११२     |
| अन्तरे ...         | २८६८    | अन्वक्तु ...   | २१८१    | अपराध ...         | १५२०    | अप्रकाण्ड ...  | ६६६     |
| अन्तरेण ...        | २८५४    | अन्वय ...      | १३५४    | अपराह ...         | २२१     | अप्रगुण ...    | २१६८    |
| ” ...              | २८६८    | अन्ववाय ...    | १३५५    | अपर्णा ...        | ७४      | अप्रत्यक्ष ... | २१८२    |
| अन्तर्गत ...       | २१९७    | अन्वाहार्य ... | १४१५    | अपलाप ...         | ३४४     | अप्रधान ...    | २१४४    |
| अन्तर्धा ...       | १६९     | अन्विष्ट ...   | २२३४    | अपवर्ग ...        | २९०     | अप्रहत ...     | ५६७     |
| अन्तर्वि ...       | १६९     | अन्वेपणा ...   | १४१६    | अपवर्जन ...       | १४१२    | अप्राप्य ...   | २१४४    |
| अन्तर्द्वार ...    | ६२०     | अन्वेपित ...   | २२३४    | अपवाद ...         | ३६६     | अप्सरस् ...    | २१      |
| अन्तर्मनस् ...     | २०४०    | अन् ( आप ) ... | ४७२     | ” ...             | २५१२    | ” ...          | १०३     |
| अन्तर्विनी ...     | १११७    | अपक्रम ...     | १६९०    | अपवारण ...        | १६९     | अफल ...        | ६६२     |
| अन्तर्वाणि ...     | २०३७    | अपधन ...       | १२१३    | अपटु ...          | २१९२    | अनद ...        | ३५१     |
| अन्तर्वायु ...     | १४८३    | अपचय ...       | २२८१    | अपमद ...          | १९६१    | अवद्धमुख ...   | २०९७    |
| अन्तर्वायु ...     | १९४८    | अपचायिन ...    | २२२७    | अपसर्प ...        | १४९३    | अवला ...       | १०७७    |
| अन्तिका ...        | २१५९    | अपचित ...      | २२२७    | अपसव्य ...        | २१९२    | अवय ...        | २१९१    |
| अन्तिका ...        | २१६१    | अपचिति ...     | १४२१    | ” ...             | २१९३    | अवज ...        | १७३     |
| अन्तिका ...        | १३६४    | ” ...          | २४६९    | अपस्कर ...        | १५७८    | ” ...          | २३९९    |
| अन्तिका ...        | १३७४    | अपटु ...       | ११८९    | अपस्नात ...       | २७६३    | अञ्जयोनि ...   | ३३      |
| ” ...              | १९६८    | अपत्य ...      | ११२९    | अपहार ...         | २२८१    | अञ्ज ...       | ३५५     |
| अन् य ...          | २१८६    | अपत्रपा ...    | ४०८     | अपापनि ...        | ४७०     | ” ...          | २५११    |

| शब्द      | पङ्क्ति | शब्द        | पङ्क्ति | शब्द        | पङ्क्ति | शब्द     | पङ्क्ति |
|-----------|---------|-------------|---------|-------------|---------|----------|---------|
| अविद्य    | ४६८     | अभिमान      | ४०५     | अनीपद्म     | २२६१    | अधि      | ४९३     |
| अविद्य    | २९१७    |             | २५५५    | अनीपु       | २७७५    | अधिय     | १६०     |
| अविद्यप   | १९६६    | अनियोग      | २२७६    | अनीष्ट      | २१३१    | अभ्र     | १ १५    |
| अव्यभु    | १५३     | अभिरूप      | २५९७    | अयम         | २१५९    | अमय      | १७७१    |
| अव्यभ्रय  | ३८९     | अभिलाष      | २२९७    | अयनर        | १५६     | अमर      | १३      |
| अमय       | ९७७     | अभिन्नाय    | ४१७     | अभ्यति      | ११९०    | अमरावनी  | ८५      |
| अमया      | ७६६     | अभिलाषुष    | २०६९    | अभ्यमित्रीण | १६१७    | अमल्य    | १६      |
| अमापण     | १४२४    | अभिज्ञादक   | २०८०    | अभ्यमित्रीय | १६१७    | अमर्ष    | ४१३     |
| अभिष      | २०७२    | अभिज्ञादन   | १४३४    | अभ्यमिष्य   | १६१७    | अमरण     | २०८८    |
| अभिक्रम   | १६६०    | अभिव्याप्ति | २२६२    | अयन         | २१५९    | अमा      | ७८३५    |
| अभिरूपा   | २६४७    | अभिज्ञाना   | २११०    | अभ्ययकपण    | २७८     | अमाग     | ११६१    |
| अभिप्रा   | २२७६    | अभिज्ञाति   | १४१७    | अभ्ययकपण    | २७८     | अमाला    | १५०२    |
| अभिप्राहण | २२८३    | अभिज्ञाप    | २३२     | अभ्ययकपण    | २७८     | अमावस्या | २३१     |
| अभिज्ञाति | १४९०    | अभिपद्म     | २३६१    | अभ्ययकपण    | २७८     | अमावस्या | २३१     |
| अभिचार    | २२८७    |             | २३८२    | अभ्यागम     | १६७८    | अमावस्या | २३१     |
| अभिजन     | १३५४    | अभिपद       | १४४६    | अभ्यागमिष   | २०८८    | अभिज्ञ   | १४८९    |
|           | २५५७    |             | २०१३    | अभ्यादान    | २३०२    | अमुष     | २८६५    |
| अभिज्ञात  | २४९८    | अभिपणन      | १६५०    | अभ्यादान    | २३०२    | अमुषा    | ९७७     |
| अभिज्ञ    | २०६९    | अभिष्ट      | २२४४    | अभ्यात      | ११००    | अमृत     | ९६      |
| अभितय     | २१५९    | अभिष्टपात   | १६७७    | अभ्यात      | ११००    |          | २८९     |
| "         | २८४६    | अभिष्टर     | १६१०    | अभ्यात      | २१७८    |          | ४७३     |
| अभिधान    | ३२६     | अभिष्टारिका | १०९३    | अभ्यात      | १६८७    |          | १४०९    |
| अभिध्या   | ४०९     | अभिष्टार    | २२८३    | अभ्यात      | १४६२    |          | १७१२    |
| अभिनय     | ३९३     | "           | २६६३    | अभ्यात      | २८७     |          | २४८६    |
| अभिनय     | २१७९    | अभिष्टित    | २२२३    | अभ्यात      | २२७५    | अमृता    | ४६४     |
| अभिनिमुल  | १४६३    | अभिष्ट      | २०७२    | अभ्यात      | १८००    |          | ७६६     |
| अभिनिपाण  | १६५८    | अभिष्ट      | २८५१    | अभ्यात      | १५७     |          | ८१३     |
| अभिनीय    | १५१६    | अभिष्ट      | २८७०    | अभ्यात      | १९०६    | अमृतपत्र | १६      |
| "         | २४९६    | अभिष्टित    | २१३१    | अभ्यात      | ७०८     | अमृत     | १४४     |
| अभियज्ञ   | २५५१    | "           | २२४८    | अभ्यात      | ०२      |          | २६९८    |
| अभिप्राय  | २२९०    | अभिष्ट      | ८४९     | अभ्यात      | १५४     | अभ्यात   | १०६७    |
| अभिप्राय  | २१०४    | अभिष्ट      | ८५०     | अभ्यात      | ०३      | अभ्यात   | १९३२    |



[illegible]

| शब्दः     | पङ्क्तिः | शब्दः    | पङ्क्तिः | शब्दः    | पङ्क्तिः | शब्दः       | पङ्क्तिः |
|-----------|----------|----------|----------|----------|----------|-------------|----------|
| अलङ्कर्तृ | १२०३     | अवगीत    | २४९४     | अवघट     | ११६३     | अवहेल       | ४०७      |
| अलङ्काराण | २०६०     | अवग्रह   | १६६      | अवम      | २१३२     | अवाह        | २०५१     |
| अलङ्कार   | १२०६     | ,        | १५४३     | अवमग     | २२३७     |             | २०९१     |
| अलङ्कृत   | १२०४     | अवग्रहाह | १६६      | अवमर्द   | १६८५     | अवाहपुष्पी  | ९५३      |
| अलङ्किया  | १२०५     | अवधूणित  | २२१२     | अवमानना  | ४०७      | अवाम        | २१६५     |
| अलङ्क     | ८१०      | अवज्ञा   | ४०७      | अवमानित  | २२३७     | अवाधी       | १४७      |
| "         | १२७२     | अवज्ञात  | २२३७     | अवधव     | १२१३     | अवाध्य      | ४५३      |
| अलस       | १२६५     | अवट      | ४४२      | अवर      | १५४८     | अवार        | ४८२      |
| अलान      | १७६६     | अवटीट    | ११६३     | अवरन     | ११६०     | अवासव       | २१०२     |
| अलान्     | ९६       | अवटु     | १२५०     | अवरति    | २३२४     | अधि         | १११४     |
| अलि       | १०१५     | अवतस     | २४९०     | अवरवण    | १५३०     | ,           | २४४९     |
| "         | १०४५     | अवतमस    | ४४४      | अवरीण    | २२११     | अलिप्त      | ७८३      |
| "         | १०४६     | अवतोका   | १८४४     | अवरोध    | ६१६      | अलित        | २३३६     |
| अलिक      | १२५७     | अवदश     | २००९     | अवरोचन   | ६१५      | अविद्या     | २९०      |
| अलिङ्ग    | १०४५     | अवदात    | ३०१      | अवरोह    | ६७१      | अविनीन      | २०७०     |
| अलिप्तर   | १७६८     | "        | २४९५     | अवण      | ४३६      | अविरत       | १३०      |
| अलि'द     | ६१७      | अवदान    | २३५६     | अवसध     | ३०२      | अविश्रम्भित | १२९      |
| अलीक      | २३५९     | अवदाह    | ९७८      | अवलम्ब   | १२३२     |             | २१९०     |
| अल्प      | २१४७     | अवदारण   | १७६१     | अवलगुण   | ८३९      | अलिपट       | ४५३      |
| अल्पतु    | ११७०     | अवदीर्ण  | २२०३     | अववाह    | १५१८     | अवीची       | ४६२      |
| अल्पमारिप | ९२०      | अवध      | २१३३     | अवशङ्क   | २८८०     | अवीरा       | १००६     |
| अल्पमरम   | ५२९      | अवधारण   | १७३१     | अवशपाव   | १८०      | अवेधा       | २१०६     |
| अलिपत्र   | २१३९     | अवधि     | २५३३     | अवष्टब्ध | २५४३     | अभ्यास      | २५८      |
| अल्पीयम्  | २१४९     | अवध्वस्त | २२१२     | अवसर     | २२९८     | अभ्यकराग    | ३०७      |
| अलकर      | ६२९      | अलत      | २२५८     | अवसान    | २३३६     | अभ्यगडा     | ८२१      |
| अवधीगन्   | १४६०     | अलमन     | २१६५     | अवसिग    | १२२०     | अभ्यथा      | ७६६      |
| अलवृष्ट   | २१०३     | अलना     | ११६३     |          | २२४०     |             | ९४०      |
| अवकेगिन्  | ६६२      | अलनाथ    | २३०३     | अलनर     | १२०८     | अभ्यय       | ७९६३     |
| अलनय      | १८६५     | अलनि     | ५६३      |          | २६७०     | अभ्यवहित    | २१६०     |
| अलनगित    | २२३७     | अलनितोम  | १७८५     | अलशधा    | २७३      | अलनाया      | १८१५     |
| अलनग      | २२४०     | अलनय     | ६६१      | अलहार    | ५०९      | अलनादिन     | २०६४     |
| अलनीग     | २२१०     | अलशुभ    | १४०७     | अलहिरभा  | ४२९      | अलनि        | ९४       |

# अमरकोशस्य ।

| शब्दः            | पंक्तिः | शब्दः              | पंक्तिः | शब्दः             | पंक्तिः | शब्दः           | पंक्तिः |
|------------------|---------|--------------------|---------|-------------------|---------|-----------------|---------|
| अग्निः ...       | २२४६    | अमकृत् ...         | २८५१    | अयः ...           | १२६०    | आकारः ...       | ६४६     |
| अग्निश्री ...    | १०९५    | असती ...           | १०९४    | ॥ ...             | २६६४    | आकर्षः ...      | २७७८    |
| अक्षुभः ...      | २९४०    | असतीसुतः ...       | ११२५    | अग्रपः ...        | ११८     | आकर्षः ...      | १२७२    |
| अक्षेपः ...      | २१५४    | असनः ...           | ७३६     | अग्न्यच्छन्दः ... | २०५७    | आकारः ...       | २२७९    |
| अशोकः ...        | ७७७     | अनमीक्ष्यकारिः ... | २०५९    | अस्वप्नः ...      | १६      | ॥ ...           | २६६०    |
| अशोकरोहिणी ...   | ८१९     | असारः ...          | २१३७    | अन्वरः ...        | २०९९    | आकारगुप्तिः ... | ४२९     |
| अश्मगर्भः ...    | १८९०    | असिः ...           | १६४५    | अहंयुः ...        | २१२४    | आकारणाः ...     | ३२७     |
| अश्मजः ...       | १९१४    | ॥ ...              | २९१७    | अहकारः ...        | ४०५     | आकाशः ...       | १४५     |
| अश्मन् ...       | ६४०     | असिक्ता ...        | १११०    | अहंकारवान् ...    | २१२४    | आकीर्णः ...     | २१९५    |
| अश्मन्तः ...     | १७६४    | असितः ...          | ३०४     | अहन् ...          | २१७     | आकुलः ...       | २१६८    |
| अश्मपुष्पः ...   | ८९३     | असिधावकः ...       | १९४२    | अहमहमिका ...      | १६७०    | आक्रन्दः ...    | २५१७    |
| अश्मरी ...       | ११८६    | असिधेनुका ...      | १६५२    | अहंप्रिया ...     | १६६८    | आकीडः ...       | ५५४     |
| अश्मसारः ...     | १९०३    | असिपुत्री ...      | १६५२    | अहमतिः ...        | २९०     | आक्रोशनः ...    | २२६१    |
| अश्रान्तः ...    | १३०     | अनु ...            | १७०६    | अहर्पतिः ...      | २०५     | आक्षारणाः ...   | ३४०     |
| अश्रिः ...       | १६५४    | अनुधारणः ...       | १७०६    | अहर्मुखः ...      | २१९     | आक्षारितः ...   | २११०    |
| अश्रुः ...       | १२६०    | असुरः ...          | २३      | अहत्कारः ...      | २०१     | आक्षेपः ...     | ३३६     |
| अश्लीलः ...      | ३४८     | असूर्क्षणः ...     | ४०७     | अहहः ...          | २८४९    | आखण्डलः ...     | ८८      |
| अश्वः ...        | १५५४    | अस्याः ...         | ४१०     | अहार्यः ...       | ६३४     | आयुः ...        | १०११    |
| अश्वकर्णकः ...   | ७३७     | असुधरा ...         | ११९८    | अहिः ...          | ४५०     | आयुभुजः ...     | १९७१    |
| अश्वत्थः ...     | ६९०     | अमृजः ...          | १२०१    | अहितः ...         | १४८९    | आखेटः ...       | १९७५    |
| अश्वयुजः ...     | १८७     | असौम्यस्वरः ...    | २०९९    | अहिनुण्डिकः ...   | ४६०     | आख्याः ...      | ३२६     |
| अश्ववटः ...      | २९२६    | अस्तः ...          | ६२७     | अहिमयः ...        | १५२८    | आख्यातः ...     | २३३९    |
| अश्वा ...        | १५६०    | ॥ ...              | २१९९    | अहिमुजः ...       | २३९४    | आख्यायिका ...   | ३२१     |
| अश्वारोहः ...    | १५५८    | ॥ ...              | २८८३    | अहेरुः ...        | ८५१     | आगन्तुः ...     | १४२०    |
| अश्विन् ...      | १०७     | अस्ति ...          | २८८४    | अहो ...           | २८६६    | आगतः ...        | १५२०    |
| अश्विनी ...      | १८७     | अस्तु ...          | २८७४    | अहोरात्रः ...     | २३८     | ॥ ...           | २७९६    |
| अश्विनीसुतः ...  | १०१     | अस्त्रः ...        | १६३७    | अहायः ...         | २८५२    | आगः ...         | २८६     |
| अश्वीयः ...      | १५६३    | अस्त्रिन् ...      | १६०५    | आ.                |         | आग्नीध्रः ...   | १३८७    |
| अश्वर्क्षिणः ... | १५११    | अस्थिः ...         | १२१०    |                   |         | आग्रहायणिकः ... | २४३     |
| अश्वपदः ...      | १८९७    | अस्थिरः ...        | २११०    | आ(आ.) ...         | २८१५    | आग्रहायणी ...   | १९०     |
| ॥ ...            | २०२१    | अम्फुटवाच् ...     | २०९८    | आम् ...           | २८८१    | आडः ...         | २८१४    |
| अष्टीयन् ...     | १२१८    | अस्रः ...          | १२०१    | आकम्पितः ...      | २१९८    | आङ्गिका ...     | ३९४     |

| शब्दः    | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः | शब्दः | पङ्क्तिः |
|----------|----------|-------|----------|-------|----------|-------|----------|
| आक्षिप्य | १९३      | आलस्य | २१३      | आधार  | ५२३      | आगम   | २०१४     |
| आशयन     | १९२४     | आलस्य | २९३४     | आदि   | ४१८      | आगीह  | १३४४     |
| आशान     | १८०५     | आलस्य | १५४१     | आधुन  | २५२२     | आगीन  | १८५३     |
| आशाय     | १९१०     | आलस्य | ४८९      | आधुन  | २१९८     | आगीन  | १०६३     |
| आशायी    | ११०३     | आलस्य | १०१०     | आधुन  | १५८५     | आगीन  | २१२४     |
| आशायीनी  | ११०३     | आलस्य | २११३     | आधुन  | ४१९      | आगीन  | ११९४     |
| आशय      | १८८१     | आलस्य | १०१९     | आधुन  | ४०४      | आगीन  | ४०६      |
| आशयन     | १००      | आलस्य | १०१९     | आधुन  | २३४१     | आगीन  | २५६५     |
| आशयन     | ११०३     | आलस्य | ११९०     | आधुन  | ४४       | आगीन  | २३६४     |
| आशयन     | २५८४     | आलस्य | २०१      | आधुन  | २१६५     | आगीन  | १११३     |
| आशयन     | ४३०      | आलस्य | २१०३     | आधुन  | ४६९      | आगीन  | १३१३     |
| आशयन     | १९०५     | आलस्य | ८२१      | आधुन  | १२५१     | आगीन  | १३१६     |
| आशयन     | १८६०     | आलस्य | १०२८     | आधुन  | २६६      | आगीन  | १३१६     |
| आशयन     | १५५६     | आलस्य | ११३८     | आधुन  | २६४      | आगीन  | १०३२     |
| आशयन     | १६०९     | आलस्य | २०३      | आधुन  | २६६      | आगीन  | १३०६     |
| आशयन     | २३२८     | आलस्य | ४१       | आधुन  | २०६२     | आगीन  | ४४१      |
| आशयन     | १००९     | आलस्य | ५२       | आधुन  | ४९८      | आगीन  | १९       |
| आशयन     | ४६५      | आलस्य | २०६०     | आधुन  | १३१५     | आगीन  | १८२१     |
| आशयन     | १५१९     | आलस्य | १११०     | आधुन  | ११८३     | आगीन  | ६३३      |
| आशयन     | १८०९     | आलस्य | २३३५     | आधुन  | १३१५     | आगीन  | १११०     |
| आशयन     | १०१०     | आलस्य | १३५३     | आधुन  | १०६९     | आगीन  | ४६०      |
| आशयन     | १६८३     | आलस्य | २१८५     | आधुन  | ४३०      | आगीन  | १३४०     |
| आशयन     | २६०१     | आलस्य | २०१      | आधुन  | ४०९      | आगीन  | ४०       |
| आशयन     | १०१०     | आलस्य | १५       | आधुन  | १८००     | आगीन  | ४६६      |
| आशयन     | १८६३     | आलस्य | १६       | आधुन  | ५६०      | आगीन  | ११०५     |
| आशयन     | १०३६     | आलस्य | १९       | आधुन  | ५९०      | आगीन  | ११८९     |
| आशयन     | २०९      | आलस्य | २००      | आधुन  | १८६३     | आगीन  | २९६१     |
| आशयन     | २६०९     | आलस्य | २१०८     | आधुन  | २१०९     | आगीन  | ४६६      |
| आशयन     | २०४५     | आलस्य | २१०५     | आधुन  | १६३१     | आगीन  | ११९८     |
| आशयन     | २१५५     | आलस्य | २१८५     | आधुन  | २१०९     | आगीन  | ११९९     |
| आशयन     | २५६५     | आलस्य | १८००     | आधुन  | १६३०     | आगीन  | १४८९     |
| आशयन     | २११३     | आलस्य | २०६६     | आधुन  | १०१५     | आगीन  | २०६१     |

| शब्दः        | पंक्तिः | शब्दः          | पंक्तिः | शब्दः       | पंक्तिः | शब्दः         | पंक्तिः |
|--------------|---------|----------------|---------|-------------|---------|---------------|---------|
| आमुक्त ...   | १५९७    | आरालिक... १७६२ |         | आवर्त ...   | १७८     | आशुशुद्धि ... | १०५     |
| आमोद ...     | २६३     | आरात्र ...     | ३५७     | आवलि ...    | ६७६     | आश्रय ...     | १००     |
| " ...        | २९७     | आरिवत ...      | ६९६     | आवसित ...   | १७५३    | आश्रम ...     | १३६०    |
| " ...        | २५१७    | आरोग्य ...     | ११७३    | आवाप ...    | ५७५     | आश्रय ...     | १५०४    |
| आमोदिन्...   | २९९     | आरोह ...       | १३०२    | आवापक ...   | १२८७    | " ...         | २२७१    |
| आज्ञाय ...   | ३१६     | " ...          | २८११    | आवाल ...    | ५७५     | आश्रयाश ...   | १०८     |
| " ...        | २२६४    | आरोहण ...      | ६१८     | आविद्ध ...  | २१६७    | आश्रव ...     | २८६     |
| आन्न ...     | ७१५     | आर्तगल ...     | ७९७     | " ...       | २१९९    | " ...         | २०७३    |
| आन्नानक ...  | ७०३     | आर्तव ...      | १११५    | आविध ...    | २३२१    | आश्रुत ...    | २२२१    |
| आन्नेदित ... | ३३४     | आर्त ...       | २२३५    | आत्रिल ...  | ४९५     | आश्र ...      | १५६३    |
| आयत ...      | २१६२    | आर्तक ...      | १७८१    | आविस् ...   | २८७३    | आश्रय ...     | ६८४     |
| आयतन ...     | ६०६     | आय ...         | ३९०     | आयुक् ...   | २७५     | आश्रयुज ...   | २९२     |
| आयति ...     | २४७     | " ...          | १३५८    | आयुक्त ...  | ३८५     | आश्रिन ...    | २४९     |
| " ...        | १५२०    | आर्यावर्त ...  | ५७२     | आयुत् ...   | १४२५    | आश्रिनेय...   | १०५     |
| आयत्त ...    | २०५७    | आर्पभ्य ...    | १८३१    | आयुत ...    | २००५    | आश्रीन ...    | १५६१    |
| आयान ...     | १३०२    | आल ...         | १९१३    | आयुती ...   | २२२     | आपाद ...      | २४७     |
| आयुध ...     | १६३२    | आलम्भ ...      | १६९८    | आवेशन ...   | ६०७     | " ...         | १४४३    |
| आयुधिक ...   | १६०२    | आलय ...        | ६०३     | आवेशिक ...  | १४२०    | आसक्त ...     | २०४२    |
| आयुधीय ...   | १६०२    | आलयाल ...      | ५२५     | आवेशिक् ... | २०७८    | आसन ...       | १३५७    |
| आयुष्मन् ... | २०३७    | आलम्भ्य ...    | १९६५    | आशंसिहृ...  | २०७८    | " ...         | १५०४    |
| आयुस् ...    | १७०७    | आलान ...       | १५४९    | आशंसु ...   | २०७८    | " ...         | १७४६    |
| आयोधन ...    | १६७४    | आलाप ...       | ३४१     | आशय ...     | २०९०    | आसना ...      | २०९२    |
| आरकूट ...    | १९००    | आलाप ...       | ५८४     | आशर ...     | ११८     | आसन्दी ...    | २०१३    |
| आरम्बध ...   | ६९५     | आलि ...        | ६५६     | आशा ...     | १४६     | आसन्न ...     | २१५७    |
| आरनाटक ...   | १७८४    | " ...          | १०९७    | " ...       | २७६९    | आसाव ...      | २०१२    |
| आरति ...     | २३२४    | " ...          | २७३१    | आश्रितंगवीन | १८२४    | आसादित ...    | २०३३    |
| आरम्भ ...    | २३०२    | आलिङ्ग्य...    | ३७२     | आशीविष...   | ४५१     | आसार ...      | १६७     |
| आरय ...      | ३५७     | आलीढ ...       | १६३८    | आशिसु ...   | २७९२    | " ...         | १६५९    |
| आरा ...      | १९९८    | आल् ...        | १७६८    | आशु ...     | १७९     | आसुरी ...     | १७४५    |
| आरान् ...    | २८२०    | आलोक ...       | २३४१    | " ...       | १७३७    | आसेचनक ...    | २१३०    |
| आराधन ...    | २५८५    | आलोक ...       | २३११    | आशुग ...    | १२३     | आस्कन्दन ...  | १६७७    |
| आराम ...     | ६५२     | आवपन ...       | १७७३    | " ...       | २३७३    | आस्कन्दिहृ    | १५६४    |

| शब्दः       | पङ्क्तिः | शब्दः        | पङ्क्तिः | शब्दः        | पङ्क्तिः | शब्दः      | पङ्क्तिः |
|-------------|----------|--------------|----------|--------------|----------|------------|----------|
| आम्बरण      | १५५२     | इक्ष्वाकु    | २६०      | इन्द्रारि    | २३       | इम         | ११८१     |
| आरधा        | २५१०     | इह           | २१७२     | इन्द्रावरण   | ३९       | इष्या      | ४१०      |
| आरधान       | १३८३     | ,            | २२७९     | इन्द्रिय     | २९२      | इज्जित     | २२४३     |
| आरधानो      | १३८३     | इहित         | २२७०     |              | ११९७     | इली        | १६४०     |
| आस्पद्      | २५२२     | इक्षुली      | ७४०      | इन्द्रियार्थ | २९३      | इश         | ५९       |
| आस्फोट      | ८०९      | इच्छा        | ४१६      | इधम          | ६७४      | इशान       | ६०       |
| आस्फोटी     | १९९६     | इच्छावर्णी   | १००२     | इम           | १७२७     | ईश्वर      | २०४५     |
| आस्फोटी     | ७८८      | इक्ष्वाली    | १३६९     | इम्ब         | २०४५     | इक्षर      | ६०       |
| "           | ८५६      | इक्षर        | १८३१     | इरमद         | १६४      |            | २०४५     |
| आम्य        | १२५१     | इक्ष         | २४१९     | इरा          | २००८     | इक्षरा     | ७७       |
| आस्या       | २२९७     | इमर          | १२६१     |              | २६८७     | इषत्       | २०६५     |
| आम्य        | २३०८     | ,            | २७८९     | इला          | २४१९     | इषपाण्डु   | २०१      |
| आहत         | ३५२      | इतर          | २७१९     | इक्ष्वा      | १९१      | इषा        | १७३५     |
| "           | २७०१     | इति          | २८२६     | इष           | २८६६     | इषिका      | १५३      |
| आहतलक्षण    | २०४४     | इतिह         | १७७७     | इष           | २४९      |            | १९९४     |
| आहव         | १६७८     | इतिहाम       | ३९९      | इषु          | १६४१     | ईदा        | ४१६      |
| आहवनीय      | १३९१     | इत्तरी       | १०९४     | इषुधि        | १६४४     | इदामुग     | १००२     |
| आहार        | १८१८     | इक्षानीम्    | २८९४     | इष्ट         | १४०८     |            |          |
| आहाव        | ५१८      | इक्ष्म       | ६७४      | इष्टवाम्य    | ०७८      | इ          |          |
| आहव         | ४५५      | इन           | २५५७     | इष्टगन्ध     | २९९      | इ          | २८८४     |
| आहो         | २८५८     | इदीवर        | ५४१      | इष्टाभोपुत्र | २०२२     | उत्त       | २२३९     |
| आहोपुरुषिका | १६६९     | इक्षु        | १७१      | इष्टि        | २४१७     | उत्ति      | ३१३      |
| आह्वय       | ३२५      | इदीवरी       | ८४९      | इष्यास       | १६३४     | उत्तम      | २९५४     |
| आह्वा       | ३२६      | इन्द्र       | ८१       |              |          | उत्तम      | १८९५     |
| आह्वान      | ३३७      | ,            | १८९      | इक्षण        | १२५९     | उत्तमा     | १७६०     |
| इ           |          | इन्द्रह      | ७३८      |              | २३११     |            | १८२५     |
|             |          | इन्द्रव      | ७८२      | इक्ष्मिना    | १११३     | उत्तम      | ६३       |
| इक्षु       | २७५      | इन्द्रवर्णी  | २६१      | इक्षित       | २२४४     | "          | ४०२      |
| इक्षुगन्धा  | ८४५      | इन्द्रवर्ष   | ७८५      | इक्षि        | २४७१     |            | १९३३     |
|             | ८५७      | इन्द्राणिवा  | ७८७      | इक्षिण       | २४४८     | उत्तमगन्धा | ८५३      |
|             | ८६८      | इन्द्राणी    | ८९       | इक्षित       | २१९९     | "          | ९३८      |
|             | ९७४      | इन्द्राण्युध | १६५      |              |          |            |          |
| इक्षुर      | ८५७      |              |          |              |          |            |          |

| शब्द-             | पंक्ति- | शब्द-            | पंक्ति- | शब्द-           | पंक्ति- | शब्द-            | पंक्ति- |
|-------------------|---------|------------------|---------|-----------------|---------|------------------|---------|
| उच्च ...          | २१६४    | उत्तंस ...       | ७७९०    | उत्साह ...      | १५०५    | उदुम्बर ...      | १२०१    |
| उच्चटा ...        | ९६८     | उत्त ...         | ७७३५    | उत्साहवर्धन ... | ३०७     | उदुम्बरपर्णा ... | ९१७     |
| उच्चष्ट ...       | ७१९०    | उत्तप्त ...      | १७००    | उत्सुक ...      | ७०४७    | उदूखल ...        | १७५७    |
| उच्चार ...        | १२०८    | उत्तम ...        | २१३८    | उत्सृष्ट ...    | २७३८    | उद्गन ...        | ७२१८    |
| उच्चावच ...       | ७१९०    | उत्तमर्ण ...     | १७१६    | उत्सृष्ट ...    | ६६८     | उद्गमनीय ...     | १२०८    |
| उच्चैः श्रवस् ... | ९०      | उत्तमा ...       | १०८७    | उत्सृष्ट ...    | २५२६    | उद्गाढ ...       | १३२     |
| उच्चैर्घुष्ट ...  | ३३४     | उत्तमान ...      | १७६३    | उदक् ...        | ७८९५    | उद्गातृ ...      | १३८६    |
| उच्चैस् ...       | २८८२    | उत्तर ...        | ३३०     | उदक् ...        | १७४४    | उद्गार ...       | २३३३    |
| उच्छ्रय ...       | ६६८     | उत्तरा ...       | २७१६    | उदक् ...        | २९३८    | उद्गीर्ण ...     | ७९३२    |
| उच्छ्राय ...      | ६६८     | उत्तरा ...       | १४८     | उदमया ...       | १११५    | उद्गृह ...       | २२०३    |
| उच्छ्रित ...      | २१६४    | उत्तरासङ्ग ...   | १३०८    | उदग्र ...       | २७६४    | उद्ग्राह ...     | २३२३    |
| उच्छ्रित ...      | २५०४    | उत्तरीय ...      | १३०९    | उदज ...         | २७      | उद्ग ...         | २६८     |
| उच्चासन ...       | १६९७    | उत्तान ...       | ४९६     | उदवि ...        | ४६९     | उदग ...          | २३१९    |
| उच्चवल ...        | ३९६     | उत्तानशया ...    | ११५६    | उदन्त ...       | ३७५     | उद्गाढन ...      | १८९३    |
| उच्छगिल ...       | १७११    | उत्थान ...       | २५२७    | उदन्त्या ...    | १८१७    | उदात ...         | २३०२    |
| उदज ...           | ६०७     | उत्थित ...       | ७५०४    | उदन्त्यत् ...   | ४६९     | उदान ...         | १५२०    |
| उदु ...           | १८६     | उत्पन्नितृ ...   | २०८७    | उदपान ...       | ५१९     | उदाल ...         | ७१७     |
| उदुप ...          | ४८८     | उत्पत्ति ...     | ७७४     | उदय ...         | ६३७     | उदित ...         | २२१४    |
| उद्वीन ...        | १०६१    | उत्पत्तिष्णु ... | २०८२    | उदर ...         | १२७७    | उदद्वाव ...      | १६८९    |
| उद ...            | ७२७६    | उत्पन्न ...      | २५०७    | उदर्क ...       | १५७६    | उद्धत ...        | २३०४    |
| उद ...            | ७८२१    | उत्पल ...        | ५४०     | उद्वसित ...     | ६०१     | उद्धर्ष ...      | ४३८     |
| उद ...            | ७८६८    | उत्पलशारिवा ...  | ८७७     | उद्वसित ...     | ६०१     | उद्धव ...        | ४३८     |
| उताहो ...         | २८५८    | उत्पात ...       | २१८५    | उद्वसित ...     | १८१३    | उद्धान ...       | १७१४    |
| उत्क ...          | ७०४०    | उत्फुल्ल ...     | ६६३     | उदान ...        | १०६     | उद्धार ...       | १७६४    |
| उत्काट ...        | ९१७     | उत्स ...         | ६४३     | उदार ...        | २०४१    | उद्भव ...        | २७४     |
| उत्काट ...        | २०७१    | उत्सर्जन ...     | १४१०    | उदासीन ...      | १४८७    | उद्भिज्ज ...     | २१२७    |
| उत्काण्टा ...     | ४१९     | उत्सव ...        | ४३८     | उदाहार ...      | ३७९     | उद्भिद् ...      | २१२७    |
| उत्कार ...        | १०७७    | उत्सव ...        | ४३८     | उदित ...        | २२३९    | उद्भिद् ...      | २१२७    |
| उत्कार्य ...      | ७७७१    | उत्सादन ...      | १३१६    | उदीची ...       | १४८     | उद्भ्रम ...      | २२७४    |
| उत्कालिका ...     | ४१९     | उत्साव ...       | ४७५३    | उदीच्य ...      | ५७०     | उद्यत ...        | २२०३    |
| उत्कार ...        | २३२७    | उत्साव ...       | ४७०     | उदीच्य ...      | ८९७     | उद्यम ...        | २२७२    |
| उत्कोश ...        | १०३३    | उत्साव ...       | १३१६    | उदुम्बर ...     | ६९२     | उद्यान ...       | ६५४     |

| शब्दः       | पङ्क्तिः | शब्दः   | पङ्क्तिः | शब्दः      | पङ्क्तिः | शब्दः       | पङ्क्तिः |
|-------------|----------|---------|----------|------------|----------|-------------|----------|
| उद्यान      | २५६८     | उपक्रम  | २३०१     | उपमा       | २००४     | उपगम्य      | १२२४     |
| उद्योग      | २५६९     |         | २६१३     | उपमान      | २००१     | उपन्यास     | १४२४     |
| उद्ग        | ५०७      | उपमोक्त | १३७      | उपयम       | १४६४     | उपहार       | १५२३     |
| उद्गमन      | १३१६     | उपगत    | २२४२     | उपयाम      | १४६४     | उपहर        | ७७०१     |
| उद्गात      | १५३९     | उपगहन   | २३१०     | उपरक्त     | २३४      | उपागु       | १५१३     |
|             | २२१८     | उपमह    | १७०५     | "          | २१११     | उपाकरण      | १४३३     |
| उद्गासन     | १६९७     | उपमास   | १५२३     | उपरक्षण    | १५३३     | उपाकृत      | १४०३     |
| उद्गाह      | १४६५     | उपर     | २३८८     | उपराग      | २३३      | उपाख्य      | १४२६     |
| उद्गा       | ९८७      | उपचरित  | २२२८     | उपराम      | २३२४     |             | २३१६     |
|             | २३७४     | उपचाय्य | १३९३     | उपरि       | २७०२     | उपादान      | २२८२     |
| उद्ग        | १०११     | उपचित   | २२०३     | उपल        | ६४०      | उपाधि       | ४१८      |
| उपत         | २३६४     | उपविना  | ८३३      | उपलब्धार्थ | ३२१      |             | २०४८     |
| उपातानत     | २१६३     | उपजाय   | १५१०     | उपलब्ध     | २७९      | उपाध्याय    | १३६६     |
| उपाज        | २५०४     | उपज्ञा  | १३७८     | उपलम्भ     | २३०४     | उपाध्याया   | ११०२     |
| उपाय        | २२७३     | उपतप्त  | २२७८     | उपला       | २७३४     | उपाध्यायानी | ११०४     |
| उपाय        | २२७३     | उपनाय   | ११७५     | उपबन       | ६५२      | उपाध्यायी   | ११०२     |
| उपमत्त      | ८०३      | उपलप    | ६४७      | उपयतन      | ५७३      | उपायद       | १२९०     |
|             | ११९४     | उपदा    | १५२३     | उपवास      | १४७८     | उपायन       | १५२३     |
| उपमक्षिप्यु | २०४०     | उपधा    | १५१०     | उपविषा     | ८४७      | उपाकृत      | १५६८     |
| उपमनसु      | २०४०     |         | २६१३     | उपवीन      | १४५१     | उपासक       | १६४४     |
| उपमाय       | १६९८     | उपधान   | १३४८     | उपशब्द     | ६३२      | उपासन       | १६१९     |
|             | १९८१     | उपधि    | ४३१      | उपशाव      | २३१२     | उपासना      | १४३३     |
| उपमाद्      | ४१४      | उपनाह   | ३७६      | उपश्रुत    | २३४२     | उपासित      | २३२८     |
|             | २०४०     | उपनिधि  | १८६८     | उपसम्मान   | १३०७     | उपाहित      | २३४      |
| उपमादवा     | ११९४     | उपनीयद् | २५२०     | उपसपन्न    | १४०५     |             | २२०८     |
| उपमष्ट      | २१५९     | उपनिष्क | ५९३      |            | १७१७     | उपेक्ष      | ३९       |
| उपकारिका    | ६१३      | उपन्यास | ३२८      | उपसर       | २२९९     | उपोदिवा     | ९६३      |
| उपकाया      | ६१३      | उपपत्ति | ११४४     | उपसर्ग     | १६८५     | उपोदान      | ३२९      |
| उपकुधिका    | ८९९      | उपकर्तृ | १३४८     | उपसर्जन    | २१४४     |             |          |
|             | १४८०     | उपगुण   | १४०२     | उपसर्वा    | १८४६     | उपसर्ग      | २८९१     |
| उपगुणमा     | ८४१      | उपभोग   | २३८९     | उपसर्ग     | १०९      | उपसर्ग      | २८९१     |
| उपक्रम      | १३७८     | उपमा    | २००१     | उपसर       | १७०६     | उपा         | ७२       |



| शब्दः           | पंक्तिः | शब्दः         | पंक्तिः | शब्दः          | पंक्तिः | शब्दः            | पंक्तिः |
|-----------------|---------|---------------|---------|----------------|---------|------------------|---------|
| उमा ...         | १७४६    | उशनम् ...     | १९४     | ऊर्जस्वल ...   | १६१८    | अनु ...          | ३५४     |
| उमापति ...      | ६८      | उशीर ...      | ९७६     | ऊर्जस्विन् ... | १६१८    | ,, ...           | १७११    |
| उरःनूत्रिका ... | १०८२    | उषणा ...      | ८४२     | ऊर्णनाम ...    | १०१३    | अनीया ...        | २३१७    |
| उरग ...         | ४५४     | उषर्बुध ...   | १०७     | ऊर्णा ...      | २४३४    | अनु ...          | २४०     |
| उरण ...         | १८५९    | उपस् ...      | २१९     | ऊर्णायु ...    | १८५९    | ,, ...           | २५५     |
| उरणाख्य ...     | ९४३     | उपा ...       | २८८५    | ,, ...         | १९२०    | ,, ...           | २४५७    |
| उरन्न ...       | १८५९    | उपापति ...    | ५३      | ऊर्ध्वक ...    | ३७२     | अनुमती ...       | २१५५    |
| उररी ...        | २८४३    | उपित ...      | २०२०    | ऊर्ध्वजानु ... | ११६८    | अने ...          | २८५४    |
| उररीकृत ...     | २२४१    | उप्रा ...     | १८५६    | ऊर्ध्वजु ...   | ११६८    | अन्विज् ...      | १३८७    |
| उरश्छद् ...     | १५९६    | उष्ण ...      | २५२     | ऊर्मी ...      | ४७७     | अद्भ ...         | १७५३    |
| उरस् ...        | १२२९    | ,, ...        | १९६६    | ,, ...         | २९७०    | अद्धि ...        | ८७३     |
| उरसिल ...       | १६१९    | ,, ...        | २९३९    | ऊर्मिका ...    | १०८८    | अमु ...          | १६      |
| उरस्य ...       | ११३०    | उष्णरदिम ...  | २००     | ऊर्मिमत् ...   | २१६६    | अमुक्षिन् ...    | ८८      |
| उरस्वत् ...     | १६१९    | उष्णिका ...   | १८०६    | ऊप ...         | ४६५     | अदय ...          | १००८    |
| उर ...          | २१४६    | उष्णीप ...    | २७७६    | ऊपण ...        | १७७८    | अपम ...          | ३६३     |
| उरवृक् ...      | ७५०     | उष्णोपगम ...  | २५१     | ऊपर ...        | ५६६     | ,, ...           | ८८१     |
| उर्वरा ...      | ५६५     | उष्मका ...    | २५१     | ऊपवत् ...      | ५६६     | ,, ...           | १८०५    |
| उर्वशी ...      | १०३     | उस्त्र ...    | २१०     | ऊष्मागम ...    | २५२     | अपि ...          | १४३८    |
| उर्वारु ...     | ९५९     | उस्त्रा ...   | १८३९    | ऊह ...         | २८२     | अप्यप्रोक्ता ... | ८२०     |
| उर्वी ...       | ५६२     | ऊ.            |         | ऊ.             |         | ,, ...           | ८५०     |
| उलप ...         | ६६७     | ऊत ...        | २२०६    | ऊक्थ ...       | १८८६    | ए.               |         |
| उलक् ...        | १०१७    | ऊधस् ...      | १८५०    | ऊक्ष ...       | १८६     | एक ...           | २१८८    |
| उल्लसल ...      | १७५७    | ऊम् ...       | २८८४    | ,, ...         | ७६२     | ,, ...           | २१८९    |
| उल्लसलक ...     | ७१६     | ऊररी ...      | २८४३    | ,, ...         | ९९५     | ,, ...           | २३६७    |
| उल्लिप् ...     | ५००     | ऊरव्य ...     | १७०८    | ऊक्षगन्धा ...  | ८६९     | एकक ...          | २१८८    |
| उल्का ...       | २९१०    | ऊरी ...       | २८४३    | ,, ...         | ९२२     | एकतान ...        | २१८३    |
| उल्य ...        | ११५०    | ऊरीकृत ...    | ८०५     | ऊक् ...        | ३१७     | एकताल ...        | ३६७     |
| उल्यण ...       | २१८७    | ,, ...        | २२४१    | ऊजीप ...       | १७७१    | एकदन्त ...       | ७६      |
| उल्लुक ...      | १७६६    | ऊरु ...       | १२१९    | ऊजु ...        | २१६८    | एकदा ...         | २८९३    |
| उल्लाघ ...      | ११८८    | ऊरज ...       | १७०८    | ऊजुरोहित ...   | १६५     | एकधुर ...        | १८३७    |
| उल्लोच ...      | १३१३    | ऊरुपर्वन् ... | १२१८    | ऊण ...         | १७१३    | एकधुरावह ...     | १८३७    |
| उल्लोल ...      | ४७८     | ऊर्ज ...      | २५०     |                |         |                  |         |

| शब्दः     | पङ्क्तिः | शब्दः    | पङ्क्तिः | शब्दः      | पङ्क्तिः | शब्दः    | पङ्क्तिः |
|-----------|----------|----------|----------|------------|----------|----------|----------|
| एकधुरीण   | १८३७     | एलाघानुव | ८९०      | ओदन        | १८०३     | वसाराति  | ४२       |
| एकपदी     | ५८७      | एवम्     | २८३६     | ओम्        | २८७३     | वशुद     | ७५१८     |
| एकविंश    | १३८      | "        | २८६६     | ओष         | २२६७     | वकुशती   | १७७१     |
| एकपट्टिका | १७८५     | "        | २८७३     | ओषधी       | ६६१      | कनुम्    | १४६      |
| एकसग      | २१८४     | "        | २८७९     | "          | ९१०      | कनुम     | ३७५      |
| एकहायनी   | १८३२     | "        | २८८१     | ओषधीश      | १७२      | "        | ३७८      |
| एकविन्    | २१८८     | एकपिपा   | १९९३     | ओष्ठ       | १७५३     | ककोल्फ   | १३१३     |
| एकाम      | ३१८३     | ते.      |          |            | २९१९     | कथ       | १२३१     |
| "         | ३७१५     | ऐवागरिव  | १९७७     | औ          |          | "        | २७७४     |
| एकाय      | २१८४     | ऐहुड     | ६८५      | औधक        | १८२६     | कल्या    | १५५१     |
| एकान्त    | १३३      | एण       | १००७     | औषिती      | ७९७३     | "        | २६५१     |
| एपायन     | २१८३     | ऐणेय     | १००४     | औषित्य     | २९७७     | कङ्क     | १०१९     |
| एपायनगत   | २१८४     | ऐतिद्य   | १३७७     | औत्तानपादि | १८४      | कङ्कटव   | १५९६     |
| एकावली    | १७८७     | ऐड्डियक  | ७१८३     | औदनिक      | १७६७     | कङ्कण    | १२८९     |
| एकाडील    | ८११      | ऐरागण    | ९३       | औदरिव      | २०६६     | कङ्कतिका | १३५३     |
| "         | ८१८      | ऐराग     | ९७       | औपगवकादिक  | १७८      | कङ्काल   | १३११     |
| एड        | ११६०     | "        | १५१      | औपयिक      | १५१६     | कङ्क     | १७४६     |
| एवक       | १८५९     | "        | ७२४      | औपरल       | १४२८     | कथ       | १७६४     |
| एडगज      | ९४२      | ऐरागती   | १६२      | औमीन       | १७२१     | कथार     | २१३४     |
| एडमूव     | २१०१     | ऐत्रिल   | १३८      | औरत्रव     | १८६०     | कथित     | २८७६     |
| एडूक      | ६००      | ऐलेय     | ८९०      | औरस        | ११३०     | कथ       | ५७७      |
| एण        | १००८     | ऐश्वय    | ७१       | औध्वदेहिव  | १४१३     | कथ       | ९०४      |
| एन        | ३१०      | ऐपमम्    | ७८८८     | औव         | ११२      | कथप      | ५०८      |
| एनदि      | २१९४     | ओ        |          | औगीर       | २७०६     | कथपी     | २५९८     |
| एध        | ६७४      | ओषक      | २८०१     | औणव        | ९१९      | कथुर     | ११९०     |
| एधा       | ३२३९     | ओष       | १०६६     | "          | ११७४     | कथुरा    | ८३२      |
| एधव       | ६७४      | "        | २३८८     | औष्क       | १८६०     | कथू      | ११७९     |
| एधित      | २१७७     | "        | ३१८      | क          |          | कथूक     | ३५६      |
| एनम्      | २६१      | ओकार     | २८०७     | व          | ७३४४     | "        | १५९३     |
| एरण्ड     | ७५०      | ओमम्     | २८०७     | "          | २८३५     |          |          |
| एरा       | ८९८      | ओमपुष्प  | ८००      | वस         | १७७१     |          |          |
| एरापणी    | ९२८      | ओ        | ०९९      |            |          |          |          |

| शब्दः         | पंक्तिः | शब्दः          | पंक्तिः | शब्दः        | पंक्तिः | शब्दः          | पंक्तिः |
|---------------|---------|----------------|---------|--------------|---------|----------------|---------|
| कक्षुकिन् ... | १४८४    | कणा ...        | १७७९    | कनकाह्वय ... | ८०३     | कपिला ...      | ८८९     |
| कट ...        | १२२१    | कणिका ...      | ७७९     | कनिष्ठ ...   | ११६०    | कपिवह्नी ...   | ८४१     |
| " ...         | १५४१    | " ...          | २९११    | " ...        | २४१७    | कपिश ...       | ३०८     |
| " ...         | १७५९    | कणिश ...       | १७४८    | कनिष्ठा ...  | १२३८    | कपीनन ...      | ७०२     |
| " ...         | २४०२    | कण्टक ...      | २९५९    | कनीनिका ...  | १२५८    | " ..           | ७३६     |
| कटक ...       | ६४२     | कण्टकारिका ... | ८३५     | कनीयन् ..    | २१४९    | " ..           | ७७६     |
| " ...         | १२८७    | कण्टकिफल ...   | ७७०     | " ...        | २८०५    | कपीन ...       | १०१६    |
| कटंभरा ...    | ८१९     | कण्ठ ...       | १२४९    | कन्धा ...    | २९१३    | कपीनपालिका ... | ६२१     |
| " ...         | ९५४     | कण्ठमूपा ...   | १२८१    | " ..         | २९५१    | कपोताक्षि .    | ९०७     |
| कटमी ...      | ९४८     | कण्डुरा ...    | ८२१     | कन्द ..      | ९६२     | कपोल ...       | १२५४    |
| कटाक्ष ..     | १२६१    | कण्डू ...      | ११८०    | " ...        | २९६४    | कफ ...         | ११९८    |
| कटाह ...      | २९३७    | कण्डूया .      | ११८०    | कन्दर ..     | ६४४     | कफिन् ...      | ११९४    |
| कटी ...       | २९७१    | कण्डोला ..     | १७५९    | कन्दराल ...  | ७०६     | कक्कोणि ...    | १२३३    |
| कटीप्रोध ...  | १२२४    | कण्टोगवीणा ... | १९९२    | " ...        | ७३४     | कवन्ध ...      | ४७४     |
| कटी ...       | १२२१    | कचृण ...       | ९८०     | कदर्प ...    | ५०      | " ...          | १७०३    |
| कटु ...       | २९४     | कथा ...        | ३२२     | कन्दली ...   | १००५    | कवरी ...       | ९२७     |
| " ...         | ८१९     | कदध्वन् ..     | ५८९     | कन्दु ...    | १७६७    | " ...          | १२६७    |
| " ...         | २४०५    | कदम्ब ..       | ७३२     | कन्दुत ...   | १३५०    | " ...          | १७८७    |
| कटुतुम्बी ... | ९६०     | " ...          | १०३३    | कधरा ..      | १२४९    | कम् ...        | २८३५    |
| कटुरोहिणी ... | ८१९     | कदम्बक ..      | १०६८    | कन्या ...    | १०८९    | कमठ ...        | ५०८     |
| कदफल ...      | ७३९     | " ..           | १७४१    | कपट ...      | ४७१     | कमठी ...       | ५१५     |
| कदवङ्ग ...    | ७६१     | कदर ...        | ७४८     | कपर्द ...    | ६९      | कमण्डलु ...    | १४४४    |
| कटिञ्जर ...   | ८०७     | कदर्य ...      | २१२१    | कर्पादिन् .. | ६३      | कमन ...        | २०७२    |
| कठिन ..       | १२७६    | कदली ..        | ८७४     | कपाट .       | ६२७     | कमल ...        | ४७२     |
| कठिन ...      | ९५७     | " ..           | १००५    | कपाल ...     | १२१०    | " ..           | ५४६     |
| कठोर ...      | २१७६    | कदाचित् .      | ७८५६    | कपालभृत्     | ६३      | " ...          | २७२४    |
| कटङ्गर ...    | १७५१    | कदुष्ण ...     | २१४     | कपि ...      | ९९३     | कमला ...       | ५४      |
| कटम्ब ...     | १७७६    | कट्टु ...      | ३०९     | कपिकच्छु ..  | ८२२     | कमलासन ...     | ३३      |
| कडार ..       | ३०९     | कट्टद ..       | २०९८    | कपित्थ ..    | ६९०     | कमलोत्तर .     | १९१८    |
| कण ...        | २१४८    | कनक ...        | १८९४    | कपिल ...     | ३०९     | कमितृ ...      | २०७१    |
| " ...         | २४२६    | कनकाध्यक्ष ... | १४८२    | कपिला ...    | १५३     | कम्प ...       | ४३८     |
| कणा ...       | ८४१     | कनकालुका ...   | १५३२    | " ...        | ७७४     | कम्पन ...      | २१७३    |

| शब्द          | पति  | शब्दः     | पति  | शब्द       | पतिः | शब्दः        | पतिः |
|---------------|------|-----------|------|------------|------|--------------|------|
| वसिष्ठ        | २१९८ | वरनाल     | १६३६ | वचुरव      | २१८  | वर्मेन्द्रिय | २९३  |
| वस            | २१७३ | वरवालिवा  | १६३९ | वर्ण       | १२६६ | वध           | १८७८ |
| वसन्त         | १३०६ | वरवीर     | ८०७  | वर्णवलीकम् | १०१४ | वधक          | १७१९ |
|               | १६३१ | वरश्यामा  | १२३७ | वर्णधार    | ४९०  | वधपत्र       | ७६५  |
|               | ७७२४ | वरशीकर    | १५४५ | वर्णरत्न   | १२८० | वधू          | २७८० |
| वसिष्ठ        | १७७४ | वरहाट     | ५५   | वर्णिका    | १२८० | वत्स         | ३६६  |
| वसन्त         | ५१२  | वरहाटक    | ७५३  |            | २३६५ | वत्सकल       | ३६१  |
|               | २६०१ | वराण      | २७४५ | वर्णिवार   | ७६९  | वत्सक        | १०८  |
| वसन्तप्रोक्ता | १२५० | वरिणी     | १७४० | वर्णारथ    | १५७१ |              | २३४३ |
| वस            | २०७२ | वरिम्     | १५३६ | वर्णजप     | २११८ | वत्स         | २६०२ |
| वर            | २११  | वरिपियली  | ८४७  | वन्दी      | १९९६ | वत्सपीत      | २४८७ |
|               | १५२१ | वरिग्राहक | १५३८ | वन्दन      | ४८५  | वत्स         | १५३८ |
|               | २६६३ | वरीर      | ८७   | वपट        | १३०३ | वत्सम        | १७७५ |
| वरण           | १६८  |           | २६८२ |            | २९६० | वत्सम        | १६४१ |
| "             | ७७७  | वरीय      | १८०८ | वपर        | १२१० |              | १७७६ |
| "             | २३४७ | वर्णा     | ३९५  | वपरी       | १९०९ | वत्सम्पी     | ९६३  |
| वरल           | ७४३  |           | ३९७  | वपान       | २९६४ | वत्सव        | १०१६ |
|               | ९०६  | वरैडु     | १०२५ | वपर        | १३३३ | कलल          | ११५० |
| वरलक्ष        | ७४३  | वरैणु     | ७४३९ | वपुर       | ११९  | कलविह्व      | १०४२ |
| वरल           | १०७७ | वरौणि     | १०२२ |            | ३१०  | कलश          | १७६९ |
|               | ७४०२ | वव        | १७५९ |            | १८९५ | कलशि         | ८३४  |
| वरण           | १९३३ | ववटक      | ५०८  | वमवर       | १९५१ | कलहृष        | १०३३ |
|               | ७४४१ | ववटी      | ७७९  |            | २०६२ | वगह          | १६७६ |
| वरणह          | २९३१ | ववधू      | ७७१  | वमवार      | २०६७ | वग           | १७१  |
| वरलोका        | ५३२  |           | ७९७१ | वमधम       | २०६० |              | २३६  |
| वरपथ          | १९९८ | ववरी      | १७६८ | कामट       | २०६१ | "            | २७३१ |
| वरम           | १२३५ | ववरडु     | १०७५ | वमगवा      | २०७७ | कलाद         | १०३४ |
|               | १८५६ | ववश       | ९४१  | वर्मिन्द्र | १४३५ | कलानिधि      | १०४  |
| वरभूषण        | १०८९ |           | ७७७६ | वमशील      | २०६१ | कलाप         | २७९२ |
| वरमन्त्र      | ७८३  |           | २७७० | वमशूर      | २०६१ | कलाप         | १७३८ |
| वरम           | १८०२ | वकाह      | ९५९  | वर्ममचिव   | १४७६ | कलि          | १६७७ |
| वरह           | १२३९ | वचूर      | ९५७  | वमार       | ९६९  |              | २७२३ |

| शब्दः         | पंक्तिः | शब्दः          | पंक्तिः | शब्दः             | पंक्तिः | शब्दः         | पंक्तिः |
|---------------|---------|----------------|---------|-------------------|---------|---------------|---------|
| कलिका ...     | ६८०     | कव्य ...       | १४०१    | कावेन्दु ...      | ७२६     | कान्ता ...    | १०८     |
| कलिङ्ग ...    | ७८२     | कशा ...        | १९९१    | काकोदुम्बरिका ... | ७७१     | कान्तार ...   | ५९      |
| " ...         | १०२०    | कशार्ह ...     | २११३    | काकोदर ...        | ४५२     | " ...         | २६७     |
| कलिद्रुम ...  | ७६५     | कशिपु ...      | २५९५    | काकोट ...         | ४५७     | कान्तारक ...  | ९७      |
| कलिमारका ...  | ७४४     | कशेरु ...      | २९२१    | " ...             | १०२९    | कान्ति ...    | १४      |
| कलिल ...      | २१९४    | कशेरुका ...    | १२११    | काक्षी ...        | ९१०     | " ...         | २२१     |
| कनुप ...      | २६१     | कदमल ...       | १६८६    | काच ...           | १९०५    | कान्दविक ...  | १७६३    |
| " ...         | ४९५     | कदय ...        | १५६२    | " ...             | १९८९    | कादिशीक ...   | २१०९    |
| कलेवर ...     | २२१३    | " ...          | २००९    | " ...             | २३९०    | कापथ ...      | ५८९     |
| कल्का ...     | २३६२    | कप ...         | १०९३    | काचस्थाली ...     | ७५७     | कापोत ...     | १०७३    |
| कल्प ...      | २५७     | कपाय ...       | २९४     | काचित ...         | २२०३    | " ...         | १९२४    |
| " ...         | २५९     | " ...          | २६४१    | काशन ...          | १८९६    | कापोताशन ...  | १९०७    |
| " ...         | १४३२    | कट ...         | ४६७     | काधनाहय ...       | ७७८     | काम ...       | ५०      |
| " ...         | १५१५    | " ...          | २४१३    | काधनी ...         | १७८८    | " ...         | ४१७     |
| कल्पना ...    | १५५१    | कन्तूरी ...    | १३३२    | काधी ...          | २१९०    | " ...         | १४६७    |
| कल्पवृक्ष ... | १००     | कह्लार ...     | ५३९     | काञ्जिक ...       | १७८५    | " ...         | १८२०    |
| कल्पान्त ...  | २५९     | कह्ल ...       | १९३१    | काण्ड ...         | १४२१    | " ...         | २६१५    |
| कल्मष ...     | २६०     | कादक्षा ...    | ४१६     | काण्डपृष्ठ ...    | १६०२    | कामन ...      | २०७२    |
| कल्माष ...    | ३१०     | काक ...        | १०२७    | काण्डवत् ...      | १६०६    | कामपाल ...    | ४६      |
| कल्य ...      | २१९     | काकचिधी ...    | ८४४     | काण्डीर ...       | १६०६    | कामम् ...     | २८७५    |
| " ...         | ११८८    | काकतिन्दुक ... | ७२६     | काण्डेशु ...      | ८५७     | कामयितृ ...   | २०७२    |
| " ...         | २६५४    | काकनासिका ...  | ८८५     | कातर ...          | २०७७    | कामिनी ...    | १०७९    |
| कल्या ...     | ३४६     | काकपक्ष ...    | १२६६    | कात्यायनी ...     | ७२      | " ...         | २५५९    |
| कल्याण ...    | २६५     | काकपीलुक ...   | ७२६     | " ...             | ११०८    | कामुक ...     | २०७५    |
| कल्लोल ...    | ४७८     | काकमाची ...    | ९५१     | कादम्ब ...        | १०३३    | कामुका ...    | १०९२    |
| कवच ...       | १५९६    | काकमुद्रा ...  | ८७५     | कादम्बरी ...      | २००८    | कामुकी ...    | १०९२    |
| कवल ...       | १८१५    | काकली ...      | ३६५     | कादम्बिनी ...     | १६०     | काम्पिल्य ... | ९४१     |
| कवि ...       | १९४     | काकाङ्गी ...   | ८८५     | काद्रवेय ...      | ४४५     | काम्बल ...    | १५७६    |
| " ...         | १३६३    | काकिणी ...     | २९१२    | कानन ...          | ६५०     | काम्बविक ...  | १९७५    |
| कविका ...     | १५६६    | काकु ...       | ३३५     | कानीन ...         | ११२१    | काम्बोज ...   | १५४७    |
| कविय ...      | २९६४    | काकुद ...      | १२५५    | कान्त ...         | २१२९    | काम्बोजी ...  | ९२५     |
| कवोष्ण ...    | २१४     |                |         | कान्तलक ...       | ९०४     | काय ...       | १२१५    |

| शब्दः      | पंक्तिः | शब्दः        | पंक्तिः | शब्दः      | पंक्तिः | शब्दः      | पंक्तिः |
|------------|---------|--------------|---------|------------|---------|------------|---------|
| वाय(तीर्थ) | १४५३    | वाल्         | ११०     | कावचिष     | १५९९    | विज        | २९३१    |
| वायस्था    | ७६६     | ,            | २१६     | कावेरी     | ५३६     | विगिरी     | ८२६     |
| वारण       | ३७१     |              | ३०४     | काव्य      | १९३     | विषय       | २०१३    |
| वारणा      | ३६५     |              | ३०२३    | काश        | ९७३     | वितय       | ८०३     |
| वारणिका    | २०३८    | कासक         | ११७२    | कादमरी     | ७१९     |            | २०१६    |
| वारण्डव    | १०५६    | कासकण्टक     | १०३९    | कासनय      | ७२०     | किनर       | २१      |
| वारम्मा    | ७६०     | काण्डूट      | ४५७     | कासमीर     | ०३९     |            | १४१     |
| वारवी      | ८७१     | कासखण्ड      | १२०६    | कासमीरण-मय | १३२१    | किनरेण     | १३७     |
|            | ९५३     | काण्डम       | १६९०    | कासपणि     | २०८     | विग्       | ३८३७    |
|            | १७८०    | काण्डपुष्ट   | १६३४    | कास्यनी    | ७६१     | ,          | ३८५८    |
|            | १७८७    | कासमिविवा    | ८२९     | काष्ठ      | ६७४     | विमु       | ३८५८    |
| वारवेल     | ९५७     | ,            | ८६६     | काष्ठपुराक | ४२३     | विमुन      | ३८५३    |
| वार        | १७०५    | कासमेपी      | ८४०     | काष्ठध     | १९४६    |            | ३८५८    |
| वारिका     | २३६५    | कासमेय       | १८१३    | काहा       | १४६     | विपचान     | ३१३१    |
| वारीय      | ३३३५    | काससूय       | ४६३     | ,          | २३६     | विपुण      | १४०     |
| वार        | १९३८    | कासम्बन्ध    | ७३५     | कासीला     | ८७५     | विषदती     | ३३४     |
| वारगिय     | २०५४    | -            | ७८४     | कास        | ११७७    | विर        | ९९१     |
| वालेय      | ३९७     | कासा         | ८३७     | कासमद      | २९३३    | विरण       | २१०     |
| वारोसर     | २०१४    |              | ८६६     | कासर       | ९९६     | विरान      | १९६९    |
| वातम्बर    | १९९७    |              | १३८०    | कासार      | ५२२     | विरातनिग   | ९३४     |
| वातीतिव    | १४०६    | कासागुन      | १३३७    | विशाह      | १७४८    | विरीट      | ११७७    |
| कार्मिक    | २४९     | कासागुणाय    | ८०३     |            | २६६१    | ,          | २९५५    |
| कार्मिकिष  | २५०     | ,            | १३२५    | विगुण      | ७०७     | विमीर      | ३१०     |
| कार्मिकेय  | ७७      | कासायस       | १९०२    | विकीदिशि   | १०१९    | विल        | २८४४    |
| कापाम      | १३९५    | काशिका       | २३६४    | किबर       | १९६३    | विगस       | ११७९    |
| कापासी     | ८८०     | काशिन्दी     | -५३०    | किविणी     | १२०३    | विलासिक्   | ११९६    |
| काम        | २०६१    | काशिन्दीभेदन | ४८      | विधित्     | २८६५    | विलिजक     | १७५९    |
| कामग       | २२५७    | कासा         | ७३      | विमुलव     | ५१०     | विधिय      | २६०     |
| कामुव      | १६३३    | कासीयक       | ८५१     | विमन्त्र   | १५५२    | किशोर      | १५६०    |
| काय        | ७३७     |              | १३२५    | किटि       | ०९१     | किष्कु     | ३४८७    |
| कार्यापण   | १८८२    | कात्यक       | ९१८     | विट्ट      | १२०४    | विमन्त्र्य | ६६७     |
| कार्यिक    | १८८३    | कात्या       | १८४६    |            |         |            |         |

| शब्दः     | पंक्तिः  | शब्दः          | पंक्तिः  | शब्दः      | पंक्तिः  | शब्दः      | पंक्तिः  |
|-----------|----------|----------------|----------|------------|----------|------------|----------|
| कीराम     | ... १२१० | कुक्ष          | ... २३०६ | कुण्डल     | ... १०८० | कुमारी     | ... ७९५  |
| कीचका     | ... ०७१  | कुक्षर         | ... १५३६ | कुण्डलिन   | ... ४५२  | "          | ... १०८५ |
| कीनाश     | ... २७६६ | कुक्षराशन      | ... ६८९  | कुण्डी     | ... १४४४ | कुसुम      | ... १५१  |
| कीर       | ... १०३० | कुक्षल         | ... १७८५ | कुनप       | ... १११५ | "          | ... ५४१  |
| कीर्ति    | ... ३३३  | कुट            | ... ६५९  | कुनुक      | ... ४२३  | कुसुमनाम्ब | ... १७१  |
| कील       | ... ११३  | "              | ... १७७० | कुनुप      | ... १०७२ | कुसुमिका   | ... ७२९  |
| "         | ... २७३० | कुटका          | ... १७३३ | कुनु       | ... १७७२ | कुसुमिनी   | ... ५४४  |
| कीलक      | ... १८५२ | कुटज           | ... ७८१  | कुण्डल     | ... ४२२  | कुसुमर     | ... ५७५  |
| कीलाल     | ... ४७३  | कुटनट          | ... ७६२  | कुत्ता     | ... ३३७  | कुसुमती    | ... ५४३  |
| "         | ... २७३५ | "              | ... २११  | कुस्मित    | ... २१३३ | कुन्वा     | ... १३७९ |
| कीलिन     | ... २१०८ | कुटिल          | ... २१६७ | कुथ        | ... ९८०  | कुम्भ      | ... ७१६  |
| कीश       | ... ९०४  | कुटी           | ... ६४०  | "          | ... १५५२ | "          | ... १५४२ |
| कु...     | ... ५६३  | "              | ... २९७१ | कुडाल      | ... ६९२  | "          | ... २६०३ |
| "         | ... २८१६ | "              | ... २९७८ | कुनटी      | ... १९२३ | कुम्भकार   | ... १०४० |
| कुफार     | ... ११६९ | कुटुम्बव्यापृत | ... २०४७ | कुनाशक     | ... ८३१  | कुम्भसंभव  | ... १८४  |
| कुकुन्दर  | ... १२३३ | कुटुम्बिनी     | ... १०८५ | कुन्त      | ... १६५४ | कुम्भिका   | ... ५४३  |
| कुकुल     | ... २७४१ | कुटनी          | ... १११२ | कुन्तल     | ... १६२५ | कुम्भी     | ... ७२९  |
| कुकुट     | ... १०२२ | कुटिम          | ... २९६२ | कुन्द      | ... ७९४  | कुम्भीर    | ... ५०९  |
| कुकुन     | ... १०५७ | कुदमल          | ... ६८१  | "          | ... ८९१  | कुम्भीर    | ... १००३ |
| कुफुर     | ... ०१३  | कुटर           | ... १८५५ | "          | ... २९३३ | कुम्भीर    | ... ७९६  |
| "         | ... १२७१ | कुटार          | ... १६७१ | कुन्दुक    | ... ८९१  | कुम्भीर    | ... ७९८  |
| कुक्षि    | ... १२२८ | कुटेरक         | ... ८०७  | कुन्दुकी   | ... ८०६  | कुम्भीर    | ... ७९६  |
| कुक्षिमरी | ... २०६७ | कुडव           | ... १८८४ | कुप्य      | ... २१३३ | कुम्भीर    | ... ७८९  |
| कुटुम     | ... १३२० | कुटनक          | ... २०२८ | कुप्य      | ... १८८९ | "          | ... १०३३ |
| कुच       | ... १२२७ | कुत्त          | ... ६००  | कुवेर      | ... १३५  | कुम्भीर    | ... ७९६  |
| कुचटन     | ... १३३८ | कुणप           | ... १७०४ | "          | ... १५०  | कुम्भीर    | ... ७९६  |
| कुचर      | ... २०९९ | "              | ... २९३४ | कुवेरक     | ... ९०३  | कुम्भीर    | ... ७९६  |
| कुचाग्र   | ... १२२८ | कुणि           | ... ९०४  | कुवेराक्षी | ... ७५८  | कुम्भीर    | ... ७९६  |
| कुज       | ... १९५  | "              | ... ११६९ | कुल्ल      | ... ११६९ | कुम्भीर    | ... ७९६  |
| कुजिन     | ... २१६६ | कुण्ट          | ... २०५९ | कुमार      | ... ८०   | कुम्भीर    | ... ७९६  |
| कुक्ष     | ... ६४९  | कुण्ट          | ... ११४५ | "          | ... ३८६  | कुम्भीर    | ... ७९६  |
|           |          | "              | ... १७६९ | कुमारक     | ... ७९८  | कुम्भीर    | ... ७९६  |

| शब्द         | पति  | शब्द      | पति  | शब्द       | पति  | शब्द        | पति  |
|--------------|------|-----------|------|------------|------|-------------|------|
| उगटा         | १०९४ | उष्ट      | ९००  | वृषासन     | १३०९ | वृषीयोनि    | १०६  |
| गुणधिका      | १९११ | उष्ट      | ११८२ | वृम        | ५०८  | वृमि        | १०१४ |
| कुलपात्रिका  | १०८८ |           | २९६२ | वृल        | ३८१  | वृमिन्न     | ८६१  |
| कुश्रेष्ठिन् | १९३९ | कुमीद     | १०१४ | वृष्माण्डक | ९५९  | वृमिन्न     | १३२६ |
| कुलसनव       | १३५० | कुसीदिश   | १०१० | वृषण       | १०२५ | वृग         | २१४७ |
| कुलौ         | १०८८ | कुसुम     | ६८२  | वृषणस      | १०१२ | वृशानु      | १०८  |
| कुलाम        | १०६२ | कुसुमाभन  | १९१२ | वृकवाकु    | १०२२ | वृशानुरेतय  | ६५   |
| कुलाल        | १९४० | कुसुमेतु  | ५१   | वृषादिश    | १२५० | वृशाधिप     | १९५२ |
| कुलाछी       | १९११ | कुसुम     | १९१९ | वृच्छ      | ४६७  | वृषव        | १०३३ |
| कुलिग        | ९३   | कुसुम     | २६०७ | "          | १३५६ | वृषि        | १०१० |
| कुली         | ८३६  | कुलि      | ४२२  | वृन        | २४८८ | वृषिव       | १०१८ |
| कुलीन        | १३५८ | कुलुम्बुर | १०८२ | वृतपुङ्ख   | १६०३ | वृषीवल      | १०१८ |
| कुलीर        | ५०८  | कुलना     | १३५८ | वृनमान     | ६९६  | वृष्ट       | १०७३ |
| कुलमाप       | १०३३ | कुहर      | ४४०  | वृतमुख     | २०३३ | कृष्टि      | १३६४ |
|              | २९३७ | कुह       | २३२  | वृतरक्षण   | ३०३४ | वृष्ण       | ३५   |
| कुलमापामिपुत | १०८४ | कुहुर     | २०५९ | वृतसापतिता | १०८७ |             | २३८  |
| कुल्य        | १२१० | कुट       | ६४१  | वृनहस्त    | १६०३ |             | ३०४  |
| कुल्या       | ५३४  |           | १०७३ | वृताम्भ    | ११६  |             | १०७८ |
| कुलर         | ७२१  |           | २४०८ |            | २४६३ |             |      |
|              | २९७८ | वृटवन्न   | १९८१ | वृनिन्     | १३६४ | वृष्णपाकपल  | ७८३  |
| कुवलय        | ५४०  | वृगारमलि  | ७४२  |            | २०३३ | वृष्णपला    | ८३   |
| कुनाद        | २०९९ | वृटम्भ    | २१०१ | वृत्त      | २२३१ | वृष्णभेदी   | ८२०  |
| कुविन्द      | १९३१ | वृष       | ५१९  | वृत्ति     | १३४५ | वृष्णा      | ८४४  |
| कुवणी        | ४९९  | वृषक      | ४८६  | वृत्तिनासज | ६२   | वृष्णलोहित  | ३०८  |
| कुश          | ९८०  |           | ४९१  | वृत्त्या   | २६५२ | वृष्णरत्नम् | १०७  |
|              | २०६७ |           | १२२३ | वृदिमभूपव  | १३२९ | वृष्णवृत्ता | ७७८  |
| कुशान        | २६६  | वृवर      | १५८१ | वृम्भ      | २१७४ | वृष्णगार    | १०७  |
|              | २०३३ | वृष       | १२५८ | वृषा       | ३१२१ | वृष्णा      | ८४१  |
|              | २०३३ | वृषचीप    | ९३३  | वृषा       | ३०८  | वृष्णिवा    | १०३५ |
| कुशी         | १९४  | वृषिवा    | १०९४ | वृषाण      | १६६६ | वृषर        | ११०१ |
| कुशील        | १०५३ | वृदन      | ४२७  | वृषापी     | १९९६ | वृषा        | १०४० |
| कुशेयम       | ५४६  | वृपर      | १२३३ | वृषातु     | २०५४ | वृषिन्      | १०४८ |



| शब्दः           | पंक्तिः | शब्दः               | पंक्तिः | शब्दः        | पंक्तिः | शब्दः               | पंक्तिः |
|-----------------|---------|---------------------|---------|--------------|---------|---------------------|---------|
| केननी ...       | ९८८     | कैरव ...            | ५४१     | कोमनी ...    | ८९९     | कौमिका ...          | १६०८    |
| केतन ...        | १६६६    | कैलास ...           | १४०     | कोरदूप ...   | १७३९    | कौमनी ...           | ८८९     |
| " ...           | २७६२    | कैवत ...            | ४९७     | कोल ...      | ४८८     | कौपीन ...           | २७७८    |
| केतु ...        | २४२५    | कैवर्त्तानुस्तक ... | ९१२     | " ...        | ७२१     | कौमुदी ...          | १७७     |
| केदर ...        | २९३४    | कैवल्य ...          | २८९     | " ...        | ९९१     | कौमोडको ...         | ५६      |
| केदार ...       | १७०८    | कैशिक ...           | १२६५    | कोलका ...    | १३३२    | कौलटिनेय ...        | ११२७    |
| केनिपातक ...    | ४९०     | कैदय ...            | १२६५    | " ...        | १७७८    | कौलट्य ...          | ११२६    |
| केयूर ...       | १२८८    | कोक ...             | १००२    | कोलदल ...    | ९०९     | " ...               | ११२७    |
| केलि ...        | ४२६     | " ...               | १०३२    | कोलन्यस ...  | ३७६     | कौउटर ...           | ११२८    |
| केवल ...        | २७४२    | कोकनद ...           | ५५०     | कोलवह्नी ... | ८४३     | कौलीन ...           | २७६७    |
| कोश ...         | १२६४    | कोकनदच्छवि ...      | ३०६     | कोला ...     | ८४२     | कौलेय ...           | १०७१    |
| कोशपर्णा ...    | ८२६     | कोकिल ...           | १०२६    | कोलाहल ...   | ३६१     | कौशिक ...           | ७१६     |
| कोशपाशी ...     | १२६८    | कोकिलाक्ष ...       | ८५७     | कोलि ...     | ७२१     | " ...               | २३५१    |
| कोशव ...        | ३६      | कोटर ...            | ६७५     | कोविद ...    | १३६०    | कौशेय ...           | १२९६    |
| " ...           | ११६४    | कोटवी ...           | ११०७    | कोविदार ...  | ६९३     | कौत्तुभ ...         | ७६      |
| कोशवेश ...      | १२६७    | कोटि ...            | १६३६    | " ...        | १७०२    | क्रमच ...           | १९९८    |
| कोशान्धुनाम ... | ८०२     | " ...               | १६५४    | कोश ...      | १८८८    | क्रमर ...           | ८०२     |
| कोशिक ...       | ११६४    | " ...               | २४१०    | " ...        | २७७२    | " ...               | १०२७    |
| कोशिन् ...      | ११६४    | कोटिवर्षा ...       | ९१५     | कोशफल ...    | १३३३    | क्रतु ...           | १३७९    |
| कोशिनी ...      | ९०१     | कोटिश ...           | १७३०    | कोशातकी ...  | २३५१    | क्रतुव्यंस्त्रि ... | ६७      |
| कोत्तर ...      | ५५२     | कोट्ट ...           | २९३०    | कोप ...      | १०६२    | क्रतुमुज्ज ...      | १७      |
| " ...           | ६९९     | कोठ ...             | ११८२    | कोष्ट ...    | २४१५    | क्रथन ...           | १६९७    |
| " ...           | ७७६     | कोण ...             | ३७४     | कोष्ण ...    | २१४     | क्रन्दन ...         | १६८२    |
| " ...           | ७७८     | " ...               | १६५४    | कौकुटिक ...  | २३६८    | " ...               | २५८१    |
| कोसरिन् ...     | ९८९     | कोदण्ड ...          | १६३३    | कोक्षेयक ... | १६४६    | क्रन्दित ...        | ४३२     |
| कोटनजित् ...    | ४३      | कोट्टव ...          | १७३९    | कोटतक्ष ...  | १९४७    | क्रम ...            | १४३१    |
| कोट्य ...       | ७२९     | कोप ...             | ४१३     | कोटिक ...    | १९५७    | क्रमुक ...          | ७३०     |
| कोतय ...        | ४२१     | कोपना ...           | १०८१    | कोटिक ...    | १९५७    | " ...               | ७३१     |
| " ...           | २०१८    | कोपिन् ...          | २०८८    | कोणप ...     | ११८     | " ...               | ९८६     |
| कोटारक ...      | १७२९    | कोमल ...            | २१८०    | कौतुक ...    | ४२३     | क्रमेलन ...         | १८५६    |
| कोटारिक ...     | १७२९    | कोयटिक ...          | १०५८    | कौतूहल ...   | ४२३     | क्रयविक्रयिन्       | १८६३    |
| कोटार्य ...     | १७२९    | कोरक ...            | ६८०     | कौद्रवीण ... | १७२२    | क्रयिक ...          | १८६४    |

| शब्दः       | पङ्क्तिः | शब्दः       | पङ्क्तिः | शब्दः         | पङ्क्तिः | शब्दः        | पङ्क्तिः |
|-------------|----------|-------------|----------|---------------|----------|--------------|----------|
| क्रय        | १८६९     | जिहित       | २२२१     | धमा           | २६२०     | धीरावी       | ८४८      |
| प्रय        | ११९९     | क्रिष्ट     | ३४९      | धमिष्ट        | २०८७     | धीरिवा       | ७३९      |
| रिप्याद्    | ११८      | ,           | २२२१     | धमिन्         | २०८७     | धीरोद        | ३७१      |
| कस्याद्     | ११८      | धीनव        | ८६७      | धन्           | २०८७     | धार          | ११७७     |
| नायव        | १८६४     | हीनविवा     | ८३७      | धय            | २५९      | क्षत         | ११७७     |
| रिया        | ३१५      | नीव         | ११५२     | ,             | ११७६     | मुताभिनन     | १७४५     |
|             | २६४९     | ,           | २७६२     | ,             | १५०६     | क्षत्र       | २१२१     |
| क्रियास्त   | २०६०     | वेद्य       | २३०९     | ,             | २२६४     |              | २६९०     |
| मीडा        | ४२६      | होम         | १२०४     | "             | २६२६     | क्षुद्रगणिका | १३९३     |
|             | ४२७      | वाण         | ३५९      | क्षय          | ११७७     | क्षुद्रगण    | ५१३      |
|             |          | ,           | २२६५     | "             | १७४५     | क्षुद्रा     | ८३६      |
| दुःख        | १०३१     | वगन         | ३५९      | क्षयु         | ११७७     |              | २०४७     |
| दुःख        | ४१३      | वधित        | २२१५     | क्षान्त       | २२१८     |              | २६८९     |
| वष्ट        | ४३२      | वाण         | ३५९      | क्षामि        | ४०९      | क्षुभ        | १८१५     |
| वर          | २११०     | क्षण        | २३७      | क्षार         | १९०५     | क्षुभित      | २०६४     |
|             | २१७६     |             | ४३८      | क्षारव        | ६८०      | क्षुप        | ६६५      |
|             | २७१८     |             | २४२९     | क्षारगुत्तिका | ५६५      | क्षुमा       | १७४६     |
| वय          | १८६९     | क्षणदा      | २५२      | क्षारित       | २११०     | क्षुर        | ८५७      |
| क्षोड       | ९९३      | क्षणन       | १६९५     | क्षिति        | ५६१      | ,            | २९३५     |
|             | १२३८     | क्षणप्रभा   | १६२      | ,             | २४७५     | क्षुरक       | ७२८      |
| क्षोय       | ४१३      | क्षतव       | १२०१     | क्षिपा        | २२६२     | क्षुरम       | २९३५     |
| क्षोयन      | २०८८     | क्षमत्रय    | १४६०     | क्षित         | २१९९     | क्षुरिन्     | १९४८     |
| क्षोष्ट     | ९९८      | क्षण        | १५८६     | विष्णु        | २०८४     | क्षुल्लक     | १९६१     |
| क्षोष्टविवा | ८३४      | ,           | १०३४     | क्षिम         | १२८      |              | २१४७     |
| क्षोष्टी    | ८६८      |             | २४६०     |               | २२४८     |              | २२५५     |
| क्षोष्टी    | १०३१     | क्षत्रिय    | १४६९     | क्षिया        | २२६४     | क्षेत्र      | १७०८     |
| क्षोष्टारण  | ८०       | क्षत्रिया   | ११०१     | क्षीर         | २०७१     |              | १७२९     |
| रुत         | २२७०     | क्षत्रिवी   | ११०३     | क्षीर         | ४७५      | ,            | २६९५     |
| रुमय        | २२७०     | क्षत्रियाणी | ११०१     |               | १८०८     | क्षेत्र      | २७२      |
| रुिन        | २२३५     | क्षपा       | २२२      | क्षीरविदारी   | ८६९      |              | २४००     |
| रुितय       | ११९३     | क्षपावर     | १७४      | क्षीरगुटा     | ८६८      | क्षेत्रापीव  | १७१८     |
|             |          | क्षपा       | २६२०     |               |          | क्षेपण       | २२७२     |

| शब्दः         | पंक्तिः | शब्दः         | पंक्तिः | शब्दः         | पंक्तिः | शब्दः         | पंक्तिः |
|---------------|---------|---------------|---------|---------------|---------|---------------|---------|
| क्षेपणी ...   | २९२     | सञ्जरीट ...   | १०१८    | सलिनी ...     | २३३३    | गडक ...       | ५०१     |
| क्षेपिष्ठ ... | २२४७    | सट ...        | २९२९    | सलीन ...      | १५६६    | गडु ...       | २९३१    |
| क्षेम ...     | २६६     | सट्वा ...     | १३४९    | सलु ...       | २८४५    | गडुल ...      | ११५९    |
| ” ...         | २०५     | सङ्ग ...      | ९९५     | सलेदारु ...   | १७३६    | गण ...        | १०६७    |
| ” ...         | २९६२    | ” ...         | १६४५    | सल्या ...     | २३३३    | ” ...         | १६७९    |
| क्षोणि ...    | ५६१     | सङ्गिन् ...   | ९९५     | सात ...       | ५२१     | ” ...         | २४२६    |
| क्षोद् ...    | १६६५    | सण्ट ...      | १७६     | सादित ...     | २२४५    | गणक ...       | १४०५    |
| क्षोदिष्ठ ... | २४७     | सण्टपरशु ...  | ६१      | सारी ...      | १८८३    | गणनीय ...     | २१५३    |
| क्षोम ...     | ६१६     | सण्डविकार ... | १७९३    | सारीक ...     | १७७७    | गणरात्र ...   | २०६     |
| ” ...         | १२९५    | सण्टिक ...    | १७३९    | सारीवाप ...   | १७२७    | गणरूप ...     | ८०९     |
| क्षौट्र ...   | १९२१    | सदिर ...      | ७४७     | सिल ...       | ५६७     | गणहासक ...    | ९०५     |
| क्षौम ...     | १३००    | सदिरा ...     | ९३१     | सुर ...       | ९०९     | गणाधिप ...    | ७५      |
| क्ष्युत ...   | २००६    | सद्योत ...    | १०४४    | ” ...         | १५६६    | गणिका ...     | ७९१     |
| क्षमा ...     | ५६३     | सनि ...       | ६४६     | सुरणम् ...    | ११६७    | ” ...         | ११११    |
| क्षमाभृत् ... | ६३४     | सनित्र ...    | १७३१    | सुरणस ...     | ११६७    | गणिकारिका ... | ७८०     |
| ” ...         | १४७०    | सपुर ...      | ९८६     | सैट ...       | २१३३    | गणित ...      | २१५३    |
| क्ष्वेट ...   | ४५६     | सर ...        | २१५     | सैय ...       | ५२४     | गणैय ...      | २१५३    |
| क्ष्वेज ...   | ११८१    | ” ...         | १८६१    | सैला ...      | ४२७     | गण्ड ...      | १०७४    |
| ” ...         | २४७०    | सरणम् ...     | ११६६    | सोड ...       | ११७१    | ” ...         | १५४१    |
| क्ष्वेडित ... | २९६०    | सरणस ...      | ११६६    | स्यात ...     | २०४३    | गण्टक ...     | ९९५     |
| ख.            |         | सरपुष्पा ...  | ९२७     | स्यातर्हण ... | २०१०    | गण्टकारी ...  | ९३१     |
| ख ...         | १४४     | सरमञ्जरी ...  | ८२६     | स्याति ...    | २०६८    | गण्टगैल ...   | ६४५     |
| ” ...         | २३७१    | खरा ...       | ७८६     | ग.            |         | गण्टाली ...   | ९६६     |
| ” ...         | २९३८    | खराश्वा ...   | ८७१     | गगन ...       | १४४     | गण्टीर ...    | ९६७     |
| खग ...        | १०५१    | खजू ...       | ११८०    | गङ्गा ...     | ५२८     | गण्टूपद ...   | ५१०     |
| ” ...         | १६४०    | खजूर ...      | ९८८     | गङ्गाधर ...   | ६७      | गण्टूपदी ...  | ५१७     |
| ” ...         | २३७३    | ” ...         | १८९९    | गङ्गा ...     | १५३६    | गण्टूपा ...   | २०१५    |
| खगेश्वर ...   | ५७      | खजूरी ...     | ९८८     | गङ्गाता ...   | १५४०    | गतनासिक ...   | ११६६    |
| खजाफा ...     | १७७४    | खर्व ...      | ११६५    | गङ्गमध्या ... | ८९५     | गद् ...       | १२७७    |
| खज ...        | ११७१    | ” ...         | २१६५    | गङ्गानन ...   | ६७      | गद्य ...      | २९५६    |
| खजन ...       | १०१८    | खल ...        | २११८    | गङ्गा ...     | ६०८     | गङ्गी ...     | १५७०    |
|               |         | खलपू ...      | २०५८    |               |         | गङ्ग ...      | २९९     |

| शब्द       | पति  | शब्द     | पति  | शब्द      | पति  | शब्द        | पति   |
|------------|------|----------|------|-----------|------|-------------|-------|
| गन्धक      | १९१० | गरिष्ठ   | २२४८ | गवय       | १००९ | गिरि        | ७५    |
| गन्धकुटी   | ८९४  | गरी      | ७८६  | गवस       | १९०६ | "           | २२७२  |
| गन्धम      | २५६४ | गरु      | ५७   | गवाथ      | ६१०  | गिरिकर्ण    | ८५६   |
| गन्धमाडुली | ८७७  | गदग्धज   | ३७   | गवापी     | ९६१  | गिरिका      | १०११  |
| गन्धकरी    | ७६०  | गङ्गाधर  | २८०  | गवेधु     | १७५६ | गिरिज       | १०१४  |
| "          | ७७६  | गरत्     | १०५९ | गवेधुवा   | १७५६ | गिरिजामय    | १९०६  |
| गन्धमादन   | ६३९  | गरमन्    | ५७   | गवेधना    | १७१६ | गिरिमण्डिका | ७८१   |
| गन्धमूली   | ९५६  | "        | १०५५ | गवेधित    | २२३४ | गिरिध       | ६१    |
| गन्धस      | १९१५ |          | २४५० | गव        | १८०७ | गिरीध       | ६१    |
| गन्धर्व    | २१   | गगरी     | १८५५ | गवा       | १८२७ | गिरित       | २२४५  |
| "          | १०४  | गगित     | १६१  | गधूनि     | ५९२  | गीत         | ३६२   |
| "          | १००९ | "        | १५३९ | गहन       | ६५०  | गीर         | ३१२   |
| "          | १५५५ | गर्ग     | ४४२  | "         | २१९४ | गीव         | २२४४  |
| "          | २६०० | गदम      | १८६१ | गहुर      | ६४५  | गीणि        | २२७२  |
| गन्धवहलक   | ७४९  | गर्भाण्ड | ७३४  | गह्व      | २७०१ | गीपति       | १९२   |
| गन्धवट     | १२३  | गदम      | २०६८ | गह्व      | १८९५ | गिनाण       | १७    |
| गन्धवहा    | १२५२ | गम       | ११५१ | "         | २६४६ | गुग्गुल     | ७१६   |
| गन्धवाह    | १२३  |          | २६०५ | गह्वरणी   | ८८२  | गुग्ग       | १२८४  |
| गन्धसार    | १२३५ | गमन      | १४४३ | गाड       | १३३  | गुग्ग       | ६८१   |
| गन्धसमन्   | १९१० | गमागार   | ६०९  | गागि      | १११८ | गुग्ग       | १०८४  |
| गन्धक      | १९१० | गमाशय    | ११५० | गागिडव    | १६३५ | गुग्ग       | ८४४   |
| गन्धिकी    | ८९५  | गन्धिकी  | १११७ | गागिडव    | १६३५ | गुग्ग       | २४१८  |
| गन्धोत्तमा | २००८ | गन्धुन्  | ९७९  | गाग       | १२१४ | गुग्ग       | ७०२   |
| गन्धोली    | १०४२ | गर्व     | ४०५  | "         | १५४८ | गुग्ग       | ७०५   |
| गन्धलि     | २१०  | गहण      | ३३७  | गागुलेपनी | १३४० | गुग्ग       | ८५९   |
| गन्धिर     | ४९६  | गद्ग     | २१२३ | गान       | ३६२  | गुग्ग       | ८१३   |
| गम         | १६५८ | गद्गदिन् | २०९८ | गाधार     | ३६३  | गुग्ग       | १६३७  |
| गमन        | १६५८ | गल       | १२४९ | गध्वनी    | ७४०  | "           | -१७६३ |
| गम्भारी    | ७१९  | गलकम्बल  | १८३२ | गध्वन     | १८९० | "           | १९८२  |
| गम्भीर     | ४९६  | गलनिका   | १७६८ | गध्वन     | १११८ | "           | २४२८  |
| गम्भ       | २३०९ | गलित     | २२३२ | गध्वन     | १३९९ | गुग्ग       | ४९१   |
| गरु        | ४५६  | गल्पा    | २३३४ | गध्व      | ७१४  |             |       |

| शब्दः      | पङ्क्तिः | शब्दः       | पङ्क्तिः | शब्दः     | पङ्क्तिः | शब्दः     | पङ्क्तिः |
|------------|----------|-------------|----------|-----------|----------|-----------|----------|
| गुणित      | ... २२०१ | गृध्न       | ... १४५  | गोचर      | ... २९२  | गोपुर     | ... २७०० |
| गुणित्त    | ... २२०२ | गृध्नु      | ... २०६८ | गोनिह्वा  | ... ८८७  | गोप्यक    | ... १९६२ |
| गुद        | ... १२२० | गृध्र       | ... १०३० | गोदुम्बा  | ... ९६१  | गोमत्     | ... १८२३ |
| गुन्द्र    | ... ९७२  | गृध्रसी     | ... २९१५ | गोण्ड     | ... २९३० | गोमय      | ... १८०७ |
| गुन्द्रा   | ... ७५९  | गृष्टि      | ... ९५०  | गोत्र     | ... ६३५  | गोनायु    | ... १९७  |
| "          | ... ९६८  | गृह         | ... ६०१  | "         | ... १३५४ | गोमिन्    | ... १८२३ |
| गुता       | ... २२०२ | "           | ... ६०२  | "         | ... २६९६ | गोरस      | ... १८१२ |
| "          | ... २०३६ | "           | ... २८११ | गोत्रभिद् | ... ८४   | गोर्द     | ... १२०४ |
| गुति       | ... २४८३ | गृहगोधिका   | १०१७     | गोत्रा    | ... ५६३  | गोल       | ... १९३५ |
| गुरण       | ... २२७२ | गृहपति      | ... १४९७ | "         | ... २८२७ | गोलक      | ... ११४७ |
| गुरु       | ... १९२  | गृह्यालु    | ... २०७८ | गोदारण    | ... १७३४ | गोला      | ... १९२३ |
| "          | ... १३६६ | गृहस्थूण    | ... २९५५ | गोदुह     | ... १८२१ | गोलीड     | ... ७२७  |
| "          | ... २६७९ | गृहागत      | ... १४२० | गोधन      | ... १८२३ | गोलोमी    | ... ८५३  |
| गुधिणी     | ... १११७ | गृहाराम     | ... ६५१  | गोधा      | ... १६३६ | "         | ... ९६६  |
| गुल्फ      | ... १२१७ | गृहावत्रहणी | ६१८      | गोधापदी   | ... ८८६  | "         | ... १९२८ |
| गुल्म      | ... ६६६  | गृहिन्      | ... १३५९ | गोधि      | ... १२५७ | गोन्द्रनी | ... ७५९  |
| "          | ... १२०५ | गृह्यक      | ... १०७४ | गोधिका    | ... ५१०  | गोविन्द   | ... ३७   |
| "          | ... १६२९ | "           | ... २०५७ | गोधूम     | ... १७४२ | "         | ... २७१७ |
| "          | ... २६१९ | गोन्दुक     | ... १३५० | गोनर्द    | ... ९१२  | गोधिप     | ... १८०५ |
| गुल्मिनी   | ... ६६७  | गेह         | ... ६०१  | गोनस      | ... ४४६  | गोशाल     | ... २९७७ |
| गुवाक      | ... ९८६  | गेरिक       | ... ६४८  | गोप       | ... १४८१ | गोदीर्प   | ... १३३६ |
| गुह        | ... ७८   | "           | ... २३५८ | "         | ... १८२१ | गोष्ठ     | ... ५८१  |
| गुहा       | ... ६४४  | गेरेय       | ... १९१४ | "         | ... २५९४ | गोष्ठी    | ... १३८६ |
| "          | ... ८३४  | गो          | ... १८३९ | गोपति     | ... १८३१ | गोष्पद्   | ... २५२२ |
| गुह्य      | ... २६४३ | "           | ... २३८५ | गोपरस     | ... १९१५ | गोसंख्य   | ... १८२१ |
| गुह्यक     | ... २२   | गोकण्टक     | ... ८४६  | गोपानसी   | ... ६२२  | गोस्तन    | ... १२८४ |
| गुह्येश्वर | ... १३५  | गोकर्ण      | ... १००८ | गोपायित   | ... २२३६ | गोस्तनी   | ... ८६३  |
| गृह        | ... २००२ | "           | ... १२४० | गोपाल     | ... १८२१ | गोस्थानक  | ... ५८३  |
| गृहपाद्    | ... ४५२  | गोकर्णी     | ... ८१६  | गोपी      | ... ८७२  | गौ        | ... १८२६ |
| गृहपुरण    | ... १४९४ | गोकुल       | ... १८२३ | गोपुर     | ... ६२५  | "         | ... १८३९ |
| गृह्य      | ... १०८९ | गोक्षुरक    | ... ८४६  | "         | ... ९१२  | गौतम      | ... ३०   |
| गृह्य      | ... २२१७ |             |          |           |          | गौधार     | ... १००० |

| शब्द      | पति  | शब्द       | पति  | शब्द    | पति  | शब्द        | पति  |
|-----------|------|------------|------|---------|------|-------------|------|
| निधेय     | १००० | मान्       | २५४६ | परमर    | २०६५ | घ           |      |
| निधिर     | १००० | मास        | १८१५ | घव      | २१८  | घ           | २८१८ |
| निर       | १०२  | माह        | ५०९  | घाग     | १२५० |             | २८५९ |
|           | १०५  |            | २४६५ | घागिन्  | १६६१ | चकोरक       | १०५७ |
|           | २४११ | घाहिन्     | ६०९  | घान     | ६९८  | घन          | १०३२ |
| नीरी      | ७२   | मावा       | १२४९ | घागुर   | २०८१ |             | १५७९ |
|           | १०८९ | मीध        | २५१  |         | २११९ |             | १६२४ |
| नीलीन     | ५८३  | मैवेयक     | १२८१ | घास     | ४८३  |             | २९९९ |
| निध       | ९७२  | गल्ल       | २२४६ | मुनिवा  | १२१७ | चक्रकारक    | ९०६  |
| निधक      | १९२७ | गलह        | २०१९ | घुग     | २९३१ | चक्रपाणि    | ३९   |
| निधन      | २१९६ | गलान       | १९८९ | घूमिन   | २०८९ | चक्रमर्दन   | ९४३  |
| निधपण     | ९१३  | गलालु      | १९८९ | घुग     | ३९७  | चक्रहा      | ९६८  |
| निधक      | ७२३  | गले        | १७३  |         | २३१४ | चक्रवर्तिन  | १४७३ |
|           | ८०२  |            |      |         | २४३७ | चक्रवर्तिनी | ९५७  |
| नक्ष      | ३५०  | घ          |      |         | ७१०  | चक्राव      | १०३२ |
|           | २४४६ | घट         | १७७० | घुनि    | १८१० | चक्राक      | १५६  |
| नष्ट      | २३३  | घटा        | १६८१ | घुन     | २२१६ |             | ६३६  |
|           | २२६५ | घटीवण      | १९८३ | घुष्टि  | ९९१  | चक्राक्ष    | १०३४ |
| "         | २८०७ | घण्टापात्र | ७२७  | घोटक    | १५५४ | चक्राक्षी   | ८२   |
| महनीरज्   | ११८३ | घण्टापथ    | ५९३  | घोगा    | १२५२ | चक्राणि     | ४८०  |
| महपति     | २८५  | घण्टारजा   | ६६३  | घोगिन्  | ९९२  | चक्रिन्     | ४५१  |
| महनी      | २०७८ | घन         | १५९  | घोण्टा  | ७१२  | चक्रोव      | १८६१ |
| घान       | ६३१  | "          | ३७०  |         | १८६  | चक्रु भवसु  | ४५२  |
|           | २६१६ |            | ३७९  | घोर     | ४०१  | चक्रु       | १२५९ |
| ग्रामणी   | २४२३ |            | १६४९ | घोष     | ६३३  | चक्रुष्या   | १९११ |
| ग्रामनक्ष | १९७७ |            | २१५६ | घोष     | ८८३  | चक्रु       | २१७४ |
| ग्रामता   | ८३३४ | घनरस       | ४७६  | घोषण    | ३३४  | चक्रु       | १६३  |
| ग्रामीण   | ८३७  | घनसार      | १३३३ | ग्रान   | १२५७ | "           | १०६० |
| ग्राम्य   | ३४८  | घनावन      | १५५४ | ग्रानपण | २२०४ | चक्र        | १०२३ |
| ग्राम्यधम | १४६६ | घम         | ४२८  | ग्रान   | २२०४ | चक्र        | १२३  |
| ग्रामन्   | ६३५  |            | २६१८ |         |      |             | १०२४ |
|           | ६४०  |            |      |         |      |             |      |

| शब्दः     | पंक्तिः | शब्दः      | पंक्तिः | शब्दः    | पंक्तिः | शब्दः     | पंक्तिः |
|-----------|---------|------------|---------|----------|---------|-----------|---------|
| चङ्घाकरिक | १६१३    | जनि        | २७४     | जया      | ७७९     | जवनिका    | १३१४    |
| चङ्घाल    | १६१३    | जनी        | ९५५     | जय्य     | १६१५    | जहुतनया   | ५२८     |
| जटा       | ६७०     | ”          | १०९१    | जरण      | १७७९    | जागरा     | २२८७    |
| ”         | १२६८    | जनुम्      | २७४     | जरत्     | ११५८    | जागरित्   | २०८९    |
| ”         | २४१०    | जन्तु      | २७५     | जरद्भव   | १८२८    | जागरूक    | २०८९    |
| जटामाखी   | ९१६     | जन्तुफल    | ६९२     | जरा      | ११५५    | जागर्या   | २२८७    |
| जटिन्     | ७१३     | जन्मन्     | २७४     | जरायु    | ११५०    | जाडुलिक   | ४६०     |
| जटिला     | १०६     | जन्मिन्    | २७५     | जरायुज   | २१२५    | जाड्विक   | १६१३    |
| जटर       | १२२७    | जन्य       | १४६८    | जल       | ४७२     | जात       | २७६     |
| ”         | २१७७    | ”          | १६७४    | जलजन्तु  | ५०६     | जातरूप    | १८९६    |
| ”         | २७१४    | ”          | २६५३    | जलधर     | १५८     | जातवेदस्  | १०६     |
| जट        | १८२     | जन्त्यु    | २७५     | जलनिधि   | ४७०     | जातापत्या | ११०६    |
| ”         | २१०१    | जप         | १४४६    | जलनिर्गम | ४८०     | जाति      | २७६     |
| जडुल      | ११७७    | जपापुष्प   | ८००     | जलनिली   | ५४३     | ”         | ७९३     |
| जतु       | १३२३    | जन्पती     | ११४९    | झलपुष्प  | ७९४१    | ”         | २४७०    |
| जतुक      | १७८६    | जम्बाल     | ४८५     | जलप्राय  | ५५७     | जातीकोश   | ११३८    |
| जतुकृत्   | ९५५     | जम्बीर     | ६९७     | जलमुच्   | १५९     | जातीफल    | १३३८    |
| जतुका     | १०३९    | ”          | ८०७     | जलव्याल  | ४४८     | जातु      | २८५६    |
| ”         | ९५५     | जम्बु      | ६८६     | जलाधार   | ५१७     | जातुष     | १९८७    |
| जडु       | १२३०    | जम्बुक     | ९९८     | जलाशय    | ५१७     | जातोक्ष   | १८२९    |
| जनक       | ११३०    | ”          | २३४०    | ”        | ९७७     | जातु      | १२१८    |
| जनंगम     | १९६७    | जम्बू      | ६८६     | जलोद्धार | ४८६     | जावाल     | १९५०    |
| जनना      | २३६४    | जन्म       | ६९७     | जलौक     | ५११     | जामातृ    | ११३८    |
| जनन       | २७४     | जन्मनेदिन् | ८६      | जलौका    | ५११     | जामि      | २६१०    |
| ”         | १३५४    | जम्मल      | ६९७     | जल्पाक   | २०९६    | जाम्बव    | ६८६     |
| जननी      | ११३१    | जन्मीर     | ६९७     | जल्पित   | २२३९    | जाम्बूनद  | १८९७    |
| जनपद      | ५७३     | जय         | ७७९     | जव       | १२८     | जायक      | १३२४    |
| जनवित्री  | ११३१    | ”          | १६८७    | ”        | १६१४    | जाया      | १०८५    |
| जन्तुनि   | २२४     | ”          | २२७३    | जघन      | १५५८    | जायाजीव   | १९२२    |
| जनादन     | ३८      | जयन        | २२७३    | ”        | १६१४    | जायापती   | ११४९    |
| जनाश्रय   | ६१०     | जयन्त      | ९१      | ”        | २३२६    | जायु      | ११७४    |
|           |         | जयन्ती     | ७७९     |          |         |           |         |

| शब्द | पङ्क्तिः | शब्द      | पङ्क्तिः | शब्द          | पङ्क्तिः | शब्दः    | पङ्क्तिः |
|------|----------|-----------|----------|---------------|----------|----------|----------|
| जल   | ११४४     | जीवन      | १७०९     | ज्ञत          | २२२०     | ज्ञतरी   | २९१४     |
| जल   | ४९८      | जीवना     | ९३२      | ज्ञप्ति       | २७९      | ज्ञय     | ५००      |
| जल   | २४२६     | जीवनीया   | ९३२      | ज्ञातसिद्धांत | १४९७     | ज्ञया    | ८८२      |
| जल   | ६८०      | जीवन्तिका | ८१२      | ज्ञानि        | ११४२     | ज्ञात    | २९७०     |
| जल   | १९५६     | जीवन्ती   | ८१४      | ज्ञातृ        | २०८५     | ज्ञात    | ७२८      |
| जल   | ८८४      | जीवन्ती   | ९३२      | ज्ञातय        | ११४३     | ज्ञिप्ति | ७९८      |
| जल   | १९६१     | जीवा      | ९३२      | ज्ञान         | २८८      | ज्ञिप्ति | १०४३     |
| जल   | २०५९     | जीवा      | ९३२      | ज्ञानि        | १२९६     | ज्ञिप्ति | १०४३     |
| जल   | २०६४     | जीवा      | १३०७     | ज्ञानि        | १६१      | ज्ञिप्ति | १०४३     |
| जल   | ८२९      | जीवा      | १२५६     | ज्ञानि        | १६२७     | ज्ञिप्ति | १०४३     |
| जल   | १६२१     | जीवा      | १७०७     | ज्ञानि        | २२६७     | ज्ञिप्ति | १०४३     |
| जल   | २६       | जीवा      | ३३७      | ज्ञानि        | ११५९     | ज्ञिप्ति | १०४३     |
| जल   | ८३       | जीवा      | २९३      | ज्ञानि        | १८०५     | ज्ञिप्ति | १०४३     |
| जल   | १६२१     | जीवा      | १३०५     | ज्ञानि        | २४१७     | ज्ञिप्ति | १०४३     |
| जल   | २१६६     | जीवा      | २३२६     | ज्ञानि        | २४६      | ज्ञिप्ति | १०४३     |
| जल   | २६१७     | जीवा      | २३२६     | ज्ञानि        | १०४४     | ज्ञिप्ति | १०४३     |
| जल   | ४५४      | जीवा      | ४३२      | ज्ञानि        | ९४८      | ज्ञिप्ति | १०४३     |
| जल   | १२५६     | जीवा      | ४३२      | ज्ञानि        | २७९५     | ज्ञिप्ति | १०४३     |
| जल   | ११५८     | जीवा      | १६१६     | ज्ञानि        | १७७      | ज्ञिप्ति | १०४३     |
| जल   | १५९      | जीवा      | १६२१     | ज्ञानि        | १७९५     | ज्ञिप्ति | १०४३     |
| जल   | ७८५      | जीवा      | १८१८     | ज्ञानि        | २२२      | ज्ञिप्ति | १०४३     |
| जल   | २४५१     | जीवा      | १६१५     | ज्ञानि        | ८८४      | ज्ञिप्ति | १०४३     |
| जल   | १७७९     | जीवा      | १६१६     | ज्ञानि        | ११८५     | ज्ञिप्ति | १०४३     |
| जल   | ११५८     | जीवा      | १७३      | ज्ञानि        | २३२६     | ज्ञिप्ति | १०४३     |
| जल   | २२६७     | जीवा      | २०३७     | ज्ञानि        | १०६      | ज्ञिप्ति | १०४३     |
| जल   | १३०३     | जीवा      | २३५६     | ज्ञानि        | ११३      | ज्ञिप्ति | १०४३     |
| जल   | १९३      | जीवा      | १३२६     | ज्ञानि        | १०२      | ज्ञिप्ति | १०४३     |
| जल   | १७०६     | जीवा      | २८३७     | ज्ञानि        | २८५१     | ज्ञिप्ति | १०४३     |
| जल   | ७३६      | जीवा      | ११७९     | ज्ञानि        | ६४३      | ज्ञिप्ति | १०४३     |
| जल   | ७३३      | जीवा      | १३६३     | ज्ञानि        | ३७७      | ज्ञिप्ति | १०४३     |
| जल   | १०५७     | जीवा      | २२२०     | ज्ञानि        | ३७७      | ज्ञिप्ति | १०४३     |
| जल   | ४७३      | जीवा      | —        | ज्ञानि        | —        | ज्ञिप्ति | —        |



| शब्दः        | पंक्तिः | शब्दः         | पंक्तिः | शब्दः        | पंक्तिः | शब्दः            | पंक्तिः |
|--------------|---------|---------------|---------|--------------|---------|------------------|---------|
| त.           |         | तनुत्र ...    | १५९६    | तमिन् ...    | ४४३     | तर्मन् ...       | १३९०    |
| तक्र ...     | १८१३    | तनू ...       | १२१५    | तमिच्चा ...  | २२४     | तर्प ...         | ४१७     |
| तक्षक ...    | २३४३    | तनूकृत ...    | २२२२    | तमी ...      | २०३     | , ...            | १८१७    |
| तक्षन् ...   | १९४६    | तनूनपात् ..   | १०६     | तमोनुद् ...  | २५१३    | तल ...           | १६३६    |
| तट ...       | ४८१     | तनूह ...      | १०५९    | तमोपह ...    | २८१२    | " ...            | ३७३९    |
| तटिनी ...    | ५२६     | " ..          | १२७१    | तरक्षु ...   | ९९०     | तलिन ...         | २५८८    |
| तडाग ...     | ५००     | तनु ...       | १९८४    | तरङ्ग ...    | ४७७     | तल्प ...         | २५९६    |
| तटित् ...    | १६३     | तनुभ ...      | १७४१    | तरङ्गिणी ... | ५२६     | तल्लज ...        | २६८     |
| तडित्वत् ... | १५८     | तनुवाय ...    | १०१३    | तरणि ...     | २०४     | तट ...           | २२२२    |
| तण्डक ...    | २९६०    | " ...         | १९४१    | " ...        | ४८७     | तत्कर ...        | १९७७    |
| तण्डुल ..    | ८६१     | तन्न ...      | २७०५    | " ...        | ७९५     | तांडव ...        | ३८१     |
| तण्डुलीय ... | ९२०     | तन्नक ...     | १२९७    | तरपण्य ...   | ४८९     | " ...            | २९६३    |
| तत ...       | ३६९     | तन्त्रिका ... | ८१३     | तरल ...      | १२७८    | तात ...          | १२३०    |
| " ...        | २१९६    | तन्द्री ...   | ४३५     | " ...        | २१७४    | तात्रिका ...     | १४९७    |
| ततस् ...     | २८५४    | " ...         | २६८७    | तरला ...     | १८०६    | तापस ...         | १४३६    |
| तत्काल ...   | १५०५    | तप ...        | २५२     | तरस् ...     | १२७     | तापसतर ...       | ७४०     |
| तत्र ...     | ३७९     | तपन ...       | २०६     | " ...        | १६७१    | तापिष्ठ ...      | ७८४     |
| तत्पर ...    | २०४०    | " ...         | ४६२     | तरस ...      | ११९९    | तामरस ...        | ५४७     |
| तथा ...      | २८६६    | तपनीय ...     | १८९५    | तरस्विन् ... | १६१४    | नामलकी ...       | ९०२     |
| " ...        | २८९४    | तपस् ...      | २४४     | " ...        | २५९०    | ताम्रूलवल्ली ... | ८८८     |
| नयागन ...    | २५      | " ...         | २७९९    | तरि ...      | ४८७     | ताम्रुली ...     | ८८८     |
| तय्य ...     | ३५४     | तपस्य ...     | २४५     | तर ...       | ६५८     | ताम्रक ...       | १९००    |
| तद् ...      | २८५५    | तपस्विन् ...  | १४३६    | तरुण ...     | ११५७    | ताम्रकर्णी ...   | १५४     |
| तदा ...      | २८९३    | तपस्विनी ...  | ९१६     | तरुणी ...    | १०९०    | ताम्रकुट्टर ...  | १९४५    |
| तदात्य ...   | १५२५    | तम ...        | १९७     | तर्क ...     | २८२     | ताम्रचूड ...     | १०२२    |
| तदानीन् ...  | २८९३    | तमन् ...      | २७३     | तर्कारी ...  | ७७९     | तार ...          | ३६६     |
| तनय ...      | ११०८    | " ...         | ४४३     | तर्जनी ...   | १२३६    | " ..             | २६६७    |
| तनु ...      | १२१५    | " ...         | २७०८    | तर्णक ...    | १८२९    | तारकजित्         | ७९      |
| " ...        | २१४७    | तमस्विनी ...  | २२३     | तर्दू ...    | १७७४    | तारका .          | १८६     |
| " ...        | २१५६    | तमाल ...      | ७८४     | तर्पण ...    | १३८०    | " ..             | १२५८    |
| " ...        | २५६०    | " ...         | २९६१    | " ...        | १८१९    | तारा ...         | १८६     |
|              |         | तमाळपत्र ...  | १३१९    | " ...        | २२५८    | तारुण्य ...      | ११५३    |

| शब्दः       | पति  | शब्द         | पति  | शब्द       | पति  | शब्दः    | पति  |
|-------------|------|--------------|------|------------|------|----------|------|
| साक्ष्ये    | ५७   | निमित्त      | २२३५ | तीव्र      | १३३  | सुरासाह  | १७   |
| "           | २६२६ | निमित्त      | ३३३  | तीव्रवेदना | ३६५  | सुरीय    | ११२० |
| तीक्ष्णशैल  | १९१० | तिरस्        | २८३८ | ति         | २८१९ | सुरष्क   | १३३० |
| ताण         | १८०  |              | २८६१ | "          | २८५९ | सुला     | १८८० |
| "           | ९८५  | तिरम्बरिणी   | १३१३ | "          | २८७९ | सुलाकोटी | १३९२ |
| "           | १२३० | तिरस्त्रिषया | ३०६  | सुक्ष्म    | ६९९  | सुल्य    | २००२ |
| "           | १९१० | तिरिष्ट      | ७१३  | सुक्ष्म    | २१६३ | सुल्यपान | १८१६ |
| ताण्ण्य     | १२८० |              | २९५५ | सुक्ष्मी   | ९२७  | सुगर     | २९३  |
| ताण्ण्यर्णा | ८९३  | तिरोधान      | १७०  | सुच्छ      | २१३७ | सुवरिषा  | ९१०  |
| ताण्ण्यलिका | ८८६  | तिरोहित      | १६९१ | सुष्ट      | १२५१ | सुष      | ७६५  |
| ताण्ण्यलक   | १३५३ | नियम्        | २०९३ | सुष्ठुवेरी | ८८०  | "        | १७५१ |
| ताण्ण्य     | ४७   | निलय         | ७२८  | "          | ९२६  | सुषार    | १८०  |
| ताली        | ९०२  |              | ११७२ | सुय        | १९०९ | "        | १८३  |
| "           | ९८८  | "            | १२०३ | सुयथा      | ८३८  | सुयित    | १९   |
| साधु        | १२७५ |              | १३१९ |            | ८९९  | सुयित    | १८०  |
| साधत्       | २८२८ |              | १७९२ | सुयथाशन    | १९०८ | सुय      | १६३३ |
| तिक्त       | २९५  | तिक्तालक     | ११७२ | सुय        | १२२७ | सुय      | १६३३ |
| तिक्तक      | ९७८  | तिक्तरणा     | १३३७ | सुयपरिभूत  | १९६५ | सुय      | १६३३ |
| तिक्तशाक    | ६९८  | तिक्तपिष्ट   | १७३३ | सुयिम      | ११६२ | सुय      | ७३१  |
| तिक्त       | २१५  | तिक्तेष      | १७३३ | "          | ११९५ | सुय      | २६६५ |
| तिमल        | १७५८ | तिक्तिर      | ३३७  | सुयि       | ११६२ | सुय      | १२९  |
| तिमिथा      | ३०९  | तिक्त्य      | १७२१ | "          | ११९५ | सुय      | ७३०  |
| तिमिधु      | २०८७ | तिक्त्र      | ७१३  | सुय        | ११६२ | सुय      | १९१८ |
| तिमिरि      | १०५७ | तिप्य        | १८८  | सुय        | ९०३  | सुयिका   | १९९३ |
| तिमि        | २१७  | "            | २६२९ | सुयगाय     | १९३१ | सुयिका   | २१०७ |
| तिमिध       | ७१   | तिप्यपला     | ७६३  | सुयुक्त    | १६८० | सुयिका   | २१०२ |
| तिमिडी      | ७३५  | तीक्ष्ण      | २१५  | सुयुक्ती   | ९६०  | सुयिका   | २८६७ |
| तिमिडीक     | १७७७ | "            | १९०१ | सुयुक्त    | १७५३ | सुयिका   | २८६७ |
| तिमिडुक     | ७२५  |              | २३३२ | सुयुक्त    | १७५३ | सुयुक्त  | ३१६  |
| तिमिडुकी    | २९११ | तीक्ष्णगायक  | ७१०  | सुयुक्त    | १७५३ | सुयुक्त  | ९८३  |
| तिमि        | ५०५  | तीक्ष्ण      | ३८१  | सुयुक्त    | १३१  | सुयुक्त  | १७५६ |
| तिमिडिल     | ५०६  | तीक्ष्ण      | २५०७ | सुयुक्त    | २२५३ | सुयुक्त  | ९६९  |

| शब्दः            | पंक्तिः | शब्दः           | पंक्तिः | शब्दः            | पंक्तिः | शब्दः           | पंक्तिः |
|------------------|---------|-----------------|---------|------------------|---------|-----------------|---------|
| तृणराज ...       | ९८५     | तोमर ...        | १६५३    | त्रिदश ...       | १३      | त्वक् ...       | १२९४    |
| तृणशून्य ...     | ७८७     | तोय ...         | ४७५     | त्रिदशल्य ...    | ११      | त्वक्क्षीरी ... | १९२५    |
| तृण्या ...       | ९८४     | तोयपिप्पली ...  | ८७०     | त्रिदिव ...      | ११      | त्वक्पत्र ...   | ९१७     |
| तृनीयाकृत ...    | १७२४    | तोरण ...        | ६२५     | त्रिदिवेश ...    | १४      | त्वक्सार ...    | ९६९     |
| तृतीयामकृति ...  | ११५२    | तौर्यत्रिक ...  | ३८२     | त्रिपथगा ...     | ५२९     | त्व ...         | २१८९    |
| तृत ...          | २२३०    | त्यक्त ...      | २२३८    | त्रिपुटा ...     | ८६४     | त्वच् ...       | ६७३     |
| तृति ...         | १८१९    | त्याग ...       | १४१०    | " ...            | ८९९     | " ...           | ११९८    |
| तृप् ...         | ४१६     | त्रपा ...       | ४०८     | त्रिपुरान्तक ... | ६६      | त्वच ...        | ९१७     |
| " ...            | १८१७    | त्रपु ...       | १९१७    | त्रिफला ...      | १९२९    | त्वचिसार ...    | ६९०     |
| तृष्णक् ...      | २०६९    | त्रयी ...       | ३१६     | त्रिमण्डी ...    | ८६५     | त्वर ...        | २३०२    |
| तृष्णा ...       | ७४३७    | " ...           | ३१७     | त्रियामा ...     | ७२२     | त्वरित ...      | १२८     |
| तेजन ...         | ९७०     | त्रस ...        | २१७२    | त्रिलोचन ...     | ६४      | " ...           | १६१४    |
| तेजनक ...        | ९७२     | त्रसर ...       | २२९८    | त्रिवर्ग ...     | १४६७    | त्वष्ट ...      | २२२२    |
| तेजनी ...        | ८१५     | त्रस्तु ...     | २०७७    | त्रिविक्रम ...   | ४०      | त्वष्टृ ...     | १९४६    |
| तेजम् ...        | ११९७    | त्राण ...       | २२३६    | त्रिविष्टप ...   | १२      | " ...           | २७४४    |
| " ...            | २८०३    | " ...           | २२६५    | त्रिवृत् ...     | ८६४     | त्विप् ...      | २१२     |
| तेजित ...        | ७२०६    | त्रात ...       | २२३६    | त्रिवृता ...     | ८६४     | " ...           | २७८५    |
| तेम ...          | २३०७    | त्रापुप ...     | १९८७    | त्रिसव्य ...     | २७१     | त्रिपापति ...   | २०५     |
| तेमन ...         | १७९५    | त्रायन्ती ...   | ९४९     | त्रिसौख्य ...    | १७२४    | त्तरु ...       | १६४७    |
| तेसितर ...       | १०७३    | त्रायमाणा ...   | ९४९     | त्रिस्तोतस् ...  | ५२९     | दृ.             |         |
| तेलपार्श्विक ... | १३३६    | त्रास ...       | ४०३     | त्रिहृत्य ...    | १७२४    | दंश ...         | १०४१    |
| तेलपाना ...      | २९०७    | त्रिक ...       | १२२६    | त्रिहायणी ...    | १८४२    | दशन ...         | १५९५    |
| तेरुपायिका ...   | १०३९    | त्रिकुट्ट ...   | ६३६     | त्रुटि ...       | ६९९     | दंशित ...       | १५५८    |
| तेलीन ...        | १७२१    | त्रिकुट्ट ...   | १९२९    | " ...            | २१४८    | दशी ...         | १०४२    |
| तेप ...          | २४४     | त्रिका ...      | ५२०     | " ...            | ७४०९    | दंशित् ...      | ९९२     |
| तेरु ...         | ११२९    | त्रिकूट ...     | ६३६     | त्रता ...        | १३९२    | दध ...          | १९६६    |
| तेरुका ...       | १०२१    | त्रिसद्व्य ...  | २९७७    | " ...            | ७४७२    | दक्षिण ...      | २०४१    |
| तेरुम ...        | १७३८    | त्रिगद्वी ...   | ७९७७    | त्रोटि ...       | १०६०    | दक्षिणस्य ...   | १५८७    |
| तेरुका ...       | ७९५४    | त्रिगुणाकृत ... | १७७४    | त्र्यम्बक ...    | ६६      | दक्षिणादि ...   | १३९१    |
| तेरु ...         | १५४९    | त्रितय ...      | २९७७    | त्र्यम्बकस्य ... | १३५     | दक्षिणार्ह ...  | २०३५    |
| " ...            | १७३१    | त्रितक्षी ...   | ७९७७    | त्र्यम्बक ...    | १९२९    | दक्षिणीय ...    | २०३५    |
| तेरुम ...        | १७३१    |                 |         |                  |         |                 |         |

| शब्दः        | पङ्क्तिः | शब्दः    | पङ्क्तिः | शब्दः       | पङ्क्तिः | शब्दः       | पङ्क्तिः |
|--------------|----------|----------|----------|-------------|----------|-------------|----------|
| दक्षिणमूर्   | १९७६     | दमः      | २२५५     | दग्निम्     | ११२९     | दारा        | १०८५     |
| दक्षिण्य     | २०३५     | दमित     | — २२१९   | दक्षमीरथ    | २५०९     | दारद        | ४५९      |
| दग्ध         | २२२२     | दमुनस्   | १११      | दद्या       | १३०१     | दारित       | २२२१     |
| दक्षिण       | १८०४     | दम्पती   | ११४९     | "           | २७६८     | दास         | ६७४      |
| दण्ड         | २०७      | दम्भ     | ४३१      | दग्गनीविनी  | १६३०     | "           | ७५५      |
| "            | १७०८     | दम्भोलि  | ०४       | दग्धु       | १४८९     | दारण        | ४०१      |
| "            | १५०९     | दम्भ     | — १८३०   | "           | १९७७     | दाहहिरिद्रा | ८५२      |
| "            | २४१८     | दया      | ३९-      | दम्भ        | १०२      | दाहहलन      | १७७४     |
| दण्डघर       | ११७      | दयातु    | २०५४     | दहन         | ११०      | दावाघाट     | १०२१     |
| दण्डनीति     | ३१०      | दयित     | २१३१     | दायावणी     | १८७      | दार्धिका    | ८८७      |
| दण्डविष्कम्भ | १८५५     | दर       | ४३       | दायाव्य     | १०३०     | दार्धी      | ८५२      |
| दण्डाहन      | १८१२     | दरत्     | १७०४     | दायिन       | ७७७      | दाय         | २७४७     |
| दण्डा        | ९४२      | दरिद्र   | २९१२     | "           | २९७८     | दायिक       | ५३८      |
| दण्डग        | ११९१     | दरी      | ६४४      | दाग्निमुष्प | ७४६      | दाय         | ४९७      |
| दण्डगोनि     | ११९१     | दपुर     | ७१४      | दाग्न्पाता  | २९०६     | दागपुर      | ९२१      |
| दक्षिण्य     | ६९०      | दपक      | ५०       | दात         | २२३१     | दास         | १९६२     |
| दक्षिण्य     | ६९१      | दपण      | १३५३     | दायूट       | १०२९     | दासी        | ७९७      |
| दण्ड         | २३       | दर्भ     | ९८०      | दाय         | १७३२     | दासीसम      | २९४९     |
| दण्ड         | १०५५     | दर्भ     | १००४     | दान         | १४१०     | दासेय       | १९६३     |
| दन्तधान      | ७४७      | दर्भ     | १०५३     | "           | १५०८     | दासेर       | १९६२     |
| दन्तभाग      | १५४७     | दर्भ     | २३१      | "           | १५४१     | दिग्गजर     | २१०२     |
| दन्तशठ       | ६९१      | दर्भ     | १४४८     | दानव        | ३३       | दिग्ध       | १६४३     |
| "            | ६९७      | दर्भ     | १४४९     | दानवारि     | १७       | "           | २२०४     |
| दन्तशठा      | ९२९      | दर्भ     | २३११     | दानघोष्ट    | २०३६     | दित         | २२३१     |
| दन्ताग       | १५३५     | दर्भ     | ६७६      | दान         | १४७७     | दितिमुन     | ३४       |
| दन्तिका      | ९७७      | दर्भ     | २७४७     | "           | २२१९     | दिधिपु      | १११३     |
| दन्ति        | १५३५     | दर्भ     | २१६२     | दान्ति      | २२५५     | दिधिपु      | १२१९     |
| ददराज        | ४५३      | दवीयस्   | २१६२     | दापित       | २१०४     | दिन         | २१८      |
| दध्र         | २१४७     | दशा      | १२५५     | दाम         | १८५३     | दिनान्त     | २२०      |
| दम           | १५९      | दशनवासस् | १२५३     | दामनी       | १८३      | दिष्        | १२       |
| "            | २२५५     | दशव      | २७       | दामोदर      | ३६       | "           | १४३      |
|              |          |          |          | दायाद       | २५१२     | दिषष्ठ      | २१८      |

| शब्दः     | पृष्ठा | शब्दः   | पृष्ठा | शब्दः   | पृष्ठा | शब्दः   | पृष्ठा |
|-----------|--------|---------|--------|---------|--------|---------|--------|
| विषयवि... | ६६     | विषय... | २१०    | विषय... | २६६    | विषय... | २६६    |
| विषा...   | २०६३   | विषा... | २०२३   | विषा... | २०६६   | विषा... | २०६६   |
| विषा...   | २००    | विषा... | २३१    | विषा... | २०२५   | विषा... | २०२५   |
| विषा...   | १००८   | विषा... | २३६    | विषा... | २०६६   | विषा... | २०६६   |
| "         | १०६३   | विषा... | १३२५   | विषा... | २०२५   | विषा... | २०२५   |
| विषा...   | १५     | विषा... | १००८   | विषा... | २०६६   | विषा... | २०६६   |
| विषा...   | १५     | विषा... | २६८    | विषा... | १३०३   | विषा... | २०२५   |
| "         | २०८८   | विषा... | २३३    | विषा... | १५०५   | विषा... | २०६६   |
| विषा...   | २१०    | "       | २६०६   | विषा... | २०२५   | विषा... | २०६६   |
| विषा...   | १०६    | विषा... | ५०५    | विषा... | २०६६   | विषा... | २०६६   |
| विषा...   | १०८    | विषा... | १३८    | विषा... | २०६६   | विषा... | २०६६   |
| विषा...   | २१६    | विषा... | २६१    | विषा... | २०६६   | विषा... | २०६६   |
| "         | २००    | विषा... | २६६०   | विषा... | १३०३   | विषा... | २०६६   |
| "         | २००५   | विषा... | १५०३   | विषा... | १३११   | विषा... | २०६६   |
| विषा...   | १६०९   | विषा... | २१०३   | विषा... | १५०५   | विषा... | १३३१   |
| विषा...   | २०६८   | विषा... | २६१    | विषा... | १३३    | विषा... | १३३१   |
| विषा...   | १५६८   | विषा... | २००    | विषा... | २०६६   | विषा... | २०६६   |
| विषा...   | १८०३   | विषा... | २२००   | विषा... | २०६६   | विषा... | २०६६   |
| विषा...   | २११    | विषा... | ७८     | विषा... | २०६६   | विषा... | २०६६   |
| विषा...   | २१२२   | विषा... | २११८   | विषा... | २०६६   | विषा... | २०६६   |
| विषा...   | १३५०   | विषा... | १६८    | विषा... | १३६०   | विषा... | १३६०   |
| विषा...   | २०५७   | विषा... | ११८२   | विषा... | २०६६   | विषा... | १५५५   |
| विषा...   | २१२    | विषा... | ५१६    | विषा... | १५०५   | विषा... | १८१५   |
| विषा...   | ८७१    | विषा... | ११६१   | विषा... | १०९०   | विषा... | ६१८    |
| विषा...   | २१६२   | विषा... | २०८०   | विषा... | २०६६   | विषा... | २३     |
| विषा...   | ५१६    | विषा... | २०९७   | विषा... | १२६०   | विषा... | २३     |
| विषा...   | १३६५   | विषा... | १८०९   | विषा... | २०६६   | विषा... | १०८    |
| विषा...   | ८५३    | विषा... | २१२२   | विषा... | २०६६   | विषा... | ८१८    |
| विषा...   | ७६२    | विषा... | १३८८   | विषा... | १३     | विषा... | २०     |
| विषा...   | २०५८   | विषा... | ८०     | विषा... | २०६६   | विषा... | १३०२   |

| पदः           | पतिः | शब्दः       | पतिः | पदः             | पतिः | शब्दः     | पतिः |
|---------------|------|-------------|------|-----------------|------|-----------|------|
| देव           | २७७  | द्विगण      | २४३९ | द्वीगिक         | १७२६ | द्वयण     | १४८८ |
| देव (तीर्थ)   | १४५३ |             | २९३९ | द्वन्द्व        | १७६४ | द्वय्य    | २११४ |
| देवश          | १४९५ | द्वय्य      | १८८६ |                 | २७६० | द्वैत     | १५०४ |
| देवशा         | १११३ |             | २६७४ | द्वयातिग        | १४४१ | द्विप     | १५७४ |
| देवन          | १८   | द्वार्      | २८५२ | द्वन्द्वोत्पन्न | २००  | द्विमानुर | ७५   |
|               | २५६  | द्वार्या    | ८६३  | द्वयपर          | २८३  | द्वयष्ट   | १९०१ |
| देवन (भहोराज) | २५६  | द्वारिष्ठ   | २२४९ |                 | २६५९ | ध         |      |
| दोग           | ८३८  | द्वारिष्ठक  | ९१८  | द्वार्          | ६२४  | धट        | २९२९ |
| "             | १५७९ | द्व         | ६५९  | द्वार           | ६२४  | धत्तूर    | ८०३  |
| दोषह          | १४६२ | द्विकिञ्चि  | ७५५  | द्वारपा         | १४७९ | धन        | १८८६ |
| दोषा          | २८६० | द्वयण       | १६४९ | द्वारय          | १४७९ | धनगय      | १०५  |
| दोषैरन्द      | २११७ | द्वुण       | १०१५ | द्वानियत        | १४७९ | धनद       | १३६  |
| दोस           | १२३३ | द्वुणी      | १०१५ | द्विगुणावृत्त   | १७२५ | धनहरी     | ९०५  |
| दोहद          | ४१५  |             | २९१७ | द्विज           | १०५३ | धनाधिप    | १३६  |
| दोहदश्री      | १११६ | द्वुत       | १३८  |                 | २१९४ | धनिन्     | ७०४५ |
| दुनि          | १७९  |             | २२०३ | द्विजराज        | १७४  | धनिष्ठा   | १८९  |
|               | २१२  |             | २२२४ | द्विजा          | ८८८  | धनुषर     | १६०५ |
| दुमणि         | २०४  | द्वुम       | ६५९  | द्विजाति        | १३६० | धनु पट    | ७१८  |
| दुस           | १८८७ | द्वुमामय    | १३२३ | द्विजिह्व       | २६०१ | धनुमत्    | १६०५ |
| दुस           | २०१८ | द्वुमोन्वय  | ७६८  | द्विनीया        | १०८३ | धनुम्     | १६३३ |
| दुनकारक       | २०१७ | द्वुनय      | १८७६ | द्विप           | १५३५ | धन्य      | २०३० |
| दुनपृष्       | २०१६ | द्वुहिन     | ३३   | द्विपाद्य       | १५२१ | धन्य      | ५६७  |
| दुो           | १२   | द्वोण       | १८८३ | द्विरद          | १५३५ | "         | १६३३ |
|               | १४२  |             | २४३२ | द्विरप          | १०४६ | धन्यपाद्य | ८३१  |
| दुोण          | २१३  | द्वोणवाच    | १०२८ | द्विर           | १४८९ | धनिन्     | १६०५ |
| द्वच          | १८०९ | द्वोणधीरा   | १८५० | द्विपत्         | १४८८ | धमन       | ९७३  |
| द्वव          | ४२६  | द्वोणदुग्धा | १८५० | द्विहायनी       | १८४२ | धमनि      | १२०३ |
|               | १६८९ | द्वोणी      | ४८९  | द्विबीन         | ६८३  | धमनी      | ९०८  |
| द्वयम्ती      | ८२३  |             | ८३८  | द्वीप           | ४८३  | "         | १२०३ |
| द्वयिण        | १६७१ |             | ८३८  | द्वीपवर्गी      | ५२७  | धम्मिण    | १२६७ |
|               | १८८७ | द्वोहधितन   | २८४  | द्वीपिन्        | ९९०  | धर        | ६२४  |

[illegible]

| शब्दः     | पङ्क्तिः | शब्दः     | पङ्क्तिः | शब्दः       | पङ्क्तिः | शब्दः        | पङ्क्तिः |
|-----------|----------|-----------|----------|-------------|----------|--------------|----------|
| नट        | १२५३     | नमस्या    | १४२१     | नस्तित      | १८३३     | नादेयी       | ७०२      |
| नटन       | ३८१      | नमस्यत    | २२२७     | नस्त्योन    | १८३३     | "            | ७०४      |
| नटो       | २०७      | नमुचिसूदन | ८६       | नहि         | २८७१     | "            | ७०५      |
| नड        | १७३      | नय        | २२६७     | नाह         | ११       | "            | ८८४      |
| "         | २९६१     | नयन       | १२५२     | "           | २३३८     | नाना         | २८३०     |
| नड्या     | २८४      | नर        | १०७५     | नातु        | ७८५      | "            | २८५४     |
| नडवान्    | ५७४      | नरक       | ३६१      | नाकुली      | ८७७      | नामारूप      | ७२११     |
| नडवत्     | ५७४      | नरवाहन    | १३०      | नाग         | ४४५      | नाम्दीकर     | २१००     |
| नत        | २१६६     | नर्तकी    | ५७८      |             | १५३६     | नान्दोवादिन् | २१००     |
| नवनामिक   | ११६३     | नर्तन     | ३८१      |             | १९१७     | नापित        | १९४८     |
| नदी       | ५२५      | नर्मदा    | ५३१      |             | २१४३     | नामि         | १५८०     |
| नदीमातृक  | ५८१      | नमस्      | ४३६      | नागवेसर     | ७७८      | "            | २६०८     |
| नदीमज     | ७३८      | नलकूवर    | १३२      | नागमिक्षिका | १९२२     | नाम          | ३८३८     |
| नमी       | १९९१     | नलद       | ९७७      | नागवन्      | ८८२      | नामधेय       | ३२६      |
| नाग       | ११३२     | नलमीन     | ५०३      | नागवन्ना    | २३७७     | नामन्        | ३२६      |
| नाग       | २८३२     | नलिन      | ५३५      | नागमानक     | १७११     | नाय          | २६६७     |
| "         | २८७६     | नलिनी     | ५३४      | नागर        | १७८३     | नायक         | २०४६     |
| नादक      | ५६       | नली       | ९०७      | नागरक       | ७२४      | नायक         | ३६१      |
| नादन      | ९०       | नलव       | ५९२      | नागपौर      | ४४०      | नायक         | १६४२     |
| नादिकृष्ण | ९०४      | नल        | २१७९     | नागवल्ली    | ८८८      | नायकी        | १९९३     |
| नादाधत    | ६१३      | नलदल      | ५५३      | नागधमन      | १९१६     | नायक         | ६५       |
| नापुत्र   | ११५२     | नलनील     | १८१०     | नागास्त     | ५८       | नायक         | ८५०      |
| नापी      | ११३२     | नलमानिका  | ७९३      | नाग         | ३८१      | नारी         | १०७७     |
| नना       | १३४      | नलपिका    | १८४८     | नादिका      | १७७५     | नाक          | ५५०      |
| "         | २८००     | नलमवर     | १२९७     | नादिक       | १९४४     | "            | १७५०     |
| ननधम      | १०५५     | नलीन      | २१७९     | नादिक       | १२०३     | नाला         | ५५०      |
| ननय       | २४८      | नलोद्भूत  | १८१०     | नाडी        | १७५०     | नालिकर       | २८५      |
| ननय       | १२५      | नल        | २१७९     | "           | २४२०     | नालिक        | ४९०      |
| ननय       | २८८५     | नल        | १६९१     | नालीन       | ११८१     | नाल          | ४८७      |
| ननमित     | २३३७     | नलपेहना   | ४२८      | नाधका       | २०५६     | नाय          | १७००     |
| ननकारी    | ९३१      | नलपि      | १४५८     | नाय         | ४५६      | नायक         | १२०      |



| शब्दः          | पक्तिः | शब्दः          | पक्तिः | शब्दः        | पक्तिः | शब्दः           | पक्तिः |
|----------------|--------|----------------|--------|--------------|--------|-----------------|--------|
| नासा ...       | ६१९    | निकृष्ट ...    | २२३२   | निद्राण ...  | २०९०   | नियुत ...       | २९४२   |
| ” ...          | १२५२   | निकेतन ...     | ६०१    | निद्रालु ... | २०९०   | नियुद्ध ...     | १६८०   |
| नासिका ...     | १२५७   | निकोचक ...     | ७०६    | निधन ...     | १७००   | नियोज्य ...     | १९६३   |
| नास्तिकता ...  | २८४    | निकण ...       | ३५९    | ” ...        | २५८०   | निर ...         | २८४१   |
| नि-शलाक ...    | १५१७   | निकाण ...      | ३५९    | निधि ...     | १४२    | निरन्तर ...     | २१५६   |
| निःशेष ...     | २१५४   | निगिरल ...     | २१५४   | निधुवन ...   | १४६६   | निरय ...        | ४६१    |
| निःशेष्य ...   | २१३६   | निगड ...       | १५५०   | निध्यान ...  | २३११   | निरगल ...       | २१९१   |
| निश्रेणि ...   | ६२८    | निगद ...       | २२७४   | निनद ...     | ३५५    | निरर्थक ...     | २१२७   |
| निश्रेयस ...   | २८९    | निगम ...       | ५९५    | निनाद ...    | ३५५    | निरवग्रह ...    | २०५५   |
| नि यमस् ...    | २८७७   | ” ...          | २६१४   | निन्दा ...   | ३३७    | निरसन ...       | २३१२   |
| नि सरण ...     | ६३०    | निगाद् ...     | २२७४   | निप ...      | १७७७   | निरस्त ...      | ३५०    |
| नि स्त्र ...   | २१२२   | निगार ...      | २३२३   | निपट ...     | २३०७   | ” ...           | १६४३   |
| निकट ...       | २१५७   | निगाल ...      | १५६३   | निपाठ ...    | २३०७   | ” ...           | २१०५   |
| निकर ...       | १०६६   | निग्रह ...     | २२७६   | निपातन ...   | २३०३   | निराकारिण्यु    | २०८४   |
| निकर्षण ...    | ६३०    | निव ...        | २३२२   | निपान ...    | ५१८    | निराकृत ...     | २१०५   |
| निकाप ...      | १९९३   | निवास ...      | २८१८   | निपुण ...    | २०३२   | निराकृति ...    | १४५९   |
| निकपा ...      | २८६२   | निन्न ...      | २०५७   | निबन्ध ...   | ११८३   | ” ...           | २२१२   |
| ” ...          | २८८७   | निबुल ...      | ७७०    | निवर्हण ...  | १६९२   | निरामय ...      | ११८८   |
| निकापारम्भ ... | ११९    | निचोल ...      | १३०६   | निभ ...      | २००४   | निरीश ...       | १७३३   |
| निकाम ...      | १८२०   | निज ...        | २३९९   | निमृत् ...   | २०७४   | निकृति ...      | ४६४    |
| निकाय ...      | १०७२   | नितम्ब ...     | १२२७   | निमय ...     | १८६७   | गिरुण्डी ...    | ७८५    |
| निकाव्य ...    | ६०३    | नितम्बिनी ...  | १०८०   | निमेष ...    | २३६    | ” ...           | ७८९    |
| निकार ...      | २२७९   | नितान्त ...    | १३३    | निन्न ...    | २९६    | निर्ग्रन्थन ... | १६९४   |
| ” ...          | २३२७   | नित्य ...      | १३३    | निन्नता ...  | ५७७    | निर्वोपि ...    | ३५६    |
| निकारण ...     | १६९२   | ” ...          | २१६९   | निम्ब ...    | ७७३    | निर्जर ...      | १३     |
| निकुधक ...     | १८८३   | निदाव ...      | २५२    | निम्नतर ...  | ७००    | निर्जर ...      | ६४३    |
| निकुञ्ज ...    | ६४९    | ” ...          | ४७८    | नियति ...    | २७०    | निर्णय ...      | २८३    |
| निकुम्भ ...    | ९३७    | निदान ...      | २७१    | नियन्तृ ...  | १५८६   | निर्णयक ...     | १९४९   |
| निकुरन्व ...   | १०६८   | निदिर्य ...    | २२०२   | नियम ...     | २८६    | निर्देश ...     | १५१८   |
| निकृन्त ...    | २१०६   | निदिग्धिका ... | ८३५    | ” ...        | १४२७   | निर्भर ...      | १३२    |
| ” ...          | २११७   | निदेश ...      | १५१८   | ” ...        | १४५०   | निर्मद ...      | १५३९   |
| निकृति ...     | ४२२    | निद्रा ...     | ४३४    | नियामक ...   | ४९१    |                 |        |

| शब्दः    | पति  | शब्दः     | पति  | शब्दः     | पति  | शब्दः        | पति  |
|----------|------|-----------|------|-----------|------|--------------|------|
| निर्गुण  | ३३९  | निवेश     | १५३३ | निष्ठुर   | ३३८  | नीडोद्व      | १०५३ |
| निमाक    | ३५६  | निशा      | २२२  | "         | २१७६ | नीप्र        | ६२२  |
| निर्याण  | १५४४ | "         | १७८८ | निष्ठित   | २३२४ | नीप          | ७१२  |
| निर्यातत | २५७४ | "         | २९५४ | निष्ठवन   | २३२५ | नीर          | ३७५  |
| निवपण    | १४१२ | निशान्त   | ६०२  | निष्ठमृत  | २१९९ | नील          | ३०३  |
| निरणल    | ३३११ | निशापति   | १७२  | निष्ठमृति | २३२५ | नीलकण्ठ      | १०४७ |
| निवहण    | ३९१  | निशारवा   | १७८८ | निष्णात   | २०३२ | "            | २४१३ |
| निवाण    | २८९  | निशित     | २२०६ | निष्पक्ष  | २२१५ | नीलकृ        | १०१४ |
|          | १४४२ | निशीथ     | २२६  | निष्पर    | २३२५ | नीललोहित     | ६५   |
|          | २५१६ | निशीथिनी  | २२२  | निष्पा    | २२९७ | नीग          | १४४० |
| निरात    | २२१६ | निशय      | २८३  | निष्पय    | २२२४ | नीलाम्बर     | ३७   |
| निवाद    | ३३६  | निशेणी    | ६२८  | निष्पवागि | १२९७ | नीलाशुभ्रमन् | ५४०  |
| "        | २५१४ | निषह      | १६४४ | निषग      | ३३७  | नीलिका       | ७८९  |
| निवापण   | १६९५ | निषहिन्   | १६०५ | निरुष्ट   | २२०१ | नीलिनी       | ८३८  |
| निवाप    | २०५० | निषया     | ५९७  | निरुक्त   | २१६३ | नीली         | ८३७  |
| निरात्मन | १६९३ | निषद्वर   | ४८५  | निरुद्ध   | १६९५ | नीलाव        | २२९६ |
| निवृत्त  | २२२५ | निषय      | ६३८  | निर्दिष्ट | १६३४ | नीलार        | १७५६ |
| निवृत्   | २००६ | निवाद     | ३६३  | निराश     | १८०५ | नीवी         | १८६६ |
|          | २२८९ | "         | १६६८ | निग्न     | ३५६  | नीवृत्       | २७५९ |
|          | २७६५ | निषादिन्  | १५८५ | निग्नान   | १५६  | नीवार        | ५७३  |
| निष्यधन  | ३३१  | निर्वृत्त | १५९३ | निग्नान   | १५६  | नीवार        | १३१० |
| निष्यु   | २८०८ | निर्व     | २३६२ | निह्वन    | १६९५ | नीहार        | १८०  |
| निहार    | २२८३ | निषला     | १११६ | निहावा    | ५१   | उ            | २८६१ |
| निहारिन् | ३९८  | निष्ठासित | ०१०३ | निर्दिष्ट | १६९३ | उनि          | ३३३  |
| निहाद    | ३५६  | नि कुट    | ६५१  | निहीन     | १९६१ | उत्त         | २१९९ |
| निलय     | १०६५ | निर्गुटि  | ८९८  | निह्व     | ३३४  | उप           | २१९९ |
| निरुद्ध  | ६०३  | निर्गुह   | ६७५  |           | २७५५ | मूनन         | २१७९ |
| निग्न    | २५०३ | निष्क्रम  | २३०० | नीकाश     | २००४ | मून          | २१८० |
| निवाप    | १३१४ | निष्ठा    | ३९१  | नीव       | १९६  | मूनम्        | २८३६ |
| निवीत    | १३०० | "         | २३१६ | "         | २३६५ | "            | २८८० |
|          | १३५२ | निष्ठान   | १७९५ | नीवैस्    | २८८२ | नूपुर        | १२९२ |
| निवृत्त  | २३०० | निष्ठीवा  | २३२५ | नीड       | १०६२ | नृ           | १०७५ |

| शब्दः            | पंक्तिः | शब्दः         | पंक्तिः | शब्दः          | पंक्तिः | शब्दः            | पंक्तिः |
|------------------|---------|---------------|---------|----------------|---------|------------------|---------|
| नृत्त ...        | ३८१     | न्यग्रोध ...  | २५०६    | पङ्क ...       | २६०     | पट्ट ...         | २९२९    |
| नृप ...          | १४७०    | न्यग्रोवी ... | ८२६     | ” ...          | ४८७     | पट्टिका ...      | ७३०     |
| नृपलक्ष्मन् ...  | १५३१    | न्यग्र ...    | २१६५    | पङ्किल ...     | ५७६     | पट्टिन् ...      | ७३०     |
| नृपसम ...        | २९४९    | न्यहु ...     | १०७०    | पङ्किलह ...    | ५४७     | पट्टिश ...       | २९७१    |
| नृपाधन ...       | १५३०    | न्यरत ...     | ३२०१    | पङ्क्ति ...    | ६५६     | पण ...           | १८८२    |
| नृशंस ...        | २११९    | न्याढ ...     | १८६८    | ” ...          | २४७८    | ” ...            | २००६    |
| नृशेन ...        | २९७५    | न्याय ...     | १५१५    | पङ्क्तु ...    | ११७०    | ” ...            | २०१८    |
| नेतृ ...         | २०४६    | न्याय्य ...   | १५१७    | पञ्चपचा ...    | ८५२     | ” ...            | २०१९    |
| नेत्र ...        | १२५९    | न्याम ...     | १८१८    | पचा ...        | २२६६    | ” ...            | ३४२७    |
| ” ...            | २६९५    | न्युज्ज ...   | ११९५    | पञ्चजन ...     | १०७६    | पणव ...          | ३७८     |
| नेत्रान्त्रु ... | १२६०    | न्यूह ...     | २९२९    | पञ्चना ...     | १६९९    | पणायित ...       | २२४३    |
| नेदिष्ठ ...      | २१६१    | न्यून ...     | २५९०    | पञ्चदशी ...    | ३२९     | पणित ...         | २२४३    |
| नेपथ्य ...       | १२७२    | प.            |         | पञ्चम ...      | ३६४     | पणितव्य ...      | १८७०    |
| नेमि ...         | ५७०     | पक्कण ...     | ६३३     | पञ्चशर ...     | ५०      | पण्ट ...         | ११५२    |
| ” ...            | १५७९    | पक्क ...      | २७०७    | पञ्चशात्र ...  | १२३६    | पण्डित ...       | १३६३    |
| नैमी ...         | ७०१     | ” ...         | २२१७    | पञ्चाङ्गुल ... | ७५१     | पण्य ...         | १८७०    |
| नैरुमेद ...      | २१०९    | पक्ष ...      | २३८     | पञ्चास्य ...   | ९८९     | पण्यवीर्यिगा ... | ५९७     |
| नैरुम ...        | १८६२    | ” ...         | १०५९    | पक्षिका ...    | २९०९    | पण्या ...        | ९४८     |
| ” ...            | २६१५    | ” ...         | १२७०    | पट ...         | १३०५    | पण्याजीव ...     | १८६३    |
| नैचिकी ...       | १८४०    | ” ...         | १६४७    | पटश्चर ...     | १३०३    | पतग ...          | १०५३    |
| नैपाली ...       | १९२३    | ” ...         | २७७६    | पटल ...        | ६२१     | पतङ्ग ...        | १०४४    |
| नैमेय ...        | १८६७    | ” ...         | २७७६    | ” ...          | २७३८    | ” ...            | २३७४    |
| नैयग्रोध ...     | ६८५     | पक्षक ...     | ६२०     | पटवासक ...     | १३५२    | पतनिका ...       | १०४१    |
| नैयन्त ...       | १२०     | पक्षति ...    | २१६     | पटह ...        | ३७४     | पतत् ...         | १०५३    |
| ” ...            | १४९     | ” ...         | १०६०    | ” ...          | १६८३    | पतत्र ...        | १०५२    |
| नैयिक ...        | १४८२    | ” ...         | २४७९    | पटु ...        | ९५८     | पतथिन् ...       | १०५३    |
| नैयिथि ...       | १६०८    | पक्षद्वार ... | ६२०     | ” ...          | १९६६    | ” ...            | १०५४    |
| नो ...           | २८७१    | पक्षभाग ...   | १५४७    | ” ...          | २४१४    | पतद्रुह ...      | १३५१    |
| नौ ...           | ४८७     | पक्षान्त ...  | २२९     | पटुपर्णी ...   | ९२४     | ” ...            | २९४७    |
| नौकादण्ड ...     | ४९२     | पक्षिन् ...   | १०५२    | पटोल ...       | ९५८     | पतयालु ...       | २०७९    |
| न्यक्ष ...       | २७८५    | पक्षिणी ...   | २२५     | पटोलिका ...    | ८८४     | पताका ...        | १६६६    |
| न्यग्रोव ...     | ७१३     | पक्षन् ...    | २५७६    |                |         | पताकिन् ...      | १६०९    |

| शब्दः      | पंक्तिः | शब्दः      | पंक्तिः | शब्दः      | पंक्तिः | शब्दः       | पंक्तिः |
|------------|---------|------------|---------|------------|---------|-------------|---------|
| पति        | ११४४    | पद्म       | १६००    | पवन        | २८०२    | परादि       | २८८८    |
| "          | २०४५    | पद्मी      | ५८६     | पयस्य      | १८०९    | पराध्य      | २१४०    |
| पतिवरा     | १०८८    | पद्मि      | १६००    | पयोधर      | २६६२    | पराम्न      | १६९३    |
| पतिप्रसो   | १०९७    | पद्मि      | १६००    | पर         | १४९०    | परामु       | १७०१    |
| पतिप्रता   | १०८६    | पद्मि      | १६०१    |            | २७१७    | परावदिम्    | १९७८    |
| पताम       | ५९४     | पद्म       | १६०१    | परमान      | १९६४    | परिकर       | २६६६    |
| पति        | १६००    | पद्मि      | ५८७     | परतत्र     | २०५६    | परिपमम्     | १३१५    |
| "          | १६२७    | पद्म       | १४२     | परनिष्ठा   | २०६५    | परिग्रह     | ३२८३    |
| "          | २४७९    | "          | ५४५     | परतृन्     | १०२८    | परिश्रिष्टा | ३२८९    |
| पती        | १८४     | पद्मक      | १५४६    | परमृन्     | १०३६    | परिश्रित    | २२००    |
| पद्म       | ६७६     | पद्मचारिणी | ९४०     | परमम्      | २८७३    | परिष्ठा     | ५२४     |
| "          | १०५९    | पद्मना     | ४०      | परमान      | १४००    | परिमृष्ट    | २९१७    |
| "          | १५८२    | पद्मप्र    | ९३९     | परमेष्ठिन् | ३१      | परिष        | १६५०    |
| "          | २६९३    | पद्मराग    | १८९१    | परम्परा    | १४०४    |             | ३३८८    |
| पद्मपरशु   | १९९४    | पद्मा      | ५४      | पररा       | २०५६    | परिणाम      | १६५०    |
| पद्मपाय्या | १९७९    |            | ८२७     | परु        | १६५१    | परिषय       | २२९५    |
| पद्मरथ     | १९५३    |            | ९४०     | परश्व      | १६५१    | परिषट       | १५९२    |
| पद्मलेखा   | १३१८    | पद्माकर    | ५५२     | परश्वत्    | ७८९२    | परिषया      | १४४३    |
| पद्म       | १३३७    | पद्माट     | ७४३     | परश्वत्    | २१५२    | परिषाप्य    | १३६३    |
| "          | १९२८    | पद्मालया   | ५४      | परश्वत्    | १६७२    | परिषारथ     | १९६३    |
| पद्मकुलि   | १३१८    | पद्मिन्    | १५३७    | परानम      | १६७२    | परिणत       | ३२१७    |
| पद्मिन्    | १०१७    | पद्मिनी    | ५४४     |            | १६११    | परिणय       | १४६५    |
| "          | १०५३    | पद्म       | २९५६    | पराग       | ६८३     | परिणाम      | २२८०    |
| "          | १६४१    | पद्मा      | ५८७     |            | २३७६    | परिणाम      | २०२०    |
| "          | २५४८    | पद्म       | ७४०     | पराक्षुम्भ | २०२१    | परिणा       | १३०२    |
| पद्मेश     | ७६१     | पद्मापित   | २५४३    | पराचित     | १९६४    | परितम्      | २८७४    |
| "          | १३९९    | पद्मि      | २२४३    | पराचीन     | २०९१    | परिमाण      | २३५९    |
| पद्मि      | १५०१    | पद्म       | २२४२    | पराजय      | १६९०    | परिदान      | १८६७    |
| पद्मिन्    | ५८६     | पद्म       | ४५४     | पराजित     | १६९१    | परिदेवन     | ३४२     |
| पद्मा      | ७६६     | पद्मगायन   | ५८      | पराचीन     | २०५६    | परिधान      | १३७     |
| पद्म       | १२१६    | पद्म       | ४७३     | पराज       | २०६५    | परिधि       | २००     |
| पद         | २५२१    | "          | १८०८    | परामृन्    | १६९१    |             | २१२८    |



| शब्दः          | पङ्क्तिः | शब्दः       | पङ्क्तिः | शब्दः       | पङ्क्तिः | शब्दः     | पङ्क्तिः |
|----------------|----------|-------------|----------|-------------|----------|-----------|----------|
| पाटल           | ७५७      | पाद         | २४१३     | पाथ्य       | १८७६     | पाणि      | १३१७     |
| पाटलि          | ७२७      | पादकटक      | १२९३     | पार         | ४८२      | पाणिप्राह | १४८७     |
| "              | ७५७      | पादमरण      | १४३४     | पारद        | १२०५     | पान्ना    | ९८२      |
| पाट            | १३८०     | पादप        | ६५८      | पारश        | २७५६     | पान्ना    | ८९१      |
| "              | २३०७     | पादपथन      | १८२२     | पारमथिव     | १६९७     | पालाश     | ३०५      |
| पाठा           | ८१७      | पादफोट      | ११७८     | पारमथिव     | १५५७     | पानि      | १६२४     |
| पाटिन्         | ८०८      | पादाम       | १२१६     | पारमथिव     | ११७२     | "         | २४३०     |
| पाटीन          | ५०७      | पादाम्बु    | १२९३     | पारावण      | २२५३     | पानिन्दी  | ८६५      |
| पाणि           | १२३६     | पादात       | १६०१     | पारावत      | २०१६     | पाणिना    | २९०५     |
| पाणिगृहीती     | १०७४     | पादातिव     | १६००     | पारावताश्मि | ९४८      | पावक      | १०८      |
| पाणिग          | १९५४     | पादुका      | १९८९     | पारावार     | ४६८      | पाय       | १२७०     |
| पाणिपीडन       | १४६५     | पादू        | १९९      | "           | २९६४     | पायक      | २०३०     |
| पाणिनाद        | १९५४     | पादुकुत्    | १९४३     | पारावरिन्   | १४३५     | पाशिन     | १२१      |
| पाण्डर         | ३०१      | पाठ         | १४१८     | पारिकाहिन्  | १४३६     | पापुपत    | ८११      |
| पाणिन्का       | १५७९     | पानगोष्ठिका | २०१४     | पारिजातक    | ९९       | पाशुपाय   | १७१०     |
| पाण्डु         | ३०१      | पानपाय      | २०१५     | "           | ७००      | पाश्वा    | २३३४     |
| पाण्डुकम्बलिन् | १५७५     | पानतानन     | १४७१     | पारिगया     | १२७९     | पाश्वा    | २१८६     |
| पाण्डुर        | ३०३      | पानीय       | ४७५      | पारिगु      | २१७४     | पायण्ड    | १४४२     |
| पानक           | २९६१     | पानीयशालिका | ६०७      | पारिभद्र    | ७००      | पापान     | ६४०      |
| पाताङ्ग        | ४३९      | पाण्य       | १५०१     | पारिभद्र    | ७५४      | पापानपारण | १९९७     |
| "              | २७४०     | पाय         | २६०      | पारिमाव्य   | ९००      | पिक       | १०३६     |
| पापुक          | २०७९     | "           | २११९     | पारिमात्र   | ६३८      | पिङ्ग     | ३००      |
| पाप            | ४८२      | पापचेत्ती   | ८१८      | पारिमात्र   | ७०       | पिङ्गल    | २७       |
| "              | १४०१     | पापम्       | ९६०      | पारिहास्य   | १२८७     | पिङ्गला   | १५३      |
| "              | १७७३     | पापम्       | ११७९     | पारी        | २९१३     | पिङ्गल    | १२२७     |
| "              | २७९३     | पापन        | ११९०     | पारुथ       | ३३८      | पिङ्गल    | २९३४     |
| पात्री         | २९७८     | पापर        | १२६०     | पारुथ       | १४७०     | पिङ्गलिट  | ११६२     |
| पानीय          | २९६५     | पाय         | ११७९     | पावती       | ७३       | पिङ्ग     | १९१८     |
| पाथसू          | ४७४      | पाया        | १३६०     | पावतीनदन    | ६८       | पिङ्गन    | ७७३      |
| पाद            | ६४६      | पायघ        | १४००     | पाश्च       | १२३१     | पिङ्गल    | ७२८      |
| "              | १२१६     | "           | १४२०     | "           | २३३२     | पिङ्गल    | १९१४     |
| "              | १८८५     | पायु        | १४२०     | "           | २३३२     | पिङ्गल    | १९१४     |

| शब्दः      | पंक्तिः  | शब्दः         | पंक्तिः  | शब्दः     | पंक्तिः  | शब्दः        | पंक्तिः  |
|------------|----------|---------------|----------|-----------|----------|--------------|----------|
| पिच्छ      | ... १०५० | पितृमनू       | ... २२०  | पीडा      | ... ४६६  | पुटनेदन      | ... ५०४  |
| "          | ... २९५५ | पितृवन        | ... १७०४ | पोत       | ... ४०५  | पुटी         | ... २९७८ |
| पिच्छा     | ... ७४२  | पितृव्य       | ... ११३६ | पीतटार    | ... ७५५  | पुण्टरीक     | ... १५१  |
| "          | ... २९१२ | पितृनंनिभ     | ... २०५१ | पोतदु     | ... ७६८  | "            | ... ५४०  |
| पिच्छिल    | ... १७९८ | पित्त         | ... ११९८ | "         | ... ८५१  | "            | ... २१५७ |
| पिच्छिन्ना | ... ७४१  | पिच्य (तीर्थ) | ... १४५८ | पीनन      | ... ७०२  | पुण्टरीकाक्ष | ... २७   |
| "          | ... ७७३  | पित्तत्       | ... १०५५ | "         | ... १३२१ | पुण्ड्र      | ... ९७५  |
| पिक्ष      | ... १६९८ | पिधान         | ... १७०  | "         | ... १९१३ | पुण्ड्रक     | ... २७७  |
| पिक्षर     | ... १९१३ | पिनल          | ... १५९७ | पीतसारथ   | ... ७३५  | पुण्य        | ... २६२  |
| "          | ... २९५७ | पिनाक         | ... ६९   | पीना      | ... १७८८ | "            | ... २६५५ |
| पिक्षल     | ... १६६५ | "             | ... २३६३ | पीनान्वर  | ... २८   | पुण्यक       | ... १४२७ |
| पिट        | ... १७५९ | पिनाकिम्      | ... ६२   | पीन       | ... २१४६ | पुण्यजन      | ... १२०  |
| पिटक       | ... ११८० | पिपासा        | ... १८१७ | पीनस      | ... ११७६ | पुण्यजनेश्वर | ... १३८  |
| "          | ... १९८८ | पिपीलिका      | ... २९१० | पीनोद्री  | ... १८४९ | पुण्यभूमि    | ... ५७२  |
| पिटर       | ... १७६९ | पिप्पल        | ... ६८९  | पीयूष     | ... ९६   | पुण्यवत्     | ... २०३० |
| "          | ... २७११ | पिप्पली       | ... ८४२  | "         | ... १८१४ | पुत्तिका     | ... १०४१ |
| पिण्ड      | ... १९०२ | पिपलीमूल      | ... १९२७ | पीलु      | ... ७९५  | पुन          | ... ११२८ |
| "          | ... १९१५ | पिपु          | ... ११७७ | "         | ... २७२३ | "            | ... ११४८ |
| "          | ... २९३० | पिष्ट         | ... ११९३ | पीलुपर्णी | ... ८१६  | पुनिका       | ... १९८६ |
| पिण्डक     | ... १३३० | पिशङ्ग        | ... ३०९  | "         | ... ९२६  | पुनी         | ... ११४८ |
| पिण्डिका   | ... १५८० | पिश्राच       | ... २२   | पीवत्     | ... २१४६ | पुनल         | ... २९३५ |
| पिण्डीतक   | ... ७५३  | पिशित         | ... ११९९ | पीवर      | ... २१४६ | पुनपुनर      | ... २८५१ |
| पिण्याक    | ... २३५३ | पिशुन         | ... १३२२ | "         | ... २२४८ | पुनर्        | ... २८४१ |
| "          | ... २९५९ | "             | ... २११८ | पीवरस्तनी | ... १८४९ | "            | ... २८७९ |
| पितामह     | ... ३१   | "             | ... २५८९ | पुशली     | ... १०९४ | पुनर्नवा     | ... ९४६  |
| "          | ... ११३९ | पिशुना        | ... ९१४  | पुस       | ... १०७६ | पुनर्नव      | ... १५३९ |
| पितृ       | ... ११३० | पिष्टक        | ... १८०२ | पुक्रस    | ... १९६८ | पुनर्भू      | ... १११९ |
| "          | ... ११४७ | पिष्टपचन      | ... १७७१ | पुह       | ... २९२९ | पुन्नाग      | ... ६९९  |
| पितृदान    | ... १४१४ | पिष्टात       | ... १३५२ | पुच्छ     | ... १५६७ | पुर          | ... ५९४  |
| पितृपति    | ... ११५  | पीठ           | ... १३५० | पुञ्ज     | ... २०७२ | पुर          | ... ७१६  |
| "          | ... १४९  | पीडन          | ... १६८६ | पुटनेदन   | ... ४८०  | "            | ... २७०२ |
| पितृपितृ   | ... ११३९ |               |          |           |          |              |          |

| शब्दः      | पङ्क्तिः | शब्दः    | पङ्क्तिः | शब्दः    | पङ्क्तिः | शब्दः     | पङ्क्तिः |
|------------|----------|----------|----------|----------|----------|-----------|----------|
| पुराभर     | १६११     | पुरिन्   | ४८४      | पूषा     | १४२१     | पूति      | २२३८     |
| पुरतम्     | २८६३     | पुरिन्द  | १०६९     | पूजित    | २२२०     | पूष्ठा    | २१०      |
| पुरङ्गार   | ६२५      | पुरोमजा  | ८९       | पूय      | २०३४     | पूतना     | १६५३     |
| पुरदर      | ८२       | पुरित    | २२१८     | "        | ५६३६     | "         | १६२९     |
| पुरात्री   | १०८६     | पुवर     | १४३      | पूरा     | १४४२     | पूषक      | २८५४     |
| पुराव      | २८६३     | "        | ४४४      | "        | १४५३     | पूषकपर्णी | ८६२      |
| पुरावृत्त  | २५०२     | "        | ५४८      | "        | २१४५     | पूषकालमता | २७       |
| पुरस्तात्  | २८९७     | "        | ९३९      | पूतना    | ७६६      | पूषकालमता | २७       |
| पुरा       | २८४२     | "        | २७०७     | पूतिकारण | ७४४      | पूषकजन    | १२६०     |
| पुराण      | ३५१      | पुवरगद्ग | १०३१     | पूतिवाह  | ७५६      | "         | २५४५     |
| "          | २१७८     | पूषकरिणी | ५२१      | पूतिगधि  | ७६८      | पूषकमिश्र | २२११     |
| पुरातन     | २१७८     | पूषक     | २१४१     | पूतिगधि  | ३००      | पूषिकी    | ५६३      |
| पुरावृत्त  | ३१९      | पूष्ट    | २२१८     | पूतिगधि  | ८४०      | पूष       | १४८०     |
| पुरी       | ५९४      | पूष      | ६८२      | पूरीक    | ७४४      | "         | १४८७     |
| पुरीत      | १२०५     | "        | ९१३      | पूष      | १८०२     | "         | २१४५     |
| पुरीय      | १२०९     | "        | १११५     | पूर      | २९३५     | "         | २२६८     |
| पूर        | २१५१     | पूषक     | १४०      | पूरणी    | ७४१      | पूषक      | १०६३     |
| पूर        | २४२      | "        | १९१२     | पूरित    | २२३१     | "         | १८५१     |
| "          | ६९९      | पूषकेतु  | १९१२     | पूर्य    | १०७६     | "         | २१४०     |
| "          | १०७६     | पूषदन्त  | १५२      | पूष      | २१५५     | पूरुमेम   | ५००      |
| "          | २७७३     | पूषधवन्  | ५२       | "        | २२३१     | पूरुन्    | २१४५     |
| पूषोत्तम   | ३१       | पूषधवन्  | ६९१      | पूषधुम्भ | १५३३     | पूष्वी    | ५६३      |
| पूषू       | २१५१     | पूषधवन्  | ६८३      | पूषिमा   | २२९      | "         | १४८०     |
| पूषूत      | ८२       | पूषधवन्  | १०४६     | पूत      | १४०८     | "         | १४८७     |
| पूरोम      | १६११     | पूषवनी   | १११४     | पूष      | २१८५     | पूषीका    | ८९८      |
| पूरोम      | १६१२     | पूषवन्   | २३५      | "        | २७०३     | पूषाक     | ५४०      |
| पूरोमामिन् | १६१२     | पूषवन्मय | २५२      | पूषज     | ११५९     | पूषि      | २१०      |
| पूरोमन्    | २९३६     | पूष      | १८८      | पूषदेव   | २४       | "         | ११७०     |
| पूरोमन्    | १४७७     | पूषवन्   | १५७०     | पूषधवन्  | ६३७      | पूषिपर्णी | ८३३      |
| पूरोमामिन् | २११७     | पूष      | १९८५     | पूष      | १४७      | पूष       | २७९      |
| पूरोदित    | १४७७     | पूष      | ९८६      | पूषधुम्भ | २८९०     | पूषत      | २७९      |
| पूषाक      | २३४५     | "        | २३४४     | पूष      | २०३      | "         | १००८     |



| शब्दः            | पंक्तिः  | शब्दः      | पंक्तिः  | शब्दः       | पंक्तिः  | शब्दः       | पंक्तिः  |
|------------------|----------|------------|----------|-------------|----------|-------------|----------|
| पृषत्            | ... १६४० | पौर        | ... २८१  | प्रगल्भ     | ... २०७५ | प्रणय       | ... ३१८  |
| पृषत्श्च         | ... १२३  | पौरस्त्य   | ... २१८५ | प्रगाढ      | ... २४०३ | प्रणाद      | ... ३३२  |
| पृषदाज्य         | ... १४०० | पौरुष      | ... १२४८ | प्रगुग      | ... २१६८ | प्रणाली     | ... ५३७  |
| पृष्ट            | ... १२२९ | "          | ... २७८१ | प्रगे       | ... २८८७ | प्रणिधि     | ... १४९३ |
| पृष्टय           | ... १५५९ | पौरोगव     | ... १७६१ | प्रगृह      | ... १७०५ | "           | ... २५३४ |
| "                | ... २३३२ | पौरुमास    | ... १४४८ | "           | ... २८०९ | प्रणिहित    | ... २१९७ |
| पेचक             | ... १०१७ | पौरुमासी   | ... २२९  | प्रमाह      | ... २०७९ | प्रणीन      | ... १२९३ |
| "                | ... २४४६ | पोलस्त्य   | ... १३७  | प्रमीव      | ... २५६५ | "           | ... १७९७ |
| पेटक             | ... १९८८ | पौलि       | ... १८०० | प्ररण       | ... ६१७  | प्रशुत      | ... २२४७ |
| पेटी             | ... २९७८ | पौप        | ... २४४  | प्रमाण      | ... ६१७  | प्रणय       | ... २०७४ |
| पेडा             | ... १९८८ | पौष्यक     | ... १९१२ | प्रचक्र     | ... १६५९ | प्रनन       | ... २१७८ |
| पेलव             | ... २१५६ | प्याद      | ... २८६२ | प्रचलायित   | ... २०८९ | प्रतल       | ... १२४२ |
| पेशल             | ... १९६६ | प्रकाण्ट   | ... २६८  | प्रचुर      | ... ८३६  | "           | ... १२४६ |
| "                | ... २७४५ | "          | ... ६६९  | "           | ... २१५० | प्रताप      | ... १५०७ |
| पेशी             | ... १०६२ | प्रकाम     | ... १८७० | प्रचेतस्    | ... १२१  | प्रतापस     | ... ८१०  |
| पेटर             | ... १७९६ | प्रकार     | ... २६६० | प्रचोदनी    | ... १८६  | प्रति       | ... २८२५ |
| पैतृव्यसेय       | ... ११७३ | प्रकाश     | ... २१३  | प्रच्छदपट   | ... १३०६ | प्रतिकर्मन् | ... १२७२ |
| पैतृव्यमीय       | ११३३     | "          | ... २७७१ | प्रच्छन्न   | ... ६२०  | प्रतिकूट    | ... २१९२ |
| पैत्र (अहोरात्र) | २५६      | प्रकीर्णक  | ... १५२९ | प्रच्छादिका | ... ११८४ | प्रतिकृति   | ... २००१ |
| पोगण्ड           | ... ११६५ | प्रकीर्य   | ... ७४४  | प्रजन       | ... २२९९ | प्रतिकृष्ट  | ... २१३२ |
| पोटगल            | ... ९७३  | प्रकृति    | ... २७२  | प्रजविन्    | ... १६१४ | प्रतिक्षित  | ... २१०८ |
| "                | ... ९७४  | "          | ... ४३६  | प्रजा       | ... २३९८ | प्रतिख्याति | २३०६     |
| पोडा             | ... ११०४ | "          | ... १५०३ | प्रजाता     | ... ११०६ | प्रतिग्रह   | ... १६२६ |
| पोत              | ... १०६३ | "          | ... २४८० | प्रजापति    | ... ३४   | प्रतिग्रह   | ... १३५० |
| "                | ... २४५८ | प्रकोष्ठ   | ... १२३४ | प्रजावती    | ... ११२४ | प्रतिग्रह   | ... ४१३  |
| पोतवणिज्         | ... ४९०  | प्रक्रम    | ... २३०१ | प्रज्ञा     | ... २७८  | प्रतिघातन   | ... १६९६ |
| पोतवाह           | ... ४९१  | प्रक्रिया  | ... १५२९ | "           | ... १८९८ | प्रतिच्छाया | २०००     |
| पोतामान          | ... ५०४  | प्रक्षण    | ... ३६०  | प्रज्ञान    | ... २५७९ | प्रतिजागर   | ... २३०६ |
| पोय              | ... २६९६ | प्रकाण     | ... ३६०  | प्रज्ञु     | ... ११६७ | प्रतिज्ञात  | ... २२४४ |
| पोत्रिन्         | ... ९९१  | प्रक्षेपन  | ... १६४२ | प्रडीन      | ... १०६१ | प्रतिज्ञान  | ... २८६  |
| पौण्डर्य         | ... ९०३  | प्रगण्ड    | ... १२३४ | प्रणय       | ... २२९९ | प्रतिदान    | ... १८६८ |
| पौश्री           | ... ११३२ | प्रगतजानुक | ११६७     | "           | ... २३३८ | प्रतिध्वान  | ... ३६२  |

| शब्दः       | पङ्क्तिः | शब्दः        | पङ्क्तिः | शब्दः         | पङ्क्तिः | शब्दः     | पङ्क्तिः |
|-------------|----------|--------------|----------|---------------|----------|-----------|----------|
| प्रतिनिधि   | २००१     | प्रतीक       | २३४९     | प्रत्याहार    | १६२६     | प्रफुल्ल  | ६६३      |
| प्रतिपत्    | २१७      | प्रतीकार     | १६८८     | प्रत्याहार    | २२८२     | प्रवाचन   | १२१७     |
|             | २७९      | प्रतीनाद     | २००४     | प्रत्युत्क्रम | २४०१     | प्रभञ्जन  | १२५      |
| प्रतिपन्न   | २२४०     | प्रतीक्ष्य   | २०३४     | प्रत्युप      | ०२१९     | प्रभव     | २७५५     |
| प्रतिपादन   | १४११     | प्रतीची      | १४७      | प्रत्युप      | ७१९      | प्रभा     | २१२      |
| प्रतिपक्ष   | २१०७     | प्रतीन       | २०४३     | प्रत्युह      | २२८८     | प्रभाकर   | २०१      |
| प्रतिपक्ष   | २६०३     |              | २४९८     | प्रथम         | २१८५     | प्रभात    | २२०      |
| प्रतिविध्य  | २०००     | प्रतीपद्विनी | १०७८     | "             | २६२२     | प्रभाव    | १५०५     |
| प्रतिपद्य   | ४०२      | प्रतीर       | ४८१      | प्रथा         | २२६८     | "         | १५०७     |
| प्रतिभाविन  | २०४५     | प्रतीहार     | ६५४      | प्रथिन        | ७०४३     | प्रभित    | १५३९     |
| प्रतिभू     | २०१७     |              | १४८९     | प्रदर         | २६६४     | प्रभु     | २०४८     |
| प्रतिमा     | २०००     |              | २६७५     | प्रदीप        | १३५७     | प्रभूत    | २१५०     |
| प्रतिमान    | १५४५     | प्रतीहारी    | २६७५     | प्रदीपन       | ४५८      | प्रमष्टव  | १३४४     |
|             | २०००     | प्रतीही      | ५९८      | प्रदेशन       | १५२३     | प्रमथ     | ७०       |
| प्रतियुक्त  | १५९७     | प्रम         | २१८८     | प्रदेशिनी     | १२४६     | प्रमथन    | १६०७     |
| प्रतियुक्त  | २५४८     | प्रत्यङ्     | २८९५     |               | २२३७     | प्रमथाधिप | ६२       |
| प्रतियातना  | २०००     | प्रत्यक्षणी  | ८२६      | प्रदोष        | २२६      | प्रमद     | ७६३      |
| प्रतिरोधिन् | १९७८     | प्रत्यक्षणी  | ८२४      | प्रपुन        | ४९       | प्रमदवन   | ६५५      |
| प्रतिभाषय   | ३३०      |              | ०३७      | प्रप्राप      | १६८९     | प्रमदा    | १०८०     |
| प्रतिनिधा   | ८४७      | प्रत्यङ्     | २१८२     | प्रधन         | १६७४     | प्रमनस्   | २०४९     |
| प्रतिश्रावण | २३१७     | प्रत्यम      | २१८९     | प्रधान        | २७२      | प्रमा     | २२७९     |
| प्रतिश्रावय | ११७६     | प्रत्यङ्     | ७७१      |               | १४७७     | प्रमाण    | २४४२     |
| प्रतिश्रय   | २६४१     | प्रत्यङ्पवत  | ६४६      | "             | २१३८     | प्रमाद    | ४२३      |
| प्रतिश्रय   | २८७      | प्रत्यय      | २६३०     | "             | २५७९     | प्रमापण   | १६९२     |
| प्रतिश्रुत् | ३६२      | प्रत्ययिन    | १४२४     | प्रधि         | १५७०     | प्रमिति   | २२५९     |
| प्रतिष्ठन   | २३०३     | प्रत्याभम्   | १४९०     | प्रपञ्च       | २३९१     | प्रमीत    | १४०५     |
| प्रतिष्ठर   | २६८३     | प्रत्यक्षित  | २२४५     | प्रपद         | १२१६     |           | १७०२     |
| प्रतिचीरा   | १२१४     | प्रत्याख्यात | २१०५     | प्रपा         | ६०७      | प्रमीला   | ४३५      |
| प्रतिहृत    | २१०७     | प्रत्याख्यात | २२१२     | प्रपान        | ६४१      | प्रमुख    | २१३८     |
| प्रतिहारक   | १९५१     | प्रत्यादिष्ट | २१०५     | प्रतिनामह     | ११३९     | प्रमुदिन  | २२३०     |
| प्रतिहास    | ८७१      | प्रत्यादेश   | २३१२     | प्रमुनाष्ट    | ९४२      | प्रमोद    | २६३      |
| प्रतीक      | १२१३     | प्रत्याहीद   | १६३८     | प्रपीठरीन     | ९०३      | प्रपत     | १४४२     |

| शब्दः          | पंक्तिः | शब्दः         | पंक्तिः | शब्दः           | पंक्तिः | शब्दः         | पंक्तिः |
|----------------|---------|---------------|---------|-----------------|---------|---------------|---------|
| प्रयस्त ...    | १७९७    | प्रवेष्ट ...  | १२३३    | प्रनृतिका ...   | ११०६    | प्राप्य ...   | २१४०    |
| प्रयाम ...     | २२९६    | प्रव्यक्त ... | २१८७    | प्रसृतिज ...    | ४६६     | प्रावार ...   | २२७०    |
| प्रयोगार्थ ... | २३०१    | प्रश्र ...    | ३३०     | प्रसून ...      | ६८२     | प्राघ ...     | २८८०    |
| प्रलम्ब ...    | ४५      | प्रश्रय ...   | २२९९    | " ...           | २५८०    | " ...         | २८९५    |
| प्रलय ...      | २५९     | प्रश्रित ...  | २०७४    | प्रमूजनयितृ     | ११४७    | प्राचिका ...  | १९१०    |
| " ...          | ४२८     | प्रष्ट ...    | १६११    | प्रमृत ...      | २२०१    | प्राची ...    | १४७     |
| " ...          | १६९९    | प्रष्टवाह ... | १८३३    | प्रस्ता ...     | १२१८    | प्राचीन ...   | ५९९     |
| प्रलाप ...     | ३४१     | प्रष्टौही ... | १८४६    | प्रसृति ...     | १२४४    | प्राचीना ...  | ८१८     |
| प्रवण ...      | २४४७    | प्रसन्न ...   | ४९५     | प्रसेव ...      | १७५९    | प्राचीनावीत   | १४५२    |
| प्रवयम् ...    | ११५८    | प्रसन्नता ... | १७७     | प्रसेवक ...     | ३७५     | प्राच्य ...   | ५६९     |
| प्रवर्ह ...    | २१३९    | प्रसन्ना ...  | २००८    | प्रस्तर ...     | ६४०     | प्राजन ...    | १७३१    |
| प्रवह ...      | २२८५    | प्रसभ ...     | १६८४    | प्रस्ताव ...    | २२९८    | प्राजितृ ...  | १५६५    |
| प्रवहण ...     | १५७१    | प्रसर ...     | २२९५    | प्रस्थ ...      | ६४२     | प्राज्ञ ...   | १३६२    |
| प्रवहिका ...   | ३२२     | प्रसरण ...    | १६५९    | " ...           | १८८४    | प्राज्ञा ...  | १०९८    |
| प्रवारण ...    | २२५६    | प्रसव ...     | २२७०    | " ...           | २५१०    | प्राज्ञी ...  | १०९८    |
| प्रवाल ...     | ३७५     | " ...         | २७५१    | प्रस्थपुष्प ... | ८०६     | प्राज्य ...   | २१५०    |
| " ...          | १८९२    | प्रसव्य ...   | २१९२    | प्रस्थान ...    | १६५८    | प्राङ्निवाक   | १४७८    |
| " ...          | २७४४    | प्रसन्न ...   | २८६९    | " ...           | २५६९    | प्राण ...     | १२६     |
| प्रवाह ...     | २२८५    | प्रसाद ...    | १७७     | प्रस्फोटन ...   | १७५८    | " ...         | १६७२    |
| प्रवानन ...    | १६९३    | " ...         | २५१६    | प्रसवण ...      | ६४३     | " ...         | १७०६    |
| प्रवाहिका ...  | ११८३    | प्रसाधन ...   | १२७२    | प्रस्त्राव ...  | १२०८    | " ...         | १९१५    |
| प्रविरयानि ... | २३०६    | प्रसाधनी ...  | १३५२    | प्रहर ...       | २२६     | प्राथिन् ...  | २७५     |
| प्रविदारण ...  | १६७४    | प्रसाधित ...  | १२७४    | प्रहरण ...      | १६३२    | प्रातर ...    | २८८७    |
| प्रविश्लेष ... | २२९०    | प्रसारिन् ... | २०८६    | प्रहस्त ...     | १२४२    | प्रातिहारिक   | १९५१    |
| प्रविण ...     | २०३२    | प्रसारिणी ... | ९५३     | प्रहि ...       | ५१०     | प्राथमकल्पिक  | १३७४    |
| प्रवृत्ति ...  | ३२५     | प्रसित ...    | २०४२    | प्रहलिका ...    | ३२२     | प्राहुस् ...  | २८४७    |
| " ...          | २२८५    | प्रसिति ...   | २०७८    | प्रहृज ...      | २२३०    | " ...         | २८७३    |
| प्रवृद्ध ...   | २१७७    | प्रसिद्ध ...  | २५४३    | प्रांशु ...     | ३१६४    | प्रादेश ...   | १२४०    |
| " ...          | २२०१    | प्रसू ...     | ११३१    | प्राकार ...     | ५९९     | प्रादेशन ...  | १४१२    |
| प्रवेक ...     | २१३८    | " ...         | २७९४    | प्राकृत ...     | १९६०    | प्राध्वम् ... | २८५७    |
| प्रवेणी ...    | १२६९    | प्रसूता ...   | ११०६    | प्राग्वंश ...   | १३८४    | प्रान्तर ...  | ५९१     |
| " ...          | १५५२    | प्रसृति ...   | २२७०    | प्रामहर ...     | २१४०    | प्रात ...     | २१९७    |

| शब्दः          | पङ्क्तिः | शब्दः     | पङ्क्तिः | शब्दः     | पङ्क्तिः | शब्दः    | पङ्क्तिः |
|----------------|----------|-----------|----------|-----------|----------|----------|----------|
| प्राप्त        | २२३३     | प्रियवद   | २०९७     | प्रव      | १९६७     | फली      | ७५२      |
| प्राप्तपक्षत्व | १७०१     | प्रियाल   | १७८      | प्रवग     | ९६३      | फलमहि    | ६६१      |
| प्राप्तरूप     | २५९७     | प्रीणन    | २२५८     | "         | २३८३     | फलरहा    | ७५७      |
| प्राप्ति       | २४७२     | प्रीत     | २२३०     | प्रवह     | ९६३      | फलग      | ७७१      |
| प्राप्य        | २२०९     | प्रीति    | २६३      | प्रवहम    | ७६१०     | ,        | २१३७     |
| प्राप्तन       | १५२२     | प्रष्ट    | २२२२     | प्राध     | ६८५      | फाणित    | १९९३     |
| प्राप          | १४५७     | प्रेक्षा  | २५९      | प्रीहन्   | १२०५     | फाण्ट    | २२१३     |
|                | २८०२     | ,         | २७८४     | प्रीह्यतु | ७४६      | फाल      | १२०५     |
| प्राप्य        | २६४२     | प्रेक्षा  | १५७३     | प्रुत     | १५६४     | "        | १७३३     |
| प्रापित        | २२१९     | प्रेक्षित | २१०८     | प्रुष्ट   | २२२२     | फालगु    | २४४      |
| प्राप्ति       | १३४५     | प्रेत     | १७०१     | प्रोप     | २२६७     | फालगुनिव | २४५      |
| प्राप्तिपिका   | १२८२     | ,         | २४५४     | प्रोप     | २२४५     | फालगुनी  | २२०६     |
| प्राप्ति       | १८१      | प्रेता    | ४६४      | फ.        |          | प्रुष्ट  | ६६४      |
| प्राप्ति       | १३०८     | प्रेत्य   | २८६५     | फणा       | ४५५      | फन       | १९१६     |
| प्राप्ति       | १३००     | प्रेमन्   | ४१५      | फणिजक     | ८०६      | फनि      | २९३३     |
| प्राप्ति       | २५३      | ,         | ४१५      | फणित      | ४५२      | फनि      | ७११      |
| प्राप्तिपणी    | ८२१      | प्रेम     | २२४७     | फल        | १९९४     | ,        | ७२१      |
| प्राप्त        | १६५४     | प्रेम     | २७७५     | "         | १६४८     | फेरव     | ९९८      |
| प्राप्त        | १५८२     | प्रेम्य   | १९६३     | "         | १७४३     | फर       | ९९८      |
| प्राप्त        | १८३४     | प्रेमण    | १४०४     | "         | २७३७     | फना      | १९१९     |
| प्राप्त        | ६११      | प्रेमशित  | १४०५     | ,         | २९४०     | य        |          |
| प्राप्त        | १६०८     | प्रेम     | १५६५     | फणक       | १६४८     | कक       | १०६१     |
| प्राप्त        | २२१      | प्रेमपदा  | १८९      | फलपणि     | १६४९     | ककुल     | ७७७      |
| प्राप्त        | १९४४     | प्रेमि    | ५०३      | फणिक      | १९२९     | कशिपु    | ४९९      |
| प्राप्त        | २१२१     | प्रीड     | २१७७     | फणित      | ८०५      | कत       | २०२३     |
| प्राप्त        | ७३२      | प्रीडपद   | २४८      | फणित      | ६६२      | कदर      | ७२२      |
| ,              | ७३६      | प्रध      | ७१३      | फणित      | ७४९      | कदरा     | ८८०      |
| ,              | ७६०      |           | ७३५      | फणित      | ६६२      | ,        | ९५०      |
| ,              | १००५     | प्रध      | ४८८      | फणित      | ७६५      | कदरी     | ७२१      |
| प्राप्त        | ७५९      |           | ५१४      | फणित      | ७६५      | कदिग     | १६६२     |
| ,              | १०४६     | ,         | ०१३      | फणित      | ७५९      | कद       | १७०५     |
| प्राप्त        | ४१५      | ,         | १०५६     | ,         | ९२१      | ,        | २२१४     |

# अमरकोशस्य ।

| शब्दः      | पंक्तिः  | शब्दः       | पंक्तिः  | शब्दः      | पंक्तिः  | शब्दः      | पंक्तिः  |
|------------|----------|-------------|----------|------------|----------|------------|----------|
| वधिर       | ... ११६० | वलयवत्      | ... ११६१ | वगुल       | ... २१५० | वापिका     | ... २७८७ |
| वन्धकी     | ... १०९४ | "           | ... २८५३ | वगुला      | ... ८९८  | वाट        | ... १२३३ |
| वन्धन      | ... १५२० | वला         | ... ८६२  | "          | ... २७३३ | वाटन       | ... १२६९ |
| "          | ... २२७८ | वलाका       | ... १०३७ | वालीकृत    | ... १७५३ | वाट्या     | ... ५३२  |
| वन्धु      | ... ११४२ | वलात्कार    | ... १६८४ | वाट्यारक   | ... ७१७  | वाट्युल    | ... १२३१ |
| वन्धुजीवर  | ... ७९४  | वलायानि     | ... ८५   | वाट्यविध   | ... २२११ | वाट्युल    | ... १६८० |
| वन्धुता    | ... ११४३ | वलायक       | ... १५७  | वाट्यसुता  | ... ८४९  | वाट्युल    | ... २५०  |
| वन्धुग     | ... २१६३ | वल्लि       | ... १३८० | वाट्यसूति  | ... १८४७ | वाट्युल    | ... ७९   |
| वन्धुल     | ... ११२५ | "           | ... १५२१ | वाट्युची   | ... ८४०  | वाट्युल    | ... १५५७ |
| वन्धुका    | ... ७९४  | "           | ... २७२५ | वाट        | ... १३०  | "          | ... २३५३ |
| वन्धुपुण्य | ... ७३६  | वल्लि-वसिन् | ... ४२   | वाट        | ... ७४२३ | "          | ... २२५८ |
| वन्धु      | ... २६७६ | वल्लिन      | ... ११६४ | वाण        | ... १६४० | वाट्युल    | ... १७२१ |
| वर्षर      | ... ८२८  | वल्लिपुष्ट  | ... १०२७ | "          | ... २४२५ | "          | ... १७८६ |
| वर्षरा     | ... ९२७  | वल्लिम      | ... ११६४ | वाणा       | ... ७९७  | "          | ... २३५३ |
| वर्ह       | ... ९१३  | वल्लिमुञ्ज  | ... १०२८ | वादार      | ... १२९५ | निष्ठ      | ... १९९१ |
| "          | ... १०५० | वल्लिर      | ... ११७१ | वाधा       | ... ४६६  | विडाल      | ... ९९९  |
| "          | ... २८०७ | वल्लिमन्    | ... ४३९  | वाध्वकिनेय | ... ११२५ | विन्दु     | ... ४७९  |
| वर्हिण     | ... १०४७ | वलीवर्द     | ... १८२५ | वाध्व      | ... ११४२ | विन्धोक्त  | ... ४२४  |
| "          | ... १०४७ | वल्हव       | ... १७६१ | वाहंत      | ... ६८६  | विन्ध      | ... १७५  |
| वर्हिर्मुग | ... १७   | "           | ... १८२१ | वाल        | ... ८९२  | विन्धिका   | ... ९२६  |
| वर्हिस्    | ... १०७  | वल्लवज      | ... ९७४  | "          | ... ११५७ | विल        | ... ४४०  |
| "          | ... १०४७ | वल्कयणी     | ... १८४८ | "          | ... २७४६ | विलेय      | ... ४५२  |
| वर्हिष्    | ... ८९२  | वल्         | ... १८५८ | वालतनय     | ... ७४७  | विन्द      | ... ७१२  |
| वल         | ... ४८   | वल्हिर      | ... ६२५  | वालतृण     | ... ९८३  | विन्दमून   | ... ५४८  |
| "          | ... १५०२ | वल्हिष्ट    | ... २२४७ | वालमूषिका  | ... १०११ | विसिनी     | ... ५४४  |
| "          | ... १६२४ | वल्हिस्     | ... २८८३ | वाला       | ... ३९०  | विष        | ... १५१  |
| "          | ... १६७१ | वल्ह        | ... २१५० | वालिया     | ... २१२० | विमकण्टिका | ... १०३७ |
| "          | ... २७२६ | वल्हकार     | ... २०५८ | "          | ... २७७१ | विस्       | ... १८७९ |
| "          | ... २९३९ | वल्हगार्वाच | ... २०९६ | वालेय      | ... १८६१ | वीज        | ... २७१  |
| वलदेव      | ... ४५   | वल्हपाद     | ... ७१३  | वालेयशाक   | ... ८२८  | "          | ... ११९७ |
| वलमद्र     | ... ४५   | वल्हमद्र    | ... २०३६ | वाल्थ      | ... ११५३ | वीजकोश     | ... ५५३  |
| वलमद्रिका  | ... ९४९  | वल्हस्य     | ... १३२९ | वाप्प      | ... २५९५ | वीजपूर     | ... ८०५  |

| शब्दः    | पंक्तिः | शब्दः             | पंक्तिः | शब्दः          | पंक्तिः | शब्दः        | पंक्तिः |
|----------|---------|-------------------|---------|----------------|---------|--------------|---------|
| मीमांसुत | १०२३    | मन्त्रचारिन्      | १३५९    | मन्त्रकार      | १०६३    | मयानव        | ४०१     |
| वीर्य    | १३५०    | "                 | १३५७    | मय             | १२२५    | भर           | १३१     |
| वीमल     | ३१६     | मन्त्राण्य        | ७३१     | "              | २३८७    | भरण          | ७००६    |
| "        | २८०४    | मन्त्रात्         | १३५५    | मगन्दर         | ११८५    | भरण्य        | २००६    |
| पुन      | ८११     | मन्त्रद्वया       | ९३८     | मगवन्          | २६      | भरण्यमुञ्ज   | २०६२    |
| पुनः     | १२०२    | मन्त्रशक्त        | ७३१     | मगिनी          | ११३१    | भरत          | १९५३    |
| पुनः     | २५      | मन्त्रम्          | ३१      | मह             | १३७०    | भरद्वाज      | १०१८    |
| "        | २२४०    | "                 | २६६३    | महता           | १३७७    | भय           | ६६      |
| पुनः     | २७८     | मन्त्रपुत्र       | ७५८     | महि            | २९११    | भय           | ११४४    |
| पुनः     | २९३२    | मन्त्रपुत्र       | २५४२    | महामान         | १५१६    | "            | ४४५३    |
| पुनः     | १९६     | मन्त्रविदु        | १३३०    | मह             | १५८९    | भयदारक       | ३८६     |
| "        | १३६९    | मन्त्रमूय         | १३५५    | मन्त्रि        | १३९६    | मन्त्रदारिका | ३८७     |
| "        | २५३५    | मन्त्रावच्छ       | १३२९    | मन्त्रारक      | ३८७     | मन्त्रन      | ३३८     |
| पुनित    | २२४०    | मन्त्रासायुज्य    | १३५५    | मन्त्रिनी      | ३८८     | मन्त्रम्     | १८१५    |
| पुनः     | ६७२     | मन्त्रम्          | ५३      | मन्त्रापी      | ८७६     | "            | २००५    |
| पुनः     | १८१५    | मन्त्राशक्ति      | १३३०    | मन्त्रिष्ठ     | ७७५     | मन्त्र       | २९३५    |
| पुनः     | २०६४    | मन्त्रासन         | १३३१    | मन्त्रि        | ८३०     | मन्त्रातकी   | ७३३     |
| पुनः     | १७५१    | मन्त्र            | १३१३    | मन्त्रिरी      | ८३०     | मन्त्रव      | ९९४     |
| पुनः     | २९६३    | मन्त्र (महोरात्र) | २५७     | मन्त्र         | २६५     | मन्त्रव      | ९९५     |
| पुनः     | ८३५     | मन्त्राण          | १३६१    | "              | १८२५    | मन्त्र       | ६८      |
| "        | २४८४    | मन्त्राण्यष्टिका  | ८२७     | मन्त्रकुम्भ    | १५३२    | मन्त्र       | २७४७    |
| पुनः     | २१३५    | मन्त्राणी         | ८२७     | मन्त्रदाह      | ७५७     | "            | ३७४७    |
| पुनः     | १३०८    | मन्त्राण्य        | २३३१    | मन्त्रपणी      | ७२०     | मन्त्र       | ६०२     |
| पुनः     | ११६२    | मन्त्रा           | ७०      | मन्त्रवला      | ९५४     | मन्त्रापी    | ७३      |
| पुनः     | १०८     | "                 | ३१२     | मन्त्रमुत्पन्न | ९६८     | मन्त्रि      | २६६     |
| पुनः     | १९२     | "                 | ९२३     | मन्त्रय        | ७८२     | मन्त्रि      | २०८३    |
| पुनः     | १६८२    | म                 |         | मन्त्रि        | १३३५    | मन्त्रि      | २०८३    |
| पुनः     | १६६१    | न                 | १८६     | मन्त्रासन      | १५३०    | मन्त्र       | २६६     |
| पुनः     | ६८९     | मन्त्र            | १८०३    | मन्त्र         | ४०३     | मन्त्र       | १९७२    |
| पुनः     | १९१५    | मन्त्र            | २०६५    | मन्त्रव        | ४०३     | मन्त्रा      | १९९५    |
| पुनः     | २०१     | मन्त्र            | २२४५    | मन्त्रवृत्त    | २१०९    | मन्त्रागिनी  | ८८९     |
|          |         | मन्त्रित          |         | मन्त्रानक      | २९५     | मन्त्रागिनी  | ७७४     |

| शब्दः         | पंक्तिः | शब्दः         | पंक्तिः | शब्दः               | पंक्तिः | शब्दः           | पंक्तिः |
|---------------|---------|---------------|---------|---------------------|---------|-----------------|---------|
| भा ...        | २१२     | भाव ...       | २०५०    | भीरुक ...           | २०७७    | भूदेव ...       | १२६०    |
| भाग ...       | १८८५    | भावित ...     | १३४१    | भीष्टक ...          | २०७७    | भूमिन्व ...     | ९१४     |
| भागधेय ...    | २७०     | " ...         | १७९९    | भीषण ...            | ४०१     | भूप ...         | १४७०    |
| " ...         | १५२१    | " ...         | २२३३    | भीष्म ...           | ४०१     | भूपदी ...       | ७८८     |
| भागिनेय ...   | ११३८    | भावुक ...     | २६६     | भीष्मत् ...         | ५२९     | भूभृत् ...      | २४५६    |
| भागीरथी ...   | ५२९     | भाषा ...      | ३१२     | भुक्त ...           | २७४६    | भूमि ...        | ५६०     |
| भाग्य ...     | २७०     | भाषित ...     | २१३     | भुक्तसमुद्भिन्न ... | ५४१     | भूमिजम्बुता ... | ७२४     |
| " ...         | २६४५    | " ...         | २२२९    | भुम्भ ...           | २१६७    | " ...           | ८८४     |
| भाजन ...      | १७७३    | भाष्य ...     | १९५७    | " ...               | २२०६    | भूमिभृत् ...    | १७०८    |
| भाण्ड ...     | १७७३    | भाम् ...      | २१२     | भुज ...             | १२३३    | भूयम् ...       | २१५१    |
| " ...         | २४२२    | भास्कर ...    | २०१     | भुजग ...            | ४५०     | भूयिष्ठ ...     | २१५१    |
| भाद्र ...     | २४८     | भाग्यत् ...   | २०२     | भुजंग ...           | ४५०     | भूरि ...        | २१५१    |
| भाद्रपद ...   | २४८     | भिक्षा ...    | २२६२    | भुजङ्गमुज्ज ...     | १०४७    | " ...           | २७००    |
| भाद्रपदा ...  | १८९     | " ...         | २७८४    | भुजगम ...           | ४५०     | भूरिफेना ...    | ९३५     |
| भाव ...       | २०६     | भिक्षु ...    | १३५५    | भुजङ्गाक्षी ...     | ८२०     | भूरिमाय ...     | ९९७     |
| " ...         | २११     | " ...         | १४३५    | भुजशिरस् ...        | १२३०    | भूर्ण्डी ...    | ७८७     |
| " ...         | २५४४    | भित्त ...     | १७६     | भुजान्तर ...        | १२२८    | भूर्ज ...       | ७४०     |
| भामिनी ...    | १०८१    | भित्ति ...    | ६००     | भुजिग्य ...         | १९६३    | भूषण ...        | १२७५    |
| भार ...       | १८८०    | भिदा ...      | २२६०    | भुवन ...            | ४७२     | भूषित ...       | १२७४    |
| भारत ...      | ५६९     | भिदुर ...     | ९३      | " ...               | ५६८     | भूष्ण ...       | २०८३    |
| भारती ...     | ३१२     | भिन्दिपाल ... | १६५०    | भू ...              | ५६०     | भूगृण ...       | ९८२     |
| भारद्वाजी ... | ८८१     | भिन्न ...     | २१८९    | भूत ...             | ६२      | भृगु ...        | ६४१     |
| भारयष्टि ...  | १९८९    | " ...         | २२२५    | " ...               | २२३३    | भृङ्ग ...       | ९१७     |
| भारवाह ...    | १९५९    | भिषज् ...     | १२८७    | " ...               | २४९०    | " ...           | १०२०    |
| भारिक ...     | १९५९    | भिस्तटा ...   | १८०४    | भूतकेश ...          | १९२८    | " ...           | १०४६    |
| भार्गव ...    | १९४     | भिस्ता ...    | १८०३    | भूतवेशी ...         | ७९०     | भृगाराज ...     | ९५१     |
| भार्गवी ...   | ९६५     | भी ...        | ४०३     | भूतावास ...         | ७६५     | भृङ्गार ...     | १५३२    |
| भार्गी ...    | ८२७     | भीति ...      | ४०३     | भूति ...            | ७१      | भृङ्गारी ...    | १०४३    |
| भार्था ...    | १०८५    | भीम ...       | ६८      | " ...               | २४७३    | भृतक ...        | १९५८    |
| भार्थापती ... | ११४९    | " ...         | ४०१     | भूतिक ...           | २३५०    | भृति ...        | २००५    |
| भाव ...       | ३८५     | भीरु ...      | १०७९    | भूतेश ...           | ६१      | भृतिभुज् ...    | १९५८    |
| " ...         | ४०४     | " ...         | २०७७    | भूदार ...           | ९९२     | भृत्य ...       | १९६२    |

| शब्दः   | पङ्क्तिः | शब्दः   | पङ्क्तिः | शब्दः       | पङ्क्तिः | शब्दः        | पङ्क्तिः |
|---------|----------|---------|----------|-------------|----------|--------------|----------|
| शृत्वा  | २००५     | आशृताया | १११४     | मचर्चिवा    | २६८      | मण्डूर       | १९०३     |
| शृश     | १३२      | आशृष्य  | २६२७     | मघ          | १३४९     | मतङ्गज       | १५३६     |
| मेक     | ५१४      | आश्रीय  | ११४६     | मजा         | ६७३      | मतङ्गिका     | २६८      |
| मेका    | ५१५      | आश्रित  | २८५      | मज्जरि      | ६७५      | मति          | २७८      |
| मेद     | १५०२     | आश्रु   | १७६७     | मज्जिष्ठा   | ८२९      | मघ           | १५१९     |
|         | १५१०     | भुक्च   | ३८३      | मज्जीर      | १२९५     |              | २०७१     |
| मेधित   | २२२५     | भुक्चि  | ४३५      | मज्जु       | २१२९     | "            | २२३०     |
| मेरी    | ३६३      | भू      | १२५७     | मज्जुच      | २१२९     | मत्तकाशिनी   | १०८२     |
| मेयज    | ११७४     | भूकुच   | ३८३      | मज्जुपा     | १९८९     | मत्सर        | १६८०     |
| मेध     | १३४५     | भूकुचि  | ४३५      | मट          | ६०८      | मत्स्य       | ५००      |
| मेरय    | ४००      | भूण     | ११५१     | महड्ड       | ३७७      | मत्स्यण्डी   | १७९३     |
| मेय-य   | ११७४     |         | २४२५     | गणि         | १८९३     | मत्स्यपिशा   | ८२०      |
| भोग     | २३८०     | अथ      | १५१४     | मणिक        | १७६८     | मत्स्यवेधन   | ४९२      |
| भोगवती  | २४७४     |         |          | मणिवध       | १२३५     | मत्स्यवाधी   | ९२३      |
| भोगिन्  | ४५४      | म       |          | मणिवग्ध     | १७९०     | मत्स्यवाधानी | ४९२      |
| भोगिनी  | १०८३     | मकर     | ५०७      | मणिवग्ध     | १७९०     | मधित         | १८१३     |
| भोजन    | १८१६     | मकरध्वज | ५३       | मण्ड        | ७५१      | मधिन्        | १८५४     |
| भोद्य   | २८६३     | मकरण्ड  | ६८३      | मण्डन       | १८०४     | मद्य         | २३७४     |
| भौम     | १९५      | मकुट    | १२७७     |             | २०८२     |              | ३५१७     |
| भौरिक   | १४८३     | मकुट    | १२५३     | मण्डप       | ६१०      | मदफल         | १५३८     |
| भकुच    | ३८३      | मकुटक   | १७४०     | मण्डल       | १५६      | मदन          | ४९       |
| भकुचि   | ४३५      | मकुलक   | ९३६      |             | १७५      |              | ७५४      |
| भम      | २८५      | मक्षिषा | १०४०     | मण्डलक      | २०९      |              | ८०४      |
|         | ४८०      | मम      | १२७९     | मण्डलक      | ११८२     | मदस्थान      | २०१०     |
|         | २२६७     | ममव     | १६६३     | मण्डलाग्र   | १६७६     | मदिरा        | २००९     |
| अमर     | १०४६     | ममवत्   | ८१       | मण्डलेश्वर  | १४७२     | मदिरागृह     | ६०८      |
| अमरव    | १२६६     | ममवत्   | ८१       | मण्डहारक    | १९४९     | मदोत्कट      | १५३८     |
| अमि     | २२६७     | मम्व    | २८५२     | मण्डित      | १२७३     | महु          | १०५६     |
| अष्ट    | २२३२     | मम्व    | २६५      | मण्डूक      | ५१४      | महुर         | ५०५      |
| आभिष्यु | १२७५     | मम्व    | १७४०     | मण्डूकपण    | ७६१      |              | १६४९     |
| आतर     | ११४६     | मम्व    | १४३७     | मण्डूकपर्णी | ८३०      | मघ           | २००९     |
| आपुज    | ११४६     | मम्व    |          |             |          |              |          |



| शब्दः          | पंक्तिः | शब्दः            | पंक्तिः | शब्दः           | पंक्तिः | शब्दः          | पंक्तिः |
|----------------|---------|------------------|---------|-----------------|---------|----------------|---------|
| मधु ...        | २४५     | मधूक ...         | ७०३     | मनोह्रा ...     | १९२२    | मयूत ...       | २१०     |
| " ...          | ९३२     | मधूच्छिष्ट ...   | १९२१    | मन्तु ...       | १५२०    | " ...          | २३७०    |
| " ...          | १९२१    | मधूलक ...        | ७०४     | मन्त्र ...      | २६६९    | मयूर ...       | ८७१     |
| " ...          | २०११    | मधूलिका ...      | ८१६     | मन्त्रज ...     | १५०५    | " ...          | १०४७    |
| " ...          | २५४०    | मध्य ...         | १२३२    | मन्त्रिन् ...   | १४७६    | मयूरक ...      | ८२५     |
| मधुक ...       | ८६७     | " ...            | २६५७    | मन्त्र ...      | १८५४    | " ...          | १९०८    |
| " ...          | १६६२    | मध्यदेश ...      | ५७१     | मन्त्रटण्डक ... | १८५४    | मरकात ...      | १९०९    |
| मधुकर ...      | १०४५    | मध्यम ...        | ३६३     | मन्थनी ...      | १८५५    | मरण ...        | १७००    |
| मधुकम ...      | २०१०    | " ...            | ५७१     | मन्थर ...       | १६१२    | मरीच ...       | १७७८    |
| मधुद्रुम ...   | ७०३     | " ...            | १२३२    | मन्थान ...      | १८५४    | मरीचि ...      | १९८     |
| मधुप ...       | १०४५    | मध्यमा ...       | १०९०    | मन्द ...        | १९३६    | " ...          | २११     |
| मधुपणिका ...   | ७१९     | " ...            | १२३८    | " ...           | १५२४    | मरीचिका ...    | २१५     |
| " ...          | ८३७     | मध्याह्न ...     | २२१     | मन्दगामिन् ...  | १६१२    | मरु ...        | ५६७     |
| मधुपर्णी ...   | ८१४     | मध्यासव ...      | २०११    | मन्दाकिनी ...   | ९७      | " ...          | २६६१    |
| मधुमक्षिका ... | १०४०    | मन शिला ...      | १९२२    | मन्दाक्ष ...    | ४०८     | मरुत् ...      | १४९     |
| मधुयष्टिका ... | ८६७     | मनस् ...         | २७७     | मन्दार ...      | ९९      | " ...          | २४५२    |
| मधुर ...       | २९४     | मनसिज ...        | ५१      | " ...           | ७००     | मरुत्वत् ...   | ८१      |
| " ...          | २७१८    | मनस्कार ...      | २८१     | " ...           | ८१०     | मरुन्माला ...  | ९१४     |
| मधुरक ...      | ९३३     | मनाक् ...        | २८६५    | मन्दिर ...      | ६०२     | मरुथका ...     | ७५३     |
| मधुरसा ...     | ८१५     | मनित ...         | २२४०    | " ...           | २७०३    | " ...          | ८०६     |
| " ...          | ८६३     | मनीपा ...        | २७८     | मन्दुरा ...     | ६०६     | मर्कट ...      | ९९४     |
| मधुरा ...      | ९५२     | मनीपिन् ...      | १२६३    | मन्दोष्ण ...    | २१४     | मर्कटका ...    | १०१३    |
| मधुरिका ...    | ८५८     | मनु ...          | २९७०    | मन्द्र ...      | ४६६     | मर्कटी ...     | ७४५     |
| मधुरि ...      | ४०      | मनुज ...         | १०७५    | मन्मथ ...       | ४९      | " ...          | ८२२     |
| मधुलिह ...     | १०४५    | मनुष्य ...       | १०७५    | " ...           | ६९१     | मर्त्य ...     | १०७५    |
| मधुवार ...     | २०१०    | मनुष्यधर्मन् ... | १३६     | मन्या ...       | १२०३    | मर्दन ...      | २२९४    |
| मधुवन ...      | १०४५    | मनोगुप्ता ...    | १९२२    | मन्यु ...       | ४११     | मर्दल ...      | ३७८     |
| मधुशिम ...     | ७११     | मनोजवस ...       | २०५१    | " ...           | २६४२    | मर्मन् ...     | २९५५    |
| मधुश्रेणी ...  | ८१६     | मनोज्ञ ...       | २१२२    | मन्वन्तर ...    | २५८     | मर्मर ...      | ३५७     |
| मधुछीला ...    | ७०४     | मनोरथ ...        | ४१६     | मय ...          | १८५६    | मर्मरपृश्न ... | २१९१    |
| मधुस्तवा ...   | ९३२     | मनोरम ...        | २१२९    | मयु ...         | १४१     | मर्यादा ...    | १५१९    |
|                |         | मनोहत ...        | २१०७    | मयुष्टक ...     | १७४०    | मल ...         | १२०४    |

| शब्दः      | पंक्तिः | शब्दः      | पंक्तिः | शब्दः      | पंक्तिः | शब्दः         | पंक्तिः |
|------------|---------|------------|---------|------------|---------|---------------|---------|
| मल         | २७२९    | महानघ      | १७६०    | महीपथ      | ९४४     | मातुलाहि      | ४४९     |
| मलदूषित    | २१२४    | मलामात्र   | १४७७    | "          | १७८२    | मातुली        | ११२४    |
| मलयू       | ७७१     | महारणत     | १८९६    | मा         | २८७१    | मातुठक्क      | ७५      |
| मलयज       | ११२५    | महारजन     | १८६९    | मास        | ११९९    | मातृ          | ७०      |
| मलिन       | २१२४    | "          | १९१९    | "          | २९२९    | "             | ३९०     |
| मलिनी      | १११४    | महारण्य    | ६५१     | मासिक      | ११६१    | "             | ११२१    |
| मलिम्लुष   | १९०८    | महाराजिक   | २०      | मासिक      | १९५७    | "             | १८६९    |
| मलीमल      | २११४    | महारौरव    | ४६२     | माध्व      | १९२१    | मात्र         | २६९१    |
| मल्ल       | २९२६    | महाशय      | २०२०    | मागध       | १६६२    | मात्रा        | ११४८    |
| मल्लव      | २९६२    | महाशस्त्री | ११००    | "          | १९३३    | "             | २६९०    |
| मल्लिका    | ७८७     | महाशेना    | ८६९     | मागधी      | ७९०     | माद           | २३७४    |
| मल्लिकाश   | १०३६    | महासदा     | ७९५     | "          | ८४१     | मायव          | ३६      |
| मली        | २९१५    | "          | ९३५     | माय        | २४४     | "             | २४६     |
| मल्ल       | १७४०    | महासेन     | ७७      | माय्य      | ७९४     | मायवक         | २०११    |
| मल्लविद्या | ८६६     | महिला      | १०७८    | माठर       | २०७     | माधवी         | ७९२     |
| मल्लन      | १७९०    | महिलाद्वया | ७५८     | माठि       | २९१२    | माधवीक        | २०११    |
| मल्लर      | ९७०     | महिय       | ९२६     | माणवक      | ११५७    | मान           | ४०५     |
| मल्लरित्   | १४२५    | महिषी      | १०८९    | "          | १२८५    | "             | ८४४     |
| मल्लक      | १२६३    | मही        | ५६३     | माणव्य     | २३३०    | मानव          | १०७५    |
| मल्लिष्क   | १२०४    | महीपितृ    | १४७०    | माणिक्य    | २९५७    | मानस          | २७७     |
| मल्लु      | १८१४    | महीप्र     | ६३४     | माणिमन्त्र | १७१०    | मानसीध्वपा    | ४०८     |
| मल्ल       | ४३८     | महीरह      | ६५८     | मानक       | १९३७    | मानसीकम्      | १०३४    |
| मल्ल       | २१४५    | महीलना     | ५०९     | मानरपितृ   | ११४०    | मानिनी        | १०८०    |
| "          | २४९२    | महीयुत     | १९५     | मानरिष्यन् | १२२     | मातृप         | १०७५    |
| महती       | २४७४    | महण        | २०२०    | मतकि       | ९०      | मातृप्यक      | २२३३    |
| महय        | २७९७    | महेरणा     | ८९६     | मातापितृ   | ११४७    | माया          | १९५१    |
| महाकण्ड    | ९४५     | महेश्वर    | ५९      | मातामह     | ११४०    | मायाकार       | १९५१    |
| महाकुल     | १४५८    | महोद्य     | १८९८    | मातुल      | ८०४     | मायादेवीपुत्र | ३०      |
| महाक       | १८५६    | महोत्पल    | ५४५     | "          | ११३६    | मायु          | ११९८    |
| महाप्राची  | ८८१     | महोत्साह   | २०३१    | मातृपुत्रक | ८०४     | मायूर         | १०७३    |
| महादेव     | ६४      | महोद्यम    | २०३१    | मातृप्राची | ११३४    | मार           | ४९      |
| महाधन      | १२९९    | महीपथ      | ८४४     | "          | १७४७    | मारणित्       | २६      |

| शब्दः          | पंक्तिः | शब्दः             | पंक्तिः | शब्दः         | पंक्तिः | शब्दः               | पंक्तिः |
|----------------|---------|-------------------|---------|---------------|---------|---------------------|---------|
| मारण ...       | १६९६    | मामर ...          | १८०५    | मुकारफोट ...  | ५१२     | मुनर्य ...          | २११५    |
| मारिष ...      | २९०     | मारम ...          | २८७१    | मुक्ति ...    | २८९     | मुस्तक ...          | ९६७     |
| मारुत ...      | १२४     | माहिष्य ...       | १९३४    | मुख ...       | ६३०     | मुन्ना ...          | ९६७     |
| मार्कव ...     | ९५१     | मातेयी ...        | १८३९    | " ...         | १२५१    | मुहुस ...           | २८५१    |
| मार्ग ...      | २४३     | मितपत्र ...       | २१२१    | " ...         | २९३९    | मुहुर्भाषा ...      | ३४२     |
| " ...          | ५८६     | मित्र ...         | २०४     | मुखर ...      | २०९७    | मुहूर्त ...         | २३७     |
| मार्गण ...     | १६४१    | " ...             | १४८६    | मुखवासन ...   | २९९     | मूक ...             | २०५१    |
| " ...          | २१२३    | " ...             | १४९१    | मुख्य ...     | १४३२    | मूढ ...             | २१२०    |
| " ...          | २३०९    | " ...             | २६६९    | " ...         | २१३९    | मूत ...             | २२१४    |
| मार्गशीर्ष ... | २४३     | मिथस् ...         | २८४७    | मुण्ड ...     | ११७०    | मूय ...             | १२०८    |
| मार्गित ...    | २२३४    | मिथुन ...         | १०६४    | " ...         | २९६२    | मूयकृच्छ्र ...      | ११८६    |
| मार्जन ...     | ७१४     | मिथ्या ...        | २८७८    | मुण्डित ...   | ११७०    | मूयित ...           | २२१७    |
| मार्जना ...    | १३१५    | मिथ्यादृष्टि ...  | २८४     | " ...         | २१९५    | मूर्ध ...           | २१३०    |
| मार्जार ...    | ९९९     | मिथ्याभियोग ...   | ३३१     | मुण्डित् ...  | १९४८    | मूर्च्छा ...        | १६८६    |
| मार्जिता ...   | १७९४    | मिथ्याभिज्ञान ... | ३३१     | मुत् ...      | १६३     | मूर्च्छाल ...       | ११९६    |
| मार्तण्ड ...   | २०३     | मिथ्यामति ...     | २८५     | मुदिर ...     | १५९     | मूर्च्छित ...       | ११९६    |
| मार्दक्षिक ... | १९५४    | मिश्रेय ...       | ८५९     | मुद्वर्षी ... | ८७५     | " ...               | २४९९    |
| मार्द्वीक ...  | २०११    | मिस्री ...        | ८५८     | मुद्वर ...    | १६४९    | मूर्त ...           | ११९६    |
| मार्ष्टि ...   | १३१५    | " ...             | ९१६     | मुधा ...      | २८५७    | " ...               | २१७७    |
| मालक ...       | ७७२     | मिस्री ...        | ९५२     | मुनि ...      | २८      | मूर्ति ...          | १२१५    |
| मालती ...      | ७९३     | मिहिका ...        | १८०     | " ...         | १४३६    | " ...               | २४६७    |
| माला ...       | १३४३    | मिहिर ...         | २०३     | मुनीन्द्र ... | २८      | मूर्तिमत् ...       | २१७७    |
| मालाकार ...    | १९३९    | मीढ ...           | २२१७    | मुरज ...      | ३७२     | मूर्द्धन् ...       | १२६३    |
| मालातृणक ...   | ९८२     | मीन ...           | ५००     | मुरा ...      | ८९४     | मूर्द्धागिपित्त ... | १४६९    |
| मालिका ...     | १९३९    | मीनकेतन ...       | ४९      | मुयित ...     | २२००    | " ...               | २४५७    |
| मालुधान ...    | ४४९     | मुकुट ...         | १२७७    | मुष्क ...     | १२२६    | मूर्वा ...          | ८१५     |
| मालू ...       | ७१२     | मुकुन्द ...       | ८९१     | मुष्कक ...    | ७२७     | मूल ...             | ६७२     |
| माल्य ...      | १३४३    | मुकुर ...         | १३५३    | मुष्टिकव ...  | २२७७    | " ...               | २७३५    |
| माल्यवत् ...   | ६३८     | मुकुल ...         | ६९१     | मुसल ...      | १७५७    | मूलक ...            | ९६३     |
| मायपर्णी ...   | ९२५     | मुक्तकधुक ...     | ४४९     | मुसलित् ...   | ४७      | मूलकर्मन् ...       | २२५७    |
| मापादि ...     | १७५४    | मुक्ता ...        | १८९२    | मुसली ...     | ८८६     | मूलधन ...           | १८६६    |
| मास ...        | २३९     | मुक्तावली ...     | १२८३    | " ...         | १०१२    | मूल्य ...           | १८६५    |

| शब्दः      | पङ्क्तिः | शब्दः         | पङ्क्तिः | शब्दः    | पङ्क्तिः | शब्दः      | पङ्क्तिः |
|------------|----------|---------------|----------|----------|----------|------------|----------|
| मूष        | २००६     | मृत           | १७१२     | मेदू     | १२२५     | मोह        | १६८६     |
| मूषक       | १०११     | मृतज्ञान      | २०६३     | "        | १८५९     | मौक्तिक    | १८९१     |
| मूषा       | १९९५     | मृत्तलक       | ९१०      | मेदक     | १०१२     | मीमीन      | १७२९     |
| "          | २९७१     | मृत्तिका      | ५६४      | मेदक     | १२०२     | मीन        | १७२४     |
| मृषिकपर्णी | ८२४      | मृत्यु        | १७००     | मदिनी    | ५६३      | मीरजिक     | १९५४     |
| मृषित      | २२००     | मृत्युभव      | ६२       | मेदुर    | २०८४     | मीवी       | १६१७     |
| मृग        | १००२     | मृषा          | ५६४      | मेघा     | २८०      | मीलि       | २७२१     |
| "          | २३०९     | मृत्ता        | ५६४      | मेधि     | १७३६     | मीष्ट      | २९०५     |
| "          | २३७५     | "             | ९१०      | मध्य     | २१३५     | मीहृत      | १७९६     |
| मृगणा      | २३०९     | मृदङ्ग        | २७२      | मेह      | ९८       | मीहृति     | १४९६     |
| मृगमृत्पा  | २१५      | मृदु          | २१८०     | मेल्क    | २३०८     | मिल्ल      | २५३      |
| मृगदन्तक   | १९७१     | "             | २५२३     | मेय      | १८५९     | मल्लदेश    | ५७१      |
| मृगधूर्तक  | ९९७      | मृदुत्वच्     | ७४०      | मेयकम्ब  | १९२०     | म्लेच्छमुख | १९०१     |
| मृगनाभि    | १३१३     | मृदुल         | २१८०     | मेह      | ११८५     | य          |          |
| मृगवचानीय  | १९७०     | मृदीवा        | ८६३      | मेहन     | १३२५     | मृष्ट      | १२८६     |
| मृगवधनी    | १९८१     | मृष           | १६७५     | मेवावगणि | १८५      | मय         | २१       |
| मृगमद्     | १३३२     | मृषा          | २८७८     | मिनी     | २९७३     | "          | १३८      |
| मृगया      | १९७५     | मृषाधक        | ३५२      | मिम्ब    | २९७३     | मक्षकदन    | १३३९     |
| मृगयु      | १९७०     | मृष्ट         | २१३६     | मिभुन    | १३६६     | मद्यभुप    | १३२८     |
| मृगव्य     | १९७५     | मन्त्रक-वका   | ५३१      | मेरेय    | २०१२     | मद्यराज    | १३५      |
| मृगगिरि    | १९०      | मन्त्रका      | १२९०     | मोक्ष    | २९०      | मक्षग      | ११७६     |
| मृगशीय     | १९०      | "             | १६४७     | "        | ७२७      | मजमान      | १३६८     |
| मृगाङ्ग    | १७३      | मय            | १५७      | मोष      | २१८७     | मजु        | ३१७      |
| मृगाङ्ग    | ९९०      | मेषयोगि       | १६४      | मोषा     | ७५७      | मक्ष       | १३७९     |
| मृगित      | २३३४     | मेषनादानुलासि | १०४      | मोषक     | ७१०      | मक्षान     | १२९९     |
| मृगेन्द्र  | ९८९      | मघनाम         | ९६७      | मोषा     | ७४१      | मक्षक      | ६९२      |
| मृला       | १३१५     | मयनिर्वाण     | १६१      | मोषा     | ८७४      | मक्षि      | १४०७     |
| मृह        | ६१       | मेषपुण्य      | ३७५      | मोक्ष    | ३९६०     | मक्षग      | १३६२     |
| मृहानी     | ७४       | मेषमाहा       | १६०      | मोस्ट    | १९२६     | मक्ष       | २८५५     |
| मृणा       | ५५१      | मेषवाहन       | ८७       | मोस्टा   | ८१५      | मक्ष       | २८५५     |
| मृण        | ५६४      | मथक           | १०४      | मोवक     | १९७७     | मक्षि      | १३३९     |
| मृण        | १७०३     | "             | १०४९     |          |          |            |          |

| शब्दः             | पंक्तिः | शब्दः         | पंक्तिः | शब्दः           | पंक्तिः | शब्दः         | पंक्तिः |
|-------------------|---------|---------------|---------|-----------------|---------|---------------|---------|
| यतिन् ...         | १४३९    | यच्य ...      | १४२०    | यान ...         | २२६     | यूक्षप ...    | १५३७    |
| यथा ...           | २८६६    | यश पटह ...    | ३७३     | „ ...           | २२८६    | यूधिका ...    | ७९१     |
| यथाजात ...        | २१७०    | यशम् ...      | ३३३     | यामिनी ...      | २२४     | यूय ...       | ७३१     |
| यथायथम् ...       | २८७८    | यष्टि ...     | २९७१    | यामुन ...       | १९०७    | „ ...         | २९२३    |
| यथायथम् ...       | २८७७    | यष्टीमधुक ... | ८६७     | यायजूक ...      | १३६९    | „ ...         | २९६५    |
| यथार्थम् ...      | २८७८    | यष्टृ ...     | १३६८    | याय ...         | १३२३    | यूयम् ...     | १३९०    |
| यथार्हवर्ण ...    | १४९३    | याग ...       | १३७१    | यावक ...        | १७४२    | यूप ...       | २९६५    |
| यथास्वम् ...      | २८७७    | „ ...         | १३७९    | यावत् ...       | २८२८    | यौक्त्र ...   | १७३२    |
| यथेक्षित ...      | १८२०    | „ ...         | २९१७    | यावन ...        | १३३०    | योग ...       | २३७९    |
| यदि ...           | २८७२    | यावक ...      | २१२३    | याष्टीक ...     | १६०७    | योगेष्ट ...   | १९१७    |
| यदृच्छा ...       | २२५४    | यावनक ...     | २१२३    | यास ...         | ८३१     | योग्य ...     | ८७३     |
| यन्तृ ...         | १५८६    | यावना ...     | १४१७    | युक्त ...       | १५१६    | योजन ...      | २९५५    |
| „ ...             | २४५३    | याचिन ...     | १७११    | युक्तरसा ...    | ९९८     | योजनवह्नी ... | ८३८     |
| यल ...            | २५५३    | याचितक ...    | १७१५    | युग ...         | १०६४    | योज ...       | १७३१    |
| यम ...            | ११६     | याचना ...     | १४१७    | „ ...           | २३८३    | योद्धृ ...    | १५८९    |
| „ ...             | १४४९    | „ ...         | २२६२    | युगकीलक ...     | १८४४    | योध ...       | १५८९    |
| „ ...             | २२८६    | यानक ...      | १३८७    | युगम्बर ...     | १५८१    | योनि ...      | १२३१    |
| यमराज ...         | ११६     | यातना ...     | ४६५     | „ ...           | २९६४    | योषा ...      | १०७१    |
| यमुना ...         | ५३०     | यातयान ...    | २६२५    | युगपद् ...      | २८९३    | योषितृ ...    | १०७७    |
| यमुनाप्राप्तृ ... | ११६     | यातु ...      | १२०     | युगपत्रक ...    | ६९३     | यौतक ...      | १८७६    |
| ययु ...           | १५५८    | यातुवान् ...  | १२०     | युगपार्श्वग ... | १८३३    | यौतत्र ...    | १८७६    |
| यय ...            | १७३७    | यानृ ...      | ११३३    | युगल ...        | १०६४    | यौवत ...      | १११८    |
| यवस्य ...         | १७२०    | यात्रा ...    | १६५८    | युग्म ...       | १०६४    | यौवन ...      | ११५३    |
| यवक्षार ...       | १९२३    | „ ...         | २६८६    | युग्य ...       | १५८३    | र             |         |
| यवफल ...          | ९७०     | याद पति ...   | ४४०     | „ ...           | १८३४    | रहस् ...      | १२७     |
| यवम ...           | ९८३     | यादस् ...     | ५०६     | युद्ध ...       | १६७४    | रक्त ...      | ३०६     |
| यवाग ...          | १८०६    | यादसांपति ... | १२१     | युध् ...        | १६७९    | „ ...         | १२०१    |
| यवाम्रज ...       | १९२३    | यान ...       | १५०४    | युवति ...       | १०९०    | „ ...         | १३२२    |
| यवादि ...         | १७५४    | „ ...         | १५८३    | युवन ...        | ११५७    | „ ...         | २४९४    |
| यवानिका ...       | ९३८     | यानमुख ...    | १५७८    | युवराज ...      | ३८६     | रक्तका ...    | ७९४     |
| यवास ...          | ८३१     | याप्य ...     | २१३२    | यूय ...         | १०७०    | रक्तचन्दन ... | १३३७    |
| यवीयस् ...        | ११६०    | याप्ययान ...  | १५७३    | यूयनाथ ...      | १५३७    |               |         |

| शब्दः       | पङ्क्तिः | शब्दः    | पङ्क्तिः | शब्दः     | पङ्क्तिः | शब्दः     | पङ्क्तिः |
|-------------|----------|----------|----------|-----------|----------|-----------|----------|
| रत्नचन्दन   | १९२८     | रण       | २२६५     | रम्भा     | ८०४      | राधा      | ११२३     |
| रत्नपा      | ५४१      | ,        | २४३२     | रय        | १२७      | राष्ट्रव  | १२९६     |
| रत्नफल      | ९२६      | रण्डा    | ८२४      | रत्नक     | ११०६     | रात्र     | १४७०     |
| रत्नसम्पन्न | ५३९      | रत       | १४६६     | ,         | २९३८     | ,         | २२५७     |
| रत्नसरोवर   | ५४९      | रतिपति   | ५२       | रव        | ३५५      | राजक      | १४७४     |
| रत्नाङ्ग    | ९११      | रत       | १८९३     | रवज       | २१००     | राजन्     | १४७०     |
| रत्नोत्पल   | ५५०      | "        | २५८७     | रति       | २०६      | राजन्व    | १४६९     |
| रक्षःसम     | ३९४९     | रत्नसङ्ग | ९८       | रत्ना     | १२९०     | राजन्वत्  | १४७५     |
| रथसू        | २१       | रत्नावर  | ४७०      | रत्नि     | २६१०     | राजन्वत्  | ५८२      |
| "           | १२०      | रत्नि    | १२४६     | रत्न      | २९१      | राजन्वत्  | ९५४      |
| रक्षित      | २२३६     | रथ       | ७८       | ,         | १९०५     | राजकीर्ति | १४५७     |
| रक्षिवज     | १४८०     | "        | १५६९     | ,         | १४८९     | राजराज    | १४६      |
| रक्षण       | २२६५     | रथवन्धा  | १५८७     | रत्नग     | १९१०     | राजवत्    | १४५७     |
| रक्ष        | १००७     | रथवार    | १९३६     | रत्नशा    | १२५६     | राजवत्    | ५८२      |
| रक्ष        | १९१८     | "        | १९४६     | रत्ना     | १२५६     | राजवत्    | ६९५      |
| रक्षापीव    | १९४२     | रथगुप्ति | १५८१     | रत्नवत्   | १४६०     | राजसदन    | ६१२      |
| रक्षणा      | १२४७     | रथगु     | ७०१      | रत्ना     | ५६०      | राजसभा    | २९१३     |
| रक्षक       | १९४९     | रथाङ्ग   | १०३२     | ,         | ८१७      | राजसूय    | २९५६     |
| रक्षति      | १८९९     | ,        | १५८९     | "         | ८९५      | राजसूय    | १०४५     |
| ,           | २४९३     | रथिक     | १६१९     | रत्नाञ्जन | १९०९     | राजसूय    | ७१८      |
| रक्षनी      | २३३      | रथिन्    | १५८८     | रत्नाञ्ज  | ४३९      | "         | ७३९      |
| "           | ९५५      | "        | १६१९     | रत्नाञ्ज  | ७१५      | राजाह     | १४३६     |
| रक्षनीमुख   | २३६      | रथिर     | १६१९     | "         | ९७५      | राजि      | ६५६      |
| रक्षा       | ३७३      | रथ्य     | १५५५     | रत्नाञ्ज  | १७९४     | राजिका    | १०४५     |
| ,           | १११५     | रथ्या    | ५९८      | रथिन      | १६१      | राजि      | ४४८      |
| "           | १६६४     | ,        | १५८७     | रत्नोन्न  | ९४५      | राजीव     | ५०५      |
| ,           | २७९८     | रद       | १२५५     | रदसू      | १५१३     | राजि      | २२२      |
| रक्षरत्ना   | १११३     | रदन      | १२५५     | रदसू      | १५१३     | राजि      | ११९      |
| रक्षु       | १९८९     | रदनासद   | १२५३     | रदसू      | १५१३     | राजि      | ११९      |
| रक्षज       | ११३७     | रग्ग     | ४४१      | राज       | २३०      | राजि      | २८५      |
| रक्षी       | ८३८      | रग्ग     | २९४७     | राज       | ११८      | राजि      | २४६      |
| रक्ष        | १६७६     | रग्गनी   | १०८१     | राज       | ९०४      | राज       | २४६      |



| शब्दः      | पङ्क्तिः | शब्दः  | पङ्क्तिः | शब्दः    | पङ्क्तिः | शब्दः   | पङ्क्तिः |
|------------|----------|--------|----------|----------|----------|---------|----------|
| रुपु       | ११४      | रुव    | २१४८     | रुक्     | २१८५     | रुकेय   | १२       |
| "          | २१११     | "      | २२१०     | रुक्कृति | १४६०     | रुकेय   | १२५९     |
| रुपुलय     | १४८      | रुक्कृ | १४२३     | रुक्कृति | १४९८     | रुकेयसक | ८७१      |
| रुक्का     | २१०९     | रुक्कृ | २२४      | रुक्कृति | १४९९     | रुकेय   | १२७९     |
| रुक्कृपिका | ११५      | "      | २२४१     | रुक्कृति | २२०४     | रुकेय   | ७१४      |
| रुक्का     | ४०८      | रुक्कृ | ४७१      | रुक्कृति | १४६३     | रुकेय   | १८५      |
| रुक्काशील  | २०८०     | रुक्कृ | २२९७     | रुक्कृति | ४१६      | रुकेय   | १२७१     |
| रुक्कृति   | २२५७     | रुक्कृ | १४२३     | रुक्कृति | १४९९     | रुकेय   | ११६      |
| रुक्का     | २११४     | रुक्कृ | १४५      | रुक्कृति | २२४५     | रुकेय   | २१७३     |
| रुक्का     | ६६६      | रुक्कृ | १४३७     | रुक्कृति | ४२५      | रुकेय   | २७४६     |
| "          | ६७०      | रुक्कृ | १४२३     | रुक्कृति | ४२६      | रुकेय   | २०६९     |
| "          | ७५९      | "      | २२१५     | "        | २७४४     | रुकेय   | २०६९     |
| "          | ७९३      | रुक्कृ | ७३०      | रुक्कृति | १५६८     | रुकेय   | १७३०     |
| "          | ११४      | रुक्कृ | १४२३     | रुक्कृति | २०६९     | रुकेय   | १७३०     |
| "          | १४८      | रुक्कृ | ८८५      | रुक्कृति | १९७०     | रुकेय   | १९०२     |
| रुक्का     | १४४      | रुक्कृ | ८७०      | रुक्कृति | १९६      | "       | १९०४     |
| रुक्का     | १२५१     | "      | १८५      | रुक्कृति | १०१३     | "       | २९४०     |
| रुक्का     | २१३      | रुक्कृ | १५६७     | रुक्कृति | २२३१     | रुकेय   | १९४३     |
| "          | २२३९     | रुक्कृ | १८००     | रुक्कृति | १५६७     | रुकेय   | १०१९     |
| रुक्का     | २२३३     | रुक्कृ | १७८      | रुक्कृति | १५       | रुकेय   | २०९८     |
| रुक्कृ     | १२६४     | रुक्कृ | १८६६     | रुक्कृति | १४९८     | रुकेय   | १६५६     |
| रुक्कृ     | १५१६     | रुक्कृ | १७८      | रुक्कृति | ८३       | रुकेय   | २०६      |
| रुक्कृ     | १२८१     | रुक्कृ | ४१७      | रुक्कृति | ६५६      | "       | १२०१     |
| रुक्कृ     | ७६       | रुक्कृ | २७०३     | रुक्कृति | १२४०     | रुकेय   | १८९१     |
| रुक्का     | १८०      | रुक्कृ | १२०७     | रुक्कृति | २१४८     | रुकेय   | १२९३     |
| रुक्का     | १०८०     | रुक्कृ | २२६९     | रुक्कृति | १७३०     | रुकेय   | १९५      |
| रुक्कृ     | १२८१     | रुक्कृ | १०५७     | रुक्कृति | १८१८     | रुकेय   | १९५      |
| रुक्का     | १२५७     | रुक्कृ | १७८      | रुक्कृति | ५६८      | रुकेय   | १९५      |
| रुक्का     | १२७९     | रुक्कृ | १८१      | रुक्कृति | २२३८     | रुकेय   | २८६६     |
| रुक्का     | २६२२     | रुक्कृ | ७६९      | रुक्कृति | २६       | रुकेय   | १९६९     |
| रुक्का     | १२४४     | रुक्कृ | २२१५     | रुक्कृति | २२५८     | "       | १२५५     |
| रुक्का     | ४२४      | रुक्कृ | १४९९     | रुक्कृति | ६३६      | रुकेय   | २७६४     |



| शब्दः           | पंक्तिः | शब्दः          | पंक्तिः | शब्दः         | पंक्तिः | शब्दः          | पंक्तिः |
|-----------------|---------|----------------|---------|---------------|---------|----------------|---------|
| वशिक ...        | १३२६    | वणिगू ...      | १८६५    | वनसुट ...     | १७४१    | वश्टा ...      | १०३८    |
| वंशिरोचना ...   | १९२५    | वणिग्या ...    | १८६५    | वनशृङ्गाट ... | ८४६     | " ...          | १०४२    |
| वक्तव्य ...     | २६५४    | वण्टका ...     | १८८५    | वनगमनि ...    | ६६०     | वरण ...        | ५९९     |
| वक्र ...        | २१६७    | वत्स ...       | १२२९    | वनानुज ...    | १५५७    | " ...          | ६९८     |
| वक्र ...        | २०९४    | " ...          | १८३०    | वनिता ...     | १०७८    | वरण्ट ...      | २९४१    |
| वक्र ...        | १२५१    | " ...          | २७८८    | " ...         | २४८२    | वरया ...       | १५५१    |
| वक्षस् ...      | १२२९    | वत्सका ...     | ७८६     | वनीयका ...    | २१२३    | " ...          | १९९१    |
| वद्धक्ष ...     | १२१९    | वत्सतर ...     | १८३०    | वनीकस ...     | ९९४     | वरद ...        | २०३८    |
| वद्ग ...        | १९१८    | वत्सनाम ...    | ४६९     | वन्टा ...     | ८१२     | वरवर्णिनी ...  | १०८२    |
| वचन ...         | ३१३     | वत्सर ...      | २४१     | वन्दान ...    | २०८०    | " ...          | १७८८    |
| वचनेरिधत ...    | २०७३    | " ...          | २५५     | वन्ध्य ...    | ६६२     | वराक्ष ...     | २४८६    |
| वचस् ...        | ३१३     | वत्सल ...      | २०५३    | वन्ध्या ...   | १८४४    | वराक्षका ...   | ९१७     |
| वचा ...         | ८५३     | वत्मादनी ...   | ८१३     | वन्धा ...     | ६५७     | वराटक ...      | ५५३     |
| वज्र ...        | ९३      | वद ...         | २०९४    | वपा ...       | ४४१     | " ...          | १९८२    |
| " ...           | ८५९     | वदन ...        | १२५१    | " ...         | १२०२    | " ...          | २९७०    |
| " ...           | २७०४    | वदान्य ...     | २०३६    | वपुस् ...     | १२१४    | वरारोहा ...    | १०८२    |
| वज्रनिर्घोष ... | १६४     | " ...          | २६५६    | वप ...        | ५९८     | वराशि ...      | १३०५    |
| वज्रपुष्प ...   | ८००     | वदावद्र ...    | २०९४    | " ...         | १७२८    | वराह ...       | ९९१     |
| वज्रिन् ...     | ८४      | वध ...         | १६९८    | " ...         | १८१७    | वरिवसित ...    | २२२८    |
| बधका ...        | ९९८     | वधू ...        | ९१५     | " ...         | १९१७    | वरिवस्या ...   | १४२३    |
| " ...           | २११९    | " ...          | १०७७    | वमयु ...      | ११८४    | वरिवस्थित ...  | २२२८    |
| " ...           | २१०६    | " ...          | १०९१    | " ...         | १५४१    | वरिष्ठ ...     | १९०१    |
| वक्षुल ...      | ७०२     | " ...          | २५३८    | वमि ...       | ११८४    | वरिष्ठ ...     | २२४७    |
| " ...           | ७०८     | वक्ष्य ...     | २११४    | वयस् ...      | २७९६    | वरी ...        | ८४९     |
| " ...           | ७७७     | वक्षी ...      | १९९१    | वयन्ध ...     | ११५७    | वरीयस् ...     | २८०६    |
| वट ...          | ७१३     | वन ...         | ४७३     | वयस्था ...    | ७६४     | वरण ...        | १२१     |
| वटका ...        | २९२८    | " ...          | ६५०     | " ...         | ९२३     | " ...          | १४९     |
| वटी ...         | १९८२    | " ...          | २५८७    | वयस्य ...     | १४९१    | " ...          | ६९८     |
| वडवा ...        | १५६०    | वनतिक्रिका ... | ८१८     | वयस्या ...    | १०९७    | वरुणात्मजा ... | २००७    |
| वटवानल ...      | ११२     | वनप्रिय ...    | १०२६    | वर ...        | १३२१    | वरुथ ...       | १५८१    |
| वट ...          | २१४६    | वनमक्षिका ...  | १०४१    | " ...         | २२६६    | वरुथिनी ...    | १६२४    |
|                 |         | वनमालिन् ...   | ४२      | " ...         | २६८१    | वरण्य ...      | २१३९    |

| शब्दः     | पतिः | शब्दः     | पतिः | शब्दः   | पतिः | शब्दः          | पतिः |
|-----------|------|-----------|------|---------|------|----------------|------|
| यकर       | १२७४ | यमिन      | १५९८ | वह्नी   | ६६६  | वक्त           | १८६५ |
| वग        | १०६९ | वय        | २१३९ | वचुर    | १२०० | वदसा           | १२५  |
| वर्चम्    | २७९७ | वर्षा     | १०८८ | वश      | २३६५ | वह             | १८३२ |
| वर्चरक्त  | १२०९ | वर्षणा    | १०४० | वशमिया  | २२५७ | वह्नि          | १०५  |
| वर्ष      | ११५५ | वर्ष      | १६६  | वशा     | १५४१ | ,              | १४९  |
| "         | १५५२ |           | २७८४ | ,       | १८४४ | वह्निशिक्ष     | १९१९ |
| "         | २४३० | वषवर      | १४८५ | "       | २७६९ | वह्निचहा       | ८०८  |
| वर्षक     | ११४० | वषा       | २५३  | वशिक    | २१३७ | वा             | २८४४ |
| "         | २९७० | वषामू     | ५१४  | वशिर    | ८४३  | "              | २८६६ |
| वर्णित    | २२४४ | वषाभ्भी   | ५१५  |         | १७८९ | ,              | २८७९ |
| वर्णिन्   | १४३७ | वर्षपितृ  | ११५९ | वश्य    | २०७४ | वावपति         | २०२४ |
| वर्तक     | १०५८ | वर्षेपितृ | १६८  | वषट्    | २८६४ | वावय           | ३११५ |
| "         | २३५६ | व-मन्     | १२१४ | वषट्कृत | १४०६ | वागीश          | २०९४ |
| वर्तन     | १४०९ | "         | २५८१ | वमति    | २४६८ | वागुरा         | १९११ |
| ,         | २०८३ | वसभु      | ६०२  | वसन     | १३०४ | वागुरिक        | १९५६ |
| वर्तनी    | ५८७  | वसज       | २३९७ | वसन्त   | २५१  | वारिमन्        | २०९५ |
| वर्ति     | १३४० | वसजा      | २३९७ | वसा     | १३०३ | वाह्मन्        | ३२८  |
| वर्तक     | १०५८ | वसभी      | ६२३  | वसिर    | ८४३  | वाग्           | ३१२  |
| वर्तिष्णु | २०८३ | वसय       | १२८७ | वसु     | ९१   | वाचयम          | १४३६ |
| वसुक्त    | २१६३ | वसयित     | २३७५ | "       | ८११  | वाचरपति        | १९३  |
| वसन्      | २८६  | वसिन्     | ११६४ | ,       | १८८६ | वाचाट          | २०९६ |
| "         | १५९५ | वसिम      | ११६४ |         | २७९१ | वाचाळ          | २०९६ |
| "         | २५७७ | वसीक      | ६२१  | वसुक्त  | ८०९  | वाचिक          | ३४५  |
| वर्षक     | ८२८  | वसीमुख    | २९३  |         | १७९१ | वाचोमुक्तिपट्ट | २०९५ |
| वधवि      | १९४६ | वसक       | ६७४  | वसुदेव  | ४४   | वाग            | १६४२ |
| वर्धन     | २०८१ | वसकठ      | ६७३  | वसुधा   | ५६२  | वागदेव         | २९५६ |
| "         | २२६६ | वसिगन     | १५६४ | वसुधरा  | ५६२  | वागिदत्त       | ८५५  |
| वर्धमान   | ७५१  | वसमीक     | ५८५  | वसुमती  | ५६२  | वाजिन्         | १०५४ |
| वर्धमानक  | १४७० | वसुकी     | ३६७  | वसि     | १२२० | ,              | १५५५ |
| वर्धिष्णु | २०८१ | वसुभ      | २१३१ | वसु     | २९२१ | ,              | २५४९ |
| वभी       | १९९१ | वसुभ      | २६९  | वस्य    | ६०२  | वागिदाला       | ६०६  |
| वगन्      | १५९५ | वसुरी     | ६८५  |         | १३०४ | वाग्या         | ४१६  |

| शब्दः           | पंक्तिः | शब्दः         | पंक्तिः | शब्दः        | पंक्तिः | शब्दः         | पंक्तिः |
|-----------------|---------|---------------|---------|--------------|---------|---------------|---------|
| विप्रकार ...    | २२७९    | वियात ...     | २०७५    | विविक्त ...  | १५१२    | विश्वकटु ...  | १९७३    |
| विप्रकृत ...    | २१०६    | वियाम ...     | २२८६    | " ...        | २४९९    | विश्वकेतु ... | ५३      |
| विप्रकृष्टक ... | २१६१    | विरजस्तमस्    | १४४१    | विविध ...    | २२११    | विश्वकर्मन्   | २५५२    |
| विप्रतीचार...   | ४१२     | विरति ...     | २३२४    | विवेक ...    | १४२८    | विश्वनेपज     | १७३३    |
| विप्रयोग ...    | २३०५    | विरल ...      | २१५६    | विश्र ...    | १२०९    | विश्वंमर ...  | ४३      |
| विप्रलब्ध ...   | २१०६    | विराज् ...    | १४६९    | " ...        | १७०८    | विश्वंमरा ... | ५६०     |
| विप्रलम्भ ...   | ४३३     | विराव ...     | ३५७     | " ...        | २७६३    | विश्वमृज् ... | ३४      |
| " ...           | २३०५    | विरिध ...     | ३३      | विश्वकट ...  | २१४५    | विश्वस्ता ... | १०९६    |
| विप्रलाप ...    | ३४३     | विरिण ...     | २४४८    | विशद ...     | ३०१     | विश्वा ...    | ८४७     |
| विप्रशिक्षा...  | १११३    | विरूपाक्ष ... | ६४      | विशर ...     | १६९८    | विश्वास ...   | १५१४    |
| विप्रुप् ...    | ४७९     | विरोचन ...    | २०४     | विशल्या ...  | ८१४     | विप् ...      | १२०९    |
| विप्रुव ...     | २२७७    | " ...         | २५५१    | " ...        | ९२१     | विप ...       | ४५६     |
| विपुष ...       | १३      | विरोध ...     | ४४१     | " ...        | २६४६    | " ...         | २७८१    |
| विमव ...        | १८८७    | विरोधन ...    | २२९१    | विशसन ...    | १६९६    | विपघर ...     | ३५१     |
| विमाफर ...      | २०१     | विरोधोक्ति... | ३४३     | विशाम्ब ...  | ७९      | विपमच्छद      | ६९४     |
| विमावरी ...     | २२३     | विच्छ ...     | २०७६    | विशान्वा ... | १८८     | विपय ...      | ५७३     |
| विमावसु ...     | १११     | विलक्षण ...   | २२५४    | विशाय ...    | २३१३    | " ...         | २२७१    |
| " ...           | २०१     | विलम्ब ...    | २३०५    | विशारण ...   | १६९२    | " ...         | २६४०    |
| " ...           | २७८७    | विलाप ...     | ३४२     | विशारद ...   | २५२५    | विपयिन् ...   | २९२     |
| विमीनक ...      | ७६४     | विलास ...     | ४२४     | विशाल ...    | २१४५    | विपवैद्य ...  | ४६०     |
| विभूति ...      | ७१      | विलीन ...     | २२२४    | विशालता ...  | १३०२    | विपा ...      | ८४७     |
| विभूषण ...      | १२७६    | विलेपन ...    | १३४०    | विशालत्वच्   | ६९४     | विपाक्त ...   | १६४३    |
| विभ्रम ...      | ४२४     | " ...         | २३०४    | विशाला ...   | ९६१     | विपाण ...     | २४४६    |
| " ...           | २६१८    | विलेपी ...    | १८०६    | विशिक्ष ...  | १६४०    | विपाणी ...    | ८८७     |
| विभ्राज् ...    | १२७५    | विवध ...      | २५२७    | विशिक्षा ... | ५९८     | विपुव ...     | २४२     |
| विमनस् ...      | २०४०    | विवर ...      | ४४०     | विशेषक ...   | १३१९    | विपुवत् ...   | २४२     |
| विमर्दन ...     | २२७५    | विवर्ण ...    | १९६९    | विश्राणन ... | १४११    | विपुवत् ...   | २४२     |
| विमला ...       | ९३५     | विवश ...      | २११३    | विश्राव ...  | २३०६    | विपुवत् ...   | ६२७     |
| विमान ...       | ९५      | विवस्वत् ...  | २०२     | विश्रुत ...  | २०४३    | विपुवत् ...   | १०५४    |
| विमत् ...       | १४५     | " ...         | २४४९    | विश्रुत ...  | २०४३    | विपुवत् ...   | ५६८     |
| विमद्वद्वा ...  | ९७      | विवाद ...     | ३०८     | विश्रुत ...  | १९      | विपुवत् ...   | २६७४    |
| विमम ...        | २०८६    | विवाह ...     | १४६४    | " ...        | १७८१    | विपुवत् ...   | ३५      |
|                 |         |               |         | " ...        | २१५४    | विपुवत् ...   | ४६५     |

| शब्दः        | पङ्क्तिः | शब्दः     | पङ्क्तिः | शब्दः      | पङ्क्तिः | शब्दः        | पङ्क्तिः |
|--------------|----------|-----------|----------|------------|----------|--------------|----------|
| मिष्टा       | १२०९     | विस्तृता  | ११०५     | वीरमानु    | ११५५     | मृत्ति       | १७०९     |
| मिथु         | ३५       | विहग      | १०५१     | वीरवृद्ध   | ७३३      | ,            | २३८०     |
| मिथुकात्ता   | ८५६      | विहग्न    | १०५१     | वीराग्रसन  | १६६७     | मृत्         | २६६३     |
| मिथुपद       | १४५      | विहगम     | १०५१     | वीरसू      | ११०५     | मृत्पटम्     | ८४       |
| मिथुपदी      | ५२८      | विहगिका   | १२८८     | वीरहन्     | १४५७     | मृत्पा       | २८३०     |
| मिथुरथ       | ५८       | विहसित    | ४३१      | वीरधू      | ६६७      | ,            | २८५७     |
| मिथ्व        | २११५     | विहस्र    | २१११     | वीथ        | ४२०      | मृत्त        | ८२३      |
| मिथ्व        | २८७४     | विहापिन   | १४१०     | ,          | ११२७     | ,            | ११५८     |
| मिथ्वनेन     | ३८       | विहापस्   | १४५      | ,          | २६४४     | "            | २५३५     |
| मिथ्वसेनमिया | २५०      |           | १०५१     | वीथ        | २५२७     | मृत्तव       | ११५४     |
| मिथ्वसना     | ७६०      | वितार     | २२८२     | मृत्       | १००२     | मृत्तदारक    | ९२३      |
| मिथ्वमृत्    | २०९२     | विहस्र    | २११२     | मृत्धूप    | १३२९     | मृत्तनामि    | ११९५     |
| मिसर         | १०६५     | वीथ       | २७६५     | ,          | १३३१     | मृत्तश्रवस्  | ८२       |
| मिसरजन       | १४१०     | वीथि      | ४७७      | मृत्प      | २२३१     | मृत्ता       | १०९८     |
| मिसरपेण      | २२९५     | वीणा      | ३६७      | मृत्       | ६५८      | मृत्ति       | १५०६     |
| मिष्ठपाद     | ४३३      | वीणापाद   | १२५५     | मृत्मेदिन  | १२९७     |              | २२६८     |
| मिष्ठार      | ५०१      | पीत       | १५५३     | मृत्तरहा   | ८१२      | मृत्तिनीविषा | १७१४     |
| मिष्ठारिन्   | २०८६     | पीतस      | १२८०     | मृत्तगविका | ६५३      | मृत्तोद्य    | १८२०     |
| मिष्ठुन      | २१२६     | पीतिहोष   | १०५      | मृत्तादन   | १२९७     | मृत्तपानीव   | १७१७     |
| मिष्ठरनर     | २०८६     | पीथी      | ६५६      | मृत्तादनी  | ८१२      | मृत्त        | ६७८      |
| मिष्ठमर      | २०८६     | ,         | २५०९     | ,          | १२९७     | मृत्         | १०६८     |
| मिलार        | २२९३     | वीथ       | २१३५     | मृत्ताम्   | १७७७     | "            | २३२८     |
| मिलार        | २२९३     | वीणाह     | ५२०      | मृत्तिन    | २१६६     | मृत्तदारक    | १८       |
| मिरगृत       | २१२६     | वीर       | २०५      |            | २५५२     |              | २३६७     |
| मिरगार       | १६८३     | ,         | ३९७      | मृत्       | २००८     | मृत्तिष्ठ    | २२४९     |
| मिरकोट       | ११८०     |           | १६२१     | मृत्       | २५५२     | मृत्तिन      | १०१५     |
| मिग्मय       | ४००      | पीरण      | ९७६      | मृत्ति     | २०६६     | "            | ११५      |
| मिग्मयचित्त  | २०७६     | पीरतर     | ९७६      | मृत्त      | २१६३     | ,            | २३४८     |
| मिरमृत       | २१२७     | पीरतर     | ७३८      | ,          | २२०८     | मृत्         | २६२      |
| मिस          | ३००      | पीरपत्नी  | ११०५     | ,          | २४९१     | ,            | ८५५      |
| मिस्रम       | १५१४     | पीरपान    | १६७३     | मृत्तान्त  | ३२५      | ,            | ८८१      |
| ,            | २६०५     | पीरभार्या | ११०५     | ,          | ७४६१     | ,            | १८२५     |

| शब्दः      | पंक्तिः  | शब्दः     | पंक्तिः  | शब्दः       | पंक्तिः  | शब्दः        | पंक्तिः  |
|------------|----------|-----------|----------|-------------|----------|--------------|----------|
| वृष        | ... २७७७ | वेधमुख्यक | ९१८      | वैणविक      | ... १९५५ | व्यग्र       | ... २७१५ |
| वृषण       | ... १२२६ | वेधस्     | ... ३४   | वैणिक       | ... १९५५ | व्यजन        | ... १३५३ |
| वृषदंशक    | ... ९९९  | "         | ... २७९२ | वैतसिक      | ... १९५७ | व्यञ्जक      | ... ३९३  |
| वृषद्वज    | ... ६७   | वेधित     | ... २२२३ | वैतनिक      | ... १९५८ | व्यञ्जन      | ... २५६६ |
| वृषन्      | ... ८४   | वेपथु     | ... ४३७  | वैतरणी      | ... ४६४  | "            | ... २९४१ |
| वृषन       | ... १८२५ | वेमन्     | ... १९८४ | वैतालिक     | ... १६६१ | व्यडन्वक     | ... ७५१  |
| वृषल       | ... १९३० | वेला      | ... २७३२ | वैटहक       | ... १८६२ | व्यत्यय      | ... २३१५ |
| वृषस्यन्ती | ... १०९२ | वेल्ह     | ... ८६०  | "           | ... १९३५ | व्यत्यास     | ... २३१५ |
| वृषा       | ... ८२३  | वेल्हज    | ... १७७७ | वैदेही      | ... ८४१  | व्यथा        | ... ४६६  |
| वृषारुपायी | २६४७     | वेल्हित   | ... २१६७ | वैद्य       | ... ११८७ | व्यघ         | ... २२६६ |
| वृषाकपि    | ... २५८४ | "         | ... २१९८ | वैद्यनानृ   | ... ८५४  | व्यव         | ... ५८९  |
| वृषी       | ... १४४४ | वेश       | ... ५९६  | वैधात्र     | ... १०१  | व्यय         | ... २२८४ |
| वृष्टि     | ... १६६  | वेशन्त    | ... ५२३  | वैधेय       | ... २१०० | व्यलीक       | ... २३५९ |
| वृष्णि     | ... १८५९ | वेदमन्    | ... ६०१  | वैनेतेय     | ... ५७   | व्यवधा       | ... १६९  |
| वेग        | ... २३७५ | वेदमभू    | ... ६३१  | वैनीतक      | ... १५८४ | व्यवहार      | ... ३२८  |
| वेगिन्     | ... १६१४ | वेदया     | ... ११११ | वैमात्रेय   | ... ११२४ | व्यवाय       | ... १४६६ |
| वेणि       | ... १२६९ | वेप       | ... १२७२ | वैयात्र     | ... १५७४ | व्यसन        | ... १३५३ |
| वेणी       | ... ७८६  | वेष्टित   | ... २२०५ | वैर         | ... ४११  | "            | ... २५७५ |
| वेणु       | ... ९७०  | वेसवार    | ... १७७६ | वैरनिर्यातन | १६८८     | व्यसनार्त    | ... २१११ |
| वेणुक      | ... १५५९ | वेहत्     | ... १८४५ | वैरशुद्धि   | ... १६८८ | व्यस्त       | ... २१६८ |
| वेणुध्व    | ... १९५५ | वै        | ... २८५९ | वैरिन्      | ... १४८८ | व्याकुल      | ... २१११ |
| वेतन       | ... २००५ | "         | ... २८७९ | वैवधिक      | ... १९५९ | व्याकोश      | ... ६६३  |
| वेतन       | ... ७०७  | वैकथिक    | ... १३४५ | वैवस्वत     | ... ११७  | व्यात्र      | ... ९९०  |
| वेतस्वत्   | ... ५७५  | वैकुण्ठ   | ... ३५   | वैशात्र     | ... २४६  | व्याघ्रनग्न  | ... ९०३  |
| वेताल      | ... ७८५  | वैजनन     | ... ११५१ | "           | ... १८५४ | व्याघ्रपाद्  | ... ७२३  |
| वेत्रवती   | ... ५३५  | वैजयन्त   | ... ९१   | वैश्य       | ... १७०८ | व्याघ्रपुच्छ | ... ७४९  |
| वेद        | ... ३१६  | वैजयन्तिक | १६०९     | वैश्रवण     | ... १३७  | व्याघ्राट    | ... १०१८ |
| वेदना      | ... २२६१ | वैजयंतिका | ७७९      | वैश्वानर    | ... १०५  | व्याघ्री     | ... ८३५  |
| वेदि       | ... १३८८ | वैजयन्ती  | ... १६६६ | वैसारिण     | ... ५००  | व्याज        | ... ४२०  |
| वेदिना     | ... ६२४  | वैज्ञानिक | ... २०३३ | वोपद्       | ... २८६४ | "            | ... ४२७  |
| वेद्य      | ... २२६६ | वैणव      | ... ६८५  | व्यक्त      | ... २४५९ | व्याड        | ... २४१९ |
| वैधनिका    | ... १९९६ | "         | ... १४४३ | व्यक्ति     | ... २७६  | व्याडायुध    | ... ९०६  |

| शब्दः        | पंक्तिः | शब्दः   | पंक्तिः | शब्दः       | पंक्तिः | शब्दः       | पंक्तिः |
|--------------|---------|---------|---------|-------------|---------|-------------|---------|
| व्याध        | १९७०    | व्रज    | ११८१    | गतिहेमिक    | १६०६    | गुणपरिष्कार | ८५३     |
| "            | २००     | व्रज    | ११८७    | गुण         | ८३      | "           | ९६४     |
| व्याधि       | ११७५    | व्रजति  | ६६६     |             | ७८१     | गुणपुष्पा   | ८५२     |
| व्याधिघात    | ६९६     | व्रजिन् | २४७८    | गुणधनुस्    | १६५     | गुणप्राप्त  | ८०१     |
| व्याधित      | ११८०    | व्रजिन् | १३६७    | गुणपादप     | ७५४     | गुणगम्य     | ८३      |
| व्याध        | १२६     | व्रज्य  | १८९४    | गुणपुष्पिका | ९२०     | गुणमान      | २९७३    |
| व्याधाद्     | २८४     | व्रज्य  | १०६६    | गुण         | २०९७    | गुणमूली     | ८४९     |
| व्याध        | १२४७    | व्रज्य  | १४५९    | गुण         | ६०      | गुणमीमांसा  | ९६५     |
| व्याध        | ४५१     | व्रीडा  | ४०८     | गुण         | ५०७     | गुणमीमांसा  | ९६६     |
|              | २७२८    | व्रीडि  | १७३७    | गुण         | १६५३    | गुणवैधिका   | ९६०     |
| व्याध्यादिन् | ४६०     | "       | १७३९    | गुण         | १४२     | गुणवैधिका   | १६२     |
| व्याधुत      | २९०८    | व्रीड्य | १७३९    | "           | ५१२     | गुणवैधिका   | १५६९    |
| व्याध        | २२९३    | दा      |         | "           | २०९     | गुणावरी     | ८५०     |
| व्याहार      | ३१३     | दा      |         | "           | २३७१    | गुण         | १४८९    |
| व्याहार      | २५७१    | दा      |         | गुणनग       | ५१३     | गुण         | १९६     |
| व्याहार      | २४११    | दा      |         | गुणिनी      | २०१     | गुण         | २८८३    |
| व्याहार      | २४२४    | दा      |         | गुणी        | ८९      | गुण         | ३२९     |
| व्याहार      | १५९८    | दा      |         | गुणीपति     | ८५      | गुण         | ३२९     |
| व्याहार      | १९८५    | दा      |         | गुणी        | २५६     | गुण         | १५६६    |
| व्याहार      | १०६५    | दा      |         | गुण         | २११७    | गुण         | ५०३     |
| "            | १६२५    | दा      |         | गुण         | २३७     | गुण         | १९६९    |
| "            | २८१३    | दा      |         | गुण         | ८६२     | गुण         | ६३३     |
| व्याहार      | १६३६    | दा      |         | गुण         | २१५२    | गुण         | ३१०     |
| व्याहार      | १९४३    | दा      |         | गुण         | १४८५    | गुण         | १८४१    |
| व्याहार      | ६८      | दा      |         | गुण         | १८७५    | गुण         | ३९१     |
| व्याहार      | १४३     | दा      |         | गुण         | ९३      | गुण         | ३१४     |
| व्याहार      | ९५      | दा      |         | गुण         | ५३३     | गुण         | ३५५     |
| व्याहार      | १९२२    | दा      |         | गुण         | ५४६     | गुण         | १२६२    |
| व्याहार      | १०६५    | दा      |         | गुण         | १०२०    | गुण         | २१००    |
| "            | २३९५    | दा      |         | गुण         | १०१३    | गुण         | २३५५    |
| व्याहार      | १४२३    | दा      |         | गुण         | ९७      | गुण         | ११६     |
| "            | १६५८    | दा      |         | गुण         |         | गुण         |         |

| शब्दः        | पंक्तिः | शब्दः         | पंक्तिः | शब्दः           | पंक्तिः | शब्दः          | पंक्तिः |
|--------------|---------|---------------|---------|-----------------|---------|----------------|---------|
| शमन ...      | १४४०    | शरण ...       | २४४     | शव ...          | १७०४    | शाव्य ...      | ४२२     |
| शमनस्वसृ...  | ५३०     | शरद ...       | २५३     | शश ...          | १००     | शाण ...        | १९९३    |
| शमल ...      | १२०८    | " ...         | २५५     | शशधर ...        | १७४     | शाणी ...       | २९१३    |
| शमित ...     | २०१९    | " ...         | २५२०    | शशलोमन् ...     | १९२०    | शाण्डिल्य ...  | ७१२     |
| शमी ...      | ७५२     | शरम ...       | १००९    | शशादन ...       | १०१६    | शात ...        | २२०६    |
| " ...        | १७५२    | शरव्य ...     | १६३९    | शशोर्ण ...      | १९२०    | शानकुम्भ ...   | १८९५    |
| शमीर ...     | ७५२     | शराभ्यास ...  | १६३९    | शशत् ...        | २८२२    | शावव ...       | १४८९    |
| शम्पा ...    | १६२     | शरारि ...     | १०३७    | " ...           | २८५१    | शद ...         | ४८५     |
| शम्पाक ...   | ६९५     | शराह ...      | २०८१    | " ...           | २८७०    | " ...          | २५१४    |
| शम्व ...     | ९४      | शराव ...      | १७७०    | शण्य ...        | ९८३     | शाद्वल ...     | ५७६     |
| शम्बर ...    | ४७५     | शरावती ...    | ५३५     | शस्त ...        | २६७     | शान्त ...      | २२१९    |
| " ...        | १००७    | शरासन ...     | १६३४    | " ...           | २२४३    | शान्ति ...     | २२५५    |
| शम्बरारि...  | ५१      | शरीर ...      | १२१३    | शस्त्र ...      | १६३२    | शावर ...       | ७१४     |
| शम्बरी ...   | ८२३     | शरीरिन् ...   | २७५     | " ...           | २६९४    | शाम्बरी ...    | १९५१    |
| शम्बल ...    | २९६३    | शर्करा ...    | ५७८     | शस्त्रक ...     | १९०२    | शार ...        | २६६५    |
| शम्बाकृत ... | १७२५    | " ...         | १७९३    | शस्त्रमार्ज ... | १९४२    | शारद ...       | ६९१     |
| शम्बूक ...   | ५१३     | " ...         | २६८६    | शस्त्राजीव ...  | १६०२    | " ...          | २५२१    |
| शम्मली ...   | १११५२   | शर्करावत् ... | ५७८     | शस्त्री ...     | १६५२    | शारदी ...      | ८७०     |
| शम्भु ...    | ५९      | शर्करिल ...   | ५७८     | शाक ...         | ९२०     | शारिफउ ...     | २०२१    |
| " ...        | २६०४    | शर्मन् ...    | २६४     | " ...           | १७७५    | शास्त्रिवा ... | ८७२     |
| शम्या ...    | १७३४    | शर्व ...      | ६०      | शाकट ...        | १८३४    | शार्कर ...     | ५७८     |
| शय ...       | १७३६    | शर्वरी ...    | २०१     | शाकुनिक ...     | १९५६    | शास्त्रिन् ... | ३८      |
| शयन ...      | ४३४     | शर्वाणी ...   | ७३      | शास्त्रीक ...   | १६०६    | शादल ...       | ९९०     |
| " ...        | १३४९    | शल ...        | १००१    | शाक्यमुनि ...   | २८      | शार्धर ...     | २७१२    |
| शयनीय ...    | १३४८    | शलम ...       | १०४४    | शाक्यमिह ...    | २९      | शल ...         | ५०५     |
| शयालु ...    | २०९०    | शलल ...       | १००१    | शाखा ...        | ६७०     | शाला ...       | ६०४     |
| शयित ...     | २०९०    | शलली ...      | १००१    | शाखानगर ...     | ५९६     | " ...          | ६७०     |
| शयु ...      | ४४७     | शलाटु ...     | ६७९     | शाखामृग ...     | ९९३     | " ...          | २९७४    |
| शय्या ...    | १३४८    | शलक ...       | २३६०    | शाखिन् ...      | ६५८     | शालावृक ...    | २३५८    |
| शर ...       | ९७२     | शल्य ...      | ७५४     | शाखिक ...       | १९४५    | शालि ...       | १७५५    |
| " ...        | १६४१    | " ...         | १००१    | शाटक ...        | २९६०    | शालीन ...      | २०७६    |
| शरजन्मन् ... | ४७      | " ...         | १६५३    | शाटी ...        | २९७१    | शाल्यक ...     | ५४२     |

| शब्दः       | पंक्तिः | शब्दः       | पंक्तिः | शब्दः         | पंक्तिः | शब्दः      | पंक्तिः |
|-------------|---------|-------------|---------|---------------|---------|------------|---------|
| शालर        | ५१४     | शिशु        | १७७५    | शिल्पिशास्त्र | ६०७     | शीतशिव     | ८५८     |
| शालेय       | ८५८     | शिशुन       | १९२६    | शिव           | ५९      | ,          | ८९३     |
| - "         | १७१९    | शिक्षण      | २४०३    | ,             | २६५     | "          | १७९०    |
| शालमलि      | ७४१     | शिक्षित     | ३५८     | शिव           | १८५३    | शीघ्र      | २०१२    |
| शालक        | १०६३    | शिक्षिनी    | १६३७    | शिवमहो        | ८११     | ,          | २९६३    |
| शाश्वत      | २१६९    | शितशब्      | १७३७    | शिव           | ७३      | शीघ्र      | १२६३    |
| शास्त्रिक   | २३२९    | शिति        | २५००    | ,             | ७५२     | शीघ्र      | १५९४    |
| शासन        | १५१८    | शितिकण्ठ    | ६३      | ,             | ७६७     | शीघ्रप्रेष | २११४    |
| शास्त्र     | २८      | शितिसारक    | ७२५     | ,             | २०२     | शीघ्रपथ    | १२६९    |
| शास्त्र     | २६९४    | शिविविष्ट   | २४०३    | ,             | ९९७     | "          | १५९५    |
| शास्त्रविद् | २०३७    | शिका        | ६७०     | ,             | २७६०    | शीघ्र      | ४१४     |
| शिव्य       | १९८९    | शिकाकृद्    | ५५२     | शिशिर         | १८३     |            | २७३७    |
| शिवियत      | २२०३    | शिविका      | १५७३    | ,             | २५      | शुक्ल      | ९१३     |
| शिक्षा      | ३१८     | शिरिर       | १५३३    | शिशु          | १०६३    | ,          | १०३०    |
| शिशित       | २०३३    | शिक्षा      | १७५३    | शिशुक         | ५०२     | शुक्लता    | ७६३     |
| शिरण्ड      | १०५०    | शिरस्       | १२६३    | शिशुत्        | ११५३    | शुक्ल      | २५०     |
| शिवगण्डक    | १२६६    | शिरस        | १५९५    | शिशुमार       | ५०७     | शुक्ति     | ५१३     |
| शिवर        | ६४१     | शिरस्य      | १२६९    | शिश्र         | १२३५    | ,          | ९०९     |
|             | ६७२     | शिरा        | १२०३    | शिशिदान       | २११६    | शुक्ल      | १११     |
| शिवरिन्     | ६३४     | शिरिषः      | ७७४     | शिश्री        | १५१९    | ,          | १९४     |
|             | २५४७    | शिरुषि      | १२४९    | शिश्र्य       | १३७४    | ,          | २४६     |
| शिरा        | ११३     | शिरोरस      | १२७८    | शीघ्र         | १६७     | "          | ११९७    |
| "           | १०५०    | शिरोग       | १२६३    | शीघ्र         | १२८     | शुक्लशिव   | २४      |
| "           | १२६८    | शिक्षा      | ६१९     | शीत           | १८३     | शुक्ल      | २३९     |
|             | २३७३    |             | ६४      |               | १८३     | ,          | ३१      |
| शिक्षावत्   | १०९     | शिक्षात्रनु | १९१४    |               | ७०८     | शुक्ल      | ४३१     |
| शिक्षावत्   | १०४८    | शिक्षी      | ५१५     |               | ७१७     | शुक्ल      | ११२     |
| शिविमीय     | १९०८    | शिक्षीमुख   | २३७०    | शीतक          | १९६५    | "          | २४६     |
| शिविम्      | १०४८    | शिक्षीमुख   | ६३५     | शीतमी         | ७८८     | ,          | ३०१     |
| "           | २५४७    | शिक्षीमुख   | १९९९    | शीतल          | १८३     | "          | २२९१    |
| शिक्षावत्   | ७९      | शिक्षिन्    | १९३८    | "             | ९४७     | शुक्ली     | १७८२    |



| शब्दः     | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः | शब्दः | पंक्तिः |
|-----------|---------|-------|---------|-------|---------|-------|---------|
| शुभाना... | २०१०    | शुभ   | २१३१    | शुभ   | ४४३     | शुभ   | २०७१    |
| शुभदि     | ४३३     | शुभ   | १६२१    | शुभ   | ४४६     | शुभ   | १०५२    |
| शुभान     | ६१६     | शुभ   | १७१८    | शुभ   | १३७८    | शुभ   | ८४३     |
| "         | २०६६    | शुभ   | २०२९    | शुभ   | ८२५     | शुभ   | २०      |
| शुभक      | १९७७    | शुभ   | १७९६    | शुभ   | ६३१     | शुभ   | ७१      |
| शुनी      | १९७३    | शुभ   | ५२      | शुभ   | १०५२    | शुभ   | १६११    |
| शुभ       | २६७     | शुभ   | १७५६    | शुभ   | ७१२     | शुभ   | १९७५    |
| "         | १८७८    | शुभ   | ९९८     | "     | १०५२    | शुभ   | २०६२    |
| "         | २९२०    | शुभ   | १७५१    | शुभ   | ८९६     | शुभ   | २०७०    |
| शुभ       | २१२४    | "     | १७५७    | शुभ   | ७२३     | शुभ   | १७७४    |
| शुभान्वित | २१२४    | शुभ   | १८७३    | शुभ   | ७३५     | शुभ   | १७७१    |
| शुभ       | २०१     | शुभ   | १७७७    | शुभ   | ११५३    | शुभ   | ३०४     |
| "         | २०२०    | शुभ   | ६४१     | शुभ   | ७११     | "     | २६७१    |
| शुभदम्भी  | १५४     | "     | ९३०     | शुभ   | १०३     | शुभ   | ३०४     |
| शुभाशु    | १७७     | "     | २३८६    | शुभ   | २११     | शुभ   | ३१८     |
| शुभक      | १५२२    | शुभ   | १७८१    | शुभ   | ३०६     | "     | ८६५     |
| शुभ       | १००१    | शुभ   | ५९०     | "     | ७३४     | "     | ८३२     |
| "         | १९८२    | शुभ   | ३९५     | शुभ   | ७६३     | "     | २६२१    |
| "         | २९४०    | "     | २९६     | शुभ   | १८९१    | शुभ   | ९७७     |
| शुभपा     | १४२२    | शुभ   | १८३९    | शुभ   | १२०१    | शुभ   | ११३७    |
| शुभि      | ४४१     | शुभ   | ५१६     | शुभ   | ११७८    | शुभ   | ३०८     |
| शुभिर     | ४४०     | "     | ८४८     | शुभ   | ९४६     | शुभ   | ३०१     |
| "         | ४४२     | "     | ८८१     | शुभ   | ६२७     | शुभ   | १०१७    |
| शुभनास    | १०००    | शुभ   | १८९८    | शुभ   | १०९८    | शुभ   | २००७    |
| शुभ       | १६७१    | शुभ   | २२१५    | "     | २१३६    | शुभ   | २५३३    |
| शुभन्     | १०७     | शुभ   | १३४६    | शुभ   | ११७८    | शुभ   | १११६    |
| शुभ       | १७५७    | शुभ   | १०२५    | शुभ   | २१२८    | "     | २०७९    |
| शुभकीट    | १०१५    | शुभ   | ७८९     | शुभ   | १७९     | शुभ   | २२७३    |
| शुभशिवि   | ८२२     | "     | २९०९    | शुभ   | ७१०     | शुभ   | १०६२    |
| शुभ       | १९३०    | शुभ   | २७८     | शुभ   | ११७६    | शुभ   | १२६२    |
| शुभ       | १०९९    | शुभ   | ७१७     | शुभ   | १८७३    | शुभ   | १८८     |
| शुभ       | १०९९    | शुभ   | १४२     | शुभ   | ४५८     | शुभ   | १८०६    |

| शब्दः      | पङ्क्तिः | शब्दः    | पङ्क्तिः | शब्दः      | पङ्क्तिः | शब्दः    | पङ्क्तिः |
|------------|----------|----------|----------|------------|----------|----------|----------|
| भाद्र      | १११३     | भेद्यत्  | २८९      | भद्र       | ११३५     | सद्यम्   | २२८६     |
| भाद्रदश    | ११७      |          | २१३१     | भद्रश्चक्र | ११४८     | सद्यम्   | २२८६     |
| भाष        | २२७३     | भयसी     | ७६७      | भद्रम्     | २८९२     | सद्यम्   | १६७७     |
| भाष्य      | २७७      |          | ८१७      | भद्रम्     | १२२      | सद्योचित | २२०८     |
| भाषिण      | २७७      |          | ८७३      |            | ७५३      | सद्यम्   | १५७      |
| भी         | ५७       | भष्ट     | २१३१     | भविष्य     | १००१     | सद्यम्   | १४३      |
|            | १६३१     | भोज      | ११७०     | भविष्य     | ११८२     | सद्यम्   | २५५      |
| भीषण       | ६३       | भोनी     | १२३१     | भविष्य     | १०१      | सद्यम्   | २८८१     |
| भीषण       | २८       | भोनिषण्य | १२२०     |            | १८९९     | सद्यम्   | २२५७     |
| भीष्ट      | १३८      | भोज      | १२६२     |            | २४९३     | सद्यम्   | ७५९      |
| भीषति      | ७१       | भोविष    | १२६५     | भेतगत्     | १०३७     | सद्यम्   | ५५३      |
| भीषण       | ७८०      | भोवद्    | २८६४     | भेतगत्     | १२२६     | सद्यम्   | १३१      |
| "          | २४४०     | भोवद्    | २१४७     | भेतगत्     | २०७      | सद्यम्   | २२९७     |
| भीषाणवा    | ७२९      | भेष      | २२७१     | भेतगत्     | ७९०      | सद्यम्   | २८६      |
| भीषणी      | ७२०      | भेष्य    | ११९३     | भेतगत्     | ७९०      | "        | १५१९     |
| भीषण       | ७१२      | भेष्य    | ११९८     | पदकमन्     | १२६१     | सद्यम्   | २३९      |
| भीषण       | ८१८      | भेष्य    | ११९४     | पदकमन्     | १०३६     | सद्यम्   | २२०५     |
| भीमत्      | ७२८      | भेष्य    | ७१७      | पदकमन्     | २७       | सद्यम्   | ७२९      |
| "          | २०५३     | भेष्य    | ७३३९     | पदकमन्     | ७७       | सद्यम्   | २२६१     |
| भीम        | २०५३     | भेष्य    | २६५      | पदकमन्     | ७७५      | सद्यम्   | ७३७      |
| भीमनागन्धन | ४३       | भेष्य    | ८४७      | पदकमन्     | ८५३      | सद्यम्   | १३०९     |
| भीमाव      | १३३१     | भेष्य    | १९७३     | पदकमन्     | ९७६      | सद्यम्   | १६६३     |
| भीमव       | १३३१     | भेष्य    | २९७५     | पदकमन्     | ३६३      | सद्यम्   | २८२      |
| भीमव       | १३३४     | भेष्य    | १९६८     | पदकमन्     | ५५१      | सद्यम्   | २०३४     |
| भीमविली    | ७८७      | भेष्य    | ४४१      | पदकमन्     | १८३१     | सद्यम्   | २८६      |
| भुन        | २४८८     | भेष्य    | २९३८     | पदकमन्     | १७२०     | सद्यम्   | २२४२     |
| भुति       | ११६      | भेष्य    | ११७८     | पदकमन्     | ८०       | सद्यम्   | २३१०     |
| "          | १२६२     | भेष्य    | १०११     | पदकमन्     | ८०       | सद्यम्   | २१६०     |
| "          | २४८१     | भेष्य    | ११३५     | पदकमन्     | ८०       | सद्यम्   | १३८२     |
| भेनी       | ६५६      | भेष्य    | ११३८     | पदकमन्     | १६७९     | सद्यम्   | ५९३      |
| "          | १९३८     | भेष्य    | २६१७     | पदकमन्     | २१०८     | सद्यम्   | २४४४     |
| भेष्य      | २६२      | भेष्य    |          | पदकमन्     |          | सद्यम्   |          |

| शब्दः     | पंक्तिः  | शब्दः     | पंक्तिः  | शब्दः     | पंक्तिः  | शब्दः     | पंक्तिः  |
|-----------|----------|-----------|----------|-----------|----------|-----------|----------|
| ससिद्धि   | ... ४३६  | सकपण      | ... ४८   | सचिव      | ... १७४८ | सत्र      | ... २६९७ |
| संस्कृत   | ... २४९६ | संकलित    | ... २२१० | सज्ज      | ... १५९८ | मन्त्रा   | ... २८५६ |
| संस्तर    | ... २६५८ | सकल्प     | ... २८०  | सज्जन     | ... १३५८ | मन्त्रिन् | ... १४९७ |
| संस्तव    | ... २२९५ | सकसुक     | ... २११० | "         | ... १५३३ | सत्वर     | ... १२९  |
| संस्त्याव | ... २३१८ | संकाश     | ... २००४ | सज्जना    | ... १५५१ | सटन       | ... ६०२  |
| संस्त्याय | ... २६३८ | सकीर्ण    | ... १९३० | संचय      | ... १०६६ | सटस्      | ... १३८३ |
| संस्था    | ... १५१९ | "         | ... २१९५ | सचारिका   | ... ११०७ | सदस्य     | ... १३८४ |
| संस्थान   | ... २५५३ | "         | ... २४४८ | सजयन      | ... ६०४  | सदा       | ... २८९३ |
| संस्थित   | ... १७०१ | मंजुल     | ... ३४९  | सज्वर     | ... ११४  | सदागति    | ... १२२  |
| संन्यर्था | ... ९५६  | "         | ... २१९५ | सज्ञापन   | ... १६९४ | सदातन     | ... २१६९ |
| संस्फोट   | ... १६७७ | संकोच     | ... १३२२ | संज्ञा    | ... २४०१ | सदानीरा   | ... ५३२  |
| सहत       | ... २१७५ | सक्रन्दन  | ... ८७   | संजु      | ... ११६८ | सदक्ष     | ... २००२ |
| संहतजासुक | ११६८     | संकम      | ... २३०० | सटा       | ... १२६८ | महश       | ... २००२ |
| संहतल     | ... १२४३ | सक्षेपण   | ... २२९१ | संडीन     | ... १०६१ | महश       | ... २००२ |
| संहति     | ... १०६८ | सरय       | ... १६७५ | सणसूत्र   | ... ४९८  | सदेश      | ... २१५८ |
| संहनन     | ... १२१४ | सरया      | ... २८१  | सत्       | ... १३६२ | सद्यन्    | ... ६०१  |
| संहूति    | ... ३३७  | सरयात     | ... २१५३ | "         | ... २५०१ | सद्यस्    | ... २८६७ |
| सकटाह     | ... २९३७ | संख्यावत् | ... १३६३ | सतत       | ... १३०  | सद्यच्    | ... २०९३ |
| सफल       | ... २१५५ | सङ्ग      | ... २३०८ | सती       | ... १०८६ | सनत्कुमार | १०१      |
| सकृत्     | ... २८२० | संगत      | ... ३४७  | सतीनक     | ... १७३८ | सना       | ... २८८३ |
| सकृत्प्रज | ... १०१७ | संगम      | ... २३०८ | सतीन्य    | ... १३७६ | सनातन     | ... २१६९ |
| सकृत्फला  | ... ७५७  | "         | ... २९६३ | सत्तम     | ... २१४७ | सत्र क्षि | ... ११४० |
| सक्षिथ    | ... १२१९ | संगर      | ... २६६८ | सत्तम     | ... २१४७ | साने      | ... १४१७ |
| सक्षि     | ... १४९१ | सकीर्ण    | ... २२४२ | सत्त्र    | ... २७३  | सनीड      | ... २१५७ |
| सङ्गी     | ... १०९७ | संगृह     | ... २२१० | "         | ... २७६१ | संतन      | ... १३०  |
| सख्य      | ... १४९२ | संग्रह    | ... ३२३  | सत्पथ     | ... ५८८  | सतति      | ... १३५४ |
| सगर्भ्य   | ... ११४१ | सग्राम    | ... १६७८ | सत्य      | ... ३५४  | सतत       | ... २२२९ |
| सगोत्र    | ... ११४२ | सग्राह    | ... १६४८ | "         | ... २६४३ | सतमस      | ... ४४५  |
| सग्धि     | ... १८१६ | "         | ... २२७७ | सत्यकार   | ... १८७१ | संतान     | ... १००  |
| धकट       | ... २१९४ | संघ       | ... १०६९ | सत्यवचस्  | ... १४३८ | "         | ... १३५५ |
| संकर      | ... ६२९  | संघात     | ... ४६३  | सत्याकृति | ... १८७१ | संताप     | ... ११४  |
|           |          | "         | ... १०६६ | सत्यानृत  | ... १७१३ | सतापित    | ... २२२९ |
|           |          |           |          | सत्यापन   | ... १८७१ | संदान     | ... १८५३ |

| शब्दः      | पङ्क्तिः | शब्दः       | पङ्क्तिः | शब्दः     | पङ्क्तिः | शब्दः    | पङ्क्तिः |
|------------|----------|-------------|----------|-----------|----------|----------|----------|
| सदानित     | २२१४     | गहनानु      | १३७९     | समात्मद्र | २६       | समाहित   | २२४२     |
| सदाव       | १६७९     | सप्तपर्ण    | ६९८      | समम्      | २८६६     | समादिति  | ३२३      |
| सदित       | २१९६     | सप्तल       | ७९३      | समय       | २१६      | समाह्वय  | २०२१     |
| ,          | २२१४     | ,           | ९३४      |           | २६३२     | समिह     | ६७४      |
| सदेष्टवाप् | ३४५      | सप्ताचष्ट   | १११      | समया      | २८४०     | समिति    | १३८२     |
| सदेश्वा    | १५००     | सप्ताश्व    | २०२      | ,         | २८६२     | "        | १६७९     |
| सदेह       | २८३      | मसि         | १५५५     | समर       | १६७६     |          | २४७५     |
| सदोह       | १०६५     | सनदाचारिन्  | १३७५     | समथ       | २५०८     | समिध्    | १६७९     |
| सद्वा      | १६८९     | समर्तृषा    | १०९७     | समथन      | १५१४     | समीक     | १६७५     |
| सषा        | २५३९     | समा         | ६०४      | समथक      | २०३८     | समीप     | २१५७     |
| सधान       | २०१३     | ,           | १३८२     | समपाद्    | २१५८     | समीर     | १२४      |
| सधि        | १५०४     | ,           | २६०९     | समर्तित्  | ११५      | समीरण    | १२४      |
| ,          | २२७१     | समानन       | १२६३     | समवाय     | १०६७     |          | ८०६      |
| सधिनी      | १८४४     | समासद्      | १३८५     | समवि      | ९६२      | समुचय    | २२८१     |
| सध्या      | २२०      | समालार      | १३८५     | समसन      | २२९१     | समुष्णय  | ३६३९     |
| सपयद्      | ७१८      | समिष        | २०१७     | समरन      | २१५४     | समुग्धित | २२३८     |
| सपज्       | १५९८     | सम्य        | १३५८     | समरवा     | ३२४      | समुपिज   | १६६५     |
| सपय        | २६३७     |             | १३८५     | समा       | २५५      | समुद्रत  | २२०४     |
| सपिपण      | २२९६     | सम          | २००२     | ममासमीना  | १८५१     | समुद्रय  | १०६७     |
| सपिपृष्ट   | २१५७     |             | २१५३     | ममाकारि   | २९८      | समुदाय   | १०६७     |
| सपिधि      | २२९६     | समप्र       | २१५४     | ममाधान    | १६७८     | ,        | १६७९     |
| संनिवेज्   | ६३०      | समझा        | ८२९      | समाज      | १०७१     | समुद्र   | २२२९     |
| सपज        | १३८८     |             | ९३१      | ममाधि     | २८७      | समुद्रव  | १३५१     |
| सपदि       | २८५२     | समज         | १०७१     | समा       | २५२०     | समुद्रन  | २०७०     |
| ,          | २८६७     | समहा        | ३३३      |           | १२६      | समुद्ररग | २४४५     |
| सपया       | १३८०     | समग्या      | ३३३      |           | २०७३     | समुद्र   | ४६८      |
|            | १३३१     | ,           | १३८२     | समानोदय   | २५२२     | समुद्रा  | ८१२      |
| सपिष्ट     | ११४०     | समञ्जस      | १५१५     | समानम्भ   | ११४१     | "        | ८८०      |
| सपीति      | १८०६     | समयिष       | २१७५     | समाजम्भ   | २३०४     |          | ९१५      |
| सप्तही     | १२९०     | समयिष       | २८७४     | समाज्ञा   | १३७९     | समुद्रन  | २२०४     |
|            |          | समम्भदुग्धा | ८५९      | समायाय    | २२०९     | समुज     | २२१५     |
|            |          |             |          | समागार    | २२८      | समुज्ज   | २५३१     |

| शब्दः          | पंक्तिः | शब्दः          | पंक्तिः | शब्दः             | पंक्तिः | शब्दः              | पंक्तिः |
|----------------|---------|----------------|---------|-------------------|---------|--------------------|---------|
| समुपजोषन्      | २८६८    | सरल ...        | ७६८     | मर्वधुरावह        | १८३८    | महज ...            | ११४१    |
| समूह ...       | १००६    | " ...          | २०४१    | मर्वधुरीण ...     | १८३८    | महधमिणी            | १०८४    |
| समूह ...       | १०६५    | सरलद्वय ...    | १६३१    | मर्वमङ्गला ...    | ७३      | महन ...            | २०८७    |
| समूह ...       | १३९३    | सरला ...       | ८६४     | मर्वरस ...        | १३२८    | महभोजन ...         | १८१६    |
| समूह ...       | २०४७    | सरस् ...       | ५२२     | मर्वला ...        | १६५३    | सरस् ...           | २४३     |
| ममृद्धि ...    | २२६९    | मरसी ...       | ५२७     | मर्वलिङ्गिन्      | १४४२    | " ...              | १६७१    |
| संपत्ति ...    | १६३१    | सरसीरुह ...    | ५४७     | मर्ववेदम् ...     | १३७१    | " ...              | २८००    |
| संपद् ...      | १६३०    | सरस्वत् ...    | ४६९     | मर्वसनहन          | १६५५    | सहमा ...           | २८६३    |
| संपराय ...     | २३३६    | " ...          | २४४९    | मर्वानुभूति ...   | ८६४     | सहन्य ...          | २४४     |
| संपरायिक       | १६७५    | सरस्वती ...    | ३१२     | मर्वान्नमोजिन्    | २०६८    | महत्त्व ...        | १८७५    |
| सपुटक ...      | १३५१    | " ...          | ५३४     | मर्वान्नोन्       | २०६८    | महत्त्वदंष्ट्र ... | ५०२     |
| सप्रति ...     | २८९४    | सरित् ...      | ५२५     | मर्वान्नितार      | १६५५    | महत्त्वपत्र ...    | ५४६     |
| सप्रदाय ...    | २२६४    | सरित्पति ...   | ४६८     | मर्वार्थसिद्ध ... | ७९      | महत्त्ववीर्या      | ९६५     |
| संप्रधारणा ... | १५१७    | सरीसृप ...     | ४५१     | मर्वोव ...        | १६५५    | सहत्त्ववेधि        | १७८६    |
| समहार ...      | १६७७    | सर्ग ...       | २३७८    | सर्पप ...         | १७४१    | सहत्त्ववेधिन्      | ९३०     |
| संफुल्ल ...    | ६६३     | सर्ज ...       | ७३७     | सलिल ...          | ४७२     | महत्त्वाशु ...     | २०६     |
| संवाध ...      | २१९४    | सर्जक ...      | ७३६     | मल्लकी ...        | ८९६     | महत्त्वाक्ष ...    | ८८      |
| सनेद ...       | ५३६     | सर्जरस ...     | १३२८    | सव ...            | १३७९    | सहस्रिन् ...       | १५९१    |
| संभ्रम ...     | ४२९     | सर्जिकाक्षार   | १९२४    | सवन ...           | १४४६    | सहा ...            | ७९५     |
| " ...          | २३०७    | सर्प ...       | ४५०     | सवयस् ...         | १४९१    | " ...              | ८७५     |
| नमद् ...       | २६३     | सर्पर्राज ...  | ७४६     | सविवृ ...         | २०६     | सहाय ...           | १६१०    |
| समार्जनी ...   | ६२९     | सर्पिस् ...    | १८१०    | सविध ...          | २१५८    | मटायता ...         | २३३०    |
| समूर्त्तन ...  | २२६२    | मर्त्य ...     | २१५३    | सवेश ...          | २१५८    | सहिष्णु ...        | २०८७    |
| ममृष्ट ...     | १७९८    | सर्वमहा ...    | ५६२     | सव्य ...          | २१९३    | सायात्रिक ...      | ४९०     |
| सम्यक् ...     | ३५४     | सर्वज्ञ ...    | २५      | सव्यान ...        | १३०९    | सांयुगीन ...       | १६२२    |
| संभ्राज् ...   | १४७४    | " ...          | ६५      | सव्येष्ट ...      | १५८७    | मावत्सर ...        | १४९५    |
| सरका ...       | २०१५    | सर्वतस् ...    | २८७४    | सव्य ...          | ६७८     | साशयिक ...         | २०३४    |
| सखा ...        | १०४०    | सर्वतोमद्र ... | ६१३     | सस्यसंवर ...      | ७३७     | साकम् ...          | २८५६    |
| सरट ...        | १०१२    | " ...          | ७७२     | सह ...            | २८००    | माधात् ...         | २८२२    |
| सरणा ...       | ९५३     | सर्वतोमद्रा    | ७१९     | " ...             | २८५६    | सागर ...           | ४६९     |
| सरणि ...       | ५८७     | सर्वतोमुख ...  | ४७४     | महकार ...         | ७१५     | साक्षि ...         | २८६१    |
| सरमा ...       | १९७३    | मर्वदा ...     | २८९३    | सहचरी ...         | ७९९     | सात ...            | २६४     |

| शब्दः       | पङ्क्तिः | शब्दः      | पङ्क्तिः | शब्दः      | पङ्क्तिः | शब्दः     | पङ्क्तिः |
|-------------|----------|------------|----------|------------|----------|-----------|----------|
| सान्ना      | ९३५      | सामाय      | २१८८     | साहस       | २९१०     | सिद्धिना  | २९१०     |
| साति        | २३२६     | सामि       | २८३३     | सिंह       | २८९      | सिमीगली   | २३२      |
| "           | २४६९     | सामिपेनी   | १३९६     | सिन्नाद    | १६८१     | सिन्नुन   | ७८४      |
| "           | २९१३     | सामतन्     | २८७०     | सिन्पुच्छी | ८३४      | सिन्नुवार | ७८५      |
| सातिसार     | ११९२     |            | २८९४     | सिन्महनन   | २०४९     | सिन्नु    | १९१६     |
| सारिक       | ३९४      | साय        | २२०      | सिन्हाण    | १९०३     | ,         | २९५७     |
| साहिन्      | १५८८     | सायन       | २३६९     | सिन्हासन   | १५६०     | सिन्नु    | ४६९      |
| ,           | २५४८     | सायम्      | २८८७     | सिन्हास्य  | ८५५      | ,         | २५३६     |
| साग्न       | २५०१     | सार        | २६७७     | सिन्ही     | ८५४      | सिन्नुन   | १७९०     |
| साधारण      | २००३     | सारङ्ग     | १०२१     | ,          | ८७६      | सिन्नुसगम | ५३६      |
| "           | २१८८     | ,          | २३८१     | सिकना      | २४८१     | सिन्नु    | १३३०     |
| साधित       | २१०४     | सारथि      | १५८६     | सिन्नामय   | ४८४      | सीता      | १७३५     |
| साधिष्ठ     | २२४९     | सारमय      | १९७१     | सिन्नामय   | ५७९      | सीत्य     | १७२३     |
| साधीयत्     | २८०६     | सारव       | ५३८      | सिन्नामय   | १९२१     | सीधु      | २०१३     |
| साधु        | १६५८     | सारस       | ५४७      | सिन्       | ३०२      | सीमन्     | ६३२      |
| ,           | २१२८     |            | १०३१     | "          | २२१४     | सीमन्त    | २९३२     |
| ,           | २५३७     | मारसन      | १९९१     | ,          | २२२१     | सीमन्निनी | १०७७     |
| साध्य       | २०       | ,          | १५९४     | सिन्नामय   | २४९५     | सीमा      | ६३२      |
| साध्यन्     | ४०३      | मारिषा     | २९१०     | सिन्नामय   | ९५२      | सीर       | १७३४     |
| साध्वी      | १०८६     | माध        | १०६९     | सिन्नामय   | ७९०      | सीरपाणि   | ४८       |
| साधु        | ६३२      | साधनाह     | १८६३     | "          | १७९३     | सीवन      | २२६०     |
| साध्व       | ३३७      | साध्ना     | २२३५     | सिन्नामय   | १३३४     | सीसक      | १९१७     |
| ,           | १५९      | साध्ना     | २८५६     | सिन्नामय   | ५४९      | सीसुण्ड   | ८५९      |
| साध्विक     | १५२६     | साध्वीम    | १५३      | सिन्नामय   | २२       | सु        | २८५३     |
| साध्व       | २१५६     |            | १४७३     | सिन्नामय   | २३२५     | सुकादक    | ९३३      |
| साध्व्य     | १४०६     | साध्व      | ५९९      | सिन्नामय   | २८६      | सुकरा     | १८४७     |
| साध्व्यादि  | १६७५     | ,          | ६५९      | सिन्नामय   | १७४२     | सुकर      | २०४१     |
| साध्व्यादीन | १४९३     |            | ७३७      | सिन्नामय   | ८७३      | सुकरमार   | २१८०     |
| सामन        | ३१७      | साध्व्यादी | ८७९      | सिन्नामय   | ११७९     | सुकर      | २६९      |
| ,           | १५०९     | साम्रा     | १८३२     | सिन्नामय   | ११९६     | सुकरिन्   | २०३०     |
| सामानिक     | १३८५     | साहस       | १५०९     | सिन्नामय   | २९१४     | सुन       | २६३      |
| सामाय       | २४६      | साहस       | १५९१     | सिन्नामय   | १८८      | ,         | २९४०     |

| शब्दः       | पंक्तिः  | शब्दः     | पंक्तिः  | शब्दः       | पंक्तिः  | शब्दः          | पंक्तिः  |
|-------------|----------|-----------|----------|-------------|----------|----------------|----------|
| स्थिति      | ... १५१९ | स्पर्श    | ... २२७८ | स्यन्दन     | ... ७०१  | स्वधा          | ... २८६४ |
| "           | ... २२९२ | स्पर्शन   | ... १२२  | "           | ... १५६९ | स्वविति        | ... १६५१ |
| स्थिरतर     | ... २१७० | "         | ... १४११ | स्यन्दनारोह | १५८८     | स्वन           | ... ३५५  |
| स्थिरा      | ... ५६०  | स्पश      | ... १४९३ | स्यन्दिनी   | ... १२०७ | स्वनित         | ... ३२१३ |
| "           | ... ८७९  | "         | ... २०६३ | स्यञ्ज      | ... २२०९ | स्वप्न         | ... ३६४  |
| स्थिराद्यु  | ... ७४१  | स्पष्ट    | ... २१८७ | स्यूत       | ... १७५९ | स्वप्नञ्       | ... २०९० |
| स्यूणा      | ... १९९९ | स्पृक्का  | ... ९१४  | स्यूति      | ... २२२६ | स्वभाव         | ... ४३७  |
| "           | ... २४३६ | स्पृशी    | ... ८३५  | "           | ... २२६० | स्वभू          | ... ३६   |
| स्थूल       | ... २१४६ | स्पृष्टि  | ... २२६८ | स्योनाक     | ... ७६२  | स्वयंवरा       | ... १०८७ |
| "           | ... २७४४ | स्पृहा    | ... ४१६  | संसिन्      | ... ७०५  | स्वयम्         | ... २८८१ |
| स्थूललक्ष्य | ... २०३६ | स्पष्ट    | ... २२७८ | सञ्ज        | ... १३४३ | स्वयम्भू       | ... ३२   |
| स्थूलशःटक   | १३०५     | स्फटा     | ... ४५५  | सञ्ज        | ... २३६८ | स्वर           | ... २८४४ |
| स्थूलोच्चय  | ... २६३२ | स्फाति    | ... २२६८ | सञ्ज        | ... १८४४ | स्वर           | ... ३१९  |
| स्थेयम्     | ... २१७० | स्फार     | ... २१५१ | सञ्जन्ती    | ... ५२७  | स्वरह          | ... ९४   |
| स्थौण्य     | ... ९१३  | स्फिच्    | ... १२०४ | समृ         | ... ३४   | "              | ... २६७० |
| स्थौरिन्    | ... १५५९ | स्फुट     | ... ६६३  | समृ         | ... ३४   | स्वरूप         | ... ४३७  |
| स्व         | ... २२६८ | "         | ... २१८७ | सस्त        | ... २०३२ | "              | ... २५९७ |
| स्वानक      | ... १४३८ | स्फुटन    | ... २२६० | स्वाकू      | ... २८५० | स्वर्ग         | ... ११   |
| स्वान       | ... १३१६ | स्फुरणा   | ... २२६९ | स्वुत       | ... २२०९ | "              | ... २९१७ |
| स्वायु      | ... १२०६ | स्फुलिङ्ग | ... ११४  | स्वुव       | ... १४०२ | स्वर्जिकाक्षार | २९२४     |
| स्निग्ध     | ... १४९१ | स्फूर्जक  | ... ७२५  | स्वुवा      | ... ८१५  | स्वर्ण         | ... १८९४ |
| "           | ... १७९९ | स्फूर्जथु | ... १६४  | स्वुवावृक्ष | ... ७२३  | स्वर्णकार      | ... १९४४ |
| "           | ... २०५३ | स्फोट     | ... २२४९ | स्वोतस्     | ... ४८८  | स्वर्णक्षीरी   | ... ९२४  |
| सु          | ... ६४२  | स्म       | ... २८५९ | "           | ... २८०० | स्वर्णदी       | ... ९७   |
| सुत         | ... २२०९ | "         | ... २८८३ | स्वोतन्वती  | ... ५२७  | स्वर्णामु      | ... १९७  |
| सुपा        | ... १०९१ | स्मर      | ... ५०   | स्वोतोजन    | ... १९०७ | स्वर्वेश्या    | ... १०३  |
| सुष्ट       | ... ८५९  | स्मरहर    | ... ६६   | स्व         | ... ११४२ | स्ववासिनी      | ... ११९१ |
| सुही        | ... ८५९  | स्मित     | ... ४३०  | "           | ... २७१८ | स्वर्धद्य      | ... १०१  |
| मेह         | ... ४११  | स्मृति    | ... ३२३  | स्वच्छन्द   | ... २०५५ | स्वस           | ... ११३१ |
| स्पर्श      | ... २९१  | "         | ... ४१९  | स्वजन       | ... ११४२ | स्वस्ति        | ... २८१८ |
|             |          | स्यद      | ... १०७  | स्वतन्त्र   | ... २०५५ |                |          |

| शब्दः        | पतिः | शब्दः         | पतिः | शब्दः    | पतिः | शब्दः      | पतिः |
|--------------|------|---------------|------|----------|------|------------|------|
| स्वस्तिक्    | ६१३  | हृषक्         | १२९३ | हरिमणि   | १८९० | हृषा       | १२७० |
| श्वश्याय     | ११३८ | हृजिक्ता      | ८२७  | हरिमिया  | ५३   | ,          | २४५२ |
| स्वाति       | २९७० | हृजे          | ३९२  | हरिम भक् | १७४३ | हृषाकारण   | २२५९ |
| श्वानु       | २५२३ | हृष्ट         | २९३० | हरिमातृक | ८९०  | हृक्षिन्   | १५३५ |
| श्वानुक्पटक् | ७२२  | हृष्टविनासिनी | ९०८  | हरिद्वय  | ८६   | हृक्षिन्मय | ६४६  |
|              | ८४५  | हृष्ट         | १६८४ | हरीनारी  | ६८४  | हृक्षिपक्  | १५८५ |
| श्वानुराग    | ९३६  | हृष्टे        | ३९२  | होत्र    | ७६७  | हृष्यारोट  | १५८५ |
| श्वानी       | ८६३  | हृत्          | २१०७ | होत्र    | ८८९  | हा         | २८४८ |
| श्वान्याय    | १४४६ | हृत्          | ९०८  | होत्र    | १७३९ | हाटक्      | १८९४ |
| श्वान        | ३५६  | हृत्          | २८२४ | होत्र    | ६११  | हायन       | २५५  |
| श्वान्या     | २७७  | हृष           | १५५५ | होत्र    | ९८९  |            | २५५० |
| श्वान        | ४३४  | हृषपुष्ठी     | ९२५  | होत्र    | २६३  | हार        | १२८३ |
| श्वानतेष     | १८८६ | हृषमारक्      | ८०१  | होत्र    | २०३९ | हारीत      | १०५६ |
| श्वामिन्     | १५०२ | हर            | ६६   | होत्र    | १७३३ | हाद        | ४१५  |
|              | २८४५ | हरण           | १५२४ | होत्र    | ३९३  | हाहा       | २००८ |
| श्वाराज्     | ८६   | हरि           | ९८९  | होत्र    | ३६   | हाक्षिक्   | १८३५ |
| श्वारा       | १३९३ | हरिचन्दन      | १००  | होत्र    | ४५७  | हार        | ४३५  |
|              | २८६७ | हरिण          | ३०३  | होत्र    | ४७   | हार        | ३९९  |
| रिन्         | २८१९ |               | १००३ | होत्र    | ७३२  | हाक्षिक्   | १५३० |
| स्वेद        | ४३८  | हरिणी         | २४३५ | होत्र    | २००८ | हास्य      | ३९५  |
| स्वेदन       | २१२६ | हरिण          | १४६  | होत्र    | १७२३ | ,          | ४९९  |
| स्वेदनी      | १७६७ |               | ३०५  | होत्र    | २३३१ | हाहा       | १०४  |
| स्वेद        | २७२० |               | २९३३ | होत्र    | ५३९  | हि         | २८४९ |
| स्वेदिनी     | १    | हरित          | ३०५  | होत्र    | २२६६ | हिंसा      | ७७९३ |
| स्वेदिनी     | २२५४ | हरितक्        | १७७५ | होत्र    | २७४९ | हिय        | २०८१ |
| स्वेदिनी     | २०५५ | हरिताल        | १९५८ | होत्र    | १८१  | हिक्ता     | २९१० |
|              |      | हरितालक्      | १९१३ | होत्र    | १४०१ | हिक्ता     | १७७६ |
| ह            | २८५९ | हरिद्वय       | २०२  | होत्र    | ११०  | हिक्ता     | ७७२  |
| हृ           | २०६  | हरिद्रा       | १७८८ | होत्र    | ३९८  | हिक्ता     | २९३५ |
|              | १०३४ | हरिद्राग      | ३०५  | होत्र    | १३६५ | हिक्ता     | ८७६  |
|              | २७८७ | हरिद्रु       | ८५१  | होत्र    | १२४५ | हिक्ता     | ७८०  |



# अमरकोशस्य ।

८४

| शब्दः          | पंक्तिः | शब्दः       | पंक्तिः | शब्दः         | पंक्तिः | शब्दः         | पंक्तिः |
|----------------|---------|-------------|---------|---------------|---------|---------------|---------|
| हिन्ताल ...    | ९८७     | हीन ...     | २२३८    | हृष्टमानस ... | २०३९    | हैयनवीन...    | १८११    |
| हिम ...        | १८०     | " ...       | २५९०    | हे ...        | २८६७    | होतु ...      | १३८६    |
| " ...          | १८३     | हुनमुक्मिया | १३९५    | हेति...       | ११३     | होम ...       | १३८०    |
| " ...          | २९३८    | हुतभुज ...  | ११७     | " ...         | २४७६    | होरा ...      | २९१४    |
| हिमवत् ...     | ६३८     | हुम् ...    | २८४०    | हेतु ...      | २७१     | हम् ...       | २८९२    |
| हिमवाल्का      | १३३४    | " ...       | २८८५    | हेमकूट ...    | ६३९     | हृद ...       | ७१७     |
| हिमसंहति       | १८१     | हृति ...    | ३२७     | हेमदुग्धक     | ६९२     | हृदिष्ट ...   | २२४९    |
| हिमागु ...     | १७१     | " ...       | २२६६    | हेमन् ...     | २९४०    | हृत्स्व ...   | ११६५    |
| हिमानी ...     | १८१     | हृह ...     | १०४     | हेमन्त ...    | २५०     | " ...         | २१६५    |
| हिमावनी ...    | ९२४     | हृणीया ...  | २३१४    | हेमपुष्पक...  | ७७५     | हृत्स्वगेषुका | ८८२     |
| हिरण्य ...     | १८८७    | हृद ...     | २७७     | हेमपुष्पिका   | ७९१     | हृत्स्वान ... | ९३३     |
| " ...          | १८८८    | " ...       | १२०२    | हेमाद्रि ...  | ९८      | हादिनी ...    | ९३      |
| " ...          | १८९४    | हृदय ...    | २७७     | हेरन्व ...    | ७६      | " ...         | १६२     |
| हिरण्यगर्भ ... | ३२      | " ...       | १२०२    | हेला ...      | ४२५     | " ...         | ५३६     |
| हिरण्यरेतस     | ११०     | हृदयगम ...  | ३४७     | हेपा ...      | १५६२    | ही ...        | ४०८     |
| हिरण्यवाह      | ५३४     | हृदयालु ... | २०३१    | है ...        | २८६२    | हीण ...       | २२०     |
| हिरक् ...      | २८५४    | हृद्य ...   | २१३१    | हैमवती ...    | ७२      | हीत ...       | २७      |
| " ...          | २८६२    | हृपीक ...   | २९२     | " ...         | ७६७     | हीवेर ...     | १५५     |
| हिलमोचिका      | ९६३     | हृपीकेश ... | २६      | " ...         | ८५४     | हैपा ...      | १५५     |
| ही ...         | २८६६    | हृष्ट ...   | २२३०    | " ...         | ९२४     | हादिनी ...    | ८९      |

समाप्तोऽयममरकोशस्थशब्दानां वर्णक्रमकोशः ।

